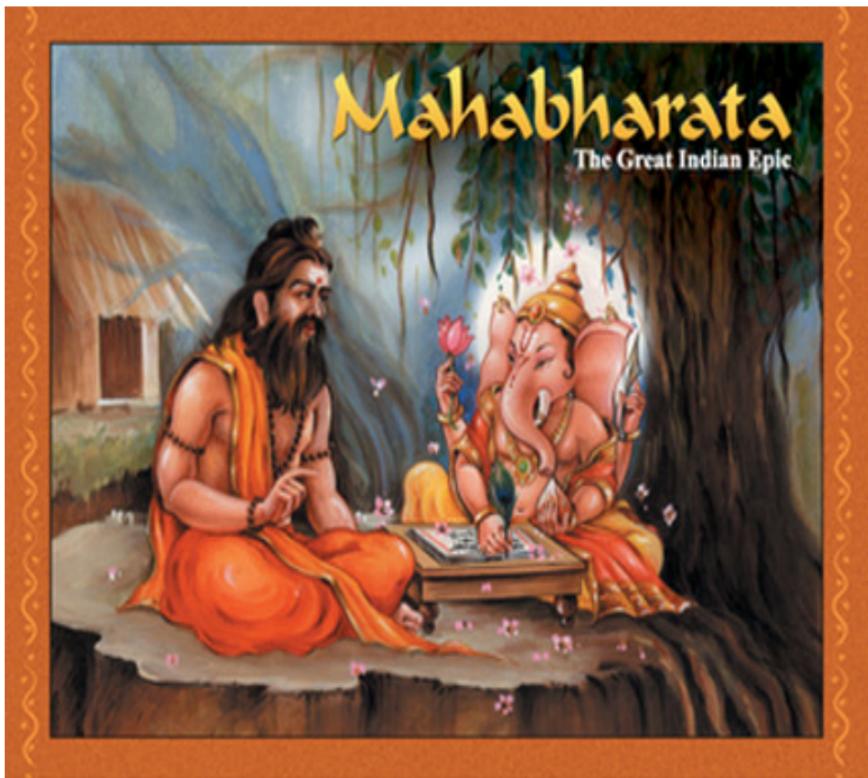


GLORIOUS INDIA

CATALOGUE 2024



NAG PRAKASHAN



नाग प्रकाशन

**(Publishers & Booksellers of
Indological Books)**

**11-A, (U. A.) Jawahar Nagar, Post Office Bldg.
Delhi – 110007 (India)**

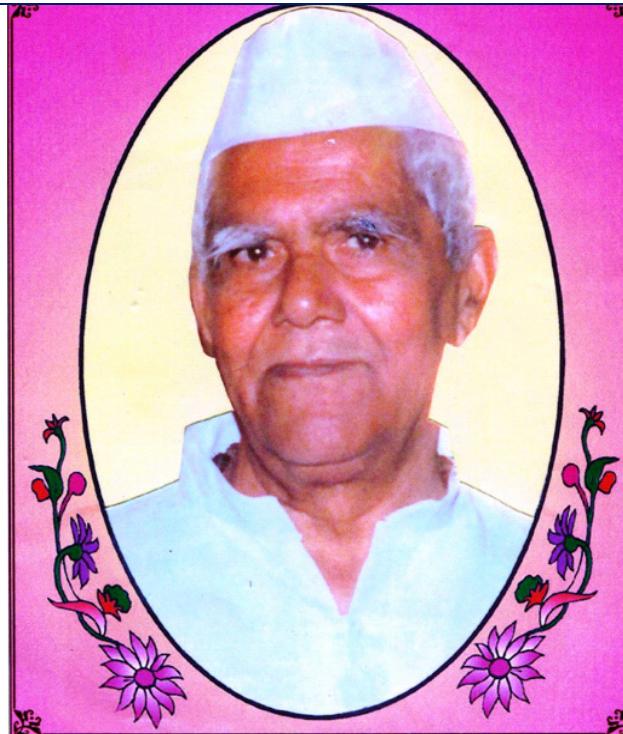
Mob. +091 9818848356, 7011242553

web site – nagprakashan.com

e-mail - nagprakashan@gmail.com

nagpublishers@gmail.com

Price Rs. 20.00



संस्थापक नाग प्रकाशन स्वर्गीय श्रीनाग शरण सिंह जी

स्वर्गीय श्री नाग शरण सिंह जी ने संस्कृत प्रकाशन के क्षेत्र में अपना सारा जीवन लगा दिया। पहले वे अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं के साथ जुड़े रहे। उसके अनन्तर उन्होंने नाग प्रकाशन के नाम से अपना प्रकाशन प्रारम्भ किया। उनकी लगन और संस्कृत के प्रति उनकी निष्ठा बहुत गम्भीर थी। संस्कृत विद्वानों का वे बहुत आदर करते थे। यही कारण है कि इस क्षेत्र में उनको इतनी सफलता प्राप्त हुई। नाग प्रकाशन के माध्यम से सभी महापुराणों और संस्कृत की अन्य महत्वपूर्ण साहित्यिक रचनाओं का उन्होंने प्रकाशन किया और कुछ ही वर्षों में अपनी सेवा भावना के कारण इस संस्था ने प्रकाशन के क्षेत्र में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की।

प्रो. मण्डन मिश्र

ABOUT NAG PRAKASHAN

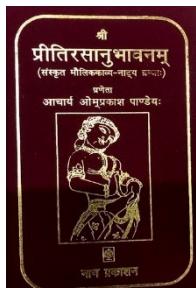
NAG PRAKASHAN launched its publishing programmed in 1975. We have an impressive list of titles. Our publications includes mostly on *Puranas, Vedas, Epic, History, Culture, Indian Philosophy, Hindu Religion, Sanskrit Literature, Buddhism, Astrology, Sanskrit Dictionaries, Aired* etc. and have attained a wide readership among scholars. We are well known Publishers in Indology. Our distinguished Publishing, House stands for brilliant scholarly publications' excellent in content and superb in production. We feel great pleasure to collaborate with you in Publishing, Printing and distributing yours Books and Journals, with a worldwide network, a well organized and strong infrastructure to serve your purpose.

नये प्रकाशन

प्रीतिरसानुभावनम्

(संस्कृत मौलिककाव्य—नाट्य—ग्रन्थः)

प्रणेता — आचार्य ओमप्रकाश पाण्डेय



प्रस्तूते : पूर्वम्

'प्रीतिरसानुभावनम्' — इत्याख्ये मम काव्यनाट्य रचनावल्यां यानि काव्य—नाट्यरचनाश्च सम्मिलितानि सन्ति, तासां विशद विवरणमित्यमस्ति (1) निर्याति नैव

स्मृतिः (प्रबन्ध काव्यम्); (2) स्वातन्त्र्य — गाथा (प्रबन्ध काव्यम्) एतरिम्न् पूर्वजानां गौरवम्, क्रान्तिवृत्तम्, स्वातन्त्र्यस्य संरक्षणाय स्वजीवनान्यपि समर्पितवतां हुतात्मनां पौरुषं पारक्रमज्ञच, पारतन्त्र्यस्य कारणानां विमर्शश्चेतिविषयवस्तूनि वर्णितानि सन्ति। येषामत्र पुण्यस्मरणं वर्तते तेषु स्कन्दगुप्तः पृथ्वीराज चाहमानः राणा संग्रामसिंहः, महाराणा प्रतापः, छत्रपतिः शिवाजिमहाराजः, समर्थगुरुरामदासः, महाराज्ञी झांसीश्वरी लक्ष्मीबाई, नाना साहेब, तात्या टोपे, राणा बेनीमाधवः, लोकमान्यस्तिलकः, सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजादः, बड़िकमचन्द्रश्चट्टोपाध्यायः, स्वामि विवेकानन्दः, भगिनी निवेदिता, महर्षिर्दयानन्दः सरस्वती, वीर सावरकरः, महात्मा गांधी, सुभाषचन्द्रवसुः, सरदार वल्लभभाई पटेलो, जयाहरलालो नेहरु चेत्यादयः। एतेषां चारित्र्याङ्कनेन सह संघरसंस्थापकस्य डॉ. हेडगेवारमहोदयस्य राष्ट्रिनिर्माणाय कृतित्वमपि संक्षेपेण प्रस्तुतमस्ति। अस्य प्रयोजनमस्ति स्वलेखिन्याः पवित्रीकरणम्।

प्रकीर्णप्रभागे विविधाः कविताः गलज्जलिकाश्च सङ्कलिताः सन्ति। आसु युगपरिवर्तनस्य पदनिक्षेपध्वनिः, सहदय-हृदयव्यापारः, व्यङ्ग्यविनोदः, सामाचिक्यो विसङ्गतयस्यचेत्यादयो भावा निविष्टाः सन्ति। अस्माकं केवलमियमेव कामनास्ति—हिंसा शास्त्र्यतु सर्वथापि करुणा व्याजोतु भूमण्डलं सज्जानेन समाचरन्तु सुधियो द्वेषन्त्यजन्तो मिथः। वात्सल्यं प्रकृतिस्तनोतु सदया नीतिप्रियाः शासका, अस्माकं कवितापि लोकमहिता विद्यादजस्ते यशः।।।

अस्य संडकलनस्य प्रकाशनाय लक्षणपुरस्थेन उ. प्र. संरक्षानेन यद्वित्तसाहाय्यमुदारमनसा कृतम्, तदर्थमहं संस्थानस्य सर्वभ्योऽधिकारिवर्येभ्यः मुक्तहृदयेन धन्यवादं करोमि।

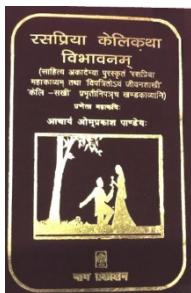
नागप्रकाशनस्य स्वत्वादिष्ठाता बन्धुवर्यः श्रीसुरेन्द्र प्रताप सिंहः पूर्ववत् साम्प्रतमपि सुरस्य प्रकाशनदृष्ट्याऽनन्त साधुवादर्थहर्ति। परिजनानां सहयोगं विना किमपि कर्तुं कस्मैचिदपि न सम्भवति, अतः परिवारस्य अधिष्ठात्री श्रीमती निर्मलमोहिनी सर्वप्रथमं समुल्लेखनीयाऽभिनन्दनीय चेति। तदनन्तरं चि. डॉ मनीष दीक्षित — मनीष पाण्डेय — डॉ. प्रज्ञादीक्षित — डॉ. मानस प्रकाशमहिम्न प्रकाशादयोऽपि प्रसङ्गेऽस्मिन् शुभाशीर्भरभ्यर्थनीयाः सन्ति। मन्ये आत्मीय पाठकानां प्रसादोऽपि प्राप्यते।

ओमप्रकाश पाण्डेयः

Demy 1/8

ISBN-81-7081-283-6

pp 300 2023 Rs.300



रसप्रिया केलिकथा विभावनम्

(साहित्य आकदेम्या पुरस्कृतं रसप्रिया महाकाव्यम्) तथा विपत्रितोऽयं
जीवनशाखी, कलि-सखी प्रभृतीनिपंच खण्डकाव्यानि)
प्रणेता महाकवि

आचार्य ओमप्रकाश पाण्डेयः

प्रास्ताविकं किमपि

'रसप्रिया—केलिकथानुभावनम्' — इत्याख्ये मम
काव्यसङ्कलने यानि काव्यानि नाट्यरचनाश्च सम्मिलितानि सन्ति तेषां नामानि
सन्ति —

(1) रसप्रिया (महाकाव्यम्), (2) निर्याति नैव स्मृतिः (खण्डकाव्यम्), (3)
स्वातन्त्र्यगाथा (खण्डकाव्यम्), (4) वेदनावल्लक्षी (प्रकीर्णरचनाः), (5) विपत्रितोऽयं
जीवनशाखी (खण्डकाव्यम्), (6) केलि सखी चेति (खण्डकाव्यम्)।

'रसप्रिया' संज्ञके प्रबन्धकाव्ये वस्तुतः फ्रॉन्स देशस्थायाः पेरिस नाम्न्याः पुर्या
एव वर्णनमस्ति। इयमेव 'प्रियरसा' 'रसप्रिया' वाऽस्ति। तत्र वर्षत्रयावधौ प्रवसता
तत्रत्ये सोरोबोन् नूवेल पेरिस विश्वविद्यालये संस्कृतां हिन्दीञ्जाध्यापयता मया
यददृष्टं श्रुतमनभूत वा तदेवास्मिन् समुपवर्णितम्। तत्र सर्गाणां नामानि सन्ति —
1. प्रवासः प्रबोधश्च, 2. रसप्रियानुभावनम्, 3. फ्रॉन्सदर्शनम्, 4. महोत्सवानन्दः, 5.
सखीं प्रति नर्मवचांसि, 6. रसप्रियावैभवम्, 7. जोन आफ आर्क-बलिदानम्, 8.
राज्यक्रान्तिर्महानायकाश्च, 9. लोक-व्यवहारः, 10. सुरभारतीप्रणयम्, 11.
निर्वृतिर्विश्वात्मभावश्च।

एषु सर्गेषु पेरिसगतं रसमयं रास—रुडगप्रचुरञ्जीवनम्, शृङ्गारविलासः,
ऐतिहासिकं गौरवं, स्मरणीया महापुरुषाः पराधीनतामुक्तिप्रसङ्गः, सम्भूयसमुत्थानं,
पेरिसस्थानां गीर्वाणं गिरो विदुषां विदुषीनाञ्च विवरणम्—इति सर्वेषां वर्णनमस्ति।
अस्य महाकाव्यस्य महानायिकास्ति पेरिस नामी स्वयमियम्भानगरी। अस्याः
सौन्दर्यं विभाव्य सहृदया काव्यरसिका निश्चप्रचं प्रीतिमनुभविष्यन्तीति मदीयो
विश्वासः।

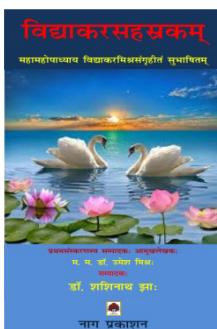
अन्येषां प्रबन्धकाव्यानां परिचयस्तेषामेवादौ समुल्लिखितो वर्तते।
सुरुचिपूर्णप्राकाशनाय नाग प्रकाशन तस्य स्वामी श्रीसुरेन्द्र प्रताप सिंहः धन्यवाद
मर्हति।

ओमप्रकाश पाण्डेयः

Demy 1/8 ISBN-81-7081-284-4

pp 400 2023

Rs.500



विद्याकरसहस्रकम्

महामहोपाध्याय विद्याकरमिश्रसंगृहीतं सुभाषितम्
प्रथमसंस्करणस्य सम्पादकः आमुखलेखकः

म. म. डॉ. उमेश मिश्रः

सम्पादकः डॉ. शशिनाथ झा:

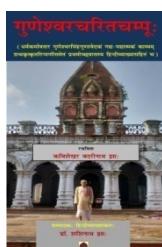
यह 1000 संस्कृत सुभाषित पद्यों का संग्रह है जिसे अठारहवीं शती के अन्त में मैथिल कवि विद्याकर मिश्र ने संगृहीत किया था। इसमें विषयक्रम से प्राचीन एवं नवीन 125 कवियों के पद्य हैं। इसमें बहुत से कवि ऐसे भी हैं जिनकी प्रसिद्धि रहने पर भी कोई रचना प्राप्त नहीं होती, कितनों को इसी ग्रन्थ के माध्यम से जान पाते हैं। संग्रहकार ने अपने जनपद के भी बहुत पद्यों को रखा है। पद्यों के चमत्कार से पाठक अभिभूत हो जाते हैं। इसका प्रथम संस्करण म.म. उमेश मिश्र के सम्पादन में 1942 में इलाहाबाद से हुआ था, उसी का यह परिमार्जित संस्करण है।

Demy 1/8

ISBN-81-7081-386-7

pp 232 2021

Rs.300



गुणेश्वर चरितचम्पूः

(धर्मकर्मावतार गुणेश्वरसिंहगुणादेवदं गद्य-पद्यात्मकं काव्यम्
ग्रन्थकृत्तिष्ठणीसमेतं प्रथमोच्चासस्य हिन्दीव्याख्यासहितं च)

सम्पादकः हिन्दीव्याख्याकारः

डॉ. शशिनाथ झा:

रसगांधर आदि ग्रन्थों के विश्रुत व्याख्याकार वैयाकरण कविशेखर बद्रीनाथ झा की इस रचना में वर्णनवैचित्र्य अतिशय चमत्कृत करनेवाला है। मिथिला के धर्मकर्मावतार राजकुमार गुणेश्वर सिंह के उदात्त जीवनचरित्र में मिथिला के आचार-विचार की शुद्धता का वर्णन दर्शनीय है। इसमें वेद, दर्शन, पौराणिक संकेत, नीति, राजनीति, प्रकृति, ऋतु, ग्रामजीवन आदि के साथ मिथिला के ऋषि, विद्वान्, साधु, नदी, सरोवर, देवालय आदि का विस्तृत परिचय समाविष्ट है।

लघु एवं दीर्घ सामासिक प्रयोग, लगतार नाम धातु, णिंजन्त, सन्नन्त, लुङ् लिट् आदि के गूढ़ प्रयोग द्रष्टव्य हैं। उपमा, व्यतिरेक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास, परिसंख्या आदि अलंकारों की महामाला मनोमहोक है। गद्य-पद्य के परिनिष्ठित प्रयोग अत्यन्त प्रौढ़ पाण्डित्य पूर्ण विशद रूप में उपस्थिति है।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-387-5

pp 280 2021

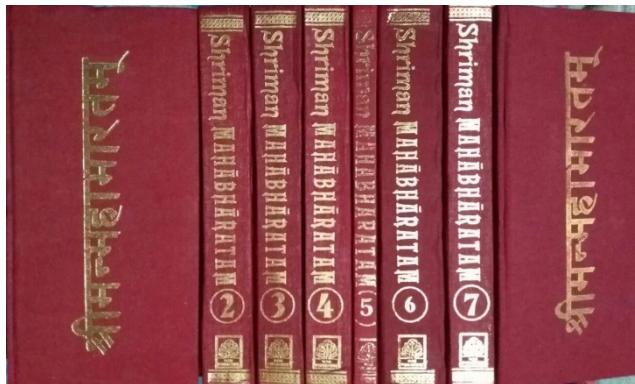
Rs.400

MAHABHARATA

(INTRODUCTION, TEXT WITH NILKANTHI SANSKRIT COMMENTARY,
SLOKAINDEX AND NAME INDEX)

(9 VOLS SET)

The world's biggest epic, the Mahabharata has attracted the notice of the international community to the extent no other work has. Not only is it large in



volume with its. One hundred thousand stanzas in its present form, it is full of inordinate depth as well. Rightly does the text justify its name on both these counts: mahattvad bharavattvac on mahabharatam ucyate, on account of its large extent, mahattvat andits' depth, bharavattvat (bhara=Sara) the work is given the name mahab=harata. The kernel of the conflict between the Kauravas and the Pandavas, the members of the same clan is expanded here with the insertion of a whole lot of episodes, narratives and parables to make it assume the ponderous dimensions that make the text proclaim: yad ihasti tad anyatra yan nehasti na tat kvacit, whatever is here is found elsewhere too, whatever is not here, is found nowhere. Such is its sweep, such is the comprehensiveness.

With all the work done on the Mahabharata, it is no longer an epic confined to India. It has become a part of world literature by being owned, adopted and adapted by different nationalities.

Nilakantha Life

As with most scholars of pre-modern India, little is known of his life. He was from a Marathi-speaking Brahmin family that had been established in a town on the banks of the river Godavari. He moved to Varanasi, where he studied Veda and Vedanga, Mimamsa, Srauta, Yoga, Saiva texts, Tarka, and Advaita Vedanta from several teachers, before beginning his literary career. His teachers and mentors at Varanasi, which was then a hub of śāstric learning, included his guru referred to him as Lakṣmaṇārya, and Nārāyaṇa Tīrtha.

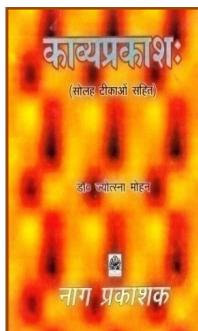
Mahabharata commentary

MAHABHARATA with *Bhāratabhāvadīpa* by Nilakantha Chaturdhara His commentary, *Bhāratabhāvadīpa*, is the only one that is widely used

in Sanskrit studies today. His commentary was from the viewpoint of Advaita Vedānta.

**Pothi Size ISBN-81-7081-182-1
2020**

**pp 6300 (9 vols. set)
Rs.13500.00**



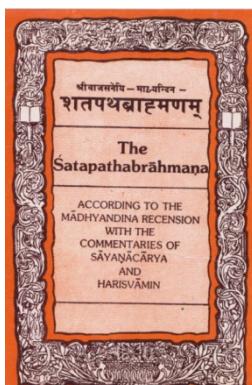
काव्यप्रकाशः

(सङ्केतः, सङ्केतः (रुच्यक), बालचिन्तानुरञ्जनीः, काव्यादर्शः, विवेकः, दीपिकाः, दर्पणः, साहित्यचूडामणिः, सम्प्रदायप्रकाशिनी, मधुमती, विस्तारिका, सारबोधिनी, काव्यप्रदीपः, काव्यप्रकाशखण्डनम्, आदर्शः, सुधासागर, विवरणाम्, संस्कृत व्याख्या समलंकृता)

सम्पादक— डॉ. ज्योतिना मोहन

एकादश शताब्दी के उत्तरार्ध में युगान्तकारी कृति की रचना करके मम्मट ने अपनी प्रखर मेधा द्वारा अतीत के शास्त्रीय सिद्धान्तों को समन्वित करते हुए यथास्थान विच्यस्त किया तथा परवर्ती साहित्यशास्त्र को आलोकित किया। “काव्यप्रकाश” ग्रन्थ में प्रतिपाद्य विषयों का विवेचन इतनी सूक्ष्म दृष्टि से किया गया है कि जिसके परिणामस्वरूप यह ग्रन्थ साहित्यशास्त्र में ग्रन्थमणि माना जाने लगा है। मम्मट अलंकारशास्त्र के प्रथम आचार्य हैं जिन्होंने साहित्य जगत को नवीन दिशा प्रदान की। अनेक शताब्दियाँ बीत जाने के उपरान्त आज भी साहित्यशास्त्र के गगन में मम्मट का ‘काव्यप्रकाश’ देदीप्यमान नक्षत्र की भाँति अपनी प्रकाश-रश्मियाँ विकीर्ण कर रहा है। मम्मट की बहुमुखी प्रतिभा एवं वैदुष्य के कारण काव्यप्रकाश इतना दुरुह एवं दुर्गम हो गया है कि समय-समय पर किसी न किसी विद्वान् का हृदय काव्यप्रकाश ग्रन्थ के अथाह सागर में छिपे सिद्धान्तों को अवगत करने के लिए उत्कठित हुए बिना नहीं रहता। “काव्यप्राशस्य कृता गृहे गृहे टीक तथाप्येष तथैव दुर्गम” उक्ति इस तथ्य का ज्वलन्त प्रमाण है कि इस ग्रन्थ पर टीका लिखे बिना वैदुष्य की प्रतिष्ठा नहीं हो सकती थी। अतएव विद्या के सभी क्षेत्रों के आचार्यों ने काव्यप्रकाश पर टीका लिखने में गौरव अनुभव किया। हम देखते हैं कि टीकाकारों में जहाँ एक ओर विश्वनाथ और रुद्धक सरीखे काव्यशास्त्रीय आचार्य हैं, वहाँ दूसरी ओर जैन माणिक्यचन्द्र, नैयायिक जगदीश एवं मीमांशक कमलाकर भट्ट, वैष्णव बलदेव विद्याभूषण और तान्त्रिक गोकुलनाथ हैं। टीकाओं की सुदीर्घ परम्परा में (माणिक्यचन्द्र) संकेत, बालचिन्तानुरञ्जनी, काव्यादर्श विवेक, दीपिका, दर्पण, साहित्यचूडामणि, सम्प्रदायप्रकाशिनी, मधुमती, विस्तारिका, सारबोधिनी, काव्यप्रदीप, काव्यप्रकाशखण्डनम्, आदर्श, सुधासागर आदि टीकाएँ हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में काव्यप्रकाश का उपरोक्त सोलह टीकाओं के साथ सम्पादन करने का विनम्र प्रयास किया गया है। आशा है यह ग्रन्थ शोधार्थियों एवं सुधी पाठकों के लिए उपादेय सिद्ध होगा।

**Crown 1/4 ISBN 81-7081-323-9 (set) 1995 pp 4066
(6 vols set) Rs. 10000.00**



श्रीवाजसनेयि—माध्यन्दिन

शतपथब्राह्मणम्

THE SATAPATHA BRAHMANA

(ACCORDING TO THE MĀDHYANDINA RECENSION WITH THE COMMENTARIES OF SĀYĀNĀCĀRYA AND HARISVĀMIN)

Shatapatha Brahmana is the most important work in the whole range of Vedic literature. Besides its

theological significance, it has enormous social cultural and geographical importance. It belongs to the Vajasneyi recession of the Yajurveda generally called White Yajurveda.

Practically it is an encyclopedia of Vedic Sacrifices. This edition includes the extant portions of the authoritative commentaries of Hariswamin and Sayancarya, Vasudev Brahmana's rarely available commentary of the Brahadaranyakopanisad, Katyayan's Pratijna Sutra and Bhasika sutra with commentaries Pasvadanaviveka, various readings, notes and illustrations.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-362-X
(5 vols. set) 2020

pp 373
Rs.5000.00



मदनपारिजातः सृतिसंग्रहः

पण्डितपारिजात भक्तारमल्लेत्यादिविरुद्धराजीविराजमान श्रीमदनपाल विरचितः
सम्पादितः कलिकातारथ-संस्कृतविद्यालयाध्यापकेन
श्रीमधुसूदन-सृतिरलेन

मदनपारिजात-नामधेय-निबन्धोऽयं प्राचीनः अर्वाचीनै-
विरच्याते-नीनादेशीयैः प्रामाणिकैः वाचस्पति-मित्र-चण्डे श्वर-
रघुनन्दन-मित्रभित्र-कमलाकर-नन्दपण्डित-प्रभृतिभि-र्यन्त्यकारैः
समाहृततयातिप्रामाणिकयः । परन्तु अस्य कियल्कालावच्य-
भ्यनाध्यापना-विरहतो विलुप्तप्रायत्वं मन्यमानाया आसिया-
टीक-समितेः संशोधनपूर्वक-सुद्राङ्गनाय नियुक्तेन भया राज-
कीय-पुस्तकालयात् संस्कृत-विद्या-भवनात् श्रीनन्दकुमार-
विद्यारब्ध-स्वर्गीय-राजपण्डित-वैद्यनाथोपाध्याय-श्रीकेदारनाथ-
काव्यतीर्थ-रामनाथ-तर्कसंक्षारानां सदनैभ्यत्य आदर्थ-पुस्तक-पटकं
संश्टहीतम् । तेषाच्च पुस्तकानां पाठापाठ-विनिर्णयार्थं भूल-
वैद्यसंहिता-चृतिसंहिता-पुराणादीन् प्राचीनार्वाचीन-प्रामा-
णिक-मित्राचरा-हेमाद्रि-पराग्यरभाष्य-इलायुध-शूलपाणि-रघु-
नन्दन-निबन्ध-निर्णयसिन्धु-बीरभित्रोदयादीन् निबन्धांशालीव्य
आदर्थपुस्तकानां परस्परविदीषे तैः संवादिततया पाठं निर्णय-
क्तचिन्मूले निवेशितमाद्यान्तरस्य पाठान्तरं निजे निवेशितच्च
क्तवित् । क्वचिच्च सुसङ्गततया भूलसंहितादेः यन्यान्तरस्य च
पाठान्तरं निजे सञ्चितेयितम् । अपिच नाना-वैद्यसंहिताभ्यः
संश्टहा प्रथोगसौकर्यार्थं च सूक्तमन्त्राद्योऽच निजे निवेशिताः ।
एवं चृतिपुराण-मन्त्रादीनां प्रायेण गूढार्थ-पदानि विषम-
पदानि च संख्यतेन अनूदितानि ।

Size Demy 1/8 PP 1044 (2 vols set) 2019 Rs. 2000.00



महाभारत मे श्री कृष्ण का विलक्षण व्यक्तित्व

डॉ. भुवनचन्द्र पाठक

पुस्तक महाभारत के प्रमुख पात्रों में अन्यतम श्रीकृष्ण के जीवन तथा उनके असाधारण व्यक्तित्व पर अपनी सीमित बुद्धि के अनुसार किए गये अध्ययन का परिणाम है। प्रथम अध्याय में उक्त ग्रन्थ में उल्लिखित प्रमुख पात्रों का संक्षेप में परिचय दिया गया है। श्रीकृष्ण के बहुमुखी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने के लिए महाभारत के विशिष्ट पात्रों का संक्षिप्त परिचय नितान्त आवश्यक है।

पुस्तक के दूसरे अध्याय में महाभारत के विभिन्न पर्वों में वर्णित श्रीकृष्ण का परिचय, उनके जन्म, बाल्यकाल, शिक्षा, वैवाहिक जीवन इत्यादि का विवेचन किया गया है।

तीसरे अध्याय में श्रीकृष्ण के लौकिक वैशिष्ट्य का वर्णन किया गया है। उनके लौकिक गुणों का प्रतिपादन करते हुए महाभारत के इस असाधारण पात्र के बलशाली, दृढ़-निश्चयी, सर्व-हितैषी, धर्मरक्षक, सहायक, आदर्श मित्र, दूरदर्शी, शान्तिप्रिय, सत्यवादी, क्षमामूर्ति, उत्साहवर्धक, ब्राह्मणभक्त, महान् कर्मयोगी, तथा दयूतादि व्यसनविरोधी व्यक्तित्व का विवरण दिया गया है।

महाभारत के श्रीकृष्ण एक गम्भीर राजनीतिज्ञ हैं। चतुर्थ अध्याय में उनके इसी स्वरूप का विशेषरूप से निरूपण किया गया है। दूत के रूप में, साम, दाम, दण्ड तथा भेद नीति के जाता के रूप में, युद्ध-मन्त्री के रूप में तथा समयोचित कार्य करने में निष्णात कूटनीतिज्ञ के रूप में उनके व्यक्तित्व को सामान्य भाषा में अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया गया है।

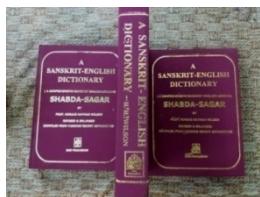
श्रीकृष्ण-दर्शन भक्ति तथा दार्शनिक साहित्य की अमूल्य निधि है। श्रीकृष्ण का दार्शनिक स्वरूप महाभारत में पर्याप्त मात्रा में प्रकाशित होता है, जिसका प्रकाश एवं प्रभाव प्रायः सभी भारतीय आस्तिक दर्शनों में दिखाई देता है। यह सर्वविदित है कि वेदान्त दर्शन के प्रस्थानत्रयी में अन्यतम “गीता” महाभारत का अधिन्न अंग है। पुस्तक के पंचम अध्याय में श्रीकृष्ण की हास्ति में आनन्द, परमात्मा, तथा प्रकृति के सम्बन्ध में महाभारत में प्रतिबिम्बित विचारों का संक्षेप में परिचय दिया गया है।

छठे अध्याय में श्रीकृष्ण के दैवीय स्वरूप का विवरण दिया गया है। महाभारत में उनके दैवीय स्वरूपगत वैशिष्ट्य को संसार के जन्मदाता, पालनकर्ता, संहारकर्ता, भक्तों के रक्षक, दुष्टों के संहारक, धर्मरक्षक, तीनों लोकोंमें श्रेष्ठ, युगचक्रपर्वतक, प्राणियों के आत्मभूत, प्रकृति के अधिष्ठाता, विराट स्वरूप, नारायण स्वरूप आदि की विवेचना की गयी है।

पुस्तक के उपसंहार के रूप में इसी बात को रेखांकित गया है कि लेखक का प्रयास विशालकाय महाभारत महाकाव्य में वर्णित श्रीकृष्ण के अपूर्व तथा अद्वितीय व्यक्तित्व को एक छोटी सी पुस्तक के रूप में प्रस्तुत करने का रहा है। यह दावा दम्भ मात्र होगा कि पुस्तक में ऐसा कुछ लिखा गया है जिसका अन्यत्र उल्लेख न किया गया हो।

Size Demy 1/8 ISBN 81-7081-671-8 PP 248 2019 Rs. 400.00

A SANSKRIT ENGLISH DICTIONARY



**(A COMPREHENSIVE SANSKRIT ENGLISH
LEXICON)SHABDA-SAGAR**
BY
PROF. HORACE HAYMAN WILSON
REVISED & ENLARGED
**COMPILED FROM VARIOUS RECENT
ANTHORITIES**

H. H. Wilson prepared the first *Sanskrit-English Dictionary* (1819) from materials compiled by native scholars, supplemented by his own researches. This work was only superseded by the *Sanskritwörterbuch* (1853–1876) of Rudolf Roth and Otto von Bohtlingk, who expressed their obligations to Wilson in the preface to their great work. Though the first edition of the Sanskrit Dictionary was published at Calutta, no work has yet appeared to supersede the preface with which it was accompanied. Many contributions towards a history of Sanskrit lecography have indeed, since incidentally been made by Lassen, Roth, Goldstucker, Weber, Hall, Westergaard, ZBohtlingk and others; but they are scattered over various works and periodicals, so that a treatise on this branch of Indian Literature, which should reflect the present state of Sanskrit scholarship, still remain a desideratum. This book will be welcomed by all scholars and students of Sanskrit Literature.

Size Demy 1/4 ISBN 81-7081-013-2 PP 874 2019 Rs. 2500.00

TWELVE PRINCIPAL UPANISHADS



**Dr. E. Roer, R. L. Mitra & E. B.
Cowell**

In this edition of Twelve Principal Upanishads there is Text in Devanagari with English Translation with Notes in English from the Commentaries of Sankaracharya and the Gloss fo Anandgiri.

In first volume Isa, Kena, Katha, Prasana, Mundaka, Mandukya, Taittiriya, Aitereya and Svetasvatara Upanishads are translated.

In the second volume Brihadaranayaka Upanishads are translated.

In the third volume Chandogya and Kausitaki-Brahmana Upanishads are translated.

**Size Demy 1/8 ISBN 81-7081-037-X PP1130 (3 vols set)
2019 Rs. 2000**



स्मृति सन्दर्भः

श्रीमन्भर्षिप्रणीत – धर्मशास्त्रसंग्रहः

मन्चादिदशस्मृत्यात्मकः

(56 स्मृतियों का संग्रह)

मूल. भूमिका तथा विषय और
श्लोकानुक्रमणीका सहित ।

Smriti (Sanskrit: स्मृति, IAST: *Smriti*), literally "that which is remembered" are a body of Hindu texts usually attributed to an author, traditionally written down, in contrast to *Śrutis* (the Vedic literature) considered authorless, that were transmitted verbally across the generations and fixed.^[1] *Smriti* is a derivative secondary work and is considered less authoritative than *Śruti* in Hinduism, except in the Mīmāṃsa school of Hindu philosophy. The authority of *smṛiti* accepted by orthodox schools, is derived from that of *shruti*, on which it is based.

The *Smriti* literature is a corpus of diverse varied texts. This corpus includes, but is not limited to the six *Vedāngas* (the auxiliary sciences in the *Vedas*), the epics (the *Mahābhārata* and *Rāmāyaṇa*), the *Dharmaśāstras* and *Dharmaśāstras* (or *Smṛitiśāstras*), the *Arthasaśāstras*, the *Purāṇas*, the *Kāvya* or poetical literature, extensive *Bhāṣyas* (reviews and commentaries on *Shruti*s and non-*Shruti* texts), and numerous *Nibandhas* (digests) covering politics, ethics (*Nītiśāstras*), culture, arts and society.

Each *Smriti* text exists in many versions, with many different readings. *Smritis* were considered fluid and freely rewritten by anyone in ancient and medieval Hindu tradition.

- 1. भागः.
- 1. मनुस्मृतिः / [भृगुः]2. नारदीयमनुस्मृतिः / नारदः3. अत्रिस्मृतिः / अत्रिः4. अत्रि-संहिता / अत्रिः5. प्रथमविष्णुस्मृतिः (माहात्म्यं)6. विष्णुस्मृतिः7. सम्वत्तस्मृतिः8. दक्षस्मृतिः / दक्षः9. आङ्गिरसस्मृतिः / अङ्गिरः10. शातातपस्मृतिः / शातः
- 2. भागः.
- 11. पराशरस्मृतिः / पराशरः12. बृहत्पराशरस्मृतिः / सुव्रतमुनिः13. लघुहारीतस्मृतिः / हारीतः14. वृद्धहारीतस्मृतिः / हारीतः
- 3. भागः.
- 15. याज्ञवल्क्यस्मृतिः / याज्ञवल्क्यः16. कात्यायनस्मृतिः / कात्यायनः17. आपस्तम्बस्मृतिः / आपस्तम्बः18. लघुशङ्खस्मृतिः / शङ्खः19. शङ्खस्मृतिः / शङ्खः20. लिखितस्मृतिः / लिखितर्षिः21. शङ्खलिखितस्मृतिः

/ शङ्खलिखितौ२२. वसिष्ठस्मृतिः / वसिष्ठः२३. औशनससंहिता / उशनस्२४. औशनसस्मृतिः / उशनस्२५. बृहस्पतिस्मृतिः / बृहस्पतिः२६. लघुव्याससंहिता / व्यासः२७. (वेद)व्यासस्मृतिः / वेदव्यासः२८. देवलस्मृतिः / देवलः२९. प्रजापतिस्मृतिः३०. लघ्वाश्वलायनस्मृतिः / आश्वलायनः३१. बौधायनस्मृतिः / बौधायनः

- 4. भागः.
- ३२. गौतमस्मृतिः / गौतमः३३. वृद्धगौतमस्मृतिः / गौतमः३४. यमस्मृतिः३५. लघुयमस्मृतिः३६. बृहद्यमस्मृतिः३७. अरुणस्मृतिः / अरुणः३८. पुलस्त्यस्मृतिः / पुलस्त्यः३९. बुद्धस्मृतिः४०. वसिष्ठस्मृतिः२ / वसिष्ठः४१. बृहद्योगियाजवल्क्यस्मृतिः / याजवल्क्यः४२. ब्रह्मोक्तयाजवल्क्यसंहिता / याजवल्क्यः४३. काश्यपस्मृतिः / काश्यपः४४. व्याघ्रपादस्मृतिः / व्याघ्रपादः.
- ५. भागः.
- ४५. कपिलस्मृतिः / कपिलः४६. वार्धूलस्मृतिः / वार्धूलः४७. विश्वामित्रस्मृतिः४८. लोहितस्मृतिः४९. नारायणस्मृतिः / नारायणः५०. शाण्डिल्यस्मृतिः / शाण्डिल्यः५१. कण्वस्मृतिः / कण्वः५२. दालभ्यस्मृतिः / दालभ्यः.
- ५३. आङ्गिरसस्मृतिः (२) पूर्वाङ्गिरसम् / अङ्गिरः५३. आङ्गिरसस्मृतिः (२) उत्तराङ्गिरसम् / अङ्गिरः५४. भारद्वाजस्मृतिः / भारद्वाजः.
- ६. भागः.
- [५५.] मार्कण्डेयस्मृतिः / मार्कण्डेयः.
- [५६.] लौगाक्षिस्मृतिः / लौगाक्षिः.
- ७. भागः.
- विषय वर्णन तथा श्लोकानुक्रमणी

Size Demy1/8 Pages 4654 (7 vols set) 2018 Rs. 7500



शब्दापशब्दविवेकः

(प्रतिसंस्कृतः) वाक्यपदीयस्य संस्कर्ता डॉ. चारुदेवशास्त्री

निवेदना

अर्थगत्यर्थः शब्दप्रयोगः। अर्थं च यथा शब्दोऽवगमयति तथाऽप-
शब्दोपि । तथापि शब्दमभिनन्दति लोकोऽवक्षिपति चापशब्दम् ।
प्रियङ्करणो हि शब्दप्रयोगः। य इच्छेत्प्रियोऽहं लोकस्य स्यामिति
स शब्दाञ्छीलयेत्साधीयश्च तान् व्यवहरेत् । आहं च भगवान्भाष्य-
कारः—समानायामर्थगतौ शब्देन चापशब्देन च शब्देनैवार्थोऽभियो
नापशब्देनेति । कश्चाब्दः कश्चापशब्दः । सूत्रानुसारी प्रयोगः शब्द
उत्सूत्रश्चापशब्दः । सूत्रेष्वेव तत्सर्वं यद् वृत्तौ यच्च वार्तिक इति
मतमाश्रित्येदमुच्यते । मतान्तरे तु संस्कारहीनशब्दोऽपशब्दः । स
एवापभ्रंशः । अपशब्दपरीहारश्च न सहेलं साध्यः । शब्दापशब्द-
विवेकनिबन्धनो हि सः । विदेकश्च विशारदस्यापि न सहसा जायते
किमुत शारदस्थेति प्रकृतो नो यत्नः । वार्ताच शिक्षमाणस्य प्रथम-
वैयाकरणस्य साचिव्यं किमपि चिकीषामीति प्रक्रममिमं प्रकृतोस्मि ।

अग्रं विषये शरणदेवविरचितां दुर्घटवृत्तिमतिरिच्य न काचित्
कृतिविद्यितेऽस्मत्कृते: पूर्वा । सा चैतस्या एकदेश एव समाविशत्यवहु
च व्याप्नोति । तत्र कवीनां महाकवीनां चात्पे केचन प्रयोगा दुर्घटा
इति चिन्तिताः । अस्याः कृतेस्तु भूयोविषयावगाहः । इह विनेयानां
वाचि प्रतीतास्ते ते प्रमादानां गोचरा बहुलं सङ्गृहीताः । नैतदेव ।
इदानीन्तानां कवीनामकवीनां च क्रियासु नैकविधासु वर्तमानाः
पाणिनीयशासनव्यतिक्रमलक्षणास्तास्ताः स्खलितयो निखिलेन
विभाविताः सुनिपुणं च परीक्षिताः । अद्यत्वे संस्कृतं लोकव्यवहारस्य
गोचरो नेत्यधीतिनोऽपि शास्त्रे प्रयोगे स्खलन्ति किमुत ये प्राधीताः ।
तस्मादसङ्कृतप्रबोधनसव्येक्षो लोको विशेषात् विनेयवर्गः । यदा
संस्कृतं लोके प्राचारीदाबालवृद्धं च प्रयोगविषयो ऽभृतदापि
क्वचित् क्वचित्प्रामदन्प्राञ्चोऽपीति तेषामपि वागिह साधु परीक्षिता ।
न जातु तेषां मान्यानामनादरोऽभिप्रेतः । पुराणादिषु भागवत-
व्यतिरिक्तेषु येऽपाणिनीया प्रयोगा अपभ्रंशलक्षणास्ते कृतेरस्या
प्रविषयः । जनसामान्यस्य कृते कृतास्ताः कृतयोऽर्थप्रधानाः शब्द-

सौष्ठवं नात्यन्तं समाद्रियन्तं । पाणिने: प्राक् प्राणीयन्तेति च तासु पाणिनीयशासनानुसारो न दोषाय न चोपालम्भायेत्यपि मतम् ।

इह कृतौ स्थितस्य गतिश्चन्तनायेति नात्यन्तं सूक्षितं वचः । अशक्यसमाधाने न समाधिः प्रसर्भं प्रवतितः । अस्थाने बुद्धिव्यायामः परिहृतः । शब्दादपशब्दे विविक्तः । न च तत्र वक्तुविशेषे संभावना प्रतिषेधिकाऽभून्न वेतरस्मिन्नवहेला प्रयोजिका । पापमध्य इवापत्रं-शेष्यः पूतेयं दैवी वाग् यथा स्यात्तथा प्रयस्तम् । अत्र प्रयासे कियती मे संकामतेति सुघियोत्र मानम् । नाहं किञ्चिद्विवक्षे । बलवच्च प्रतयेमि भूयसे समुपकाराय भविष्यतीयं कृतिः प्रतिपत्तेणां प्रतिपि-त्सूनां च ।

नेदम्प्रथमं प्रकाशनं कृते । अद्य वर्षपूगोऽस्याः प्रकाशितायाः । कालेनेयं दुर्लभाऽभूदिति भूयः प्रकाशनमुपेयते । प्राक् च प्रकाशनाद् भूयसा प्रतिसंस्कृतेयम् । इत्थम्भूतद्वचात्र प्रतिसंस्कारोऽभूत् । प्रथमे प्रकाशने समुदितोपि विवेच्यसङ्ग्रहो ग्रन्थपूर्वाद्देव न्यस्तः, तद्विवेचनं चोत्तरार्थं कृतम् । तथा स्थिते विवेच्यविवेचनयोर्वर्यवधिः सद्यः प्रतिपत्ते: प्रतिबन्धकोऽभूदायासाय च प्रतिपित्सोरिति सोऽनुक्रम इदानीमन्यथितः । विवेचनमिह विवेच्यस्यानन्तरमेव संनिवेशितम् । तेनेकत्रैव द्विपातमात्रेणानायासं जायते प्रज्ञानम् । आवापोद्वापावप्य-भूताम् । आवापेन च विपुलतरोऽत्र विवेच्यसंग्रहोऽभूत् । शतशोऽसंगृहीतचरण्य वाक्यानि साम्प्रतमभ्युचिततानि । उद्वापेन च व्यवहारव्यभिचारविषयाणां वाक्यानामल्पताऽपि संग्रहस्य समजनि । तथापि ग्रन्थकलेवरस्य प्रकर्षं एव पर्यणस्त नापकर्षः । स्वयं कृतं विवेचनं चेह महता प्रयत्नेन प्रशिष्ठितं मानुष्यकसुलभ-दोषाश्च प्रमार्जिताः । इत्थं प्रतिसंस्कृतोऽयं शब्दादपशब्दविवेकः सुतरां रोचिष्यते विद्दभ्यो विविदिषावदभ्यश्चेत्याशासानोहं विरमामि विदां विवेयश्च चारुदेवः शास्त्री ॥

Size Demy 1/8 ISBN 81-7081-117-1 PP392 2019 Rs. 500.00

चार शुल्बसूत्र

(बोधायन, मानव, आपस्तंब और कात्यायन शुल्बसत्रों का हिन्दी अनुवाद)

डॉ. रघुनाथ पुरुषोत्तम कुलकर्णी



यजुर्वेद शाखा के श्रोतसूत्रों का अंतिम प्रकरण शुल्बसूत्र का होता है। अब तक नौ आचार्यों द्वारा लिखे हुये शुल्बसूत्र उपलब्ध हैं। किन्तु बोधायन, मानव, आपस्तम्ब और कात्यायन आचार्यों के शुल्बसूत्र अपने वैशिष्ठ्य रखते हैं, इतर शुल्बसूत्र इन चार शुल्बसूत्र के किसी एक जैसे हैं। इसीलिये केवल इन चार आचार्यों के शुल्बसूत्र का अनुवाद किया है। श्रौत्रयज्ञों के लिये मंडप, वेदि, अग्निकुर्ड, अग्निचौति इत्यादिओं की रचना शास्त्रशुद्ध रिति से करने की जानकारी शुल्बसूत्र में देते हैं। इसके पायाभूत भूमिति के नियम भी देते हैं। बोधायन शुल्बसूत्र में श्येन, अलज, प्रउग, रथचक्र, कूर्मे इत्यादि तेरह चितिओं का (ईंटों के चबूतरों का) निर्माण करने की शास्त्रशुद्ध जानकारी दी है। मानव, आपस्तम्ब और कात्यायन शुल्बसूत्र में भी चिति के रचने की जानकारी दी है। इन चितिओं का निर्माण भूमिति के नियमों के आधार पर ही करते हैं। शुल्बसूत्र भारतीय भूमिति शास्त्र का मूल स्रोत है। वे अपना विशिष्ट महत्त्व रखते हैं।

साईंज डिमाई 1/8

पेज 428

मूल्य रुपये 600



श्रीमद्दीकण्ठाचार्यकृतं

ब्रह्मसूत्रभाष्यम्

श्रीमद्पर्यदीक्षितवृत्तशिवार्कमणिदीपिकाख्यब्याख्यासहितम् ।
तैरेव प्रगीतया तत्तदधिकरणपूर्वपक्षसिद्धान्तसंग्रहकपद्यरूपया
नयमणिमालया सनाथीकृतं च । रा. हालास्यनाथशास्त्रिणा संशोधितम् ।
स्वप्रगीतया चतुर्मुखसंग्रहरूपया सूतार्थचन्द्रिकया संयोजितं च ।

This work forms the first of the two volumes of Sivrkamaqnidipika, Appayya Dikshita's famous commentary of Srikantha's Bhasya on the Brahma Sutra, Srikantha's Bhashya, it may be mentioned, constitutes the interpretation of the ancient Brahma Sutras from the Saiva stand-point. Srikantha Bhasya, with the lucid commentary of Appayya Dikshita, has not been printed before, and the danger was apprehended that in a few years the available MSS. may completely withen away. Though the existing MSS. were mostly moth-eaten and scattered in isolation and oblivion all over India, the editor resolved to spare no pains in collecting the available MSS. and by printing it.

साईज डिमाई 1/8 पेज 1132 (2 भागों में) संस्करण 2019 मूल्य 2500



चारों वेद

(मूल तथा मन्त्रानुक्रमणिका सहित)
वेद दुनिया के सबसे पुराने लिखित दस्तावेज हैं। वेद हिन्दू धर्म के सर्वोच्च और सर्वोपरि धर्मग्रन्थ हैं। सामान्य भाषा में वेद का अर्थ है 'ज्ञान'। वस्तुतः ज्ञान वह प्रकाश है जो मनुष्य—मन के अज्ञान—रूपी अन्धकार को नष्ट कर देता है। वेदों को इतिहास ज्ञान—विज्ञान का अथाह भण्डार है।

वेद शब्द संस्कृत के विद शब्द से निर्मित है अर्थात् इस एक मात्र शब्द में ही सभी प्रकार का ज्ञान समाहित है। प्राचीन भारतीय ऋषि जिन्हें मंत्रद्रिष्ट कहा गया है, उन्होंने मन्त्रों के गूढ़ रहस्यों का ज्ञान कर, समझ कर, मनन कर उनकी अनुभूति कर उस ज्ञान को जिन ग्रंथों में संकलित कर संसार के समझ प्रस्तुत किया वो प्राचीन ग्रन्थ 'वेद' कहलाये हैं। वेद भारतीय संस्कृति के वे ग्रन्थ हैं, जिनमें ज्योतिष, गणित, विज्ञान, धर्म, औषधि, प्रकृति, खगोल शास्त्र आदि लगभग सभी विषयों से सम्बन्धित उपाय तथा जो इच्छा हो उसके अनुसार उसे प्राप्त करने के उपाय संग्रहित हैं।

हम लोग चारों वेदों के मूल मन्त्रों का सातवलेकर संस्करण को बड़े साईज, डिमाई 1/8 में अच्छे कागज और पापलीन जिल्द के साथ प्रकाशित कर रहे हैं।

साईज डिमाई 1/8 पेज 1882 4 भागों में

संस्करण 2019

मूल्य रुपये 1600



KaśmīraśabdāmRtam: A Critical Study

Prof. Satyabhama Razdan

“KaśmīraśabdāmRtam: A Critical study” is a landmark research work of historic importance by an accomplished scholar. The author has incisively and comprehensively examined the only grammar and linguistic study of Kashmiri written in Sanskrit. This study is primarily based on a hand written manuscript of KashmīraśabdāmRtam written by Īśvar Kaul in the 19th century A.D. The manuscript comprising 422 pages is written on the Pāṇinian model. This monumental work consisting of ten chapters presents a detailed description of the grammatical structure of Kashmiri including its Phonology and Morphology. In view of these aspects its importance in Kashmiri linguistics needs to be brought to light. The fact of having been written in Sanskrit has restricted its access to the non Sanskrit knowing scholars in the state and elsewhere. It is, therefore, timely and necessary to bring this monumental work into the public domain to make it accessible to scholars and researchers and to facilitate their language needs in the area of structural linguistics. The value of this research work is greatly enhanced by the fact that it has been undertaken by a scholar whose mother tongue is Kashmiri and who is a teacher and researcher of Sanskrit and Linguistics.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-699-8 pp 548 2019 Rs. 1500

श्रीब्रह्मवैर्त महापुराण



ब्रह्मवैर्त महापुराण वेदमार्ग का दसवां पुराण है। 18 पुराणों में प्राचीनतम पुराण ब्रह्मवैर्त महापुराण को माना गया है। इस पुराण में जीव की उत्पत्ति के कारण और ब्रह्मजी द्वारा समस्त भूमण्डल, जलमण्डल और वायुमण्डल में विचरण करने वाले समस्त जीवों के जन्म और उनके पालन पोषण का सविस्तार वर्णन किया गया है। इसमें भगवान

श्रीकृष्ण की लीलाओं का विस्तृत वर्णन, श्रीराधा की गोलोक-लीला तथा अवतार-लीला का सुन्दर विवेचन, विभिन्न देवताओं की महिमा एवं एकरूपता और उनकी साधना-उपासना का सुन्दर निरूपण किया गया है। अनेक भक्तिपरक आख्यानों एवं स्तोत्रों का भी इसमें अद्वृत संग्रह है। इस पुराण में चार खण्ड हैं, ब्रह्मखण्ड, प्रकृतिखण्ड, श्रीकृष्णजन्म खण्ड और गणेश खण्ड। यह वैष्णव पुराण है। इस पुराण में श्रीकृष्ण को ही प्रमुख इष्ट मानकर उन्हें

सुष्टि का कारण बताया गया है। 'ब्रह्मवैर्वत्' शब्द का अर्थ है — ब्रह्म का विवर्त अर्थात् ब्रह्म की रूपान्तर राशि। ब्रह्म की रूपान्तर राशि 'प्रकृति' है। प्रकृति के विविध परिणामों का प्रतिपादन ही इस 'ब्रह्मवैर्वत् पुराण' में प्राप्त होता है। कहने का तात्पर्य है प्रकृति के भिन्न-भिन्न परिणामों का जहां प्रतिपादन हो वही पुराण ब्रह्मवैर्वत् कहलाता है। विष्णु के अवतार कृष्ण का उल्लेख यद्यति कई पुराणों में मिलता है, किन्तु इस पुराण में यह विषय भिन्नता लिए हुए है। 'ब्रह्मवैर्वत् पुराण' में कृष्ण को ही 'परब्रह्म' माना गया है। जिनकी इच्छा से सुष्टि का जन्म होता है। 'ब्रह्मवैर्वत् पुराण' में श्रीकृष्ण लीला का वर्णन 'भागवत पुराण' से काफी भिन्न है। 'भागवत पुराण' का वर्णन साहित्यिक और सात्त्विक है जबकि 'ब्रह्मवैर्वत् पुराण' का वर्णन श्रृंगार रस से परिपूर्ण है। इस पुराण में सुष्टि का मूल श्रीकृष्ण को बताया गया है।

यह पुराण कहता है कि विश्व में असंख्य ब्रह्माण्ड विद्यमान हैं। प्रत्येक ब्रह्माण्ड के अपने-अपने विष्णु, ब्रह्मा और महेश हैं। इन सभी ब्रह्माण्डों से भी ऊपर स्थित गोलोक में भगवान श्रीकृष्ण निवास करते हैं। सुष्टि निर्माण के उपरान्त सर्वप्रथम उनके अर्द्ध वाम अंग से राधा प्रकट हुई। कृष्ण से ही ब्रह्मा, विष्णु, नारायण धर्म, काल, महेश और प्रकृति की

उत्पत्ति बतायी गयी है, फिर नारायण का जन्म कृष्ण के दाये अंग से और पंचमुखी शिव का जन्म कृष्ण के वाम पार्श्व से हुआ। नाभि से ब्रह्मा, वक्षस्थल से धर्म, वाम पार्श्व से पुनः लक्ष्मी, मुख से सरस्वती और विभिन्न अंगों से दुर्गा, सावित्री, कामदेव, रति, अग्नि, वरुण, वायु आदि देवी-देवताओं का आविर्भाव हुआ।

संरचना : व्यासजी ने ब्रह्मवैर्वत् पुराण के चार भाग किये हैं, ब्रह्म खण्ड, प्रकृति खण्ड, गणपति खण्ड और श्रीकृष्ण जन्म खण्ड निनलिखित हैं —

ब्रह्म खण्ड— ब्रह्म खण्ड में भगवान श्रीकृष्ण के चरित्र की लीलाओं का वर्णन है। ब्रह्म कल्प के चरित्र का वर्णन है। साथ ही तत्त्व ज्ञान का वर्णन है। इसी खण्ड में श्रीकृष्ण के अर्द्धनारीश्वर स्वरूप में राधा का आविर्भाव उनके वाम अंग से दिखाया गया है।

प्रकृति खण्ड— प्रकृति खण्ड में देवियों के विभिन्न चरित्रों की चर्चा के साथ विशेष रूप में सरस्वती जी की पूजा का विधान आदि दिया है। अंत में देवी की उत्पत्ति और चरित्र का आख्यान है। इसमें विभिन्न देवियों के आविर्भाव और उनकी शक्तियों तथा चरित्रों का सुन्दर विवरण प्राप्त होता है। इस खण्ड का प्रारम्भ 'पंचदेवीरूपा प्रकृति' के वर्णन से होता है। ये पांच रूप यशदुर्गा, महालक्ष्मी, सरस्वती, गायत्री और सावित्री के हैं।

गणपति खण्ड— गणेश खण्ड में गणेश जी के जन्म की विस्तार से चर्चा तथा पुण्यक व्रत की महिमा, गणेश जी की स्तवन, दशाक्षरी विद्या व दुर्गा कवच का वर्णन है। गणेश के एकदन्त होने की कथा है। परशुराम कथा है।

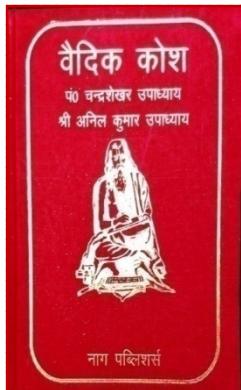
श्रीकृष्ण खण्ड— श्रीकृष्ण जन्म खण्ड में भगवान के जन्म तथा उनकी लीलाओं का बड़ा श्रृंगारी चित्रण यहां किया गया है। कृष्ण के बचपन व कालिया नाग से सम्पर्क की भी कथा है। गोरी व्रत की कथा भी है और अंत में रासकेन्द्र वृन्दावन का विस्तार से वर्णन है।

श्रीमद्भागवत में भी इसी प्रकार श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन उपलब्ध है। इसी खण्ड में सौ के लगभग उन वस्तुओं, द्रव्यों और अनुष्ठानों की सूची भी

दी गई है जिनसे सौभाग्य की प्राप्ति होती है। इसी खण्ड में तिथि विशेष में विभिन्न तीर्थों में स्नान करने और पुण्य लाभ प्राप्त करने का उल्लेख किया गया है।

Pothi 23X26/12

pp 1072 (2 Vols Set) 2018 Rs. 2500 (set)



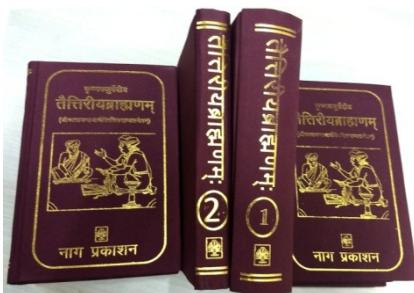
वैदिक कोश

पं. चन्द्रशेखर उपाध्याय
—श्री अनिल कुमार उपाध्याय

वैदिक साहित्य के अध्ययन एवं अन्वेषण के क्रम में प्रस्तुत विशद 'वैदिक कोश' एक महत्वपूर्ण योगदान है। लगभग 2000 पृष्ठों के इस ग्रन्थ के आकार प्रकार एवं सामग्री की दुरुहता से इस बात का अनुमान लगाया जा सकता है कि इस ग्रन्थ के लेखन में कितना परिश्रम हुआ होगा। यह 'वैदिक कोश' पं. चन्द्रशेखर उपाध्याय के सम्पूर्ण सक्रिय जीवन के परिश्रम की परिणति है।

वैदिक अध्ययन में विभिन्न प्रकार के कोशों के संकलन हुए हैं। इनमें ब्लूफिल्ड का 'Vedic Concordance' सबसे महत्वपूर्ण कृति है, जो वैदिक मन्त्रों की उनके संदर्भ के साथ अकारादि क्रम में सूची है। मैकडॉनल और कीथ का 'Vedic Index Names and Subject' भी एक मूल्यवान ग्रन्थ है। कतिपय पदों में मैकडानल एवं कीथ के इण्डेक्स तथा डा. सूर्यकान्त के कोश से बहुत अधिक सामग्री इस कोश में दी गई है, यथा पृष्ठ 76 में 'अनुमति' शब्द में 14 उद्धरण इस कोश में दिये गये हैं। जबकि डॉ. सूर्यकान्त के कोश में मात्र 4 ही उद्धरण दिये गये हैं। इसी प्रकार हंसराज 'वैदिक श्रौतकोश' में मात्र ब्राह्मण-ग्रन्थों के मूल उद्धरणों पर विशेष बल दिया गया है। जबकि इस कोश में विद्वान् लेखक ने संहिता और ब्राह्मण दोनों उद्धरणों का उल्लेख किया है। प्रस्तुत शब्दकोश की विशिष्टता है कि इसमें वैदिक शब्दों की सूची अत्यन्त विशाल है, तथा शब्दों के अर्थ के साथ उन मन्त्रों को उद्धृत किया गया है जिनमें वे प्रयुक्त हुए हैं। मन्त्रों का स्थान निर्देश संहिता के अतिरिक्त ब्राह्मण, आरण्यक, तथा उपनिषद् आदि अन्य वैदिक ग्रन्थों का भी दिया गया है। इस प्रकार नानाविधि विशेषताओं से युक्त यह 'वैदिक कोश' सभी वेदार्थ-जिज्ञासुओं के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

ISBN 81-7081-292-5 Crown 1/4 pp1540 (3 Vols Set) 1995 Rs.4500



कृष्णयजुर्वेदीय
तैत्तिरीयब्राह्मणम्
(श्रीमत्सायणाचार्यविरचितभा॒
यसमेतम्)

Taittiriya Barhma is related

to Taittiriya Samhita of Krishna Yajurveda. It may be

called the extensions of Taittiriya Samhita. Scholars agree that it is the oldest available Brahmana Grantha. Its text is accented like Satapatha Brahmana. The vocabulary and syntax also prove it the oldest one. The Sayanacharya has written his Bhasya first of all on this Brahmana. The Taittiriya Samhita and Taittiriya Brahmana both the works are popular throughout the South India. It has three Kandas and each Kanda is again divided into Adhyayas. The first and second Kanda are comprised of eight Adhyayas while third one has twelve chapters.

This Brahmana Grantha explains in details the performance of Agnyadhana, Vajpeya, Somayagas, Rajsuya, Sautramani sacrifices, all mentioned in Taittirya Samhita. The Purushamedha sacrifice is a speciality of this Brahamana. It discusses in detail the rights and duties of four varnas and Ashramas respectively. Pashuyagas and Ishtis are discussed elaborately. It is also very rich in old stories called Akyanas. The story of Bharadvaja, Nachiketa, Prahlada, Agastya are the main Akhyanas. Similarly Upakhyanas of Sita, Savitri and Usha are mainly the love stories, which make the book very interesting. In the second Kanda an elaborate discussion is given about the creation of the world. The publication of this Brahmana will surely be much interest of the Vedic scholars in India and abroad.

Demy 1/8
2018

ISBN-81-7081-395-6

pp 1330 (2 vols. set)
Rs.1500



वाचस्पत्यम्

(बृहत् संस्कृताभिधानम्)
श्रीतारानाथर्थवाचस्पति भट्टाचार्येण
संकलितम्

एच बुडरो ने अपनी 'वाचनिका' में इस कोश की विशेषता बताते हुए कहा कि 'विल्सन' की 'संस्कृत डिक्शनरी' और 'शब्दकल्पद्रुम' की अपेक्षा इसका क्षेत्र विस्तृत और गंभीरतर है। साथ ही तंत्र, दर्शन शास्त्र, छन्दःशास्त्र और धर्मशास्त्र के

ऐसे जाने कितने शब्द हैं जो 'राथ बोथालिंग्क' की संस्कृत-जर्मन-डिक्शनरी में नहीं हैं। इसमें यह भी बताया गया है कि 'शब्दकल्पद्रुम' का प्रथम संस्करण बंगला लिपि में प्रकाशित हुआ था। उस समय के उपलब्ध कोशों में अनुपलब्ध सैकड़ों हजारों शब्द इसमें संकलित हैं। सामन्य वैदिक शब्द तो हैं ही, साथ ही ऐसे भी अनेक वैदिक शब्द हैं जो तत्कालीन शब्दकोशों में अप्राप्य हैं। षड्दर्शनों के अतिरिक्त चार्वाक, माध्यामिक, योगचार, वैभाषिक, सौत्रांत्रिक, अर्हत, रामानुज, माधव, पाशुपत, शैव, प्रत्यभिज्ञा, रसेश्वर आदि अल्पलोकप्रिय दर्शनों के पारिभाषिक शब्दों का भी इसमें समावेश मिलता है। पुराणों और उपपुराणों से संगृहीत पुरातन राजाओं का इतिहास तथा प्रत्नयुगीन भारतीय भूगोल का भी इसमें निर्देश हुआ है। चिकित्साशास्त्र के पारिभाषिक शब्दों और अन्य विवरणों का भी विस्तृत निर्देश किया गया है। गणित ज्योतिष के पारिभाषिक शब्द भी हैं। यद्धपि वैदिक शब्दों के संकलन संपादन को कोशाकार ने अपने इस कोश की विशेष महत्ता बताई है तथापि बहुत से वैदिक शब्द वैदिक शब्द छूट भी गए हैं और बहुसंख्यक वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति और उनके अर्थ स्वकलित भी हैं। 'राथबोथालिंग्क' के बृहत्संस्कृत शब्दकोश के उपयोग का भी काफि प्रयत्न किया गया है।

'शब्दकल्पद्रुम' की अपेक्षा इसमें एम और विशेषता लक्षित होती है। 'शब्दकल्पद्रुम' में 'पद' सुबंत तिङत दिए गए हैं। प्रथमा एकवचन के रूप को कोश में व्याख्येय शब्द का स्थान दिया गया है। परन्तु 'वाचस्पत्यम्' में दिए गये शब्द 'पद' न होकर 'प्रतिपदिक' अथवा 'धातुरूप' में उपन्यस्त हैं। वैसे सामान्य दृष्टि से — रचनाविधान की पद्धति के विचार से — 'वाचस्पत्यम्' की 'शब्दकल्पद्रुम' का विकसित रूप कहा जा सकता है।

Size Demy 1/4 Pages 5500 (6 vols set)

2018

Rs. 18000



भुवनकोशतत्त्वमीमांसा

— डॉ. अनिल कुमार पोरवाल

‘भुवनकोशतत्त्वमीमांसा’ यह ग्रन्थ मूलतः ज्योतिर्विज्ञान, भूगोल तथा आधुनिक विज्ञान के अन्तर्सम्बन्धों पर आधारित है, जिसके अन्तर्गत सृष्टिपरिकल्पना के वैदिक, दार्शनिक तथा ज्योतिर्वैज्ञानिक दृष्टिकोणों को स्पष्ट करते हुए आधुनिक विज्ञान द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों का तुलनात्मक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। ब्रह्माण्डोत्पत्ति के साथ ब्रह्माण्ड के स्थूल सदस्यों का सारेपाँग वर्णन करते हुए भूमण्डलोपरि व्याप्त ज्योतिषास्त्रोत्तर सप्तवायुस्कचों तथा आधुनिक भूगोल में उद्भूत पंचवायुस्तरों का आलोचनात्मक वर्णन करते हुए अग्रिम शोध सम्भावनाओं पर प्रकाश डाला गया है। इस ग्रन्थ में पृथ्वी के स्वरूप, ग्रह-कक्षाक्रम, आधारपरम्परा, गोलत्त्व का निर्धारण, समतलत्व प्रतीति के कारण और निराकरण, मध्यम तथा स्पष्ट भूपरिधिमान, व्यासमान, उत्तरी व दक्षिणी गोलाद्वार्द्धों का भेद, अक्षांश-देशान्तर की अवधारणा, उनका आधुनिक यन्त्रों के माध्यम से साधन, चतुर्दीपा वसुमती, समुद्रों से आवृत्त जम्बूद्वीपादि सप्तद्वीपा वसुमती के पौराणिक, ज्योतिर्वैज्ञानिक तथा आधुनिक वैज्ञानिक मन्त्रव्यों का विवेचनात्मक उल्लेख करते हुए कूर्मचक्र के द्वारा स्थान विशेष के संहितोत्तर फलों का कथन किया गया है।

यह ग्रन्थ निश्चित ही ज्योतिर्विज्ञान, पुराण, साहित्य, आधुनिक विज्ञान, इतिहास, भूगोल आदि विषयों के विद्वान, अध्येताओं तथा शोधार्थियों के लिये परमादेय होगा।

Size Demy 1/8

ISBN 81-7081-697-1

PP 430 (2018)

Rs. 500

नारायणपण्डितसंगृहीतः

हितोपदेशः

मूल पाठेन, अनुवादेन, विविध-विषय-विवरणेन,

कथानुक-मणिकायुतेन, श्लोकानुकमणिका,

परीक्षोपयोगि-प्रश्नपद्याद्यनेकविषयैश्च संयुतः)

भाषान्तरकार पं. रामेश्वर भट्ट, सम्पादक श्रीनारायण राम आचार्य
(काव्यतीर्थी)

विदित हो कि नीति एक ऐसा शास्त्र है कि जिसको मनुष्यमात्र व्यवहार में लाता है, क्योंकि बिना उसके निर्वाद नहीं हो सकता। यद्यपि राजनीति के एक से एक अपूर्व ग्रन्थ संस्कृत भाषा में पाये जाते हैं तथापि पण्डित विष्णुशर्मारचित पंचतन्त्र परम प्रसिद्ध है, क्योंकि उस ग्रन्थ में नीतिकथा इस उत्तम प्रणाली से लिखी गई है कि जिसके पढ़ने में रुचि और समझने में सुगमता होती है और अन्य देशियों ने भी इसका बड़ा ही समादर किया। पण्डित नारायणजी ने उक्त पंचतन्त्र तथा अन्य नीति के ग्रन्थों से हितोपदेश नामक एक नवीन ग्रन्थ संगृहीत करके प्रकाशित किया, कि जो पंचतन्त्र की अपेक्षा अत्यन्त सरल और सुगम है और विद्वानों ने हितोपदेश को ‘यथा नाम तथा गुणः’ समझा कर अत्यन्त आदर दियज्ञ

Size Cromo 1/8

PP 294

(2018)

Rs. 250.00



कौटिलीयम् अर्थशास्त्रम्

महामहोपाध्यायेन त. गणपतिशस्त्रिणाविरचितया

श्रीमूलाख्यया व्याख्यया समुपेतं तनैव संशोधितम्। भूमिका –

लेखक : डॉ. एन. पी. उन्नीमहोदयः, संस्कृतविभागाध्यक्षः,

केरलविश्वविद्यालयः, त्रिवेन्द्रम्।

There is no other name in the history of ancient Indian political thought which commands as much commands as much popularity and respect as that of the author of Arthashastra. The name of the author of Arthashastra is found mentioned in numerous works in Sanskrit literature.

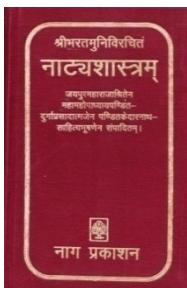
Studies embracing the different aspects of Arthashastra are carried out even at present in research-oriented institutions. But the impetus provided by Ganapati Sastri after the intitial discovery and publication by Shama Sastri can never be over-estimated. He brought to bear on the topic his rich experience and uncanny talent. His effort in composing the first ever complete commentary on the Arthashastra is stupendous, to say the least. F. Edgerton has no hesitation to pronounce that “Dr. Ganapati Sastri edition of the Kautaliya Arthashastra, with commentary, is decidedly the best edition of that all important work in existence.”

Size Demy 1/8

PP 1172 (3 Vols set)

(2018)

Rs. 2000.00



भरतमुनिविरचितं

नाट्यशास्त्रम्

जयपुरमहाराजश्रितेन

महामहोपाध्यायपण्डितदुर्गाप्रसादात्मजेन
पण्डितकेदारनाथसाहित्यभूषणेन सम्पादितम्।

नाटकों के संबंध में शास्त्रीय जानकारी को नाट्यशास्त्र कहते हैं। इस जानकारी का सबसे पुराना ग्रंथ ही नाट्यशास्त्र के नाम से जाना जाता है जिसके रचयिता भरतमुनि थे। भरत मुनि का काल ४००ई के निकट माना जाता है। संगीत, नाटक और अभिनय के संपूर्ण ग्रंथ के रूप में भरत मुनि के नाट्य शास्त्र में केवल नाट्य रचना के नियमों का आकलन नहीं होता बल्कि अभिनेता रंगमंच और प्रेक्षक इन तीनों तत्वों की पूर्ति के साधनों का विवेचन होता है।

37वें अध्यायों में भरत मुनि ने रंगमंच अभिनेता अभिनय नृत्य गीत वाद्य,

दर्शक, दशरूपक और रस निष्पत्ति से संबंधित सभी तथ्यों का विवेचन किया है। भरत के नाट्यशास्त्र के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि नाटक की सफलता केवल लेखक की प्रतिभा पर आधारित नहीं होती बल्कि विभिन्न कलाओं और कलाकारों के सम्यक के सहयोग से ही होती है।

इस ग्रंथ में प्रत्यभिज्ञादर्शन की छाप है। पहले अध्याय में नाट्योत्पत्ति, दूसरे में मंडप विधान देने के पश्चात् अगले तीन अध्यायों में नाट्यारम्भ से पूर्व की प्रक्रिया का विधान वर्णित है। छठे और सातवें अध्याय में रसों और भावों का व्याख्यान है, जो भारतीय काव्य शास्त्र में व्याप्त रससिद्धान्त की आधारशिला है। आठवें और नवें अध्याय में उपांग एवं अंगों द्वारा प्रकल्पित अभिनय के स्वरूप की व्याख्या कर अगले चार अध्यायों में गति और करणों का उपन्यास किया है। अगले चार अध्यायों में छन्द और अलंकारों का स्वरूप तथा स्वर विधान बतालाया है। नाट्य के भेद तथा कलेवर का सांगोपांग विवरण १८वें और १९वें अध्याय में देकर २०वें वृत्ति विवेचन किया है। तत्पश्चात् २९वें अध्याय में विविध प्रकार के अभिनयों की विशेषताएँ दी गई हैं। २९ से ३४ अध्याय तक गीत वाद्य का विवरण देकर ३५वें अध्याय में भूमि विकल्प की व्याख्या की है। अंतिम अध्याय उपसंहारात्मक है।

वस्तुतः, यह ग्रंथ नाट्य संविधान तथा रससिद्धान्त की मौलिक संहिता है। इसकी मान्यता इतनी अधिक है कि इसके वाक्य भरतसूत्र कहे जाते हैं। सदियों से इसे आर्ष सम्मान प्राप्त है। इस ग्रंथ में मूलतः १२००० पद्य तथा कुछ गद्यांश भी था, इसी कारण इसे द्वादश साहस्री संहिता कहा जाता है। परंतु काल क्रमानुसार इसका संक्षिप्त संस्करण प्रचलित हो चला जिसका आयाम छह हजार पद्यों का रहा और यह संक्षिप्त संहिता 'षट्साहस्री' कहलाई। भरतमुनि उभय संहिता के प्रणेता माने जाते हैं और प्राचीन टीका कारों द्वारा उनका 'द्वादश साहस्रीकार' तथा 'षट्साहस्रीकार' की उपाधि से परामर्श यत्र तत्र किया गया है।

Size Demy 1/8 PP 676 (2018) Rs. 1000.00

LIST OF PURANAS

1. अग्नि महापुराण(भूमिका, मूल तथा श्लोकानुक्रमणी सहित)–
डॉ. आर. एन. शर्मा
Pothi form pp 664 (II Ed.) 2018 ISBN 81-7081-048-5 Rs.1500.00
2. **श्रीब्रह्माण्ड महापुराण**
Pothi 23X26/12 pp 694 2022 Rs. 1500.00
3. **श्रीब्रह्मवैर्त महापुराण**
Pothi 23X26/12 pp 1072 (2 Vols Set) 2018 Rs. 2500.00 (Set)
4. **श्री गणेशपुराणम्**—(मूल, तथा श्लोकानुक्रमणी सहित) –
श्री नागशारण सिंह
POTHI FORM PP 544 ED. 2015 ISBN 81-7081-279-8 Rs.1500
5. **श्रीनारद महापुराण**
Pothi 23X26/12 pp 718 2022 Rs. 2000.00
6. **पञ्च महापुराणम्** –(भूमिका, मूल तथा श्लोकानुक्रमणी सहित) –
प्रो. चारुदेव शास्त्री
POTHI FORM PP 2388 (4 VOLS) 2018 ISBN 81-7081-052-3 Rs.5000
7. **स्कन्द महापुराण**— (भूमिका, मूल तथा श्लोकानुक्रमणी सहित) –
डॉ. आर. एन. शर्मा
POTHI FORM PP5600 (8 VOLS) 2012(HIND ED.)ISBN 81-7081-000-0
RS.10000
8. **वामन महापुराण** –(भूमिका, मूल तथा श्लोकानुक्रमणी सहित)
–डॉ. जियालाल कम्बोज
POTHI FORM PP 472 3RD ED 2002 ISBN 81-7081-063-9
RS.1000
9. **लिंग महापुराण** – (मूल, शिवतोषिणी संस्कृत टीका तथा
श्लोकानुक्रमणी सहित)
POTHI FORM PP774 (HIND ED.)2009 ISBN81-7081-208-9
RS.1200
10. **भागवत महापुराण** –मूल अन्वितार्थ प्रकाशिका टीका भूमिका
–डॉ. आर. एन. शर्मा तथा श्लोकानुक्रमणी सहित।
POTHI FORM PP 2304 (4 VOLS) 2004 ISBN 81-7081-145-7 Rs.5000
11. **गरुड महापुराणम्** –(भूमिका, मूल तथा श्लोकानुक्रमणी सहित) –
डॉ. आर. एन. शर्मा
POTHI FORM PP 608 (III RD ED.) 2012 ISBN 81-7081-050-7
RS.1500

12. हरिवंश पुराण – (भूमिका, मूल, भाषा टीका तथा श्लोकानुक्रमणिका सहित) – प्रो. चारुदेव शास्त्री

POTHI FORM PP 1802 (2 VOLS) 2015 ISBN 81-7081-075-2 Rs.3500

13. शिव महापुराण –(भूमिका, मूल तथा श्लोकानुक्रमणी सहित) – प्रो. पुष्येन्द्र कुमार

POTHI FORM PP 1504(2 VOLS) ED. 2005 ISBN 81-7081-066-3 Rs.2500

14. ब्रह्म महापुराण –(मूल, भूमिका तथा श्लोकानुक्रमणी सहित) – डॉ. आर. एन. शर्मा

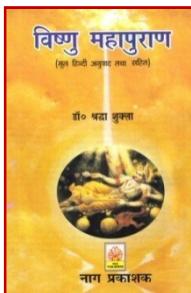
POTHI FORM PP 724 ED. 2017 ISBN 81-7081-057-4 Rs.1500

15. श्री विष्णुमहापुराणम्–(भूमिका, मूल, विष्णु चित्त्यात्मप्रकाशाख्य श्रीधरीय व्याख्या तथा श्लोकानुक्रमणी सहित) –डॉ. आर एन शर्मा

POTHI FORM PP 608 ED. 2015 ISBN 81-7081-042-6 Rs.1500

16. श्रीमन्महाभारतम्–वेदव्यास रचित – (श्री मन् नीलकण्ठ विरचित भारतभावदीपाख्य, टीका, श्लोक तथा नामानुक्रमणी और आचार्य डॉ. मण्डनमिश्र की भूमिका सहित)

POTHI FORM PP 5500 (9 VOLS) 2020 ISBN 81-7081-182 Rs.13500



श्रीविष्णु महापुराण-

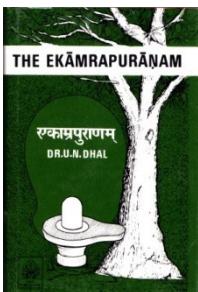
(मूल, हिन्दी अनुवाद सहित)

डॉ. श्रद्धा शुक्ला

पुराणों में विष्णु—पुराण को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। दार्शनिक महत्त्व की दृष्टि से यह भागवत पुराण के बाद आता है। यह वैष्णव दर्शन का मूल आधार है। पञ्च—लक्षण रूप में यह पुराण अन्य पुराणों की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है। विष्णु के माहात्म्य का कीर्तन करने के बाद पराशर विश्व की सृष्टि की वर्णन करते हैं। यहाँ मूल सांख्य दर्शन के सिद्धान्तों को लोक—प्रचलित विचारों से मिला दिया गया है। देवों, दैत्यों, वीरों तथा मानव जाति के आदि पुरुषों की उत्पत्ति के वर्णन के साथ अनेक काल्पनिक कथाएँ, रूपक तथा आदि राजाओं और ऋषियों के आख्यान हैं। समुद्र—मंथन, श्री देवी, कुमार ध्रुव, प्रह्लाद आदि प्रसिद्ध कथाओं का इसमें वर्णन है। विष्णु पुराण में भारत का भूगोल, मनुओं तथा उनके मन्चन्तरों का वर्णन, सूर्यवंशी तथा चन्द्रवंशी राजाओं का वर्णन, दक्ष की उत्पत्ति, इला का पुरुष बनना, इक्षवाकु का मनु की छींक से होना, कृष्ण की जीवनी, तथा कृत, त्रेता, द्वापर और कलि इन चार युगों आदि का वर्णन है।

प्रस्तुत संस्करण में मूल श्लोक के साथ साथ हिन्दी अनुवाद सरल भाषित स्तर पर संजोया गया है। यह भी प्रयत्न किया गया है कि अनुवाद की विश्वनियता एक शोधपूर्ण संस्कृत व्याख्या से कम न हो।

**Demy1/8 ISBN 81-7081-415-4 (set) 2005 pp 1000(2 vols set)
Rs. 1500**



THE EKAMRA PURANAM (Critical Edition)

एकाम्र पुराणम्— समीक्षात्मकं सम्पादनं

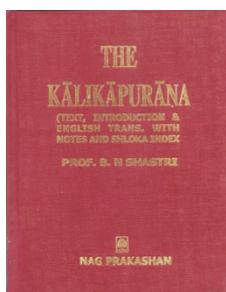
Dr. U. N. Dhal

The Ekamra Purana tries to highlight the Ekamra Kshetra, a well-known Shaiva Kshetra of Orissa together with the historical, cultural and religious traditions prevailing place of their origin. Though it is included in the group of four Sanskrit texts which praise the Ekamra Kshetra, it appears to be far the oldest and the best and is voluminous In size. It consists of 70 Adhyayas and claims to have six thousand verses. The work is divided into five Amshas or parts; and the Amshas consists of 10, 22, 14, 16 and 8 Adhyayas respectively. It is a Shivaite text and puts Shiva in superior position to Brahma, Vishnu and other gods. In the usual pattern of the Puranas it opens with an account of the origin of the universe as well as of Brahma, Vishnu and Rudra from Shiva after the description of Mahapralaya or great dissolution and the cosmography in the first part. In subsequent parts it professes to deal with the origin and history of the notable temples in the Ekamra Kshetra at Bhubaneswar along with other matters as the rituals, festivals and the merits that accrue from the worship or the particular deities. The work informs about the number of temples existed at the time of its composition. Some of the Adhyayas have been devised to serve as Pilgrims guide for various purposes.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-080-3 PP 476
2014 Rs. 600.00

THE KALIKAPURANA

(TEXT, INTRODUCTION AND
TRANSLATION IN ENGLISH VERSEWISE
WITH SHLOKA INDEX
- BY B.N. SHASTRI & EDITED BY
SURENDRA PRATAP



The Kalika Purana is one of the eighteen (Upa) Puranas'. Though technically an upa-purana, it is called Kalika-Purana or Kali-Purana, composed to popularise the cult of Sakti, particularly the

worship of the mother Goddess Kamakhya.

The first half of the Kalika-Purana (though not divided into parts) deals with the marriage of Sakti to Siva, her death and re-birth and re-union with Siva, the identification of Mahamaya (Goddess) with Kamakhya, the Naraka myth and Vasistha's curse on Kamakhya etc.

The second half deals exclusively the ritual procedure of worshipping

the Goddess. Kalika Purana also gives a vivid description of the hills, rivers and sacred places of Kamarupa, with the presiding deities. The

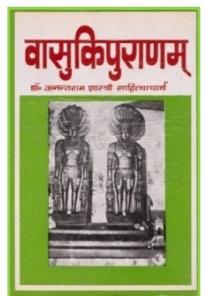
text of the Kalika Purana has been edited critically by comparing all the printed text including one edited by the present author and four manuscripts, two from India Office Library, London. The Sanskrit text is followed by a faithful English translation with verse-index, notes, study.

Crown 1/4

PP 916

2020

Rs.2000



श्रीवासुकिपुराणम्

(समीक्षात्मक सम्पादन)

सम्पादक

डॉ. अनन्तराम शास्त्री

The predominance of the Nag-cult in the Vasuki Purana strikes a synthesis between Buddhist and Shaiva Schools. This tendency is clearly visible throughout the work.

The author of the Vasuki-Purana has tried to bridge the gulf between the Shaivas and the Vaisnavas by propounding the doctrine of trinity (Trideva).

The Vasuki-Purana is an attempt to synthesize the doctrine of salvation as laid down in Buddhism and Shaivism. It lays emphasis on purity, renovation and self-study in thought, word and deed, while strengthening the precepts of Brahmanism. Thus the work fully represents the medieval values. Along with a synthetic attitude, one finds in it a sense of mundane welfare as well. The Vasuki Purana emphasis only worldly welfare. The Vasuki Purana prefers Pravrtti-Marga as against the Nivrtti-Marga. Under the impact of Buddhism the Vasuki Purana inspires one toward the Pravrtti-Marga. In this work Dr. A. R. Shastri has dealt with the data of the Vasuki Purana and its place in the Pauranika literature. The Vasuki Purana is a part of the work called Bhuvanakosa Varnanodyota which is again a part of Bhringissamhita.

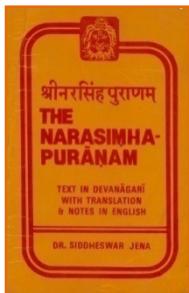
Demy 1/

ISBN-81-7081-204-6

pp 570

2023

Rs. 350



THE NARASIMHA PURANAM (Text with English Trans. & Shloka Index) -S. Jena

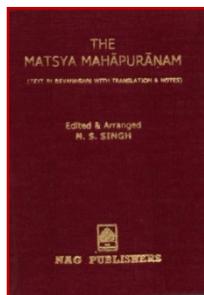
INTRODUCTION BY PROF. PUSHPENDRA KUMAR

The present work Narasimha Purana adds to those puranic text which are available. All scholars interested in history of the Vaisnava faith will highly welcome and appreciate the fact that one of the Vaisnava

Upapuranas, the Sanskrit text of which has long been out of print, is now being made accessible for detailed research. From the contents of Narasimha Purana as it is available to us, it is clear that this

Purana is meant exclusively for the glorification of Narasimha. In this Purana Narayana (or Vishnu) is described as four-armed, yellow-robed, having a complexion like that of a cloud and holding conch, mace, lotus and discus in his hands, he is identified with Brahman of Vedanta and Purusa of Samkhya.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-688-2 pp386 2014 Rs. 1000



THE MATSYA MAHAPURANAM

(TEXT IN SANSKRIT WITH TRANSLATION & NOTES)

N. S. SINGH

Matsya Purana "That in which, for the sake of promulgating the Vedas, Vishnu, in the beginning of a kalpa related to Manu, the story of Nrishimha and the events of seven Kalpas, that O sages known to be the Matsya Purana, containing twenty thousand stanzas.

The Purana, after the usual prologue of Suta and the Rishis is open with the account of the

Matsya or 'fish' Avatar of Vishnu in which he reserves a king named Manu, with the seeds of all things, in an ark, from the waters of that inundation which in the season of a Pralaya overspreads the world. In the latter, he brings them all together by the power of yoga. In the latter, the great serpents come to the king, to serve as cords where with to fasten the art to the horn of the fish. This story is told in the Mahabharata, with reference to the Matsya as its authority; from which it might be inferred that the Purana was prior to the poem.

**DEMY 1/8 PP 1252 (2 VOLS) (2ND ED.) 2015 ISBN 81-7081-045-0
RS. 2000**

EMERGING TRENDS IN CONTEMPORARY SANSKRIT LITERATURE -

DR GAURI MAHULIKAR & DR. MADHAVI
NARSALAY



This book is a collection of essays on topics pertaining to Contemporary Sanskrit Literature. Poetic genius has derived source of creative inspiration from Sanskrit.

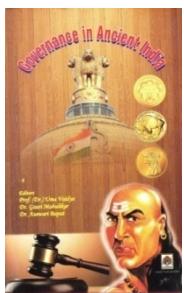
Sanskrit writers have composed works on literary merit in ancient and

modern styles. This book documents and critically analyses literature like *mahākāvyas*, novels, free-verse poetry, satire, biographies, street-plays etc. It takes into account the roles of periodicals and television-scripts in propagating the rich heritage of Sanskrit.

Demy1/8 ISBN81-7081-687-4

2013 pp334

500.00



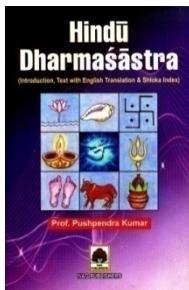
GOVERNANCE IN ANCIENT INDIA

Editors - Prof. Uma Vaidya, Dr. Gauri Mahulikar & Dr. Asawari Bapat

The present volume contains eighteen papers and an appendix presented in the National Seminar on "Governance in Ancient Indian", organised jointly by the Sanskrit Department of Mumbai University and Observer Research Foundation, Mumbai. The seminar was organised in December, 2010 to mark the centenary year of the discovery of Kautilya's Arthashastra, a systematic treatise on Polity. Various sub topics like Education, Statecraft, Judiciary, Legal Documents, Revenue, External Affairs, Internal Security and the like are dealt with in this volume. Right from the Vedic literature to the classical Sanskrit literature, references to good governance are scattered all over.

Governance firmly founded on moral order is prescribed as the most ideal type by Ancient-Indian thinkers. Curious readers would certainly benefit from this volume, if they relate wisdom of the past to the contemporary issues.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-689-0 2013 pp 256 Rs. 400.00



HINDU DHARMA SHASTRA (Introduction, Text With English Trans. & Sloka Index)

- Ed. Prof. Pushpendra Kumar

The Dharmashastra occupies a prominent place in the Sanskrit literature. It has always served as a source book of Hindu jurisprudence. It has been a veritable storehouse of information for the social, cultural, political and religious aspects of ancient Indian society. It is the very essence of Hinduism. Its' deeper study helps in the proper understanding of the Ancient Indian Culture.

The Dharma Shastras of the Hindus, are not one single book but consist of the Samhitas or Institutes of holy sages numbering twenty according to the list given by Yājnavalkya, These are namely, Manu, Atri, Vishnu, Harita, Yāgnavalkya, Ushana, Āngira, Yama, Āpastamba, Samvarta, Kātyayana, Brihaspati, Parāśara, Vyāsa, Sankha, Likhita, Daksha, Gautam, Satatāpa and Vasistha samhitās respectively.

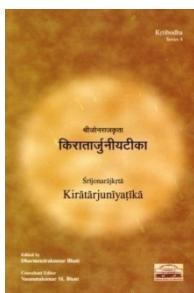
In this collective addition will give to the readers the complete text of all the twenty smritis, fully edited. The English translation is a literal one as far as it could be attempted, keeping an eye to eye on its accuracy and literary excellence.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-674-2 pp 2562 (6 vols set) 2012 Rs 5000.00

Kṛtibodha Serie

ŚRĪJONARĀJAKṚTĀKIRĀTĀRJUNIYATĪKĀ

Transcribed & Critically edited (3 Cantos) by DHARMENDRAKUMAR BHATT



The experiences and knowledge from our past are recorded in manuscripts which have been handed down to us over several thousand years. The Government of India through the Department of Culture, took note of the importance of vast tangible heritage of India and established the National Mission for Manuscripts with the purpose of locating, documenting, preserving and disseminating the knowledge content of India's manuscripts. In order to disseminate the knowledge content of manuscripts, the Mission has taken up several programmes such as lectures, seminars, publication of unpublished manuscripts, Manuscriptology and Paleography Workshop etc.

The Kṛtibodha (Knowledge of Texts) Series is one of such publication project of National Mission for Manuscripts to promote academic interest and scholarship in the area of manuscript studies.

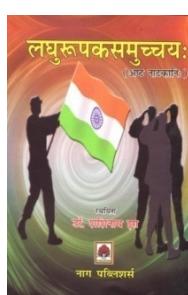
The transcribed and critically edited manuscripts prepared either in the Advance Level Manuscriptology Workshops of the Mission or in the Gurukula scheme are published under the Kṛtibodha series.

The present text is one of such Gurukula scheme projects critically edited by Dharmendra Kumar Bhatt under the Guru, Prof. Vasant Kumar Bhatt.

Size Royal 1/8 ISBN 93-80829-19-7 2013 pp 328 250.00

लघुरूपकसमुच्चयः (अष्टनाटकानि)

— डॉ. शशिनाथ झा:

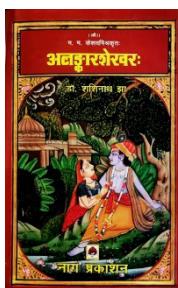


विद्वत्कविवर डॉ. शशिनाथ झा महाशयराचितानाम् अष्टाना लघुरूपकाणां संग्रहोऽयं लघुरूपकसमुच्चयः। अत्र विविधप्रकरका विषयाः सञ्चिता विद्यन्ते—पौराणिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, दार्शनिक, लोककथाश्रित, आधुनिक, राष्ट्रभक्तिमय, प्रहसनात्मकश्चेति। वर्तमान-सामाजिकी स्थितिस्तत्समालोचना समाधानमृचात्र रोचक-नव्यशैल्या समुपन्यस्तम्। लोकप्रियता एतेषां

मज्जोपयोगिता च भृशं परीक्षिता यत्रैतानि शाणोत्तीर्णमणिराशिरवेत्तीर्णनि ।
 राष्ट्रगौरवनाटके ख्यातन्त्र्यक्रान्तेवर्धमस्ति । शड्कराचार्य—मण्डयोः शास्त्रार्थो
 विषयगतदार्शनिकमतभेदपुरस्सरं समवतारितः । अत्रदभुतं नलचरितं मिथिलामात्रप्रसिद्ध
 वर्णितमस्ति ।

एतेषां भाषा सरला प्राज्ञला चास्ति । कवित्वमूषितपद्यानां समावेशः सन्तुलितोऽस्ति ।
 संस्कृतनाट्यसाहित्याकरे नूतनतयास्य समावेशो नितरां हर्षस्य विषयः । नूनमनेन समुच्चयेन
 संस्कृतवृश्यकाव्यप्रवाहः साम्रातपि सम्यग्गत्या पचलतीति प्रमाणितम् ।

Demy 1/8 ISBN81-7081-694-7 2016 pp 154 200.00



म. म. म. केशवमिश्रकृत

अलंकारशेखरः

व्याख्याकार — डॉ. शशिनाथ झा तथा

डॉ. मंजु कुमारी शर्मा

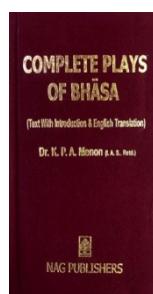
अलंकारशेखर अपने शास्त्र का एक महत्वपूर्ण प्राचीन ग्रन्थ है। इसके मूल कारिका के रचयिता भगवान शौद्धोदनि दशमशताब्दी से पूर्व के आचार्य थे। इसके वृत्ति एवं उदाहरण म. म. केशवमिश्र (1525 ई.) के हैं। इस ग्रन्थ में अलंकारशास्त्र के सभी विषय निरूपित हैं। कविशिक्षा के ऊपर यहाँ विशेष प्रकाश दिया गया है। इसमें आचार्य श्रीपाद की कारिकायें प्रचुरमात्रा में उद्घृत हैं, जिनका मूलग्रन्थ एवं समय अज्ञात है। केशव मिश्र मैथिल पण्डित थे, परन्तु इन्होंने इस ग्रन्थ की रचना राजस्थान के कोटानगर में की थी।

इस ग्रन्थ में दिये गये उदाहरण केशव मिश्र के रचित हैं जिनसे इनका उत्कृष्ट कवित्व भी प्रमाणित होता है। इन्होंने इस ग्रन्थ में अन्यदेशत्व नामक नवीन अलंकार का निरूपण किया है। इस ग्रन्थ का यह प्रथमबार ही हिन्दीव्याख्या सहित संस्करण प्रकाशित हो रहा है।

Size Demy 1/8 ISBN 81-7081-698-X PP 320 (2018) Rs. 500.00

COMPLETE PLAYS OF BHASA

Dr. K. P. A. Menon



Bhasa is perhaps the only poet in the history of our literature, who did not go into the oblivion inspire of his works being lost to the readers for centuries together. The literary world was suddenly taken by surprise with the announcement made by Mahamahopadhyaya T. Ganapati Sastri, the first curator of the manuscript library of Thiruvananthapuram that twelve plays of Bhasa and thirteenth one in an incomplete form had been discovered by his from amongst the manuscripts he was handling. There was great jubilation

over this epoch making discovery combined with an element of doubt and disbelief in certain quarter. It be a superfluous attempt to bring all his plays under the prescribed definitions of the ten types of Rupakas since he himself has never tried to be true to a type.

The first volume of Bhasa's plays starts with Balacaritam which has got Krisnavatara as its theme and deals with the boyish adventures of Krishna ending with the slaying of Kansa. The remaining six plays have drawn on different episodes of Mahabharata for their themes and could be generally classified as the Mahabharata Plays. Though the episodes have been taken from Vyasa's great epic or the Puranas dealing with Krisnavatara there have been deviations in their presentation and, in the case of the Mahabharata plays,

the characters are not always true to the type and depicted by Vyasa. Apart from this, there are some episodes that do not find any place in the epic and should be considered as inventions of the great dramatist for fulfilling his own objective.

The first volume second part of Bhasa plays deals with some of the important episodes of Ramayana starting with the disturbed coronation in the first play of 'Pratima' and ending with the consecration of Rama along with Sita in both cases. Though Bhasa has drawn upon Valmiki for the themes he has made various deviations and introduced his own innovations.

The third volume of Bhasa's works starts with the twin plays or Pratijnayaugandharyam and Svapnavasavadattam centering round Udayana, the ruler of Vatsa kingdom who had become a legendary figure in Ujjayani as mentioned by Kalidasa. Avimarakam is a play with certain mythological and supernatural elements in it, though there are references to many of the kingdoms of the later Rigvedic period. The incomplete play Carudattam contains the same theme as dealt with in Sudrakas Mricchakatikam. It seems to be the work of a mature age and could very well be the last one left incomplete.

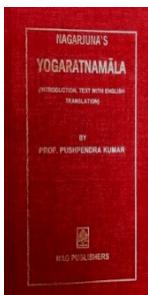
**Demy 1/8 ISBN 81-7081-351-4
pp1384 (2 vols set)**

**2016 (2nded.)
Rs. 2000.00**

NAGARJUNA'S YOGARATNAMALA

(Text With English Trans.& Notes) -

Ed. Prof. Pushpendra Kumar



Nagarjuna is our first known alchemist whose work has survived to the present day. He belongs to the same age which produced the famous non-rusting iron pillar of Delhi bearing the inscription of ancient alchemic process. He describes different types of crucibles and stills, cupellation, sublimates, coloring and allowing of metals, extraction of copper from pyrites, use of metal oxides as medicines, etc. etc.

In Chinese he is known as Lung-shu or Lung-Meng. The Chinese traveler I-Tsing places Nagarjuna in the first century A. D. as the contemporary of king Kanishka, both of whom are said to have appeared four hundred years after the Nirvana of Buddha.

Long accounts of Nagarjuna are available in Tibetan literature. There he is shrouded in legend and mystery.

Nagarjuna is the discoverer of several eye medicines and of the elixier of life which strengthens the weakening forces of men in old age and prolongs life and happiness. He rescued starving humanity from famines by exchanging gold for grain in foreign lands.

In this edition Nagarjuna's Yogaratnamala text with English translation and notes are given.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-109-0 pp 120 2016 Rs 200.00

NERVOUS SYSTEM IN YOGA AND TANTRA

(Implication in Ayurveda)

- Dr. Ashok Majumdar

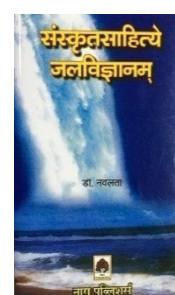


Since a long period, how the nervous system in Yoga, Tantra and Ayurveda played their role was a mystery. The author having a modern medical background explored original texts of Yoga, Tantra and Ayurveda to make a break through in this mysterious concept. This is an excellent, researchers and general public. This is one of the most informative book in the field of Yoga, Tantra and Ayurveda and an excellent comparative research work with simple logical scientific explanations for mass benefit.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-440-5 2013 pp 794 Rs.1000.00

संस्कृतसाहित्ये जलविज्ञानम्

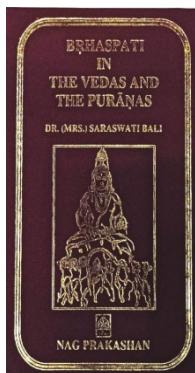
डॉ. नवलता



संस्कृतसाहित्ये – यद्यपि ज्ञानविज्ञानस्य असीमितभाण्डारः सुरक्षितो वर्तते, किन्तु कालप्रभावेण विगतशताब्दीयु ललितकाव्यादिकस्य यथाध्ययनं लेखनं च प्रसिद्धं तथा भारतीयविज्ञानदृशा संस्कृतसाहित्यस्य रहस्यानुसन्धानं कृतम्। इदानीं भारतीयविज्ञानचिन्तनं प्रति आग्रहस्य आवश्यकतां परिलक्ष्य विशेषतः वर्धमाने जलसंकटे डॉ. नवलताविरचितोऽयं ग्रन्थः न केवलम् अक्षयजलसंसाधनस्य ब्रह्माण्डीयं वैशिकचक्रं प्रति भारतीयमनीषिणां वैज्ञानिकचिन्तनं शुद्धजलस्य पर्याप्तपरिमाणस्य निरन्तरं

सर्वसलभतार्थं च तेषां जीवनपद्धते: विश्लेषणं करोति, अपितु वर्तमानविज्ञानसन्दर्भे
जलविषयकेषु विविधपक्षेषु संस्कृतसाहित्यस्य दिशानिर्देशमुपादेयतांच
प्रतिपादयति। अयं गवेषणापूर्णः शोधनिबन्धः दिल्ली संस्कृतअकादम्या
अखिलभारतीयप्रतियोगितायां प्रथमपुरस्कारेण सभाजितः।

Demy 1/8 ISBN81-7081-598-3 2018 pp 248 Rs.250.00



BRHASPATI IN THE VEDAS AND PURĀNAS

Dr. (Mrs.) Saraswati Bali

Foreword by

Dr. Rasik Vihari Joshi

The present work is the first ever attempt on a very important Vedic and Pauranic deity i.e. Brhaspati. The word can be called a fulfilment of a small part of a very vast and expensive work on a thorough study of Vedic mythology. Brhaspati as he is generally believed to be, is not merely the preceptor of gods; instead, he imbibes in himself so many other mythological aspects. This makes his personality comprehensive and the study of such a varied personality is exactly what the present work has undertaken to do. Brhaspati various aspect such as the lord of the ganas leader on to the right path, lord of speech, god of rain, god of fire, Sun god, supreme Brahman protector of the sacrifice, Brahman priest, his connection with magical incantations, Brahmanic power, presiding over Tiṣya constellation Devaguru, his association with other gods, legends and stories and astrological concept have all been discussed at length in the present work. The author has reached some very important conclusions after making a thorough analysis and study of various aspects of Brhaspati as depicted in the four Saṁhitas, Brāhmaṇa works and eighteen Purāṇas which no doubt will further the interest of vedic studies.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-035-3 pp 280 2023 Rs 300



सीमा

डॉ. रामकरण शर्मा

‘सीमा’ नाम संस्कृतगद्यप्रबन्धकल्पना प्रतिनिधिते समन्वयमाध्याप्तिकमाधिभौतिकं च कमपि। अतीतीनागतयोः, ज्ञानाज्ञानयोःस्पोवनराजधान्योरध्यात्मविज्ञानयोरनुरागविराग—योर्देवयोः समन्वयः सर्वतश्चकास्ति कथायामस्याम्।

परस्पराश्रया समरसा सत्त्वन्त्रता सर्वासां व्यक्तीनां, सर्वासां समष्टीनां, सर्वेषां भावानात्रचात्रचित्रीकृता कैश्चित्तिङ्ग—सुबन्धतचयैः। अत्रास्ति परमर्थिव्युथितः परममङ्गलमयोऽपि

कुशलः प्रयोक्ता विद्यायाः परप्रयोजनायाः। अत्रास्ति राधा सङ्गमनी

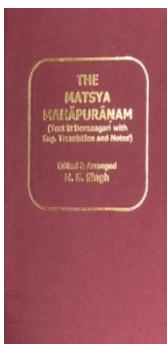
ब्रह्मक्षत्रमरम्परयोः अत्रास्ति सौरविज्ञानात्मविज्ञानयोः । सौरविज्ञानपरमाचार्यः सद्गमकः

सर्वहरोऽपि तस्करोऽत्र मनोहरीभवति भजति च शान्तिसेनाध्यक्षताम् । पष्डयनत्राचार्या अपि भन्ति पदवीं सतां सुरक्षाचार्याणाम् । मदमदनवशंवदाऽपि मदनिका क्षत्रेन भवति “धुरि कीर्तनीया” परमसाध्यीनां महनीयानाम् । इमाः सन्ति लीला अत्रवर्णिताः परमसहित्नां परमर्वच्युथितस्य लोकपरममङ्गलमय्यः ।

अहिंसयैवात्र परिवर्तिताः सङ्काश्यन्ति परितः सुमनःक्रमा ।

सीमा संयुनवित वियुनकत्यपि च लोकम् । सन्ति सीमानमहिसायाः सौरविज्ञानम् । तथैव नातिवर्ततां ब्रह्मक्षत्रे अधिसीमानौ स्वीये । एतमेव सन्ति भूयस्यो व्यक्तिसीमानः कुलसीमानोऽन्याश्च सीमानः । अस्ति कश्चित् परमसीमाऽपि नामर्पिता । नश्यन्ति सद्यः सर्वाऽपि सीमविवादाः सिद्धायामैव परमसीमनि । संर्थं ‘सीमा’स्ति कथा सौम—परमसीमपरिणयस्याऽपि ।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-144-9 1987 pp 160 Rs. 100.00



The Matsya Purana

(Text in Devanagari with English Translation and Notes)

Foreword by

Prof. Horace Hayman Wilson

Edited by Nag Sharan Singh

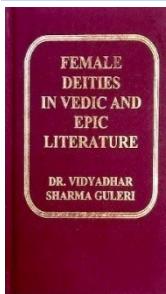
The Matsya Purana is one of the eighteen major Puranas (Mahapurana), and among the oldest and better preserved in the Puranic genre of Sanskrit literature in Hinduism. The text is a Vaishnavism text named after the half-human and half-fish avatar of Vishnu. However, the text has been called by the 19th-century Sanskrit scholar Horace Hayman Wilson, "although a Shaivism (Shiva-related) work, it is not exclusively so"; the text has also been referred to one that simultaneously praises various Hindu gods and goddesses.

It narrates the story of Matsya, the first of ten major Avatars of the Hindu god Vishnu. The text describes the mythology of a great flood, where in the world and humans led by Manu, the seeds of all plants and mobile living beings, as well as its knowledge books (Vedas) were saved by the Matsya avatar of Vishnu.

The *Matsya Purana* covers a diverse range of topics, many unrelated to Vishnu, and its mixed encyclopedic character led Horace Hayman Wilson – famous for his 19th-century Purana studies and translations, to state, "it is too mixed a character to be considered a genuine Purana" and largely a collection of miscellaneous topics. The text includes a similar coverage on legends of god Shiva and god Vishnu, and dedicates a section on goddess Shakti as well. Chapters 54-102 of the text discuss the significance and celebration of Hindu festivals and family celebrations such as those related to the Samskara (rite of passage). The chapters 215–227 of the text discuss its theories of the duties of a king

and good government, while chapters 252–257 weave in a technical discussion of how to identify a stable soil for home construction, different architectural designs of a house along with construction-related ritual ceremonies.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-045-0 2023 pp 1252 (2 vols set Rs. 2000.00



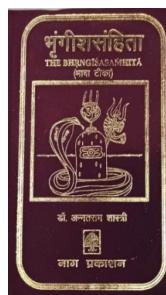
FEMALE DEITIES IN VEDIC AND EPIC LITERATURE

Dr. Vidyadhar Sharma Guleri

A detailed study of the functions, deifications and interrelation of Vedic female's deities, on the basis of the original sources along with the analysis of the oriental and occidental Indologists is attempted in the present work. Two different but equally important approaches to the study of the Vedas in the modern world have been used. To make it a comparative study, the material related to the Greek and Semantic female deities has also been used.

The present attempt though based mainly on the Vedic literature as the major sources of information goes deeper into the history of culture and civilization. The study of phenomena would be of immense interest of scholars of Sanskrit, history and religion. An attempt has also been made to study the various aspects of the Vedic female deities.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-209-7 pp 228 1990 Rs.250.00



भृंगीशसंहिता

(मूल तथा भाषा टीका)

डॉ. अनन्त राम शास्त्री

भारत का कश्मीर शीर्ष है और कहा जाता है कि अगर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है। यहाँ हमारे सभी देव पुरुषों का निवास स्थान कहा जाता है और यहीं पवित्र पावनी गंगा तथा अन्य महानदियों का उद्गम स्थान है। अभी तक अप्रकाशित इस भृङ्गिश संहिता में सविस्तृत वर्णित प्राचीन सांस्कृतिक काश्मीर के तीर्थ स्थग्नों से विद्वान लेखक ने सर्वसाधारण को परिचित कराया है तथा मूल पाठ संस्कृत के साथ भाषा टीका कर सभी के लिए समझने के लिए सुगम भी करा दिया है।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-086-8 pp 470 2023 Rs.500.00



MAHARASHI SANDIPANI RASHTRIYA VEDAVIDYA PRATISHTHANAM GRANTHMALA, UJJAIN

अमूर्त वैदिक देवता	— डॉ. लक्ष्मी मिश्रा	
Demy 1/8 pp 196 2006		Rs.165.00
अश्वमेध विवेकः — डॉ. दिवाकर महापात्रा:		
Demy 1/8 pp 164 2005		Rs.150.00
अथर्ववेदीय परिशिष्ट ग्रन्थों का परिशीलन		
प्रधान सम्पादक : प्रो. ओम्प्रकाश पाण्डेय लेखिका : डॉ. अंजु दुबे		
Demy 1/8 pp 212 2005		Rs.175.00
चार शुल्बसूत्र		
बौद्ध्यन, मानव, आपस्तम्ब और कात्यायन शुल्बसूत्रों के हिन्दी अनुवादक — डॉ. र. पु. कुलकर्णी		
Demy 1/8 pp 334 2003		Rs.600.00
THE CONCEPT OF PURUSARTHAS		
- DR. S.C. CHARKABARTI		
pp 100 2003	Rs.185.00	
ISSUES IN VEDA AND ASTROLOGY		
- DR. HARIBHAI PANDYA		
Demy 1/8 pp 200 1995		Rs.150.00
VEDAS : THE SOURCE OF ULTIMATE SCIENCE - SHRI RAM VERMA		
Demy 1/8 pp 480 2005		Rs.300.00
वेदकालीन प्रौद्योगिकी, कुछ आयाम		
SOME ASPECTS OF TECHNOLOGY IN VEDIC PERIOD		
सम्पादक— प्रो. ओम्प्रकाश पाण्डेय डॉ. श्यामसुन्दर निगम		
Demy 1/8 pp 158 2003 ISBN 81-7081-573-8		Rs.110.00
वेद मीमांसा — मूल लेखक — श्री अनिर्वाण		
हिन्दी अनुवादक — छविनाथ मिश्र		
Demy 1/8 pp 964 (3 Vols) 2003 ISBN 81-7081-576-2 (Set)		Rs.825.00
वैदिक खिलसूत्त-मीमांसा		
— प्रो. ओम्प्रकाश पाण्डेय		
हिन्दी अनुवादक — छविनाथ मिश्र		
Demy 1/8 pp 424 2004 ISBN 81-7081-594-0		Rs.225.00
वैदिक शिक्षा पद्धति — डॉ. भास्कर मिश्र		
Demy 1/8 pp 281 2003		Rs.270.00
वैदिक यज्ञ संस्था और वेद विज्ञान		
सम्पादक—प्रो. ओम्प्रकाश पाण्डेय		
Crown 1/4 pp 362 2004		Rs.500.00

आचार्य दण्डी की साहित्य साधना

डॉ. काशीनाथ तिवारी

इस ग्रन्थ में दण्डी सम्बन्धी अनेक समस्याओं का समाधान नवीन तर्कों के सहारे किया गया है।

'त्रयोदण्डप्रबन्धा:' पर लेखक के विचार महत्वपूर्ण हैं, गम्भीर तथा ध्यातव्य हैं। साहित्यिक अनुशीलन के आवश्यक अंगों का विन्यास विस्तार के साथ किया गया है। दशम अध्याय में, लोकजीवन की 'दशकुमारचरित' में दृष्टिगत होने वाली झाँकी विशद तथा गम्भीर है। उसकी पुष्टि में लेखक ने अन्य प्रख्यात लेखकों के ग्रन्थों से पर्याप्त उदाहरण दिया है। दण्डी के महाकवित्व की सिद्धि विस्तार से की गई है। फलतः यह ग्रन्थ प्राचीन तथ्यों को नवीनरूप में प्रस्तुत करता है तथा इस प्रयत्न में सर्वथा 5 लाघ्य है। ग्रन्थ की भाषा तथा शैली बहुत ही शोभन है।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-411-1 pp 358 1998 Rs.200.00

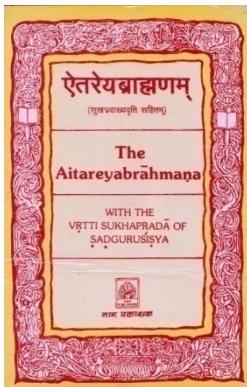
अद्वैतवेदान्ते भामतीप्रस्थानस्यतुलनात्मकमध्ययनम्

डॉ. एम. वसन्ता

'अद्वैतवेदान्ते भामतीप्रस्थानस्य' तुलनात्मकमध्ययनम् नाम्नि ग्रन्थेऽस्मिन् अद्वैतवेदान्ते प्रतिपादितानां प्रमुख— प्रस्थानानां परिचयपूर्वकं भामतीप्रस्थानेन सह तुलनम् उपलभ्यते। प्रस्थानान्तरेषु भामतीप्रस्थानस्य वैशिष्ट्यं तथा तस्य स्वरूपं चात्र संग्रहेण निरूपितमस्ति। अतिविवितप्रस्थानावाहिनि वेदान्तप्रस्थाने अनेकानि भाष्य—व्याख्यान प्रकरणादीनि च समागतानि सन्ति। तेषां सर्वेषामध्ययनं तु दुष्करमेव। तेषु ग्रन्थेषु प्रतिपादितानां प्रमुखतत्वानां अवगमसतु वेदान्त—पिपठिषूणां परमावश्यको भवति। तत्तु उपलभ्यमानग्रन्थान्तरेभ्यः नैव भविष्यति। डॉ. सत्यदेवशास्त्रिकृत

'भामतीप्रस्थान— विवरणप्रस्थानयोः तुलनात्मकमध्ययनम्' इति ग्रन्थे भामतीप्रस्थानस्यापि समग्रपर्यालोचनं तथा भामतीप्रतिपादितानां विषयाणां सम्यक् विमर्शनं तत्र नैवोपलभ्यते। 'भामती एक अध्ययन' नामक डॉ. ईश्वरसिंहेन विरचिते ग्रन्थे केवल भामतीप्रस्थानस्यैव स्वरूपम् उपलभ्यते। नतु प्रस्थानान्तराणां तुलना एवम् अन्यैः विरचितेषु ग्रन्थेषु तत्रत्य प्रत्येकविषयाः एव मुख्यतया निरूपिताः दृश्यन्ते। अतः समग्रस्य भामतीप्रस्थानस्य प्रस्थानान्तरैः सह तुलना अद्यावधि येनकनापि न निरूपिता। तदेव अद्वैतवेदान्ते भमतीप्रस्थानस्य तुलनात्मकमध्ययनमिति ग्रन्थस्य रचनायाः मुख्यो हेतुः। अनेन वेदान्तपिपठिषूणां छात्राणाम् अद्वैतवेदान्ते वर्तमानेषु प्रमुखप्रस्थानेषु विद्यमानानां साजात्य—वैजात्यगतविशेषाणाम् अवगमो भविष्यति।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-688-2 pp 520 2013 Rs. 600.00

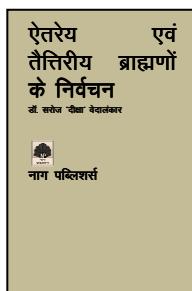


ऐतरेयब्राह्मण (सुखप्रदाख्यवृत्ति सहितम्) THE AITAREYABRAHMANA (WITH THE VRITTI SUKHAPRADA OF SADGURUSISYA FROM CHS. 1-32) (SAYANA'S COMMENTTRY FROM CHS. 33-40)

THE AITAREYABRAHAMANA BELONG THE AITAREYA ARANYAKA AND AITAREYOPANISAD. IT IS WRITTEN ABOUT 600 B. S. THE AITAREYA BRAHMAN IS DIVIDED INTO EIGHT BOOKS (PANJIKAS) EACH CONTAINING FIVE LECTURES. THESE ARE SUBDIVIDED INTO 285 KANDAS.

THE WORK IS MOSTLY WRITTEN IN VERSE AND ONLY PARTLY IN PROSE. THE FIRST 16 CHAPTER'S TREAT OF SOME SACRIFICE CALLED AGNISTOMA LASTING FOR ONE DAY. THE NEXT TWO CHAPTERS SPEAK OF GAVAMAYANA WHICH LAST FOR WHOLE YEAR. CHAPTER 19-24 TREAT OF DVADASA, CHAPTER 25-32 ARE CONNECTED WITH AGNIHOTGRA AND THE LAST CHAPTERS DESCRIBE ABHISEKA CEREMONY. THE THIRTY EIGHT CHAPTERS DESCRIBE A SUPPOSED CONSECRATION OF INDRA AND FORTIETH CHAPTER REFERS TO THE BENEFIT OF ENTERTAINING A PUROHITA. THE LONGEST AND THE MOST INTERESTING LEGEND FOUND IN THE AITAREYA BRAHMANA IS THE STORY OF SUNAHSEPA.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-224-0 2005 pp 1393 (3 vols set) Rs. 1500.00



ऐतरेय एवं तैतिरीय ब्राह्मणों के निर्वचन

डॉ. सरोज 'दीक्षा' वेदालंकार

वेदों से पर्याप्त कालान्तर होते हुए भी ब्राह्मणग्रन्थ ही वेदों के निकटतम हैं। इनमें वेदव्याख्या का प्रथम प्रयास हुआ है। इसीलिए प्रायः भारतीय-भाष्यकारों ने यथासम्भव ब्राह्मणग्रन्थों की सहायता ली है और वेदव्याख्या में उनकी उपयोगिता प्रमाणित की है। ब्राह्मणग्रन्थों में वेदव्याख्या के लिए प्रायः निर्वचनों का आश्रय लिया गया है। इन निर्वचनों के वर्गीकृत तुलनात्मक अध्ययन से वेदव्याख्या में सहायता मिलती है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में ऐतरेय एवं तैतिरीय ब्राह्मणों के निर्वचनों को ठीक प्रकार से समझने के लिए प्रथम तथा द्वितीय अध्याय में आधार ग्रन्थों का पूर्ण परिचय एवं वैदिक संहिताओं में निर्वचनों का विकास प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय में निर्वचनों के वर्गीकरण की तालिका भी गयी है। तृतीय एवं चतुर्थ अध्याय में ऐतरेय एवं तैतिरीय ब्राह्मणों में प्राप्त निर्वचनों को प्रसंग, आख्यान एवं सम्पूर्ण परिचय के साथ प्रस्तुत किया गया है। चतुर्थ अध्याय में यज्ञेतर निर्वचनों को प्रमुखतः दो शीर्षकों में विभाजित किया है –

देवशास्त्र एवं विभिन्न वर्गों से सम्बद्ध शब्द। पंचम अध्याय में ऐतरेय एवं तैतिरीय ब्राह्मणों में उपलब्ध निर्वचनों की शेष वैदिक साहित्य – प्रमुखतया ब्राह्मणों एवं निरुक्त – के निर्वचनों से तुलना की गयी है। निर्वचनों के अध्ययन के आधार पर उसके परिणाम एवं निष्कर्ष षष्ठ एवं सप्तम अध्यायों में प्रस्तुत किये गये हैं।

निर्वचनों में आख्यानों के प्रयोग पर विचार करते हुए निर्वचनों की स्थिति को स्पष्ट करने के लिए हमने अनेक सम्बद्ध आख्यान प्रस्तुत किये हैं। अनेक स्थलों पर आख्यानात्मक लम्बे प्रसंग भी दे दिये हैं ताकि आख्यानों से सम्बद्ध निर्वचनों में जो प्रमुख-प्रवृत्तियां हैं वे स्पष्ट को सकें। अन्त में ग्रन्थ सूची तथा निर्वचनीय पदानुक्रमणिका दी गयी है, जिसकी सहायता से किसी भी शब्द का पूर्ण अध्ययन किया जा सकता है। प्रस्तुत ग्रन्थ में विवेच्य ब्राह्मण-ग्रन्थों के निर्वचनों की पूर्णता अपूर्णता यास्कीय निरुक्त के आधार पर आंकी गयी है, अतः बहुत से निर्वचन छोड़ दिये गये हैं, जैसे – पुरोडाश, छन्द, त्रयनीक, त्रिकाण्ड, वरुण-प्रधास आदि।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-193-7 pp 272

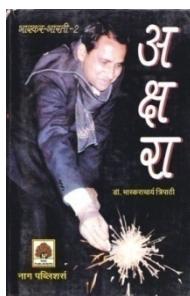
1989

Rs. 300.00

अक्षरा

(गद्य-कादम्बिनी)

लेखक:—त्रिपाठी डॉ. भास्कराचार्य:



शब्द-ब्रह्म की सत्ता परा की चेतना से वैखरी तक कहीं भी क्षरणशील नहीं होती, इसीलिए वह अक्षरा है। उसकी सही समझ ही भाषा का संस्कार और शृंगार है।

भाषा के बृहत् प्रकल्पों में गद्य उसकी जीवनी शक्ति है और कवियों की कस्तौटी भी। अक्षरा में यह समूची परम्परा उद्भासित है। श्रुति:, संस्कृतम्, समकाल:, छन्दोविमर्श:, लघुरूपकम्, यात्र-गवाक्ष:, समस्या एवं संवेदनम् शीषकों में लेखक के तलस्पर्शी चिन्तन और जीवन की धृप-छाँव सभी कुछ प्रतिबिम्बित हैं। अक्षरा भाषाई सौष्ठव के साथ भावी पीढ़ी के लिए आदर्श प्रतिमान की स्थापना है। शास्त्रीय मर्यादाओं के बीच प्रस्तुत प्रबन्धयुग-बोध, लोक-परक दृष्टि और शोध-सम्भावनाओं से ओतप्रोत है।

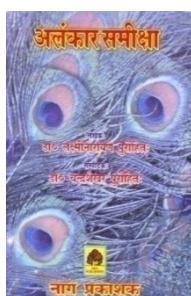
Demy 1/8 ISBN-81-7081-614-9 pp 268 2005

Rs.150.00

अलंकार समीक्षा

लेखक: — डॉ. लक्ष्मीनारायण पुराहितः

सम्पादक: — डॉ. चन्द्रशेखर पुरोहितः



वर्तन्ते संस्कृत हिन्दी भाष्योः विचित्राः अलंकारबोधकाराकाः बहवः ग्रन्थाः विद्यन्ते च एतयोः भाषयोः प्रणीताः अलंकार क्रमिकविकासदर्शकाः इतिहासग्रन्थाः। परं तेषु ग्रन्थस्यास्य वैशिष्ट्यम् विद्वद्वैरेया आचार्यवर्याः न केवलं पद्यगुम्फेन अपितु गद्यलेखनेऽपि दक्षाः। ग्रन्थेऽत्र एतैः महाभागेरलंकाराणां क्रमिकविकासपुरस्सरं 'पुरस्कारोपकारे' श्चेति अलंकारद्वयस्याभ्यूह विवेचनं तथा नवीनलंकारभेदानामभ्यूह प्रतिपादनम्।

इत्थं स्वसंकल्पिताया 'अलंकार समीक्षायाः' समलोऽपि विमर्शोऽत्र पुरस्तुत एव। येयं चात्र नवीनाः स्फूर्तयः प्रकटिताः या याश्चयै समीक्षा-दृशा प्राचां विचारसारण्यः

परीक्षितास्तत्र यास्त्रुटयः परिभावितास्तासां विद्वत्समाजे स्वीकृतिः स्यादिति सर्वस्यापि रचनाकारस्य समीक्षकस्य वा मनोगतं भवत्येव। आसीत् पूज्यानां तत्र भवतां पितृपादानामपि मनोऽभिलाषितं यत् 'सुधियो विपश्चितो मम विन्तनमिदं परिचिनुयुस्तथा सम्मतानां निरस्तालंकाराणां तथाविधत्वे मया युदुलिलखितं ये वा तर्काः प्रस्तुताः समालोचनायं या उपस्थितास्तासां सूक्ष्मेक्षिकया परीक्षणं विदधर्युयच्च तथ्यं भेत् तत् स्वीकुर्विति।'

संपादकः

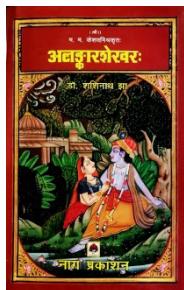
Demy 1/8

ISBN-81-7081-346-8

pp 584

1997

Rs.350.00



म. म. म. केशवमिश्रकृत

अलंकारशेखरः

व्याख्याकार – डॉ. शशिनाथ झा तथा

डॉ. मंजु कुमारी शर्मा

अलंकारशेखर अपने शास्त्र का एक महत्वपूर्ण प्राचीन ग्रन्थ है। इसके मूल कारिका के रचयिता भगवान शौद्धोदनि दशमशताब्दी से पूर्व के आचार्य थे। इसके वृत्ति एवं उदाहरण म. म. केशवमिश्र (1525 ई.) के हैं। इस ग्रन्थ में अलंकारशास्त्र के सभी विषय निरूपित हैं। कविशिक्षा के ऊपर यहाँ विशेष प्रकाश दिया गया है। इसमें आचार्य श्रीपाद की कारिकायें प्रचुरमात्रा में उद्घृत हैं, जिनका मूलग्रन्थ एवं समय अज्ञात है। केशव मिश्र मैथिल पण्डित थे, परन्तु इन्होंने इस ग्रन्थ की रचना राजस्थान के कोटानगर में की थी।

इस ग्रन्थ में दिये गये उदाहरण केशव मिश्र के रचित हैं जिनसे इनका उत्कृष्ट कवित्व भी प्रमाणित होता है। इन्होंने इस ग्रन्थ में अन्यदेशत्व नामक नवीन अलंकार का निरूपण किया है। इस ग्रन्थ का यह प्रथमबार ही हिन्दीव्याख्या सहित संस्करण प्रकाशित हो रहा है।

Size Demy 1/8

ISBN 81-7081-698-X

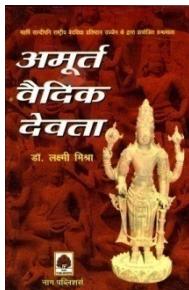
PP 320

(2018)

Rs. 500.00

अमूर्त वैदिक देवता

डॉ. लक्ष्मी मिश्रा



आरम्भिक वैदिक देवता के मूल श्रोत प्राकृतिक दृश्य एवं घटनाएँ हैं। इन्द्र, अग्नि, सूर्य, वायु, पृथ्वी, उषा, पर्जन्य जैसे महान् एवं ऐश्वर्यशाली सभी देवताओं का उद्भव साक्षात् प्राकृतिक तत्त्वों से सम्बन्ध है। उत्तर वैदिक युग में देवधारणा सम्बन्धी श्रोत अपेक्षाकृत विस्तृत हो गये थे। प्रस्तुत पुस्तक में नवीन श्रोतों से उत्पन्न अमूर्त देवताओं का व्यवस्थित वर्णन एवं विश्लेशण है। इस तरह के देवताओं में अनेक देवता उपाधिमूलक हैं। विश्वकर्मा, प्रजापति एवं रोहित आदि इसी कोटि के देवता हैं। द्वितीय कोटि के देवता का विकास मनोवैज्ञानिक धारणाओं के आधार पर हुआ है। श्रद्धा एवं मन्त्र इस कोटि के उद्घारण है। तृतीय कोटि के अमूर्त देवताओं का निर्धारण भाषिक / व्याकरणात्मक विशेषताओं के आधार पर किया गया है। धातृ, त्रातृ, सवितृ आदि देवता इस कोटि के हैं। अंतिम कोटि में शाश्वत, निषिद्ध, कर्मप्रधान तथा मनुष्य का अनेक प्रकार से रक्षा करने वाले देवता सम्मिलित हैं, जो भिन्न-भिन्न विशेषताओं से युक्त हैं। अन्त में उत्तरोत्तर सुव्यवस्थित होती जीवनशैली के परिणाम स्वरूप विकसित सूक्ष्म चिन्तन की दैवीय धारणाओं पर पड़ते प्रभाव की भी समीक्षा प्रस्तुत की गई है।

Demy 1/8

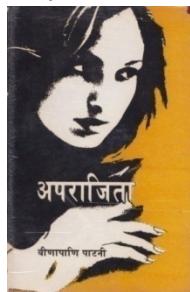
ISBN 81-7081-625-4

pp 196 2006

Rs.165.00

अपराजिता

वीणापाणी पाटनी



The modern fiction in Sanskrit seems a contradiction! I have tried to maintain through my humble effort that Sanskrit is still a living medium of expression as it reflects the social situations in the present perspective. The Aparajita depicts a struggling woman who comes out victorious against all the odds of life. The Kulina shows a silently suffering woman who accepts her fate in a complex household. The Sankhanadah brings out a deprived woman who suffered in childhood and youth and was aroused by the inner conscience to take up challenges of life all alone. The Anugrihitā portrays a poor village belle who somehow saves herself from being exploited by a village headman's rustic son and is grateful for a young doctor who is prepared to marry her. The Vatayanam shows a young woman who is heated by her lover and has to bring their son all alone. The Jagaritah depicts a life of poverty and ignorance of the construction laborers and a stroke of bad luck in the family. The Ekonyah Sivih shows the spirit of goodwill and sacrifice of the two friends and how they save each other at the time of disaster.

Demy 1/8

ISBN-81-7081-286-0

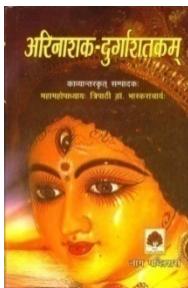
pp 102

1994

(Author)

Rs.150.00

अरिनाशक—दुर्गाशतकम्



प्रणेता — त्रिपाठी आचार्यो
रामगुलामः काव्यान्तरकृत्
सम्पादकः— महामहोपाध्यायः त्रिपाठी डॉ.
भास्कराचार्यः

दुर्गति—नाशिनी दुर्गा अपने विभिन्न रूपों में भक्तों का भय दूर करती है। आर्तभाव से उनका स्मरण, विन्तन और अनुकीर्तन सुखकारक एवं तारक होता है।

दैवीय अनुकम्पा का प्रत्यक्ष उदाहरण है — अरिनाशकदुर्गाशतकम्। यह माँ का प्रिय स्तवन है। इसके प्रत्येक छन्द का उनके श्रीविग्रह से तादात्म्य है। काल का कपालभेदन कर वात्सल्य की वर्षा सुनिश्चित करने वाला यह एक आशिर्वादी सतोत्ररत्न है। इसकी मणि—मालाएँ बीजमन्त्रों से सम्पुटित और अचूक शत्रुनाशक हैं।

Demy 1/8

ISBN-81-7081-651-3

pp 146 2009

Rs.150.00

श्री गोवर्धनाचार्यविरचिता

आर्यासप्तशती

अनन्तपण्डितकृतया व्यङ्ग्यार्थदीपनाटीकया समेता

जयपुरमहाराजाश्रितमहोपाध्यायपण्डितदुर्गा—प्रसादतनयपण्डितकेद अरनाथशर्मणा, काशिनाथ पाण्डुरङ्ग परब इत्यनेनत्र मुम्बापुरवासिपणशीकरोपाह्वविद्वद्वरलक्ष्मणशर्म—नुजनुषा वासुदेवशर्मणा च संशोधिता।

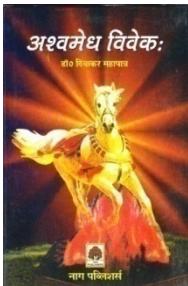
आर्यासप्तशत्याख्यमिदं गीतिकाव्यं शृंगारकाव्यमुक्तककाव्यं वेति नाम्नाऽपित व्यपदिश्यते, एवज्चेयं रचना सरसगीतिविधापरम्परायामतितरां नितरात्र्च सुप्रतिष्ठिता चकारित्। सप्तशत्यामस्यामार्याच्छन्दःसु सुगुम्फितानि सप्तशतशृंगाररसपरकाणि ललितमुक्तकानि पद्यानि अकारादिवर्णनुक्रमेण राराजन्ते। विराजते च सृणासरसविशदा सहृदयहृदयहारिणी भाषा। अपिचात्रि प्रेमिप्रेमिकयोरन्तस्तलोथ्य—ललितकोमलकल्पनाकलापः सुकुमारभावर्भंगितरंगाः; पूर्णपरिपक्वित्रमतया परिणताः प्रतिभान्ति। ग्रामीणरमणीनामुद्दामशृंगारभावना मुग्धकारिणी सहजक्रीडा चाऽऽयासेन विनैवाऽतिसाफल्यैन कविनामुना व्याधायि। शृंगारकविशेखरीभूतो गोवद्वन्नाचार्येऽयं स्वजन्मपरिग्रहेण जनकजाजन्मभूजनपदमनुजग्राह एवज्च बंगाधिपस्य कनसोननरेशस्य कनसोननरेशस्य कैस्त षोडशोत्तरैकादशमितशकाद्भवस्य श्रीलक्ष्मणसेनस्य राजसभायामासीदित्यत्र सर्वेषामैतिह्यवेतृणामैकमत्यम्।

Demy 1/8

ISBN-81-7081-191-0

pp 284 1988

Rs.250.00



अश्वमेधविवेकः

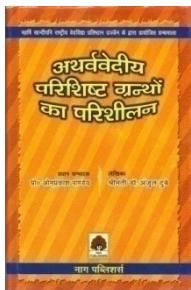
डॉ. दिवाकर महापात्रः

“सर्वजनानां सर्वविधक्षेमः अश्वमेधयागानुष्ठानेन” इतिमत्यै
अश्वमेधयागस्य प्राधान्यमङ्गीकृत्य एतावता कालेन राजभिरनुष्ठितः
ऋषिभिरनुष्ठापितश्च। वैदिकर्मसु अर्न्वतमानवैज्ञानिकपौर्वार्यभावः
नापहोतु शक्यते। अश्वमेधः बहुधनसाध्यः, बहुकालसाध्यः,
बहुजनसाध्यश्च। एकतायाः चिह्नरूपेणापि। अश्वमेधस्य ग्रहणं
भवति। अश्वं स्वसाम्राज्य चिह्नतया राजानः प्रेषितवन्तः तस्य रक्षणार्थं योद्धारोऽप्रिप्रेषिताः।
‘राष्ट्रं वाऽश्वमेधः’ इत्येन अश्वस्य रक्षणपालने राष्ट्रं वाऽश्वमेधः “इत्येन अश्वस्य
रक्षणपालने राष्ट्रस्य रक्षणं पालनं च भवति। क्षत्र शब्देन
सामुदायिकलोकव्यवस्थाशक्तिरिति श्रायते। पालकशक्तिः राजा, पाल्यमाना शक्तिः
प्रजाः। उभयोः व्यवस्थया संचरणार्थं रक्षकत्वेन कल्पिताः शक्तिः ब्रह्म इति व्यवहितये। पूर्णः
पूर्णं प्रजापति मुद्दिश्य प्रवृहत्तोऽयं यागः सर्वेरपि प्रकारैः पूर्णः। प्रजापतिरेव अश्वरूपत्वेन
आविर्भूत इति ब्राह्मणेषु प्रतिपाद्यते। वेदान्ततत्त्वं परिपूर्णोऽयमश्वमेधयागः, यागस्य उद्देश्यं
प्रजापतिः तस्य हविश्च प्रजापतिरेवेति। उभयोरेकत्वं वेदवेदान्तसिद्धम् इति प्रतिपादितं
ग्रन्थेऽस्मिन्।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-611-4

pp 164 2005

Rs.150.00



अर्थवेदीय परिशिष्ट ग्रन्थों का परिशीलन

प्रधान सम्पादक — प्रो० ओम प्रकाश पाण्डेय
लेखिका — श्रीमती डॉ अंजुल दुबे

अर्थवेद की परम्परा में उसके 72 परिशिष्ट ग्रन्थों का विशिष्ट
महत्त्व है। अर्थवेदियों की पहचान वैदिकों के मध्य प्रायः
‘पंचकल्पित्’ रूप में ही है। इनमें से कौशिक सूत्र को छोड़कर
अन्य नक्षत्रादि कल्प इन्हीं 72 परिशिष्टों में समाविष्ट हैं। नक्षत्रकल्प, धूर्तकल्प,
राष्ट्रसंवर्ग, पुरोहित कर्मणि, इन्द्रमहोत्सव, स्कन्दयाग, अनुलोपकल्प, आसुरीकल्प,
कौत्सव निघण्टु इत्यादि प्रमुख परिशिष्ट ग्रन्थ हैं।
इस पुस्तक में इन परिशिष्टों की सर्वाधिक विशत और विस्तृत विवेचन की गई है।
इन परिशिष्टों में विहित शान्तिक और पौष्टिक कर्म, आभिचारिक कृत्यों राजकर्मों,
आयुर्विज्ञान तथा अन्य विभिन्न विषयों का अनावरण अत्यन्त तत्परता से किया गया
है।

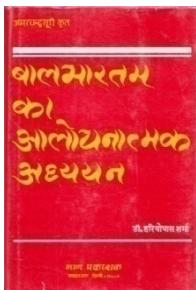
Demy 1/8

ISBN-81-7081-623-8

pp 212

2005

Rs.175.00



अमरचन्द्रसूरि कृत

बालभारतम् का आलोचनात्मक अध्ययन

डॉ. हरिगोपाल शर्मा

संस्कृत साहित्य में जैनधर्मवलम्बी महाकवि अमर चन्द्र सूरि कृत 'बालभारतम्' प्रकाशमान नक्षत्र है। प्रायः संस्कृत काव्यकारों का उपजीव महर्षि वेदव्यास रचित 'महाभारत' है। 13वीं शती के गूर्जर राज्याधिपति बीसलदेव के लब्ध प्रतिष्ठ राजकवि पण्डित अमरचन्द्र सूरी की अनुपम रचना 'बालभारतम्' का मूल उत्स भी महाभारत ही है।

कवि ने अपनी विलक्षण प्रतिभा से विशालकाय महाभारत की मात्र 6950 श्लोकों में समाविष्ट करके 'बालभारतम्' की आश्चर्यजनक सार्थकता प्रदान की है। यह महाकाव्य महाभारत के अनुरूप 18 पदों में व्यवस्थित है। पूर्वकवि प्रशस्ति के रूप में लिखा गया 19वाँ अतिरिक्त शार्ग महाकवि अमरचन्द्र सूरी की विनयशीलता का द्योतक है।

'बालभारतम्' में रसपरिपाक, भावभिव्यंजना, अलंकार संघटना, छन्दोयोजना, सूक्ष्मिक संचयन तथा प्राकृत सुषमा आदि की अपूर्व छटा दर्शनीय है। इस मनीषी महाकवि ने कौरव-पाण्डव, द्रोणाचार्य, भीम, कुन्ती, द्रौपदी एंव सुभद्रा आदि का मर्यादित एवं ऐतिहासिक रूप प्रदर्शित कर इनके जीवन की प्रेरक झलकियाँ प्रस्तुत की हैं।

साहित्य शास्त्र के मर्मज्ञ कवि ने अपनी कृति में विषयानुरूप वीर रस का प्रधानता दी है। अन्य रसों का भी यथोचित प्रयोग कर रसज्ञ सुधी समाज को ब्रह्मानन्द सहोदर सागर में स्नान कराया है। कवि ने इस महाकाव्य की इति-श्री शान्त रस के साथ सम्पन्न कर अपने साधु स्वभाव का परिचय दिया है।

वस्तुतः कवि ने अपनी इस कृति द्वारा अपने नाम को अक्षरशः सत्य प्रतिष्ठित कर "बालभारतम्" को अमरता प्रदान की है।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-206-2 pp 240

1989

Rs.150.00

कविराज—राजशेखर विरचित महानाटकम्

बालरामायणम्

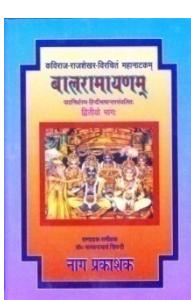
पाठनिर्धारण—हिन्दीभाषान्तरसंवलितः

सम्पादक — समीक्षक

डॉ. भास्करचार्य त्रिपाठी

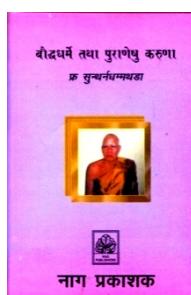
बालरामायण रामचरित की एक उपन्यासधर्मी नाट्यप्रस्तुति है। पढ़े तो रहस्य रोमाञ्च के अनेक शतदल उन्मीलित करती किसी तर्कसम्मत रामकथा से प्रथम परिचय मिलता है। मञ्च पर देखें तो लोक और शास्त्र का गंगा-जमुनी समन्य लिए भारतीय नाट्य का एक अनूठा अभिनयात्मक इन्द्रजाल सामने आता है। राजशेखर ने बाल राम की यह पराक्रम-लीला 'बालकवि' के रूप में अंकित की थी। संस्कृत जगत् को आन्दोलित होकर कहना पड़ा कि यह कालजयी प्रस्तुति पूर्वजन्म की साधनाओं का परिणाम हो सकती है।

पूर्व संस्करण सामान्यतया आज मिलते नहीं, जैसे तैसे निर्वाह की प्रवृत्ति के कारण



कोई धुंधली प्रतिकृति ही सहदयों को मिल पाती है। प्रस्तुत संस्करण में आलोचनात्मक दृष्टि से पाठनिर्धारण के लिए पण्डित जीवानन्द और लक्षण—सूरी संस्करणों का अनुशीलन किया गया है। प्रायः सभी पाठान्तर पादटिप्पणी में संकेतित हैं। रचना का हिन्दी अनुवाद यथासम्भव आज के मुहावरों में नाट्य के समानान्तर सरल भाषिक स्तर पर संजोया गया है। यह भी प्रयत्न किया गया है कि अनुवाद की विश्वनीयता एक शोधपूर्ण संस्कृत व्याख्या से कम न हो।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-296-8 pp 840 (2 vols set) 1995 Set Rs. 800.00



बौद्धधर्मे तथा पुराणेषु करुणा

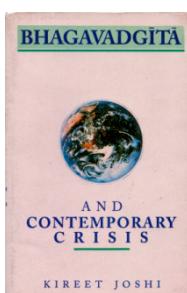
फु सुन्थरनध्मथडा

करुणा ही बौद्धधर्मस्य वाणी, नीतिस्तथा सामग्री। करुणा न किमपि विशेषणम्। इयं नीतीनां नीतिः, शास्वती समदर्शिता, अंशहीना सार्वलौकिकी सास्वता, सनातनाधिकरस्य दीप्तिः, सर्वेषां वस्तूनां योग्यता, चिरन्तनप्रेममयी नीति। बौद्धधर्मे करुणाया धारणा अतीव गुरुत्वावहानि कतिपयानि तथ्यानि बाधते। तेषां समीकरणमन्तरेण समग्रसय व्यापरस्य च नियमस्य च यर्थार्थं तातपर्यमन्तरेण करुणासम्पर्कितज्ञानं न सम्भवति।

पुराणेषु बहुसंख्यकानि आख्यानानि, उपाख्ययानानि देवकथाश्च तिष्ठन्ति तेषु करुणा विविधा दिक् प्रकाश्यते, इदं प्रदर्शनं तथोपस्थापनं निःसंशयेन पर्याप्तं भविष्यति यत् पुराणानां युगे हिन्दुधर्मः बौद्धधर्म इव करुणात्मक आसीत्।

अस्मिन् ग्रन्थे इदं प्राथम्येन प्रमाणितं यत् वैदिकस्य तथा पौराणिकस्य दर्शनस्य मतैः सह बौद्धदर्शनस्य मतानां निविडं सान्निध्यं वर्तते। तत् सान्निध्यमुभयोर्दर्शनयोर्मध्ये अन्योन्यात्मीयत्वं सूचयति। उभयोर्दर्शनयोर्मध्ये अस्मिन् चारित्रिके सम्बन्धे सति हिन्दुभिः दशावतारेषु अन्यतामावतारत्वेन बुद्धशास्त्रणि तथा अष्टादशमहापुराणानि विशिलिष्य आलोचितानि।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-336-0 pp 212 1995 Rs.350.00

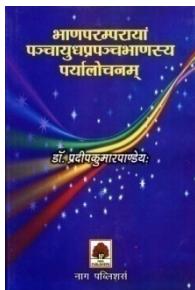


BHAGAVADGITA AND CONTEMPORARY CRISIS

(An Introductory Study in the form of fictional narratives) - KIREET JOSHI

The aim of this book is not to present a scholarly interpretation of the Bhagvadgita : the aim is to gather from that great book a few insights and to relate them to some of the needs of our own times. The fictional form in which this study has been presented is experimental in character ; it was felt that this form might prove convenient in presenting helpful light from the Gita in an exploratory manners on some typical situations of our present day life.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-338-7 pp 326 1996 Rs.350.00



भाणपरम्परायां पंचायुधप्रपञ्चभाणस्य पर्यालोचनम्

डॉ. प्रदीप कुमार पाण्डेयः

संस्कृत साहित्य में भाषा की सुदीर्घ परम्परा रही है। भाण निर्माण की प्रवृत्ति गुप्तकाल में लक्षित होती है। यद्यपि महाकाव्य नाटक आदि की तरह भाण—रचना की बहुलता प्राचीनकाल में नहीं दिखती तथापि शूद्रक का पद्मप्राभृतक, वरुचि का उभयाभिसारिका, ईश्वरदत्त का धूर्तविटसंवाद और श्यामलिक का पादताडितक भाण का परचम लहराता रहा है। बारहवीं शताब्दी में कविवत्सराजविरचित कर्पूरचरित भाण से भाणपरम्परा निर्बाध गति से पल्लवित, पुष्टि और विकसित होती रही है। उत्तर भारत में उदित भाणपरम्परा कालगति के साथ दक्षिण भारत में फलित हुई।

प्रस्तुत ग्रन्थ में भाणपरम्परा और पंचायुधप्रपञ्चभाण का पर्यालोचन दो मुख्य बिन्दु हैं। भाणपरम्परा में एक सौ एक भाषाओं का संक्षिप्त परिचय है। त्रिविक्रमपण्डित विरचित पञ्चायुधप्रपञ्चभाण का पर्यालोचन क्रम में अनेक मनोहारी कथाएं से सबल बनाती हैं तथा पात्रयोजना में पात्र के नाम रस को रसाच्चित और अलंकार को अलंकृत करते हैं। काव्यशास्त्रीय और नाट्यशास्त्रीय आदि गुण भाण को गति प्रदान करती हैं तथा अभिनेत्या और काव्यविलक्षणता से यह विशिष्ट बना है। सूक्ष्मतयता इस क्रम का एक विशेष वरदान है।

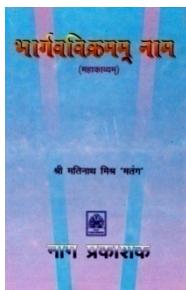
Demy 1/8

ISBN 81-7081-686-6

pp 272

2012

Rs. 250.00



भार्गव विक्रमम् नाम (महाकाव्यम्)

श्री मैतिनाथ मिश्र 'मतंग' रचितम्

इदकाव्यम् वीररस प्रधानम् पौराणिककथवलम्बितं विद्यते। यां कथां कवि: कौशलेन कल्पनया सुघटितां कृत्वा महा काव्य रूपेण लोके उपस्थापयामास। अस्य महाकाव्यस्य चरित्रनायको महर्षिवंशज स्वयं महर्षिरुद्धात्तचरितः वीरः परशुरामास्ति। अस्य प्रतिद्वन्द्वी रावणस्यापिविजेता अनूपदेशस्य सप्राण महाबली कार्तवीर्यार्जुन आसीत्। योनितान्त मुदण्ड चरितो दीनहीन जनान् तुच्छंत्वा स्व भोगलिप्स्या प्रजापीडनं तत्पराबभूवं तद्वसेनतंदनुगामिनः भरतखण्डस्यः प्रायः सर्वचंक्रवर्तिनो राजानस्तद्वशगा अभूवन्। तेऽपि प्रजासु पशुवदाचरन्तः प्रजादोहन पीडनानि कुर्वन्ति रस्म एतस्मिन् संरम्भे स्वकठोरतपः साधनया बलमर्जित्वा भृगुसंघं घटयित्वा सकलोत्पात मूलभूतार्जुन बधाय परशुमद्याय्य चलितः अन्याय विराधे अस्त्रेत्पापनमपि न महर्षित्वं दूषयतीति निर्दर्शयन् सर्वान् राज्ञः (क्षत्रियान्) विवित्यैक विंशतिवारेण हत्वा सदलं संवशमर्जुनं विनाशय जितां पृथिवीं दानीं कृत्य राजतन्त्रं मेवापाकरोत्। एतावतापि रामे: नार्षवृत्तिं जहौं अखिला सम्पत्तिर्नात्मकृतेऽपितु जगद्वितायैव भवतीति शिक्षयत्त्वलोकान् तपस्यार्थं प्रस्थितः। इदमेव कथावस्तु स्वकवित्वं चातुर्ण्येण गुणत्रयालंकारादि सकलोपादानैलितंविधायैतादृशं कतिशताव्यनन्तरं कविः सहृदयेभ्य उपहरति।

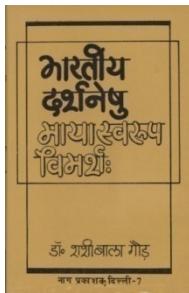
Demy 1/8

ISBN-81-7081-314-X

pp 176

1995

Rs.150.00



भारतीय दर्शनेषु माया स्वरूप विमर्श

डॉ. शशिबाला गौड़

प्रस्तुत पुस्तक में दार्शनिक साहित्ये माया स्थानं तदीयं
महत्त्वं, मायाया महत्त्वम्, मायाया अविद्यायाश्च परिभाषा, मायाया
स्वभावस्तदभेद, रामानुज दर्शने माया, मधवाचार्यमते माया स्वरूपं,
कबीरमते माया स्वरूपं, ब्रह्मणो विशेष विवेचनम्, मायाया विषये
रामानुजस्य सप्तानुपतिप्रदर्शन तत्परिताश्च जैनदर्शने माया आदि
पर विद्वतापूर्वक प्रकाश डाला है।

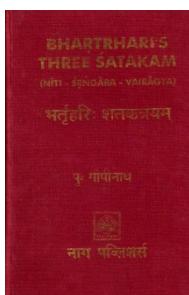
Demy 1/8

ISBN-81-7081-163-5

pp 306

1988

Rs.200.00



भर्तृहरि: शतकत्रयम्

(नीति—शृङ्गार—वैराग्य)

लेखक — पु. गोपीनाथ सम्पादक — नाग शरण सिंह

BHARTRHARI'S THREE ŚATAKAM (NITI-SRNGĀR-VAIRĀGYA)

(Life of Author, Sanskrit Text, Hindi & English
Translation, copious foot-note, number of parallel
thoughts, Critical explanatory notes & Śloka Index
etc.)

BY – P. GOPINATH

REVISED BY – NAG SHARAN SINGH

The present edition is to fill up a necessary gap regarding the Satakas of Bhartrihari. Besides a large number of copious notes (both critical and explanatory) at the end of the volume, the original Sanskrit text being immediately followed by Hindi and English translation and a variety of citations of parallel passages from Sanskrit and English author constitute a novel feature of the present edition.

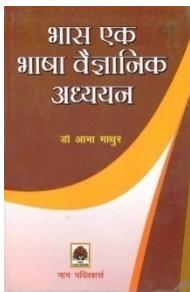
Demy 1/8

ISBN-81-7081-194-5

pp 470

2011

Rs.350.00



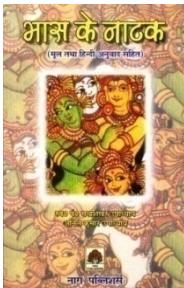
भास एक भाषावैज्ञानिक अध्ययन

डॉ. आम्र माथुर

संस्कृत साहित्य में भास के विषय में अनेक प्रशस्तियाँ प्राप्त होती हैं किन्तु पिछली सदी तक नाटकों की अनुपलब्धि के कारण विद्वत्जगत इन नाटकों से अपरिचित ही था। सन् 1909 में महामहापाठ्याय ठी० गणपति शास्त्री ने अथाह परिश्रम से इन नाटकों को खोजकर प्रकाशित किया। भासकृत तेरह नाटक अपनी भावप्रवणता, रोचकता तथा रसाद्रता के कारण संस्कृतज्ञों में बहुत अधिक लोकप्रिय हुए हैं। जीवन के विविध पहलुओं के उन्नीलन के कारण यह नाटकचक्र वैविध्य एवं वैदर्घ्यपूर्ण सरल भाषा से संवलित है। प्रस्तुत पुस्तक में भास की संस्कृत का एक भाषावैज्ञानिक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। वैयक्तिक रूप से संस्कृत के विभिन्न साहित्यकारों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन प्रायः विरल ही है, अतः इस पुस्तक में उसी दिशा में एक प्रयास किया गया है। भास प्रायः संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ तथा सम्भवतः आदिनाटककार है तथा इनका समय सम्भवतः ईसा पूर्व पाँचवीं शताब्दी है। रामामर्यण, महाभारत, लोकवृत तथा कवि कल्पना प्रसूत इन प्राचीन नाटकों की भाषा भाषविज्ञान की दृष्टि से अध्ययन के लिये बहुत उपयुक्त है। भाषाविज्ञान विभिन्न पक्षों की दृष्टि से भाषा का एक समग्र रूप में अध्ययन करता है। प्रस्तुत पुस्तक में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विवेचना प्रस्तुत की गई है :— (1) अपूर्व अथवा विशिष्ट प्रयोग (2) ध्वनि सम्बन्धी प्रवृत्तियाँ (3) वाक्य संरचना (4) अर्थविचार (5) अपाणिनीय प्रयोग (6) कालिदास पर भास का प्रभाव।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-656-4

pp 192 2009 Rs.200.00



भास के नाटक

(समीक्षात्मक भूमिका, मूल तथा हिन्दी अनुवाद के साथ)

(स्व.) पं. चन्द्रशेखर उपाध्याय,

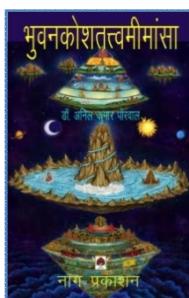
अनिल कुमार उपाध्याय

भास एवं उनके जीवन तथा युग के विषय में बहुत कुछ लिखा गया है। फिर भी मुड़कर देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि और बहुत कुछ लिखा जा सकता था एवं लिखा जाना चाहिए था। भास का संस्कृत नाट्यकला में वही स्थान होना चाहिए था जो यूनानी साहित्य में इस्किलस को दिया गया था। संस्कृत साहित्य के सबसे प्रथम प्रसिद्ध नाटककार भास थे। लेकिन यह एक कटु सत्य है कि भास के नाटक कालिदास, भवभूति या शूद्रक के नाटकों जितना पढ़े नहीं गए हैं, इसलिए कि ये नाटक मूल या अनुवादित रूप में अधिक प्रचलित नहीं थे। भास के सम्पूर्ण नाटकों का प्रसिद्ध विद्वान् (स्व.) पं. चन्द्रशेखर उपाध्याय द्वारा हिन्दी अनुवाद का प्रकाशन बहुत सामयिक है।

महान् विद्वान् व वैदिक, पं. चन्द्रशेखर उपाध्याय ने आने वाली पीढ़ियों के लिए भास के सभी नाटकों का विशुद्ध अनुवाद किया है। यह अवश्य उन संस्कृत छात्रों के काम आएगा जो मूल रचना का पढ़ना चाहें और जो उस महान् नाटककार की श्रेष्ठता को परखना चाहें।

श्री चन्द्रशेखर उपाध्याय जैसे महान् विद्वान् द्वारा जो विस्तृत परिचय आरम्भ किया गया था, वह उनके प्रथ्यात् पौत्र अनिल कुमार उपाध्याय द्वारा सम्पूर्ण किया गया। लेखक ने कई स्रोतों का गहन अध्ययन किया पर अन्त में उन्होंने अपने यही विचार व्यक्त किए। इन नाटकों के रचनाकार के विषय में भी मतभेद था। दोनों ओर ठोस तर्क थे और लेखक ने इस पर सूक्ष्म विचार किया। उन्होंने भास के नाटकों के अनुवाद की परम्परा में एक नई कड़ी जोड़ी। उनका यह प्रयास उनके पितामह की स्मृति में न केवल उनकी श्रद्धांजलि है, अपितु भावी पीढ़ियों के लिये भी एक उपहार है।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-525-8 2005 pp 1372 (3vols set) Rs. 1300.00



भुवनकोशतत्त्वमीमांसा

– डॉ. अनिल कुमार पोरवाल

'भुवनकोशतत्त्वमीमांसा' यह ग्रन्थ मूलतः ज्योतिर्विज्ञान, भूगोल तथा आधुनिक विज्ञान के अन्तर्सम्बन्धों पर आधारित है, जिसके अन्तर्गत सृष्टिप्रक्रियना के वैदिक, दार्शनिक तथा ज्योतिर्विज्ञानिक दृष्टिकोणों को स्पष्ट करते हुए आधुनिक विज्ञान द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों का तुलनात्मक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। ब्रह्माण्डोत्पत्ति के साथ ब्रह्माण्ड के स्थूल सदस्यों का सागेपाँग वर्णन करते हुए भूमण्डलोपरि व्याप्त ज्योतिषशास्त्रोत्त सप्तवायुस्कन्धों तथा आधुनिक भूगोल में उद्भूत पंचवायुस्तरों का आलोचनात्मक वर्णन करते हुए अग्रिम शोध सम्भावनाओं पर प्रकाश डाला गया है। इस ग्रन्थ में पृथ्वी के स्वरूप, ग्रह-कक्षाक्रम, आधारपरम्परा, गोलत्त्व का निर्धारण, समतलत्व प्रतीति के कारण और निराकरण, मध्यम तथा स्पष्ट भूपरिधिमान, व्यासमान, उत्तरी व दक्षिणी गोलाद्वार्द्धों का भेद, अक्षांश-देशान्तर की अवधारणा, उनका आधुनिक यन्त्रों के माध्यम

से साधन, चतुर्दीपा वसुमती, समुद्रों से आवृत्त जम्बूद्वीपादि सप्तदीपा वसुमती के पौराणिक, ज्योतिर्वेज्ञानिक तथा आधुनिक वैज्ञानिक मन्त्रव्यां का विवेचनात्मक उल्लेख करते हुए कूर्मचक्र के द्वारा स्थान विशेष के संहितोक्त फलों का कथन किया गया है।

यह ग्रन्थ निश्चित ही ज्योतिर्वेज्ञान, पुराण, साहित्य, आधुनिक विज्ञान, इतिहास, भूगोल आदि विषयों के विद्वान, अध्येताओं तथा शोधार्थियों के लिये प्रभादेय होगा।

Size Demy 1/8

ISBN 81-7081-697-1

PP 430

(2018)

Rs. 500



भृगीशसंहिता

(मूल तथा भाषा टीका)

डॉ. अनन्त राम शास्त्री

भारत का कश्मीर शीर्ष है और कहा जाता है कि अगर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है। यहाँ हमारे सभी देव पुरुषों का निवास स्थान कहा जाता है और यहीं पवित्र पावनी गंगा तथा अन्य महानदियों का उद्गम स्थान है। अभी तक अप्रकाशित इस भृडिगश संहिता में सविस्तृत वर्णित प्राचीन सांस्कृतिक काश्मीर के तीर्थ स्थानों से विद्वान लेखक ने सर्वसाधारण को परिचित कराया है तथा मूल पाठ संस्कृत के साथ भाषा टीका कर सभी के लिए समझने के लिए सुगम भी करा दिया है।

Demy 1/8

ISBN 81-7081-086-8

pp 470

2023

Rs.500.00



श्रीमच्छ्रीकण्ठाचार्यकृतं

ब्रह्मसूत्रभाष्यम्

श्रीमद्पृथिवीदीक्षितकृतशिवाकर्मणीपिकार्थ्यव्याख्यासहितम् । तैरेव

प्रणीतया तत्तदधिकरणपूर्वपक्षसिद्धान्तसंग्राहकपद्यरूपया

नयमणिमालया सनाथीकृतं च । रा. हालास्यनाथशास्त्रिणा संशोधितम् ।

स्वप्रप्नीतया चतुर्मतसग्रहरूपया सूत्रार्थचन्द्रिकया संयोजितं च ।

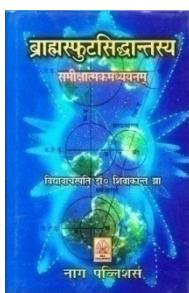
This work forms the first of the two volumes of Sivrkamaqnidipika, Appayya Dikshita's famous commentary of Srikantha's Bhasha on the Brahma Sutra, Shrikanta's Bhashya, it may be mentioned, constitutes the interpretation of the ancient Brahma Sutras from the Saiva stand-point. Srikantha Bhasha, with the lucid commentary of Appayya Dikshita, has not been printed before, and the danger was apprehended that in a few years the available MSS. may completely withen away. Though the existing MSS. were mostly moth-eaten and scattered in isolation and oblivion all over India, the editor resolved to spare no pains in collecting the available MSS. and by printing it.

साईंज डिमाई 1/8

पैज 1132 2 भागों में

संस्करण 2019

मूल्य 2500



ब्राह्मस्फुटसिद्धान्तस्य समीक्षात्मकमध्ययनम्

विद्यावाचस्पति डॉ. शिवकान्त झा

अस्मिन् ग्रन्थे मध्यमाधिकारे कालप्रवृत्तिनिरूपणम्, कालेऽद्वस्य भगाणस्य च विभागनिरूपणम्, बीजकर्मसंसरकाराशैतं विषया वर्णिताः सन्ति स्पष्टाधिकारेऽर्धज्योत्क्रमज्यानयनम्, अभीष्टचापज्यानयनम्, इष्टज्यातश्चापानयनम्, मन्द-शीघ्रपफलयोरानयनम्, फलरथ धनत्व-ऋणत्वयोः कथनम् नतर्कर्मसाधनादयश्च विषयाः समीक्षिताः। त्रिप्रश्नाधिकारे दिग्ज्ञान-लंगानानयन-कोणशङ्ककवादिनां साधनं तत्समीक्षणञ्च विहितम्। चन्द्रग्रहणाधिकारे तिथ्यन्तकालिकशरकलानयन- भूमासाधन-स्थिति-विमर्दसाधन-स्थितिविमर्दार्धस्पटीकरणग्रासमा-नानयन-इष्टग्रासानयन- अक्षवलन-साधन-आयनवलनसाधन-स्पष्टवलनसाधन- विशेषोक्तविम्बीयस्पष्ट-वलनानयनानां समीक्षा विहिता। सूर्यग्रहणाधिकारे लम्बननत्योरानयनं समीक्षणपुरस्सरं संवलितम्। उदयास्ताधिकारे आयनदृक्कर्ममानयनम्, आक्षदृक्कर्ममानयनम्, कालांशसाधनञ्च विहितम्। शृङ्गोन्नत्यधिकारे चन्द्रस्य स्पष्टक्रान्तिज्यासाधनम्, कोटिकर्णयोरानयनम्, सिताङ्गुलसाधनम्, परिनलेखप्रकारानिरूपणादयश्च विषयाः समीक्षिताः। चन्द्रच्छायाधिकारे रविचन्द्रयोः स्फुटच्छायासाधनञ्च समीक्षणपुरस्सरं निवेशितम्। ग्रहयुत्यधिकारे ग्रहभिम्बकलास्फुटीकरणम्, समप्रोतीययुतिसाधनम्, स्फुटयुतिसाधनञ्च विहितमस्ति। दशमोऽध्यायोपसंहारात्मकोऽस्ति।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-447-2

pp 280 1999

Rs.250.00

BRHASPATI IN THE VEDAS AND PURĀNAS

Dr. (Mrs.) Saraswati Bali

Foreword by

Dr. Rasik Vihari Joshi

The present work is the first ever attempt on a very important Vedic and Pauranic deity i.e. Brhaspati. The word can be called a fulfilment of a small part of a very vast and expensive work on a thorough study of Vedic mythology. Brhaspati as he is generally believed to be, is not merely the preceptor of gods; instead, he imbibes in himself so many other mythological aspects. This makes his personality comprehensive and the study of such a varied personality is exactly what the present

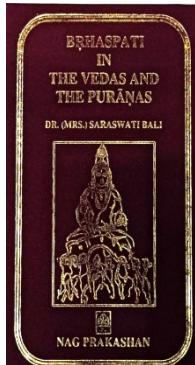
work has undertaken to do. Brhaspati various aspect such as the lord of the ganas leader on to the right path, lord of speech, god of rain, god of fire, Sun god, supreme Brahman protector of the sacrifice, Brahman priest, his connection with magical incantations, Brahmanic power, presiding over Tiṣya constellation Devaguru, his association with other gods, legends and stories and astrological concept have all been discussed at length in the present work. The author has reached some very important conclusions after making a thorough analysis and study of various aspects of Brhaspati as depicted in the four Samhitas, Brāhmaṇa works and eighteen Purāṇas which no doubt will further the interest of vedic studies.

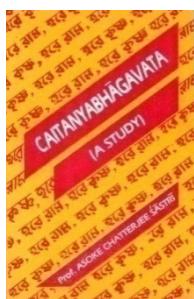
Demy 1/8

ISBN-81-7081-035-3 pp 280

2023

Rs. 300.00





CHAITANYABHAGAVATA

(A STUDY) BY

PROF. ASOKE CHATTERJEE SHASTRI

In the present work, the author following the lines of the Caitanyabhagavata has shown that it is possible for a person to scale the height on which nature stands. A true devotee can arrive at the blessed stage where losses and crosses weight not upon the soul, eternally happy in spite of accident and vicissitudes. A Bhakta can find every secret of life and the great problems of life. He ultimately reaches the stage of perfection and he imparts his tranquility to others, living for the happiness of the world and mankind.

According to the author love is the primary motto, the root word of the Chaitanyabhagavata theology and the same phenomenon is dealt with artistically and at the same time aesthetically.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-266-6 pp 186 1992 Rs.200.00



CHANAKYA-RAJANITI SHASTRAM

EDITED BY PT. ISHVARA CHANDRA SHASTRI

VIDYASAGAR

FOREWORD BY

JOHAN VAN MANEN

The work deals with royal ‘polity’ and was composed by the famous premier of Chandragupta Maurya. The treatment of topics of polity primarily (chapters 4 & 5) detailing the qualities meant to guide the king of standards by which to judge the fitness of public officials and members of his household staff for their respective post. The officials mentioned, to wit are military commander, chamberlain, scribe, ambassador, elephant-keeper, physician, preceptor, priest, astrologer, councilor and superintendent of the harem.

It is a Nitishastra Royal – or ‘gems of polity’ for everybody; very little of it having to do with ‘Instructions for Princes (as in Machiavelli).

Demy 1/8 ISBN-81-7081-241-0 pp 104 1990 Rs.150.00



चार शुल्खसूत्र

(बोधायन, मानव, आपस्तम्ब और कात्यायन)

शुल्खसूत्रों का हिन्दी में अनुवाद, मूल संस्कृत सूत्र, हिन्दी अनुवाद, स्पष्टीकरण, अनेक आकृतियाँ और विस्तृत प्रतावना के साथ।

अनुवादक – डॉ. रघुनाथ पुरुषोत्तम कुलकर्णी
युजुर्वद शाखा का श्रौतसूत्रों का अंतिम प्रकरण शुल्खसूत्र का हाता है। अब तक नौ आचार्यों द्वारा लिखे हुये शुल्खसूत्र उपलब्ध हैं। किन्तु बोधायन, मानव, आपस्तम्ब और कात्यायन आचार्यों के शुल्खसूत्र

आपने वैशिष्ट्य रखते हैं; इता शुल्बसूत्र इन चार शुल्बसूत्र के किसी एक जैसे हैं। इसीलिये केवल इन चार आचार्यों के शुल्बसूत्र का अनुवाद किया है। श्रौतयाज्ञों के लिये मंडप, वेदी, अग्निकुंड, अग्नियिति इत्यादिओं की जानकारी शुल्बसूत्र में देते हैं। इसके पायाभूत भूमिति के नियम भी देते हैं। बोधायन शुल्बसूत्र में येन, अलज, प्रउग, रथचक्र, कूर्म इत्यादि तेरह चितियों का (ईटों के चबूतरों का) निर्माण करने की शास्त्रशुद्ध जानकारी दी है। इन चितियों का निर्माण भूमिति के नियमों के आधार पर ही करते हैं। शुल्बसूत्र भारतीय भूमिति शास्त्र का मूल स्त्रेत है। वे अपना विशिष्ट महत्त्व रखते हैं।

Demy 1/8

pp 334

2003

Rs.600.00



चारों वेद

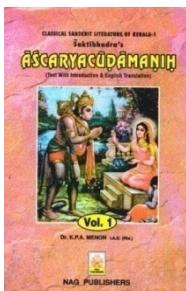
(मूल तथा मन्त्रानुक्रमणिका सहित)

वेद दुनिया के सबसे पुराने लिखित दस्तावेज हैं। वेद हिन्दू धर्म के सर्वोच्च और सर्वोपरि धर्मग्रन्थ हैं। सामान्य भाषा में वेद का अर्थ है 'ज्ञान'। वस्तुतः ज्ञान वह प्रकाश है जो मनुष्य—मन के अज्ञान-रूपी अन्धकार को नष्ट कर देता है। वेदों को इतिहास का ऐसा स्रोत

कहा गया है जो पौराणिक ज्ञान—विज्ञान का अथाह भण्डार है। वेद शब्द संस्कृत के विद शब्द से निर्मित है अर्थात् इस एक मात्र शब्द में ही सभी प्रकार का ज्ञान समाहित है। प्राचीन भारतीय ऋषि जिन्हें मंत्रद्रिष्ट कहा गया है, उन्होंने मन्त्रों के गूढ़ रहस्यों का ज्ञान कर, समझ कर, मनन कर उनकी अनुभूति कर उस ज्ञान को जिन ग्रन्थों में संकलित कर संसार के समझ प्रस्तुत किया वा प्राचीन ग्रन्थ ‘वेद’ कहलाये हैं। वेद भारतीय संस्कृति के वे ग्रन्थ हैं, जिनमें ज्योतिष, गणित, विज्ञान, धर्म, औषधि, प्रकृति, खगोल शास्त्र आदि लगभग सभी विषयों से सम्बन्धित उपाय तथा जो इच्छा हो उसके अनुसार उसे प्राप्त करने के उपाय संग्रहित हैं।

हम लोग चारे वेदों के मूल मंत्रों का सातवलेकर संस्करण को बढ़े साईज, डिमाई 1 / 8 में अच्छे कागज और पापलीन जिल्द के साथ प्रकाशित कर रहे हैं।

साईंज डिमार्ट 1/8 पेज 1882 (4 भागों में) सस्करण 2019
मूल्य रुपये 1600



CLASSICAL SANSKRIT LITERATURE OF KERALA

(TEXT WITH INTRODUCTION & ENGLISH
TRANSLATION)

DR. K. P. A. MENON

DEMY 1/8 ISBN 81-7081-383-2 (SET) 1999 PP 5340 (8

VOLS SET) Rs. 2400.00

सौषदस्त्रं | शैक्षात्त्वं स्पृहं जन्मतः अ ज्ञानस्त्रं . टक्कणं ।

ASCHARYACHUDAMAH

(TEXT WITH INTRODUCTION & ENGLISH TRANSLATION)

DR. K. P. A. MENON

Ascharyachudamanih, a drama in seven Acts has been assented as the earliest of Sanskrit dramas composed in the southern part of India. The author Saktibhadra is believed to have been a contemporary of Adi Sankara on the basis of a story that the budding genius had read out the play to the Jagatguru before it was enacted.

The theme for the play has been drawn from the great epic of Ramayana though the playwright has introduced his own innovations by introducing a duplicate set of Rama, Sita and Lakshmana with the magical powers in which Rakshasas are proficient. It is the wondrous crest-jewel and the equally efficacious ring gifted to them by the hermits of Dandakaranya that enables Rama and Sita to divine the tricks that were being played on them by the deceitful Rakshasas. The emotions; that dominate the play are those of the 'heroic' (vira) and of wonder (adbhuta) with the frequent interplay of sringara, karuna and others also. The play opens with the Surpanakha episode and the construction of the hermitage at Pancavati and ends with the killing of Ravana and the return to Ayodhya in the aerial car after the fire ordeal.

Among the great Ramayana plays Ascharyachudamani has a prominent place along with the famous plays of Bhasa and Bhavabhuti.

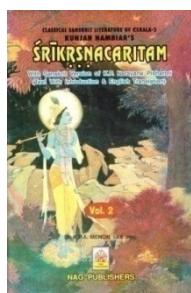
Demy 1/8 1998 pp 310 Rs. 300.00

CLASSICAL SANSKRIT LITERATURE OF KERALA - VOL. 2 SRIKRISNACHARITAM

WITH SANSKRIT VERSION OF K. P. NARAYANA PISHAROIT
(TEXT WITH INTRODUCTION & ENGLISH TRANSLATION)

DR. K. P. A. MENON

Srikrisnacharitam is an epic poem of the Mahakavya type in Ardhasamskrita composed by one of the greatest poets of Kerala known as Kunjan Nambiar who flourished in the middle of the 18th century. It deals with Krisnavatara in twelve cantos ending with the story of Sudama and Santanogopalam. A few cantos of the poem used to be a part of the curriculum of the primary classes right up to the middle of the present century. The award



the middle of the 18th century. It deals with Krisnavatara in twelve cantos ending with the story of Sudama and Santanogopalam. A few cantos of the poem used to be a part of the curriculum of the primary classes right up to the middle of the present century. The award

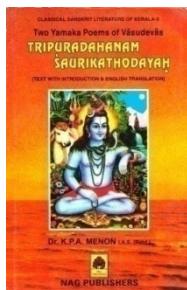
winning Sanskrit version of the poem is being published here side by side with the English translation and it is hoped that this will help in making this great treasure of Kerala's literature popular within and outside the country. Those who are interested in linguistics will find it useful in understanding the influence of Sanskrit of Malayalam literature since the Ardhasamskrita version is given as an appendix.

Demy 1/8

1998

pp 572

Rs. 400.00



CLASSICAL SANSKRIT LITERATURE OF KERALA - VOL. 3

TWO YAMAKA POEMS OF VASUDEVA

TRIPURADAHANAM

SAURIKATHODAYAH

(TEXT WITH INTRODUCTION & ENGLISH TRANSLATION)

DR. K. P. A. MENON

The present work is in continuation of the famous Yamaka poem, Yudhisthiravijayam by the same poet Vasudev Bhattatiri. The theme for Tripuradahanam is also drawn from the Mahabharata and deals with the destruction of the three Asuras at the hands of Lord Mahesvara. Travelling with the speed of wind in the three cities, they had become invincible due to the book granted to them by Lord Brahma. Saurikathodaya deals with the life story of Sauri or Krishna starting from his birth as the offspring of Vasudeva and Devaki. With the expression 'Udaya' one would normally expect that the theme relates to the early part of the life of Krishna and would at least stop with the killing of Kansa. As it happens, the poet continues the story and takes it up to the marriage of Krishna's grandson Aniruddha with USA, the daughter of Bana. From this point of view the alternative title of Saurikatha would appear to be more appropriate.

In dealing with the Saurikatha the author has borrowed from a number of Puranas and from the great epic Mahabharat. On occasions he has not hesitated to give his own version also.

Demy 1/8

1998

pp 462

Rs. 300.00

CLASSICAL SANSKRIT LITERATURE OF KERALA -VOL. 4 NARAYANIYAM

(TEXT WITH INTRODUCTION & ENGLISH TRANSLATION)

DR. K. P. A. MENON

Narayaniyam is, undoubtedly, the most widely read and possibly the finest among the compositions of the scholarly poet of Kerala, Narayana Bhatatiri, a living legend associated with the sacred abode of Vishnu at Guruvayur. Luckily for posterity, the poet has left enough details about himself and his times, in some of his compositions which enable us to get a fairly correct idea about the date and time of some of his works and, indirectly about his own life-span. Going by the Kalidinasankhya appearing in the last line of concluding verse of Narayaniyam Ayurarogyhsaukhyam we know definitely that the poet completed the task of composition on the 28th day of

the month Vriscika of the Kola era of 762 coinciding with the Christian date of 14th of the December 1587. It is believed that the poet was twenty seven years old when he composed what turned out to be his magnum op [us, the Narayaniyam. It is hoped that Narayaniyam will gain greater popularity in all the English speaking countries if a translation in English is available along with the text.

Demy 1/8

1998

pp 948

Rs. 400.00

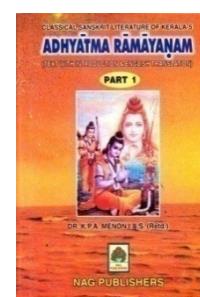
CLASSICAL SANSKRIT LITERATURE OF KERALA - VOL. 5 ADHYATMARAMAYANA

(TEXT WITH INTRODUCTION & ENGLISH TRANSLATION)

DR. K. P. A. MENON

PART. 1

(BALKANDAM, AYODHYA KANDAM, ARNYA KANDAM,
KISKINDHA KANDAM)



The Adhyatma Ramayanam is, as the title would indicate, a spiritual version of the Ramayanam. While Valmiki Ramayanam as an Itihasa was composed with the objective of giving proper advice on all the four goals of life, Dharma, Artha, Kama and Moksha, the Adhyatma version is primarily concerned with the last and final goal. Devotion to the feet of the Supreme Lord in the form of Rama is the surest and easiest means of achieving this objective. To give it a special sanctity, the whole composition is in the form of a dialogue between Goddess Parvati and here lord Siva who himself is described as the greatest devotee of Rama. Included at a later stage as an appendix to the Bramanda Purana, its actual authorship is still a matter of speculation. A palm leaf manuscript of great antiquity which is an heirloom of the translator's family has been utilised for bringing the most authentic version as prevalent in Kerala.

Demy 1/8

1998

pp 922

Rs. 450.00

CLASSICAL SANSKRIT LITERATURE OF KERALA - VOL. 6 ADHYATMARAMAYANA

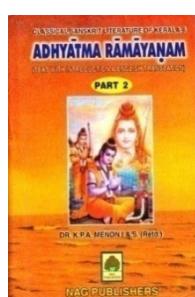
(TEXT WITH INTRODUCTION & ENGLISH TRANSLATION)

DR. K. P. A. MENON

PART. 2

(SUNDRAKANDAM, UTTARAKANDAM)

The Adhyatma version of the Ramayanam is in the form of a dialogue between Uma and Mahesvara in seven parts described as Kandas. Though the composer has generally followed Valmiki's version in narrating the story of Rama along with Sita and Lakshmana, there are some serious deviations also on occasions. To start with, Lord Vishnu is solicited by the Goddess Earth and other celestials in the ocean of mil and he takes his birth as Kausalya's offspring in his divine form. Lakshmana has been pictured as the manifestation of the divine serpent Ananta and the other two brothers, of the Lord's conch and discus. In spite of



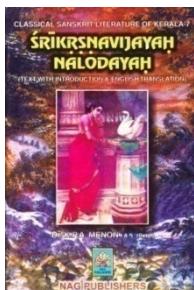
many variations it will appear that, ultimately, it is only a modified version of Valmiki's epic composed with the objective of giving proper enlightenment on the different paths of liberation, primacy being given to that of devotion. Lord Siva himself refers to it as the quintessence of the Vedas.

Demy 1/8

1998

pp 946

Rs. 450.00



CLASSICAL SANSKRIT LITERATURE OF KERALA - VOL. 7 **SRI KRISHNA VIJAYAH & NALODAYAH**

(TEXT WITH INTRODUCTION & ENGLISH TRANSLATION)

DR. K. P. A. MENON

This seventh volume of the series comprises two kavyas of great lyrical beauty, one of them in the Yamaka style and the other generally conforming to the second letter alliteration which has been popular with the poets of Kerala from the period of Samgham literature. Nalodayah should be considered as the earliest composition on the famous Nala-Damayanti episode dealt with in the Mahabharata and had been falsely paraded as one of the works of Kalidasa for a while. Its authorship has been assigned by the present writer to Ravideva of the 9th-10th century.

Srikrishnavijayah is the composition of a Kerala poet known as Sankarakavi who was the court poet of a Kola ruler of Northern Malabar of the 15th century A. D. with the name of Keralvarma. This poem which excels in sabdalankara had attained great popularity and, though the poet is being mentioned with great respect all the time, his composition has practically gone out of circulation. In his detailed introduction the present translator has thrown a lot of light on Poet Sankara and his times.

Demy 1/8

1998

pp 668

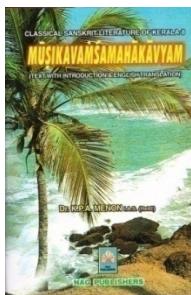
Rs.400.00

CLASSICAL SANSKRIT LITERATURE OF KERALA - VOL. 8

Atulakavi's MUSIKAVAMSAMAHA KAVYAM

(TEXT WITH INTRODUCTION & ENGLISH TRANSLATION)

DR. K. P. A. MENON



Poet Atula's *Musikavamsa* is an Epic Poem, Mahakavya, dealing with the History of the Musika dynasty that ruled over the kingdom of Ezhimala known by an alternate name of Kolathunadu. Some of the rulers of the Ezhimala kingdom have come for prominent mention in the Samgham literature of the early centuries of the Christian era. The composer of the Mahakavya does not appear to have drawn any material from the old Tamil literature but

has given a mythological origin to the founder of the new dynasty and tried to give it a North Indian connection. Eminent historians have not ruled out such a possibility and, it is hoped that the availability of the text along with an authentic translation will be of great use to historians in throwing more light on subject. This poem should be considered as the earliest among Historical Kavyas since the poet is a contemporary of the ruler with the name of the Srikantha who flourished in the early decades of the 11th century A. D.

Demy 1/8

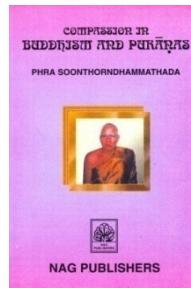
1998

pp 508

Rs. 400.00

COMPASSION IN BUDDHISM AND PURANAS -

Phra Soonthorndhammathada



The Sanskrit Purana-writers have dealt with various aspects of the same from love, kindness, sympathy and mercy. They were most probably imbued with the spirit of salient features of Buddhism compassion which in Mahayana stands for Mahakaruna and in Theravada is very often considered along with Anukampa, Uppekha and Metta. Numerous normal stories in the Puranas highlight the feelings of devotion, kindness, dutifulness and compassion.

For the first time here compassion in the Tripitaka and Puranas have been critically estimated. The Tripitakas with special reference to the Nikayas with their commentaries, and Milindapanha etc. have focused the importance of compassion in molding and characterizing the life of the human beings including the monks. It has been shown here how these tenets of the Buddhist thoughts have caste sober and penetrating impressions on the Sanskrit Puranakaras.

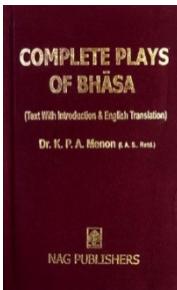
Demy 1/8

ISBN-81-7081-335-2

pp 244

1995

Rs.400.00



COMPLETE PLAYS OF BHĀSA

(Text with English Translation and Notes)

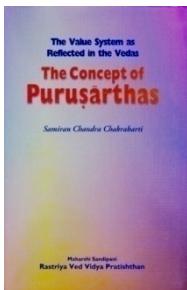
DR. K. P. A. MENON I.A.S. (RETD.)

Bhasa is perhaps the only poet in the history of our literature, who did not go into the oblivion inspire of his works being lost to the readers for centuries together. The literary world was suddenly taken by surprise with the announcement made by Mahamahopadhyaya T. Ganapati Sastri, the first curator of the manuscript library of Thiruvananthapuram that twelve plays of Bhāsa and thirteenth one in an incomplete form had been discovered by his from amongst the manuscripts he was handling. There was great jubilation over this epoch making discovery combined with an element of doubt and disbelief in certain quarter. It be a superfluous attempt to bring all his plays under the prescribed definitions of the ten types of Rupakas since he himself has never tried to be true to a type. The first volume of Bhāsa's plays starts with Balacaritam which has got Krisnavatara as its theme and deals with the boyish adventures of Krisna ending with the slaying of Kansa. The remaining six plays have drawn on different episodes of Mahabharata for their themes and could be generally classified as the Mahabharata Plays. Though the episodes have been taken from Vyasa's great epic or the Puranas dealing with Krisnavatara there have been deviations in their presentation and, in the case of the Mahabharata plays, the characters are not always true to the type and depicted by Vyasa. Apart from this, there are some episodes that do not find any place in the epic and should be considered as inventions of the great dramatist for fulfilling his own objective.

The first volume second part of Bhāsa plays deals with some of the important episodes of Ramayana starting with the disturbed coronation in the first play of 'Pratima' and ending with the consecration of Rama along with Sita in both cases. Though Bhāsa has drawn upon Valmiki for the themes he has made various deviations and introduced his own innovations.

The third volume of Bhāsa's works starts with the twin plays or Pratijnayaugandharyam and Svapnavasavadattam centering round Udayana, the ruler of Vatsa kingdom who had become a legendary figure in Ujjayani as mentioned by Kalidasa. Avimarakam is a play with certain mythological and supernatural elements in it, though there are references to many of the kingdoms of the later Rigvedic period. The incomplete play Carudattam contains the same theme as dealt with in Sudrakas Mricchakatikam. It seems to be the work of a mature age and could very well be the last one left incomplete.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-351-4 2016 (2nd ed) pp1384 (2 vols set) Rs. 2000.00



The Value System as *Reflected in the Vedas* THE CONCEPT OF PURUSHARTHAS

SAMIRAN CHANDRA CHAKRABARI

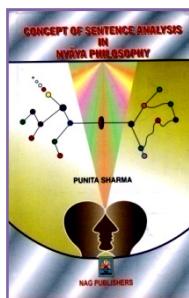
In the present work an attempt has been made to analyze the value system as operative in the Vedic literature. The Vedic value system refers to what the Vedic people regarded as valuable. The word value is used here in its most comprehensive sense. The corpus of Vedic literature is not a homogeneous collection. One can, therefore, hardly expect any uniform value system in all the works of this literature. It was not possible in this short monograph to deal separately with individual texts or views of individual teachers on values; an attempt has therefore been made to have an idea of the values from Vedas as a whole. The Vedic value system resulted in the concept of a set of value called Caturvarga, fourfold objects or aims of man's life Dharma 'religious merit' Artha 'wealth', Kama 'enjoyment' and Moksha 'liberation'. The scheme of the fourfold end of man, Caturvarga, is one of the principal ideas of Hinduism. Like many other things, it is based on the Vedas.

Demy 1/8

pp 100

2003

Rs.185.00



CONCEPT OF SENTENCE ANALYSIS IN NYAYA PHILOSOPHY

DR. PUNITA SHARMA

The book 'Concept of Sentence Analysis in Nyaya Philosophy' is a comprehensive study of the language of Old Nyaya's texts to Navya-Nyaya in historical perspective. It presents the core material of the original Sanskrit texts in an analytical manner in comparison to modern transformational linguistics and into logical terms. The five chapters throw light on the origin of language, concept of sentence, analysis of affirmative and negative sentence, meaning of a sentence and import of a sentence. It helps to open a new horizon before the coming scholars in this field by comparative linguistic approach.

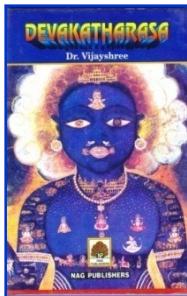
Demy 1/8

ISBN-81-7081-433-2

pp 376

1998

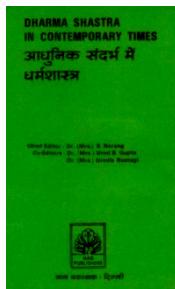
Rs.250.00



DEVAKATHARASA - Dr. Vijayashree

The Hindu speak of the three great Gods Brahma, Vishnu and Shiva. These form, what is often spoken of as the Hindu Triad. In this work I have tried to give stories behind the different epithets used for these three Gods and three Main Goddesses Lakshmi, Saraswati and Durga. The work starts with Ganesh, the most popular and the foremost – God of the Hindus. Epithets in Sanskrit, are not mere names, these always carry some story behind it. Different Puranas give different stories for the same epithet. While dealing with the epithets stories behind incarnations and their form is also taken into account.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-503-7 pp 84 2006 Rs.120.00



Dharmashastra in Contemporary Times **धर्मशास्त्र : आधुनिक सन्दर्भ में**

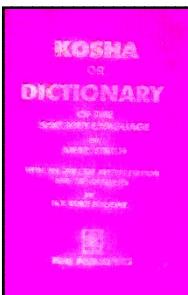
**CHIEF EDITOR – DR. (MRS.) SUDESH NARANG
CO-EDITOR – DR. (MRS.) URMI B GUPTA
DR. (MRS.) URMILA RASTOGI**

Present volume is a co-operative contribution to studies in Hindu Dharma-Shastra (Composed in Sanskrit Language). It comprises of scholarly findings of the students of Indology. The papers cover a range of topics encompassing economic, sociological, philosophical, religious and legal aspects dealt in the Dharmashastra as also their relevance in the present times.

We shoals not feel content with giving the views of Indian and foreign Indologists to demarcate the time of composition of ancient Indian literature such as Veda and Dharmashastra to pre-Mauryan and post-Mauryan period only. To quote K. Motwani : Let us review in the light of the views and opinions of few great men and women if recent times whose writings and utterances contain references of Manu and whose thinking and live have in some measure been influenced by Manu,s teachings.

The Dharmashastra literature has preserved ancestry and contemporaneity both by way of interpretation and commentaries, in each century. The accreditation to Indian wisdom as the eeliest source of knowledge is indisputable established by the different Law Codes available in far East/South and West of Asia as also in Europe, Conscientious thinking’s of ancient saints and seers will continue to “humanize the humanity”. The present work is a tiny step to reach unto the goal.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-190-2 pp 216 1988 Rs.300.00



KOSH OR DICTIONARY OF THE SANSKRIT LANGUAGE

BY AMARA SINGH

**With an English interpretation and
Annotation**

BY H. T. COLEBROOKS

The celebrated Umura Kosha or Vocabulary of Sanskrit by Umura "Singha", is by the unanimous suffrage of the learned, the best guide to the acceptations of nouns in Sanskrit. The work of Panini on etymology is rivaled by other grammars. Some of which have even obtained the preference in the opinion of the learned of particular provinces but Umura's vocabulary has prevailed wherever the Sanskrit language is cultivated; and the numerous other vocabularies, which remain, are consulted only where Umura's either silent or defective. It has employed the industry of innumere commentators, while none of the others (with the single exceptions of Hemachandra's) have been interpreted even by one annotator. Such decided preference of the Umura Kosha and the consequent frequency of quotations from it, determined the selections of this as the basis of an alphabetical dictionary and suggested the expediency of also publishing the original text with an English interpretation.

H. T. Coleebrooke

Demy 1/8

ISBN-81-7081-2046

pp 570

2003

Rs. 350.00

DRAVYAGUNAŚATAŚLOKĪ OF TRIMALLABHAṬṭA

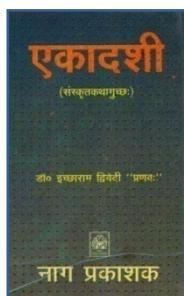
Editor - C. M. Neelakandhan & S. A. S. Sarma



The text *Dravyagunaśataślokī* of Trimallabhaṭṭa is one such text which was edited in a training programme held at Trivandrum from 5th to 21st November, 2009. The transcription and editing of the text was done by participants at this training programme and was later refined by the editors, Prof. C.M. Neelakandhan and Dr. S.A.S. Sarma. As the name of the text suggests it comprises hundred verses dealing with medicinal properties of edible items. The contents are based on Ayurvedic principles and the presentation is designed to bring to the lay-person those principles in a manner which can be put to use and practiced in day to day life. Thus it can be used by the experts as well as lay-person alike. The text includes a Hindi translation named *Puṣpāvatī* by Shaligram Vaiṣya which was printed at Sri Venkatesvara Press, Bombay in 1896 AD. The translation has been included to make the text more intelligible for readers not well conversant with Sanskrit language. The editors have thought useful to include appendices like an article on 'Scientific Texts with Special Reference to Medicine' by Dr. S.A.S. Sarma, another article 'Scientific texts in Sanskrit in aid of modern science' by Dr. K.V. Sarma and the text of *Aṣṭāṅgahṛdaya* of Vāgbhaṭṭa dealing with the Dravadravyavijñāna. A list of manuscripts on

ayurveda available in the major manuscripts libraries of Kerala and Tamil Nadu is also included. Besides, there is an alphabetical list of ślokas of *Dravyagunaśataślokī* given at the end.

Size Royal 1/8 ISBN 978-93-80829-23-4 2014 pp136 Rs. 250.00



एकादशी

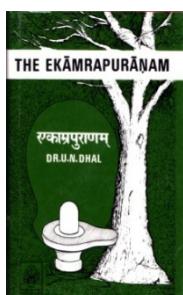
(संस्कृतकथागुच्छः)

डॉ. इच्छाराम द्विवेदी "प्रणव"

"एकादशी" अभिनव संस्कृत कथा साहित्य का प्रतिनिधित्व करने वाला कथा संगह है। "प्रणव" की यह कथायें वर्तमान सामाजिक परिवेश को न केवल पूरी गहराई तक आरोखित करती हैं अपितु समस्याओं के अन्तर्से में प्रविष्ट होकर पाठक को समाधान हेतु प्रेरित भी करती हैं। इस ललित एवं सुरुचिपूर्ण कथा संकलन ने संस्कृत कथा वाडमय को नये आयाम दिये हैं। विषय वैविध्य, जिज्ञासा, कौतुहल, सरसता, एवं जीवन्त प्रवाहमय भाषा के रमणीय आवरण में सज्जित इन कथाओं को एक उपलब्धि कहा जा सकता है। डॉ. द्विवेदी इस संकलन से आधुनिक कथा धारा को निकट से जानने का अवसर मिलेगा ऐसा मेरा विश्वास है।

डॉ. रमाकान्त शुक्ल

Demy 1/8 ISBN-81-7081-325-5 pp 72 1995 Rs.100



EKAMRA PURANA (Critical Edition)

Dr. U. N. Dhal

The Ekamra Purana tries to highlight the Ekamra Kshetra, a well-known Shaiva Kshetra of Orissa together with the historical, cultural and religious traditions prevailing place of their origin. Though it is included in the group of four Sanskrit texts which praise the Ekamra Kshetra, it appears to be far the oldest and the best and is voluminous in size. It consists of 70 Adhyayas and claims to have six thousand verses. The work is divided into five Amshas or parts; and the Amshas consists of 10, 22, 14, 16 and 8 Adhyayas respectively. It is a Shivaite text and puts Shiva in superior position to Brahma, Vishnu and other gods. In the usual pattern of the Puranas it opens with an account of the origin of the universe as well as of Brahma, Vishnu and Rudra from Shiva after the description of Mahapralaya or great dissolution and the cosmography in the first part. In subsequent parts it professes to deal with the origin and history of the notable temples in the Ekamra Kshetra at Bhubaneswar along with other matters as the rituals, festivals and the merits that accrue from the worship or the particular deities. The work informs about the number of temples existed at the time of its composition. Some of the Adhyayas have been devised to serve as Pilgrims guide for various purposes.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-083-3 pp 476 2014 Rs. 600.00



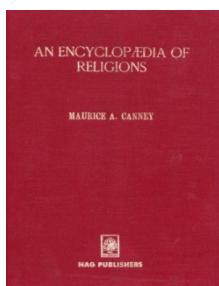
EMERGING TRENDS IN CONTEMPORARY SANSKRIT LITERATURE

- EDITORS PROF. UMA VAIDYA,

DR. GAURI MAHULIKAR & DR. MADHAVI NARSALAY

This book is a collection of essays on topics pertaining to Contemporary Sanskrit Literature. Poetic genius has derived source of creative inspiration from Sanskrit. Sanskrit writers have composed works on literary merit in ancient and modern styles. This book documents and critically analyses literature like *mahākāvyas*, novels, free-verse poetry, satire, biographies, street-plays etc. It takes into account the roles of periodicals and television-scripts in propagating the rich heritage of Sanskrit.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-687-4 2013 pp 334 Rs. 500.00

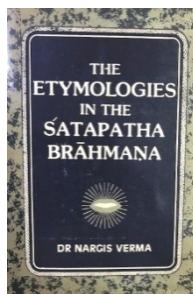


AN ENCYCLOPÆDIA OF RELIGIONS- MAURICE A. CANNEY

The science of Comparative Religion is still so young that information on many matters embraced by it has not found its way as yet into ordinary encyclopaedias; and of special encyclopaedias or dictionaries very few have been published. The great Encyclopaedia of Religion and Ethics, edited by Dr. James Hastings, is a storehouse of learned discussion and information, but its size places it as a household work of reference beyond the reach of many readers. A felt gap is filled very usefully by the handy Dictionary on Non-Classical Mythology, compiled by Marian Edwardes and Lewis Spence; but, as its title indicates, much of the new material that belongs in a special sense to the domain of religion is excluded necessarily from such a work.

It may seem a bold undertaking to seek, as the present writer has done, to present in a volume of moderate size information about most of the ancient and modern religions, ethnic and historical. His excuse must be that certain cravings of his own impelled him many years ago to set out upon a journey along paths which at that time had not been trodden much, and to read more widely than is perhaps usual; that invitations since 1898 to contribute articles to four voluminous encyclopaedias have formed an A B C habit which he finds it difficult to throw off; and that a work such as he has attempted here is as a matter of fact really needed. In any case, a work is provided which covers much of the ground claimed by Comparative Religion and is capable of subsequent expansion.

Crown 1/4 ISBN-81-7081-024-8 pp 412 1976 Rs. 500.00



THE ETYMOLOGIES IN THE ŚATAPATHE BRĀHMĀNA

Dr. Nargis Verma

The Śatapatha Brāhmaṇa, the most important ingredient of Śukla Yajurveda, forms an important part of the vedic literature. It embodies into its fold the transitional transformation of linguistic analysis in the form of etymologies that reveal a landmark in the development of Indological studies. Well equipped with the traditional background as well as modern approach, the author has scrutinized the etymologies of the Śatapathain an original and unique manner. In a voluymious work of nine chapters, the writer has tried to display all the possible phases of linguistic aspects of the words etymologized. The first three chapters manifest a comprehensive view of the origin and the development of etymological science after discussing the perception of the concept of etymology in the vast spread vedic literature from the Rgvedato the Atharvaveda and their associated Brāhmanical texts. These also include the nature of and the characteristics of etymologies along with a scrutiny of their classification based on the subjective as wellas linguistic study. Thechapters from fourth to ninth, discuss in detail the linguistic and analytical speculations on the etymologies of four hundred and sixteen words of the Śatapatha. Besides, these nine chapters are prefixed by an exhaustive introductory chapter and suffixed by the Concluding Remarks throwing light on the possible, original and scientific findings and observations of the author. The present work will prove useful and render substantial help to the researchers in the field of Sanskrit and Indology.

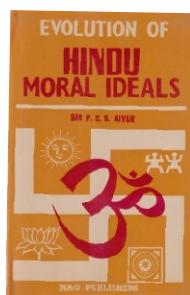
Crown 1/4

ISBN-81-7081-245-3

pp 480

2023

Rs. 450.00



EVOLUTION OF HINDU MORAL IDEALS

Sir P. S. Sivaswamy Aiyer

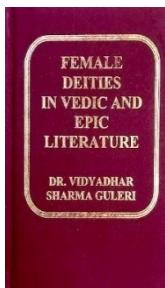
In this books following aspects are discuss Changes in Ethico-Legal Conceptions, Woman, Caste, Slavery, Law and Justice, Rights and Duties of Rulers and Subjects, Missellaneous Topics, Doctrine of Karma, Some Fundamental Questions, Charges against Hindu Ethics and its Merits, Moral Progress, The frift of Modern Tenbdencies and the Future.

Demy 1/8

1976

PP 246

250.00



FEMALE DEITIES IN VEDIC AND EPIC LITERATURE -

Dr. Vidyadhar Sharma Guleri

A detailed study of the functions, deifications and interrelation of Vedic female's deities, on the basis of the original sources along with the analysis of the oriental and occidental Indologists is attempted in the present work. Two different but equally important approaches to the study of the Vedas in the modern world have been used. To make it a comparative study, the material related to the Greek and Semantic female deities has also been used.

The present attempt though based mainly on the Vedic literature as the major sources of information goes deeper into the history of culture and civilization. The study of phenomena would be of immense interest of scholars of Sanskrit, history and religion. An attempt has also been made to study the various aspects of the Vedic female deities.

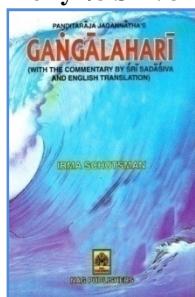
Demy 1/8 ISBN-81-7081-209-7

pp 228 2023

Rs.250.00

GANGALAHARI

(WITH THE COMMENTARY BY SRI SADASHIVA AND ENGLISH TRANSLATION)



Jagannatha (1572 -1625) was a famous Sanskrit poet residing at the Delhi Darbar where Emperor Sah Jahan bestowed on him the honorable title of Panbditaraja. He fell in love with a Muslim woman at the court and was consequently excommunicated buy the Brahmin community. Thereafter he went to Varanasi, where composed the poem known as Gangalahari, verses entreating Goddess Ganga for purification.

Demy 1/8

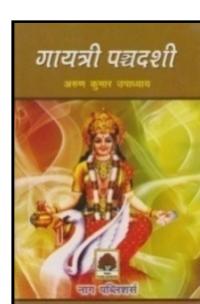
ISBN-81-7081-289-5

pp 278

2001

Rs.250.00

गायत्री पञ्चदशी—अरुण कुमार उपाध्याय



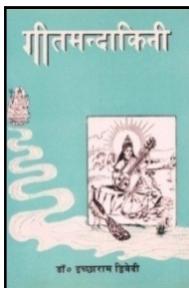
वेद तथा तन्त्र के अनुसार मन्त्रों के 15 अर्थ होते हैं। इस आधार पर गायत्री मन्त्र के 15 अर्थों की व्याख्या की गयी है। ब्रह्म के जितने रूप हैं, वे सभी इसी गायत्री मन्त्र के स्वरूप हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, दुर्गा, गणेश आदि का स्वरूप भी इसी से प्रतिपादित है। उनके लिये इस मन्त्र के अलग रूप की आवश्यकता नहीं है। गायत्री छन्द तथा गायत्री मन्त्र से सृष्टि तथा शब्द दोनों प्रकार के वेद कैसे उत्पन्न हुए, इनकी भी व्याख्या है। गायत्री मन्त्र का तृतीय पाद धी योग है। उसक साधन कैसे किया जाता है इसकी भी व्याख्या की गयी है।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-669-6

pp 128

2011

Rs.180.00



गीतमन्दाकिनी

डॉ. इच्छाराम द्विवेदी 'प्रणव'

सुरभारतीसपर्याप्तपुण्यस्य साम्प्रतिकसहदयानां चेतो मलिम्लुचः, प्रणवोपात्कृष्टवस्य श्री इच्छारामद्विवेदमहाभागस्य गीतमन्दाकिनी पाठकानां करकमलेषु प्राज्ञोतीति मे आहलादस्य विषयः। यूनानेन स्वीया कवितालहर्या काष्ठकुड्याश्मसन्निभेष्यपि सरसत्वं समुदावितम्। गृहित विद्वाव्रतेन प्रत्यहमनुष्ठितरुद्राभिषेकेण 'प्रणवकविना' भगवतः शङ्करस्य प्रसादो नेन लब्धः। "गीतमन्दाकिन्यां" कविना लोकावेक्षणस्य जीवनानुभवस्य जगतो विषमताया मनुरागरसायनस्य महत्त्वस्य भारतीयाभावनायाः, प्रकृतिवर्णनस्य, वियुक्तप्रेमिणो व्यथायाः, गीतेन साकं करुणायाः सम्बन्धस्य, संस्कृत्याः क्षये क्षोभस्यान्सेषाऽत्र भावानां सशक्ताभिव्यक्तिः कृता। गीतसमृद्धिर्न स्यात्तदा शास्त्रीयरागायकानां विस्तार एवेयमभविष्यत्। सख्यं दृष्टिपथमीयात्। "प्रणवस्य" गीतय एवंविद्या एव सन्ति यत्र नादसौन्दर्यं भावसमुद्घ्या साकं तिष्ठति।

Demy 1/8

ISBN-81-7081-267-4

pp 112

1992 Rs. 150

GLIMPSES OF INDIAN PHILOSOPHY AND SANSKRIT LITERATURE

DR. DAYANAND BHARGAVA

Containing thirty two articles, the present work covers a wide range of topics from the Rigveda to Mahatma Gandhi. Written over twenty years of active academic pursuits, these articles not only bring out the inner beauty of ancient Indian tradition of Philosophy and Art but also suggest the line for its future development. It is thus not merely a historical study but a study of a living tradition. An attempt has been made to make the study useful for the students of Indology as well as informative for the enlightened laity. Most of these articles were read and discussed at all India level Seminars and appreciated by scholars of international repute. The book is therefore, bound to be welcomed by all those who are interested in Indology.

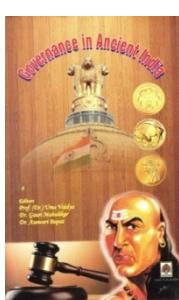
Demy 1/8

ISBN-81-7081-111-2

pp 246

1981

Rs.250.00



GOVERNANCE IN ANCIENT INDIA

ED. DR. UMA VAIDYA

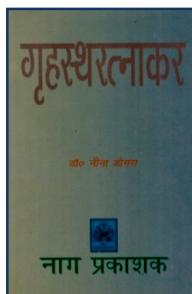
The present volume contains eighteen papers and an appendix presented in the National Seminar on "Governance in Ancient India", organized jointly by the Sanskrit Department of Mumbai University and Observer Research Foundation, Mumbai. The seminar was organized in December, 2010 to mark the centenary year of the discovery of Kautilya's Arthashastra, a systematic treatise on Polity. Various sub-topics like education, State craft, Judiciary,

Legal Documents, Revenue, External Affairs, Internal Security and the like are dealt with in this volume. Right from the Vedic literature to the classical Sanskrit literature, references to good governance are scattered all over Governance firmly founded on moral order is prescribed as the most ideal type by Ancient Indian thinkers. Curious readers would certainly benefit from this volume, if they relate wisdom of the part to the contemporary issue.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-689-5

pp 256 2013

Rs.400.00



चण्डेश्वर कृत

गृहस्थरत्नाकर

(विस्तृत भूमिका तथा मूल)

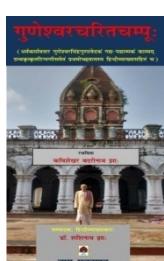
डॉ. नीना डोगरा

प्रस्तुत ग्रन्थ चण्डेश्वर कृत गृहस्थरत्नाकरयृहस्थ के कर्तव्यों से सम्बन्धित है। गृहस्थरत्नाकर में धर्मशास्त्रकारों के मतों को उद्दृत करते हुए कहा है कि प्राचीन भारतीय समाज चार वर्णों में विभक्त था। इन्हीं चार वर्णों की धर्म एवं वृत्ति का विशद निरूपण प्रस्तुत ग्रन्थ में किया गया है। विवाह के आठ प्रकार लक्षण सहित बताये गये हैं जिनसे हमें सामाजिक उदारता का ज्ञान होता है। यज्ञ के बिना मानव की और मानव में रहने वाली मानवता की रक्षा कदापि नहीं हो सकती। अतः गृहस्थ के सर्वविध कल्याणार्थ यज्ञ—धर्म की आवश्यकता प्रतीत हुई जिसका विवेचन चण्डेश्वर ने गृहस्थ रत्नाकर में किया है।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-302-6

pp 496 1995

Rs.350.00



गुणेश्वरचरितचम्पू:

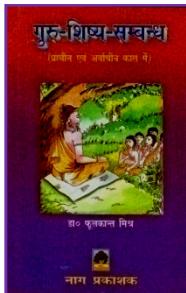
(धर्मकर्मावतार गुणेश्वरसिंहगुणावेदकं गद्य—पद्यात्मकं
काव्यम् ग्रन्थकृत्कृतटिप्पणीसमेतं प्रथमोच्छ्वासस्य
हिन्दीव्याख्यासहितं च)

सम्पादकः हिन्दीव्याख्याकारः डॉ. शशिनाथ जा:

रसगांधर आदि ग्रन्थों के विश्रुत व्याख्याकार वैयाकरण कविशेखर बद्रीनाथ ज्ञा की इस रचना में वर्णनवैचित्र्य अतिशय चमत्कृत करनेवाला है। मिथिला के धर्मकर्मावतार राजकुमार गुणेश्वर सिंह के उदात्त जीवनचरित्र में मिथिला के आचार—विचार की शुद्धता का वर्णन दर्शनीय है। इसमें वेद, दर्शन, पौराणिक संकेत, नीति, राजनीति, प्रकृति, ऋतु, ग्रामजीवन आदि के साथ मिथिला के ऋषि, विद्वान्, साधु, नदी, सरोवर, देवालय आदि का विस्तृत परिचय समाविष्ट है।

लघु एवं दीर्घ सामासिक प्रयोग, लगतार नाम धातु, णिजन्त, सन्नन्त, लुङ् लिट् आदि के गूढ़ प्रयोग द्रष्टव्य हैं। उपमा, व्यतिरेक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास, परिसंख्या आदि अलंकारों की महामाला मनोमहोहक है। गद्य—पद्य के परिनिष्ठित प्रयोग अत्यन्त प्रौढ़ पाण्डित्य पूर्ण विशद रूप में उपरिथापित छें

Demy 1/8 ISBN-81-7081-387-5 pp280 2021 Rs.400



गुरु-शिष्य सम्बन्ध

(प्राचीन एवं अर्वाचीन काल में)

डॉ. फूलकान्त मिश्र

शिक्षाशास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान् की प्रस्तुत शोधकृति गुरु-शिष्य-सम्बन्ध जैसे महत्वपूर्ण विषय की परम्परागत और आधुनिक व्याख्या करती है। गुरु और शिष्य शिक्षा के दो विशिष्ट ध्रुव हैं। शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि इन दोनों ध्रुवों के बीच उचित सामंजस्य हो, इनका पारम्परिक सम्बन्ध आत्मीय, पवित्र एवं आदर्श हो। अन्यथा वांछित उद्देश्य की पूर्ति सम्भव नहीं। भारतीय संस्कृति में उपनयन संस्कार द्वारा गुरु-शिष्य सम्बन्ध का अध्याय प्रारम्भ होता था जो जीवन पर्यन्त बना रहता था। प्राचीन काल में इसका विशेष महत्वपूर्ण एवं परिपक्व रूप दृष्टिगोचर होता है। प्रस्तुत पुस्तक में प्राचीन भारतीय संस्कृति के पाँच विभिन्न कालों (वैदिक, उपनिषत्, बौद्ध, स्मृति एवं काव्य काल) के गुरु-शिष्य-सम्बन्ध के साथ आधुनिक परिवेश के गुरु-शिष्य सम्बन्ध का तुलनात्मक विवेचन है।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-334-4

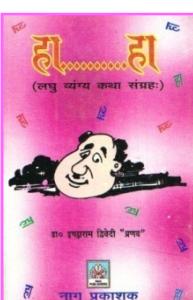
pp 132 1996

Rs.150.00

हा.....हा

(लघु व्यंग्य कथा)

डॉ. इच्छाराम द्विवेदी 'प्रणव'



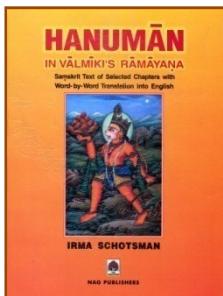
"हा.....हा" नामके संकलने एक चत्वारिंशल्लघुकथानां प्रणयनं कृतम्। एतासु कथासु सर्वत्र सामाजिकसमस्यानां विभीषिका हास्यरसविभिन्नसंहिता समुपस्थिता। प्रायशः कथानां साक्षित्वेनापि लेखको यत तत्र सन्निबद्धः। "आरक्षणम्" भ्रष्टाचारः, जातिवादः सम्पदायिकता, विज्ञापनशठतादयो नैके विषया विवेचिताः न केवलं पठनमपेक्षन्तऽपितु पाटकानां ध्यानाकर्षणमपि वाऽन्तर्भुति समस्यानां समाधानां समाधानार्थम्। वस्तुतो मानवीया संवेदनाद्यत्वे तथाविद्वा मूर्च्छिता समवलोक्यते यत्तस्या जागरणार्थ बहुश्रोत्पेक्षितः। व्यंग्यकथाभिर्मर्मस्पर्शविधिना तत्कार्यं कर्तुं शक्यते यथाशक्तिरिति मे विश्वासः।

Demy 1/8

ISBN-81-7081-347-6

pp 80 1996

Rs.100.00



HANUMANIN VALMIKI'S RAMAYANA

(Sanskrit text of selected chapters with word-by-word translation into English)

IRMA SCHOTSMAN

The present work is a word-by-word translation from Sanskrit into English of selected chapters of Valmiki's Ramayana, mainly those chapters relating to the exploits of Hanuman. The aim was to present a complete picture of Hanuman's life as described in Valmiki's Ramayana.

The Ramayana is a celebrated old Indian epic. The greater portion of the Ramayana must have been current in India as early as the fifth century B. C. It was compiled Valmiki in the Sanskrit language. It describes the life of lord Rama and his purpose on earth, the victory of good over evil. The evil is personified by the demon Ravana who kidnapped Rama's wife Sita and finally gets killed by Rama. In these events the great hero of this epic, the powerful monkey leader Hanuman, renders great help. Even nowadays both these important personalities of the Ramayana, lord Rama and Hanuman, are worshipped at home and in temples all over India.

The present work is especially meant for students with a basic knowledge of Sanskrit grammar, and for others interested in refreshing their Sanskrit knowledge, to help them to read Sanskrit texts on their own.

Crown 1/4 ISBN 81-7081-547-9 2002 pp 918 Rs. 700.00

HINDU DHARMA SHAstra (Introduction, Text With English Trans. & Sloka Index)

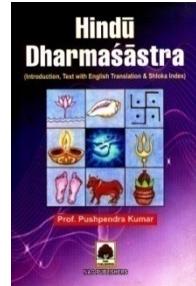
-ED. PROF. PUSHPENDRA KUMAR

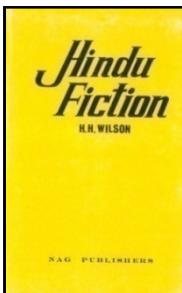
The Dharmashastra occupies a prominent place in the Sanskrit literature. It has always served as a source book of Hindu jurisprudence. It has been a veritable storehouse of information for the social, cultural, political and religious aspects of ancient Indian society. It is the very essence of Hinduism. Its' deeper study helps in the proper understanding of the Ancient Indian Culture.

The Dharma Shastras of the Hindus, are not one single book but consist of the Samhitas or Institutes of holy sages numbering twenty according to the list given by Yājnavalkya, These are namely, Manu, Atri, Vishnu, Harita, Yāgnavalkya, Ushana, Āngira, Yama, Āpastamba, Samvarta, Kātyayana, Brihaspati, Parāsara, Vyāsa, Sankha, Likhita, Daksha, Gautam, Satatāpa and Vasistha samhitās respectively.

In this collective addition will give to the readers the complete text of all the twenty smritis, fully edited. The English translation is a literal one as far as it could be attempted, keeping an eye to eye on its accuracy and literary excellence.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-674-2 pp 2562 (6 vols set) Rs 5000.00





HINDU FICTION

H. H. WILSON, EDITED BY REINHOLD ROST

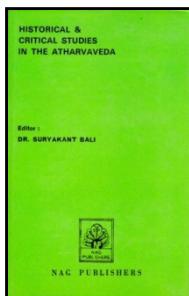
The great work of Hindu Fiction which Prof. Wilson made accessible to European readers – the Kathasrit Sagar, the largest collection of domestic narrative in India. Out of eighteen books which it consists he gave first partly in a free translation and subsequently also an abstract of the remaining Sanskrit fictions.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-129-5

pp 200

1979

Rs.150.00



HISTORICAL & CRITICAL STUDIES IN THE ATHARVAVEDA

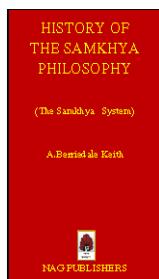
EDITOR - DR. SURYAKANT BALI

The book is a very useful and important addition to traditions of modern Vedic studies undertaken by Indian and Westerners. It is the first ever attempt exercised by the teachers of the University of Delhi to study the various aspects of the Atharvaveda which has not attracted the attention of the Vedicists to the extent the Rigveda has done. The book comprises scholarly, well-prepared and thoroughly unbiased articles on different aspects of the Atharvaveda, viz., textual, historical and exegitical studies, poetry, sciences, religion and philosophy, society and language. Besides, the value and the significance of the Atharvavedic studies in this book is further enhanced by the long, exhaustive and scholarly introduction by the Editor of the volume which throws entirely fresh light on some very controversial yet important issues related to the Vedic studies in general and the Atharvaveda in particular.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-031-0

pp 452 1995

Rs.400.00



A HISTORY OF THE SAMKHYA PHILOSOPHY (The Samkhya System)

A. BERRIEDALE KEITH

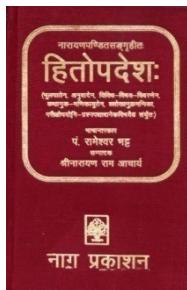
The author presents a study of the Samkhya in the Upanishads, Samkhya and Buddhism and Jainism, The Philosophy of the Great Epic and the origin of Samkhya, Samkhya and Yoga, The Sastitana, Greek Philosophy and Samkhya, the Samkhya Karika, The later Samkhya.

Crown 1/8

ISBN-81-7081-108-2

pp 128

1988 Rs.70.00



नारायणपण्डितसंगृहीतः

हितोपदेशः

**मूल पाठेन, अनुवादेन, विविध—विषय—विवरणेन,
कथानुक—मणिकायुतेन, श्लोकानुक्रमणिका,
परीक्षोपयोगे—प्रश्नपद्याद्यनेकविषयैश्च संयुतः)**

भाषान्तरकार पं. रामेश्वर भट्ट, सम्पादक श्रीनारायण राम आचार्य (काव्यतीर्थ)
विदित हो कि नीति एक ऐसा शास्त्र है कि जिसको मनुष्यमात्र
व्यवहार में लाता है, क्योंकि बिना उसके संसार में सुखपूर्वक

निर्वाद नहीं हो सकता। यद्यपि राजनीति के एक से एक अपूर्व ग्रन्थ संस्कृत भाषा में
पाये जाते हैं तथापि पण्डित विष्णुशर्माराचित पंचतन्त्र परम प्रसिद्ध है, क्योंकि उस
ग्रन्थ में नीतिकथा इस उत्तम प्रणाली से लिखी गई है कि जिसके पढ़ने में रुचि और
समझने में सुगमता होती है और अन्य देशियों ने भी इसका बड़ा ही समादर किया।
पण्डित नारायणजी ने उक्त पंचतन्त्र तथा अन्य अन्य नीति के ग्रन्थों से हितोपदेश
नामक एक नवीन ग्रन्थ संगृहीत करके प्रकाशित किया, कि जो पंचतन्त्र की अपेक्षा
अत्यन्त सरल और सुगम है और विद्वानों ने हितोपदेश को 'यथा नाम तथा गुणः'
समझ कर अत्यन्त आदर दिया।

Size Cromo 1/8

PP 294

(2018)

Rs. 250.00

इन्दिराजीवनम् :एक परिशीलन

डॉ. जगतनारायण

महाकवि बलभद्रप्रसादशास्त्रिविरचित—इंदिराजीवनम् एक अध्ययन
में लेखक ने नारी मन के विभिन्न आयामों को पाठक के सम्मुख
प्रस्तुत करने का अथक प्रयास किया है। लेखक ने
परत—दर—परत मनोभावों की अभिव्यक्ति को पाठक वृन्द के
सामने लाकर परंपरागत चली आ रही किवदंती 'नारी अबला है'
को तोड़ने का यत्न ही नहीं किया, किन्तु प्रस्तुत महाकाव्य की
नायिका के माध्यम से यह प्रमाणित करने की कौशिश की है कि
नारी को अगर पुरुष की तरह मौका प्रदान किया जाए तो वह एक अच्छी गृहिणी ही
नहीं बल्कि एक अच्छी शासक, एक उत्कृष्ट नागरिक ए कुशल योजनाकर व महान्
वीरांगना सिद्ध हो सकती है।

डॉ. कौशिक ने बलभद्रप्रसाद शास्त्री द्वारा रचित इंदिराजीवनम् को एक महाकाव्य के
रूप में देखा है और यह भी बताने की कौशिश की है कि प्रस्तुत महाकाव्य में वे
सारे तत्व और गुण हैं जो महाकाव्य में होने चाहिए। इस महाकाव्य की भाषा और
शैली पर विचार व्यक्त करते हुए लेखक कहता है कि शास्त्री ने शब्दों का चयन
परंपरा के अनुसार किया है। अलंकारों का प्रयोग यथा—रिति, यथासामर्थ्य से किया
गया है। भाषा सरल व प्रभावपूर्ण रखी है, जो पाठकवृन्द के मन में सहज ही अंकित
हो जाती है।

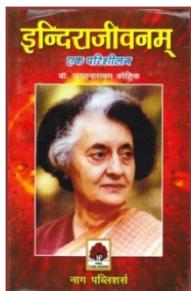
Demy 1/8

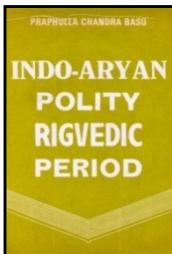
ISBN-81-7081-681-5

pp 240

1995

Rs.250.00





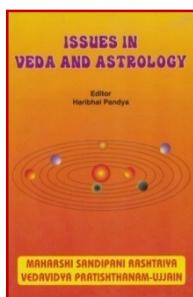
INDO ARYAN POLITY

(Rig Vedic Period)Praphullachandra Basu

The book presents a study of the Indo-Aryan organization of political life and relates it to the social organization as well. An attempt has also been made to compare the different stages and institutions in the East with the corresponding stages and institutions in the West.

First it deals with earliest indo-Aryan family as revealed in the Rig Veda – Gotr, kingship, father. It further throws light on caste and classes – Kshatriya, Brahmana, other castes and physicians; village community, family ownership or land, economic concepts, polity – vis – slaves – non-Aryans – kingship – nobility – retainers and dependents – tribute. Vispati-Vrajpti-assembly-police-judicial organization-law-debt etc.

Crown 1/8 ISBN-81-7081-036-1 pp 112 1988 Rs.150.00



ISSUES IN VEDA AND ASTROLOGY (Proceedings of the National Seminar on Veda and Jyotish)

ED. HARIBHAI PANDYA

Rashtriya Veda Vidya Pratisthan organised a national Seminar on "Veda and Jyotisha" at New Delhi from 21st to 24th December, 1990. More than 100 scholars from different parts of India participated in this Seminar. Rashtriya Veda Vidya Pratisthan requested me to undertake the task of editing all the materials connected with the Seminar. Although I was extremely occupied with a number of other responsibilities, I could not refuse this request because, in my view, this Seminar had dealt with the issues of Astrology with scientific rigour and contributions made by various participants were truly of high order. There is a great need to remove mis-conceptions regarding astrology; there is also a need to collect empirical facts. On the basis of which the scientific nature of astrology can be demonstrated; there is also a need to develop astrological science by investigating several issues; on which sharp differences of opinion have persisted. I was very happy that the Pratisthan has collected several Vedic and astrological scholars in the country while organising this Seminar and I was personally impressed by the fact that the Pratisthan manifested a sincere aspiration to explore the relationship between Veda and Astrology without dogmatism and without any pre-conceived ideas and prejudices.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-332-8 pp 200 1995 Rs.150.00



पुरुषोत्तमदेवविरचित ज्ञापकसमुच्चय (मूल, हिन्दी टीका सहित)

—डॉ. अमिता शर्मा

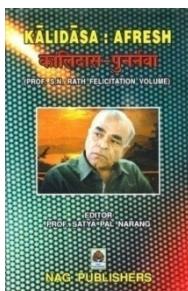
महान् सूत्रशिल्पी आचार्य पाणिनि विरचित अष्टाध्यायी ने देश—विदेश में अपूर्व ख्याति अर्जित की। भाषा विज्ञान के क्षेत्र में पाणिनि के अमूल्य योगदान को आज सभी विद्वान् एक स्वर में स्वीकार करते हैं। पाणिनि के सूत्र संक्षिप्त होने पर भी अत्यन्त सारगर्भित एवं व्यापक हैं तथा अपने में कुछ ऐसे संकेतों को समाए हुए हैं जिन्हें पाणिनी अपनी आदर्श शैली के कारण स्पष्ट रूप में नहीं कह पाए। ऐसे सूत्र अथवा सूत्रांश अपाततः व्यर्थ प्रतीत होते हैं। पाणिनि व्याकरण के महाभाष्य, काशिकावृत्ति, न्यास, पदमंजरी आदि व्याख्या ग्रन्थों में इस प्रकार के व्यर्थ प्रतीत होने वाले सूत्र अथवा सूत्रांशों के आधार पर सांकेतिक तथ्य अथवा ज्ञापक निकाले गए हैं। ये ज्ञापक असंख्य हैं आथर पाणिनि व्याकरण सम्बन्धी विपुल साहित्य में इत्स्ततः बिखरे हुए हैं। पाणिनि व्याकरण के बंग प्रान्तीय विद्वानों में प्रमुख आचार्य पुरुषोत्तमदेव ने अपनी कृति ज्ञापकसमुच्चय में सर्वप्रथम इनमें से कुछ ज्ञापकों का संकलन किया। पुरुषोत्तमदेव की इस अनुपम कृति का विश्लेषण ही इस ग्रन्थ का विषय है। ज्ञापकसमुच्चय में संकलित प्रत्येक ज्ञापक पर स्वतन्त्र रूप से विचार किया गया है तथा उसके आधार, स्वरूप एवं प्रयोजनों के औचित्य—अनौचित्य का महाभाष्य, काशिकावृत्ति, न्यास पदमंजरी आदि पाणिनि व्याकरण के व्याख्या—ग्रन्थों के आधार पर उनके परीक्षण एवं विश्लेषण किया गया है। पाठकों की सुविधा की दृष्टि से, साथ ही मूल का भी प्रकाशन किया जा रहा है।

Demy 1/8

ISBN-81-7081-306-9

pp 488 1995

Rs.350.00



KALIDASA : A FRESH

(Prof. S. N. Rath Felicitation volume)

EDITOR - PROF. SATYA PAL NARANG

This volume has been prepared in honors of Prof. Shri Niwas Rath known as (Rath Sahib without any epithet) on a resolution moved at the Kalidasa-Samaroha, Ujjain by his friends and admirers. This volume should be exclusively devoted to the theme "Kalidasa". The volume was planned to search new dimensions emerging from the discussions at Kalidasa-Samaroha and elsewhere. It is a search for new problems, topics, fresh interpretations and theories including refutations in the light of fresh facts in the main and allied fields. Various fields of interpretation including the evaluation of the commentators were incorporated in the volume. Archaeological, psychological, historical, biographical, criticism, etc. were the new fields of the collection's Study of the variants of his works with application of principles of linguistics and higher criticism with a fresh approach is another feature of this work. It is, in fact, an endeavor to publish something fresh although it cannot be claimed in totality. A brief resume will support my statement.

This volume is not only a felicitation volume of Prof. Rath but a digest of the researches which were being carried on at Ujjain for last few years. Prof. Rath has become an instrument for their publications.

Dr. Satya Pal Narang

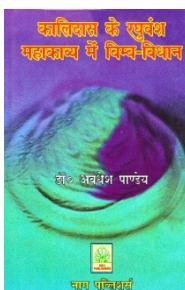
Demy 1/8

ISBN-81-7081-362-X

pp 642

1997

Rs.700.00



कालिदास के रघुवंश महाकाव्य में बिम्ब—विधान

डॉ. अवधेश पाण्डेय

यद्यपि अब तक कालिदास को ध्यान में रखकर भारतीय वाड़मय में जितना कुछ कहा गया है उससे यह प्रतीत होता है कि कालिदास के विषय में कहने के लिए कुछ शेष नहीं बचा है। फिर भी समीक्षा सिद्धान्त की इस नयी कसौटी पर कालिदास की रचनाओं को समझने का एक नया प्रयास है। जहाँ तक बिम्ब शब्द के अर्थबोध का प्रश्न है वह अंग्रेजी के इमेज का हिन्दी रूपान्तर है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में इसी बिम्ब विधान के आधार पर कालिदास के रघुवंश महाकाव्य का यथामति एक अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस ग्रन्थ के पाँच अध्याय हैं। इसके प्रथम अध्याय में काव्य बिम्ब का स्वरूप निर्धारण किया गया है। द्वितीय अध्याय में भारतीय काव्यशास्त्र के निकष पर पाश्चात्य काव्य बिम्ब का अध्ययन किया गया है। तीसरे अध्याय में कालिदास के रघुवंश—महाकाव्य का बिम्बविधान की दृष्टि से अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में लेखक ने कालिदास के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला है। पंचम अध्याय में चारों अध्याय तक जो कहा गया है उसे उपसंहित किया गया है।

Demy 1/8

ISBN 81-7081-444-8

1999

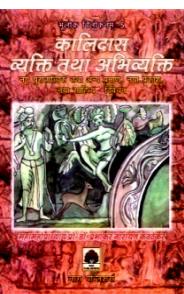
pp 264 Rs. 150.00

कालिदास व्यक्ति तथा अभिव्यक्ति

(भूलोक विलोकनम् – 5)

(नये पुरातात्त्विक तथा अन्य प्रमाण, नया प्रकाट्य, नया साहित्य—विवेचन)

—महामहोपाध्याय प्रो. डॉ. प्रभाकर नारायण कवठेकर



कालिदास भी इस अर्थ में 'महाकवि' थे। उन्हें भी युग—बोध से प्रभावित होना ही था। वह युग था भारत की सांस्कृतिक क्रान्ति का। इसापूर्व द्वितीय शताब्दी का! पुष्यमित्र के साम्राज्य का नया वाज्छनीय प्रभाव! प्रातिभ कार्य के लिए यह युगबोध उपादान कारण बन गया। इस ग्रन्थ में पूर्वभाग में युगबोध के व्यक्तित्व को स्पष्ट करने के बाद उत्तरभाग में युगान्तर के अबोध सौन्दर्य के शाश्वत रूप का दर्शन कराने वाले कालिदास के कालजयी साहित्य का परिचय कराने का यथाशक्ति हम प्रयास करने जा रहे हैं। हमारा स्पष्ट अभिमत है कि इसापूर्व द्वितीय शताब्दी ही कालिदास का आविर्भाव—काल है जिसे सिद्ध करने के लिए महत्त्वपूर्ण बाह्य पुरातात्त्विक तथा अन्य आंतरिक प्रमाण जो अभी प्राप्त हुए हैं उन्हें पहली बार शिल्प—चित्रों का सत्य इस ग्रन्थ में प्रस्तुत कर रहे हैं। इन तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में समूचे कालिदास का समय, मन्त्रव्य, व्यक्तित्व तथा साहित्य पर नया विवेचन किया गया है।

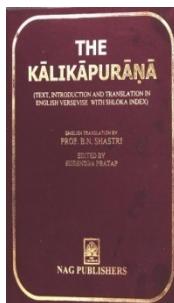
Demy 1/8

ISBN 81-7081-655-3

pp 392

2009

Rs. 350.00



THE KALIKAPURANA

**(TEXT, INTRODUCTION AND TRANSLATION IN ENGLISH
VERSEWISE WITH SHLOKA INDEX)**

- BY B.N.SHASTRI & EDITED BY SURENDRA PRATAP

The Kalika Purana is one of the eighteen (Upa) Puranas'. Though technically an upa-purana, it is called Kalika-Purana or Kali-Purana, composed to popularise the cult of Sakti, particularly the worship of the mother Goddess Kamakhya.

The first half of the Kalika-Purana (though not divided into parts) deals with the marriage of Sakti to Siva, her death and re-birth and re-union with Siva, the identification of Mahamaya (Goddess) with Kamakhya, the Naraka myth and Vasistha's curse on Kamakhya etc.

The second half deals exclusively the ritual procedure of worshipping the Goddess. Kalika Purana also gives a vivid description of the hills, rivers and sacred places of Kamarupa, with the presiding deities. The text of the Kalika Purana has been edited critically by comparing all the printed text including one edited by the present author and four manuscripts, two from India Office Library, London. The Sanskrit text is followed by a faithful English translation with verse-index, notes, study.

Crown 1/4

PP 916

2008

Rs. 2000.00

काशिका का समालोचनात्मक अध्ययन

डॉ. रघुवीर वेदालंकार



पाणिनीय व्याकरण के वृत्ति-सम्प्रदाय का संक्षिप्तउ परिचय देते हुए लेखक ने काशिकाकार के काल को 550-650 ईसवी में रखा है। शंकराचार्य को 509 ई ० पूर्व में और भर्तृहरि तथा कुमारिल भट्ट को इसके पहलं स्वीकार किया है। संस्कृत साहित्य के इतिहास के परिप्रेक्ष्य में ये तिथियां विद्वानों के लिए विचारणीय हैं। काशिका तथा व्याकरण महाभाष्य में समान रूप में उपलब्ध पंक्तियों के आधार पर काशिकाकार द्वारा महाभाष्य के उपयोग पर अच्छा प्रकाश डाला गया है।

पुस्तक के प्रथम अध्याय में काशिका से पूर्ववर्तिनी तथा उत्तरवर्ति वृत्तियों के नाम तथा स्वरूप को स्पष्ट किया है। द्वितीय अध्याय में काशिकाकार के काल-धर्म तथा देश के विषय में विद्वानों द्वारा अब तक किए कार्य को तृष्णि में रखते हुए नए रूप में विचार किया गया है। तृतीय में काशिकार ने महाभाष्य का किस रूप में उपयोग किया है प्रतिपादित किया गया है और काशिका के भाष्य-विरोधी स्थलों पर भी प्रकाश डाला गया है। चतुर्थ में काशिका के पाठभेद का कारण बताया गया है। पंचम में वार्तिक की परिभाषा एवं स्वरूप बतलाया गया है तथा विभिन्न वार्तिककारों तथा भाष्यकारों के पक्षों का पृथक्-पृथक् रूप में किस प्रकार आश्रय लिया गया है लिखा गया है। षष्ठम में इष्टियों की परिभाषा तथा स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए इष्टि एवं वार्तिक के अन्तर को स्पष्ट किया गया है। यसप्रथम अध्याय में इसके आलोचकों का सामान्य परिचय तथा उनकी आलोचनाओं का विस्तृत रूप से विचार किया गया है। अष्टम में काशिका की व्याख्या, वार्तिकों तथा इष्टियों पर कातन्त्र एवं चान्द्र व्याकरणों

का प्रभाव दिखाया गया है। नवम् तथा दशम में मौलिक विचारों पर प्रकाश डालते हुए उत्तरवर्ती वैयाकरणों पर उनका प्रभाव दिखाया गया है। अन्त में परिशिष्ट में काशिका तथा भाष्य के भेद वाले सूत्रों की सूची, वार्तिकों के प्रक्षेप से युक्त सूत्रों की सूची, सूत्र रूपमे पठित वार्तिकों की सूची, भाष्य की अपेक्षा काशिका के भेद वाले तथा अधिक वार्तिकों की सूची, काशिका के भेद वाले तथा अधिक वार्तिकां की सूची, काशिका में पठित समस्त वार्तिकों, परिभाषा उणादिसूत्रों, फिट् सूत्रों की सूची भी संलग्न की गई है।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-118-X pp 445 1977 Rs.500.00



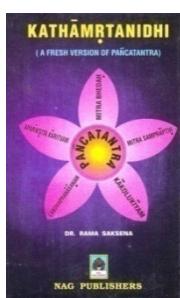
KaśmīraśabdāmRtam:

A Critical Study
Prof. Satyabhama Razdan

“KaśmīraśabdāmRtam: A Critical study” is a landmark research work of historic importance by an accomplished scholar. The author has incisively and comprehensively examined the only grammar and linguistic study of Kashmiri written in Sanskrit. This study is primarily based on a hand written manuscript of KashmīraśabdāmRtam written by Īśvar Kaul in the 19th century A.D. The manuscript comprising 422 pages is written on the Pāṇinian model. This monumental work consisting of ten chapters presents a detailed description of the grammatical structure of Kashmiri including its Phonology and Morphology. In view of these aspects its importance in Kashmiri linguistics needs to be brought to light. The fact of having been written in Sanskrit has restricted its access to the non Sanskrit knowing scholars in the state and elsewhere. It is, therefore, timely and necessary to bring this monumental work into

the public domain to make it accessible to scholars and researchers and to facilitate their language needs in the area of structural linguistics. The value of this research work is greatly enhanced by the fact that it has been undertaken by a scholar whose mother tongue is Kashmiri and who is a teacher and researcher of Sanskrit and Linguistics.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-699-8 pp 548 2019 Rs. 1500



Shri Anantabhatta's
KATHAMRITANIDHI
(A Fresh Version of Panchatantra)
With Critical Edition and Estimate

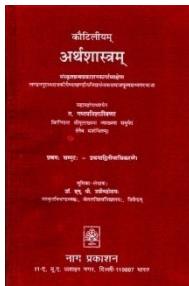
Dr. Rama Saksena

Kathamritanidhi is a book of didactic tales called out and adapted from the Panchatantra. One more version of famous book of Panchatantra, the manuscripts of which exist only in west and none in its native lane, which had not so far seen the light of the day through press in India or anywhere else makes the work valuable.

The work is critically edited and studied in various aspects viz. picture of society, political philosophy, comparison of stories with world-literature etc. The

identification of old geographical situations with modern ones is an intriguing point; and an original approach to the location of MAHILAROPYA which was considered to be a hypothetical and imaginary city, to MIHRPUR in Bengal with proofs and reasoning's is praiseworthy. Various appendices and quotations from other sources and authors etc. go to prove the great value of the book.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-314-7 pp 496 1996 Rs. 350.00



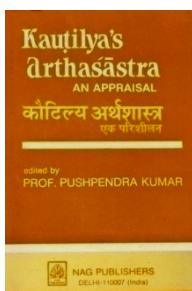
कौटिलीयम् अर्थशास्त्रम्

महामहोपाध्यायेन त. गणपतिशास्त्रिणाविरचितया श्रीमूलाख्यया
व्याख्यया समुपेतं तनैव संशोधितम्। भूमिका – लेखक : डॉ. एन.
पी. उन्नीमहोदयः, संस्कृतविभागाध्यक्षः,
केरलविश्वविद्यालय, त्रिवेन्द्रम्।

There is no other name in the history of ancient Indian political thought which commands as much commands as much popularity and respect as that of the author of Arthashastra. The name of the author of Arthashastra is found mentioned in numerous works in Sanskrit literature.

Studies embracing the different aspects of Arthashastra are carried out even at present in research-oriented institutions. But the impetus provided by Ganapati Sastri after the intitial discovery and publication by Shama Sastri can never be over-estimated. He brought to bear on the topic his rich experience and uncanny talent. His effort in composing the first ever complete commentary on the Arthashastra is stupendous, to say the least. F. Edgerton has no hesitation to pronounce that “Dr. Ganapati Sastri edition of the Kautaliya Arthashastra, with commentary, is decidedly the best edition of that all important work in existence.”

Size Demy 1/8 PP 1172 (3 Vols set) (2018) Rs. 2000.00



KAUTILYA ARTHASHASTRA : AN APPRAISAL

ED. DR. PUSHPENDRA KUMAR

The present book is a compendium of scholarly contributions at the seminar held at South Delhi Campus in March 1988 on the Arthashastra of Kauatilya. It covers a wide range of topics on the Kautilya's Arthashastra ranging from Economics, Financial administration, taxation, Architecture, trade routes, system of spies and Agriculture etc. It also reveals the underlying thought-current of Kautilya on various social Institutions prevalent in his times. All these authors have tried to look afresh on various social problems – which were we thought of by Kautilya and the tried to find out the solutions in his own way. He was, it seems, far ahead of his times. The present study will encourage and stimulate the scholars to explore this treasure-house of knowledge and to mould our modern day socio-political thinking in wider and far-reaching interest of our nation. A comprehensive Introduction by Prof. Pushpendra Kumar is of an additional interest and helps in the understanding; of Kautilya's magnitude and heights.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-199-6 pp 212 1989 Rs.300.00

काव्य मन्थन

डॉ. सविता



नाग प्रकाशन

काव्य—मन्थन

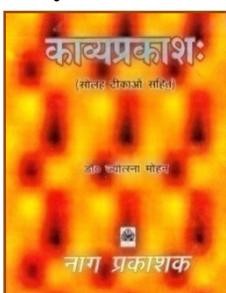
— डॉ. सविता

साहित्य के शास्त्रीय अध्ययन के लिये काव्य शास्त्र के विभिन्न अंगों को जानना नितान्त आवश्यक है। इस विषय पर समयानुसार साहित्यकार विवेचन करते रहे हैं। वस्तुतः साहित्यकार के योगदान का मूल्यांकन हम इन्हीं शास्त्रीय आधारों पर कर पाते हैं। काव्यशास्त्र, समझकर आत्मात् करने का विषय है। हिन्दी भाषा के अध्ययनकर्ता को इसकी सम्यक् जानकारी होना अति आवश्यक है जिसे ध्यान में रखते हुए 'काव्य—मन्थन' पुस्तक को आठ अध्यायों में विभाजित किया गया है, जिसमें काव्य—हेतु, काव्य—प्रयोजन, काव्य—आत्मा, काव्य—भेद, शब्द—शक्ति, धनि, गुण, रीति, वृत्ति एवं काव्य — दोष जैसे गम्भीर एवं चिन्तनीय विषयों की विस्तृत, सम्यक् एवं प्रामाणिक व्याख्या की गई है।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-665-3

pp 160 2009

Rs. 300.00



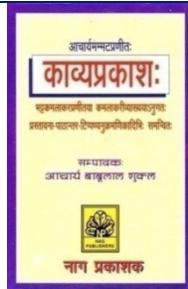
काव्यप्रकाश

(सङ्केत: सङ्केत: (ग्रन्थक):, बालचित्तानुरजनी:, काव्यादर्श:, विवेक:, दीपिका:, दर्पण:, साहित्यचूडामणि:, सम्प्रदायप्रकाशिनी:, मधुमती:, विस्तारिका:, सारबोधिनी:, काव्यप्रदीप:, काव्यप्रकाशखण्डनम्, आदर्श:, सुधासागर, विवरणम्, संस्कृत व्याख्या समलूपता) सम्पादक — डॉ. ज्योत्स्ना मोहन

एकादश शताब्दी के उत्तरार्ध में युगान्तकारी कृति की रचना करके ममट ने अपनी प्रखर मेधा द्वारा अतीत के शास्त्रीय सिद्धान्तों को समन्वित करते हुए यथास्थान विन्यस्त किया तथा परवर्ती साहित्यशास्त्र को आलोकित किया। "काव्यप्रकाश" ग्रन्थ में प्रतिपाद्य विषयों का विवेचन इतनी सूक्ष्म दृष्टि से किया गया है कि जिसके परिणामस्वरूप यह ग्रन्थ साहित्यशास्त्र में ग्रन्थमणि माना जाने लगा है। ममट अलंकारशास्त्र के प्रथम आचार्य हैं जिन्होंने साहित्य जगत को नवीन दिशा प्रदान की। अनेक शताब्दियाँ बीत जाने के उपरान्त आज भी साहित्यशास्त्र के गगन में ममट का 'काव्यप्रकाश' देवीप्यमान नक्षत्र की भाँति अपनी प्रकाश—रश्मियाँ विकीर्ण कर रहा है। ममट की बहुमुखी प्रतिभा एवं वैदुष्य के कारण काव्यप्रकाश इतना दुरुह एवं दुर्गम हो गया है कि समय—समय पर किसी न किसी विद्वान् का हृदय काव्यप्रकाश ग्रन्थ के अथाह सागर में छिपे सिद्धान्तों को अवगत करने के लिए उत्कृष्ट हुए बिना नहीं रहता। "काव्यप्रासाद्य कृता गृहे गृहे टीक तथाप्येष तथैव दुर्गम" उक्ति इस तथ्य का ज्वलन्त प्रमाण है कि इस ग्रन्थ पर टीका लिखे बिना वैदुष्य की प्रतिष्ठा नहीं हो सकती थी। अतएव विद्या के सभी क्षेत्रों के आचार्यों ने काव्यप्रकाश पर टीका लिखने में गौरव अनुभव किया। हम देखते हैं कि टीकाकारों में जहाँ एक ओर विश्वनाथ और रुद्धक सरीखे काव्यशास्त्रीय आचार्य हैं, वहाँ दूसरी ओर जैन माणिक्यचन्द्र, नैयायिक जगदीश एवं गीमांशक कमलाकर भट्ट, वैष्णव बलदेव विद्याभूषण और तात्त्विक गोकुलनाथ हैं। टीकाओं की सुदीर्घ परम्परा में (माणिक्यचन्द्र) संकेत, बालचित्तानुरजनी, काव्यादर्श विवेक, दीपिका, दर्पण, साहित्यचूडामणि, सम्प्रदायप्रकाशिनी, मधुमती, विस्तारिका, सारबोधिनी, काव्यप्रदीप, काव्यप्रकाशखण्डनम्, आदर्श, सुधासागर आदि टीकाएँ हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में काव्यप्रकाश का उपरोक्त सोलह टीकाओं के साथ सम्पादन करने का विनम्र प्रयास किया गया है। आशा है यह ग्रन्थ शोधार्थियों एवं सुधी पाठकों के लिए उपादेय सिद्ध होगा।

Crown 1/4 ISBN 81-7081-323-9 (set) 1995-99 pp 4066 (6 vols set)

Rs. 10000.00

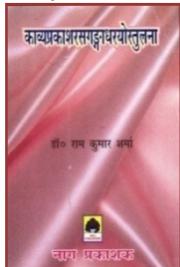


आचार्यममटप्रणीतः काव्यप्रकाशः

**भट्टकमलाकर प्रणीतया कमलाकरीव्याख्यानुगतः
प्रस्तावना—पाठान्तर—टिप्पण्यनुक्रमणिकादिभिः समन्वितः
सम्पादकः—आद्यार्थबाबलालशक्तलः शास्त्री**


'Kavyaprakash' written by Acharya Mammata, is considered as an authentic and highly valuable work in Indian classic literature. The work was so great and important that many well-known scholars from far and wide wrote commentaries on it from different angles. Among them was Bhatt Kamalakar, a great and authentic scholar whose commentary on the book established him as a great Sanskrit scholar. For over two centuries now, this commentary has become a literary tradition among the scholars and students of classic literature. Since it was not published, this great work was not available to all the scholars and students. Acharya Shukla has done a great and remarkable service by edit it and making it available to those interested in classics.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-300-X pp 5241 995 Rs.400.00

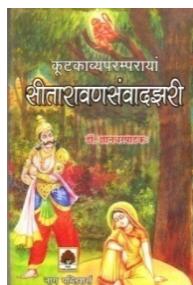


काव्यप्रकाशरसगड़गाधरयोस्तुलना

डॉ. रामकमारणर्मा

पञ्चाध्यायात्मकोडयं ग्रन्थं काव्यप्रकाशं रसगङ्गाधरया: स्थितानि
काव्यलक्षण—कारण—तद्वेद—रस—रीतिगुणालडका—रप्रभृतिविषयकवि
मतिस्थलानिनानाप्राच्यनव्यटी— कासिद्वान्त—साहायसयेन
शास्त्रीयया संस्कृतभारत्या सप्तसामासव्या—समक्षिलक्ष्यीकारयति ।

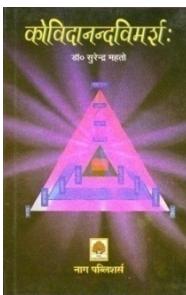
Demy 1/8 ISBN-81-7081-375-1 pp 176 1997 Rs.200.00



(कूटकाव्यपरम्परायां)
सीतारावणसंवादझरी—

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

Demy 1/8 **ISBN-81-7081-586-X** **pp 126** **2004** **Rs.150.00**



कोविदानन्दविमर्शः

डॉ. सुरेन्द्र महतो

अलंकारशास्त्रे शब्दस्यापारविषये आलंकारिकेषु मतभिन्नतादृश्यते ।
विचिन्त्य विषयेऽस्मिन् किंचद् यत्नीयते मया ।
शब्दिकन्नैयायिकाऽलंकारिकाणां मतमुपस्थाप्य
आशाधरभट्टस्यविचारस्य रहस्योदघाटनं कृत्वा स्वविचारं
उपस्थापयामि । वृत्तित्राय यागी अभिधा—भवितव्यवित्त अभिधानत्रय
कादम्बिनी विमर्शभ्याम संस्कृतव्याख्या शब्दव्यापारविषये
समागतानां समस्यानां समाधानाय जिज्ञासूनां कृते ब्रह्मास्त्रं

भविष्यति ।

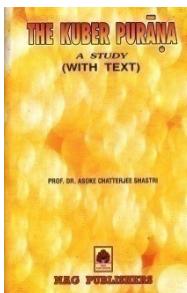
Demy 1/8

ISBN-81-7081-603-3

pp 212

1990

Rs.150



KUBER PURANA

(WITH TEXT)

Prof. Dr. Asoke Chatterjee Shastri

The Kuber Purana is the work of a well known Jain poet Manikyadevasuri. It is such a prominent wrk, that it has been included in the list the Puranas. His poetick talent and critical acument can be seen in his work.

Present work on the Kuber Purana is a detailed complarative analysis with a fuller and elaborate discussions of the story of Nala available in tje Mahabharata, tje Maosadjacarota of Sriharsa and the Kuber Purana.

Demy 1/8

ISBN 81-7081-377-8

1997

pp 752

Rs. 500.00

महाकविकालिदासप्रणीतम्

कुमारसंभवमहाकाव्यम्

मलिलनाथकृतसंजीविनी,

चरित्रवर्धनकृतशिशुहितैषिणी, सीतारामकृतसंजीविनीतीकात्रयतिलिकतम् ।

महाकवे: कालिदासस्य कृतिषु रसनिर्भरता, अलंकारवैश्याम, अर्थगामीर्यम्, सुकमारपदविन्यासश्चेति सन्ति बहवो गुणाः । यस्य सुभाषितपीयूषपानगलिताखर्वगर्वा महाकवयोऽप्येकपदे तस्य कवे: कविकुलगुरुत्वमापादयन्त्स्तस्य कृतेरलौकिकतां स्वीकुर्वन्ति । भगवता

बाणभट्टेन कालिदासस्य कृतमार्धुर्यमास्याद्य मुक्तकंठनोक्तम् ।

‘निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु । प्रीतिर्भुरसन्द्रासु मंजरीषिव जायते ।’ एवं गुणगणगरिष्ठस्य कविकुलब्धप्रतिष्ठस्य तत्रभवतः कालिदासस्य यशःकायकल्पा बहवः प्रबन्धः पृथक् पृथक् मुद्रितास्सन्ति मुद्यन्ते च । तथापि काव्यपीयूषपानलोकुपानां केषांचन सहदयानां पुनःपुनःरम्भर्थनया गुर्जरपत्रालयाधिपतिना कालिदासीयप्रबन्धरत्नानि क्रमशः प्रकटीकर्तुमुपक्रान्तम् । तत्र विक्रमाक 1954 मिते वत्सरे रघुवंशाख्यं महाकाव्यं मलिलनाथकृतटीकासंवलितं ललिताक्षरसंकलितं प्राकाशि । इदानां च तेनैव कुमारसंभवाख्यं महाकाव्यं श्रीमलिलनाथकृतसंजीविनी, सीतारामकृतसंजीविनी, चारित्रवर्धनकृतशिशुहितैषिणीति टीकात्रयतिलिकितं प्रकाश्यते ।

श्रीमलिलनाथसीतारामकृतटीके तु सुलभे बहुभिरेव मुद्रिते स्तः । परन्तु चारित्रवर्धनकृत शिशुहितैषिणी टीकेदानीमपि न केनाप्यलाभि । महाद्रूलभा सा शिशुहितैषिणीटीका तेनैव

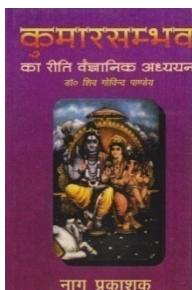
महता प्रयत्नेन सम्पादिता, साच श्लोभिप्रायं स्पष्टतया विशदीकरोति पदार्थश्चानिर्वक्ति, अतो शिशुपत्रामेकामतीवाशुद्धां प्रतिकृतिं संपाद्य शास्त्रीश्री घुण्डराजात्मज विट्ठलद्वारा संशोधयित्वा टीकात्रयतिलकितं कुमारसंभवं मुद्रितम्।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-203-6

pp 390 2006

Rs.200.00

कालिदास कृत



कुमारसम्भव का रीति वैज्ञानिक अध्ययन

डॉ. शिवगोविन्द पाण्डेय

महाकविकालिदासस्यात्तमां कृतिं कुमारसम्भवमधिकृत ममान्ते वासिना शिवगोविन्द पाण्डेयन प्राचामर्वाचीनानाज्च पद्धतीः संयोज्य रीति विज्ञानपरकं विवेचनं रचिते ग्रन्थे प्राणायिं कुमार सम्बवे हि दिव्यं प्रेम्णा शिवशक्ति सामरसात्मकस्य रूपस्य पराकाष्ठा, तपसः प्रकर्षपूर्वकमौदात्यं, लोकातिशायिनी प्रकृतिशोभा च कविना समानायीति सर्वं युक्तिपूर्वकं सोदाहरणमत्र प्रादर्शि।

कथं रथुवंशादीनां पूवर्वितिनां काव्यानामपेक्षया कुमार सम्बवे महाकवे प्रौढ़िरुत्तरोत्तरं संदृश्यत इत्यपि सम्यक् प्रमाणीकृतमस्मिन्नन्ये। इदं काव्यमष्टमे सग। एव पर्यवस्थति, कथमप्यपूर्ण नास्तीति नवेन प्रतिभोत्कर्षणात्रोप पादितम्, अस्य काव्यस्य नामाऽपि न कुरुपराक्रमः न च ताकासुर वधः, अस्य नाम कुमार सम्बव इति। शिवशक्तिसंयोगेन तेजस आविर्भाव एवास्य फलम्। इदं फलं केन विधिना कस्मिन् वृक्षे फलति, कि तत्र बीजं कथं तस्याङ्गकुरोद्भेदः, कियन्तश्च विघ्नाः, विघ्ननिवारणाय की दृशाश्च प्रयत्नाः, कीदृक् च परिणतिः, शिवस्य तपःक्रीत रूपेण उमा महेश्वरयोः कथञ्च विराजः सौन्दर्यस्य प्रताने सम्मिलनं कीदृक् च तस्य सौन्दर्यस्य घनत्वं की दृश्यश्चैतादृशः सम्मिलनरूपवृक्षस्य शाखा इति सर्वं क्रमेणास्मिन् काव्ये परिवृद्धम्।

मन्ये, इदमध्ययनं न केवलं कालिदासकृतीनामनुशीलनशालिनां कृते अपितु काव्य मात्रानुशीलनपरायणानां कृते महदुपकारकं भविष्यति।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-327-1

pp 406 1996

Rs. 250.00

लघुरूपकसमुच्चयः

(अष्ट नाटकानि)

डॉ. शशिनाथ झा



विद्वत्कविवर डॉ शशिनाथ झा महाशयरचितानाम अष्टानां लघुरूपकाणां संग्रहोदयं लघुरूपकसमुच्चयः। अत्र विविधप्रकरका विषयाः सञ्चिता विद्यात्ते—पौराणिकः, सांस्कृतिकः, ऐतिहासिकः, दार्शनिकः, लोककथाश्रितः, आधुनिकः, राष्ट्रभित्तिमयः, प्रहसनात्मकश्चेति। वर्तमान—सामाजिकी रिथितस्तत्समालोचना समाधानज्ञात्र रोचक—नव्यशैलया समुपन्यस्तम्। एतेषां लोप्रियता मत्र्योपयोगिता च भूतं परीक्षिता यत्रैतानि शाणोत्तीर्णमणिराशिरिवेत्तीर्णनि।

राष्ट्रगौरवनाटके स्वातन्त्र्यक्रात्तर्वर्णमस्ति। शङ्कराचार्य—मण्डनयोः शास्त्रार्थो विषयगत—दार्शनिकमतभेदपुरस्सरं समवतारितः। अत्राद्मुतं नलचरितं मिथिलामात्रप्रसिद्धं वर्णितमस्ति। एतेषां भाषा सरला प्राज्जला चारितः। कवित्वभूषितपद्यानां समावेशः सन्तुलितोऽस्ति। कवित्वभूषितपद्यानां समावेशः सन्तुलिताऽस्ति। संस्कृतनाट्यसाहित्याकरे नूतनतयास्य समावेशो नितरां हर्षस्य विषयः। नूनमनेन समुच्चयेन संस्कृतदृश्यकाव्यप्रसवाहः साम्प्रतमपि सम्प्रगत्या प्रचलतीति प्रमाणितम्। रूपकाणां रचयिता प्रकाशकश्च विशेषेण धन्यवादभाजने स्तः।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-694-7

pp 150

2016

Rs.200.00



महाभारत में नारी—डॉ. कृष्णानन्द पाण्डेय

सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति में सृष्टिकाल से ही स्त्री जाति को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। सृष्टि की कल्पना तक नहीं की जा सकती है। सृष्टि के पश्चात् शिशु के विकाश, पारिवारिक स्थिति का निर्माण एवं सम्पूर्ण समाज के निर्माण में स्त्री पुरुष से अधिक महत्व रखती है क्योंकि वह ममता एवं त्याग की प्रतिमूर्ति है। ऐसी स्थिति में महाभारत जैसा विशालकाय ज्ञानभण्डार तथा भारतीय धर्म का अद्वितीय व्याख्यानाग्रन्थ स्त्री के वर्णन से कैसे अछूता रह सकता है? सम्पूर्ण महाभारत में स्त्री चरित्रों की भरमार है, जिसमें उसके विविध रूपों का सांगापांग वर्णन प्रस्तुत किया गया है। वास्तविकता यही है कि सम्पूर्ण महाभारत की कथा स्त्री चरित्र पर ही आधारित है। उसी चरित्र के विविध आयामों का परिदर्शन इस ग्रन्थ में किया गया है।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-606-8 pp 372 2005 Rs.300.00

माध्यमिक दर्शन का तात्त्विक स्वरूप

डॉ. मुक्तावली

माध्यमिक दर्शन बौद्ध धर्म-दर्शन का एक प्रमुख निकाय है जिसे बौद्ध धर्म-दर्शन की मूल धारा या केन्द्रिय तत्त्व-दर्शन भी माना गया है। इस पुस्तक की प्रमुख विशेषता यही है कि इससे आज तक अत्यन्त कम प्रचलित, किन्तु परम्परासिद्ध दृष्टिकोण पर लगने वाले आरोपों का यथासाध्य समाधान करने का प्रयास भी किया गया है।

इस पुस्तक में माध्यमिक दर्शन के सर्वाधिक विवाद ग्रस्त पक्ष पर निर्णय की स्थिति में पहुँचने का प्रयास लेखिका ने किया है। लेखिका की सुचित्ति धारणा है कि माध्यमिक दर्शन प्रस्त्यप्रतिषेधवादी दर्शन है न कि प्रयुदास प्रतिषेधवादी दर्शन, जो किसी भी स्तर पर किसी भी निरपेक्ष तत्त्व अथवा ब्रह्म तत्त्व की स्थापना और स्वीकृति के विरुद्ध है।

आशा है कि बौद्ध धर्म-दर्शन चरम परिणति माध्यमिक दर्शन पर लिखी गयी यह कृति बौद्ध धर्म-दर्शन के जिज्ञासुओं के लिए अत्यन्त सहायक सिद्ध होगी।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-399-9 pp 242 1998 Rs.150.00

मधुधारा

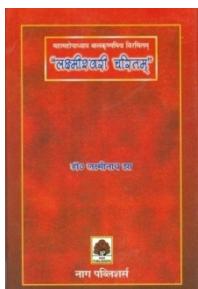
(संस्कृतकविता)

डॉ. शशिनाथ ज्ञा

सामयिकी संस्कृतकवित मधुधारा पारम्परिकी शैलीमत्यजन्ती अपि नूतनां प्रवृत्तिमाश्रयति। अत्र देश – ऋतु – प्रकृति – नदी – स्तुति – समभिनन्दन – व्यङ्ग्यादिभिः सहसामयिकी घटना अपि बहुत्र चित्रिता। कलिङ्गप्रकम्पनः, विहारविभाजनम्, गुर्जरे भूकम्पः, कार्णिलविजय इत्यादिकविता साम्प्रतिकवातावरणं समवतारयतीव। समस्यापूर्त्यः, अभिनन्दानि अपि नूतनमार्गाश्रयं दर्शयन्ति। सहदयाकर्षिकाः कविता अत्र शताधिकशीर्षकेषु

विविधभङ्गिगमां नानाचर्चिं च प्रकाशयन्ति।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-586-X pp 126 200 200 Rs.100.00



महामहोपाध्याय बालकृष्णमिश्र विरचितम्

लक्ष्मीश्वरी चरितम्

आख्यायिकाभक्तं गद्यकाव्यम्

ग्रन्थकारकृत—व्याख्या टिप्पण्याच सहितम्

सम्पादक—डॉ. लक्ष्मीनाथ ज्ञा

आख्यायिकेयं विविधविरुद्धावलीविराजमानमानोन्नतमिथिलामहीमहाराज
लक्ष्मीश्वरसिंह बहादुर जी. सी. आड. इ. देवदेवानाम द्वितीयधर्मपत्न्या
महाराजास्तस्या: श्री 5 लक्ष्मीश्वरीदेव्या: कुलयुगलयरितैरूपस्कृता। उक्ते च
चरित्रे कवचित् श् गारस्य, कवचित् वीरस्य, कवचित् करुणस्य, कवचित्
शान्तस्य व्यञ्जकृतया रसपदन भावस्यापि ग्रहणादन्तस्तद्वयङ्कत्वेन
सरसत्वोपपत्याऽऽख्यायिकालक्षणाववय स् गतिः। अत्र षड् उच्छ्वासा विद्यन्ते।

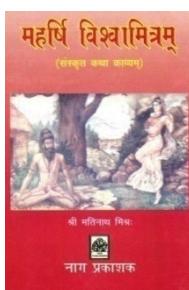
Demy 1/8

ISBN-81-7081-559-2

pp 238

2003

Rs.200.00



महर्षि विश्वामित्रम्

(संस्कृत कथा काव्यम्)

श्री मतिनाथ मिश्र

विश्वामित्र—नामके भव्ये कथाकाव्ये नव्येऽत्र महर्षेविश्वामित्रस्य
आदि—चरितादारभ्य चरमचरितं जानकी—सकल—प्रमुख—घटनानां
राजनैतिक—सामाजिक—वैयक्तिक— प्राकृतिकादिकानां
समुपस्थापितं चित्रं हृदयं निखद्यम ॥ एतस्य शैली सवतन्त्रैव
नियन्त्रिता वर्तते। नात्र बाणभट्ट इवाडम्बर—ज्ञानिरितो गद्यखण्डो,
न वा पाण्डित्य—पचारको दीर्घसामासिको वाग्व्यापार एव। अत्र तु
सरला प्राञ्जला संस्कृत—भाषाभिव्यक्तिमयी सर्वजन—सुबोधाऽप्यतुच्छा शैली
समालभ्यिताऽऽम्बराऽना—कलिता। विशिष्टवर्णनस्थले कवचित् कवचिदाश्रितालङ्कृता
शैली या हि काव्येन प्रतिष्ठापयति गौरवास्पदे।
पौराणिकीयमपि कथा कवे योंजना वैचित्र्येण सरसा समजायत।
कथावस्तु—सुव्यवस्था—सम्पादनाय कविना कवापि कवापि प्रसिद्ध—घटनाक्रमे मनाक्
परिवर्तनमपि कृतं यद् गुणास्पदमेव। विश्वामित्रस्य महर्षः समग्र—चारित्रिकोत्कर्षम् एकत्र
संगृह्य स्वकवित्वप्रतिभया रोचकं गद्य—काव्यं विरच्य कवि धन्यवादभाजनम्। मध्ये मध्ये
यथावसरं योग—जप—समाधि—साधनानां विस्तृतं वर्णनं काव्यमिदं
शास्त्रीयसम्पत्ति—संवलितं विद्धाति। विशेषतो गायत्र्या साधनावर्णनं तदद्रष्टृत्वं
विश्वामित्रस्य यथात्र हृदयङ्गमतया वर्णितं न तथान्यत्र द्रष्टुं शक्यते।

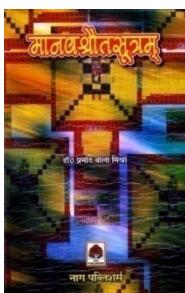
Demy 1/8

ISBN-81-7081-310-7

pp 242

1995

Rs.200.00



मानवश्रौतसूत्रम्

डॉ. श्रीमती प्रमोद बाला मिश्रा

वैदिक धर्म, दर्शन, साहित्य, संस्कृति तथा सभ्यता के स्वरूप का सम्यक् विश्लेषण करने में यज्ञ-संस्था का अकल्पनीय योगदान है। इसी से वेद की प्रतिष्ठा है। इस संस्था का सर्वाङ्गपूर्ण विवेचन श्रौतसूत्रों की सहायता से ही हो सकता है। इसका वर्चस्व वहीं दिखाई देता है। श्रुतिप्रतिपादित यज्ञों का क्रमबद्ध तथा विशद वर्णन श्रौतसूत्रों में ही मिलता है। इनका विषय जटिल, दुरुह तथा नीरस है। जनसामान्य के लिए उनमें किसी प्रकार का आकर्षण नहीं है, परन्तु धार्मिक दृष्टि से ये अपने विषय के महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। कृष्णायजुर्वेदीय मैत्रायणी शाखा से सम्बद्ध मानवाचार्य विरचित मानवश्रौतसूत्र एक ऐसा ही प्राचीनतम सूत्र ग्रन्थ है यजो अपने यमहनीय गुणों, विशाल कलेवर और अनूठी वर्णन शैली के कारण श्रौतसूत्रों के अन्यतम है। मैत्रायणी शाखा की याज्ञिक परम्परा को सुरक्षित रखने में इसका विशिष्ट योगदान है। यह स्वयुगीन संस्कृति-सभ्यता-जीवन-पद्धति और नैतिक मूल्यों पर विशद प्रकाश डालता है। विविध यज्ञों एवं उनकी सम्पादन-विधि के ज्ञान के लिये यह ग्रन्थ एक पाठ्यपुस्तक है। लेखक ने इसकी भूमिका के तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम अध्याय में इन यज्ञों का आलोचनात्मक तथा तुलनात्मक दृष्टि से विशद विवेचन प्रस्तुत कर दुरुह यज्ञ विधियों का ज्ञान जनसाधारण के लिये सुलभ कर दिया है। यहाँ वर्णित सभी यज्ञों को भूमिका में तर्क संगत ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इस ग्रन्थ के अन्त में दिये गये तीनों परिशिष्ट बड़े उपयोगी हैं। प्रथम परिशिष्ट में यज्ञ सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दों का स्वरूप स्पष्ट किया गया है। द्वितीय एवं तृतीय परिशिष्ट में क्रमशः यज्ञ सम्बन्धी विविध पात्रों एवं वेदयों के स्वरूप-बोध में अत्यधिक सहायता मिलती है। अथक परिश्रम, योग्यता, अध्यवसाय एवं पूर्ण सावधानी से निर्मित किये गये ये चित्र संग्रहीय हैं। इस ग्रन्थ के प्रकाशन से वैदिक अध्ययन के अनछुए आयाम का उद्घाटन होगा।

Demy 1/8

ISBN-81-7081-567-3

pp 750

2003

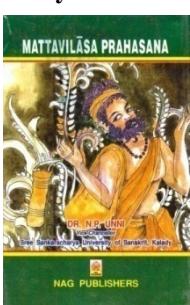
Rs.450.00

MATTAVILASA PRAHASANA

EDITED AND TRANSLATED BY DR. N. P. UNNI

"The earliest farcical sketch in one Act, the Mattavilasa or 'Division of the Drunk' of King Mahendrvikramavarman of Kanchi, depicts the drunken revelry of a Saiva mendicant bearing a human skull in lieu of an almsbowl and accordingly calling himself a Kapalin; his wanderings with his wench through the purlieus of Kanchi on his way to a tavern; his scuffle with a hypocritical Buddhist monk whom he accuses of the theft of the precious bowl; his appeal to degenerate Pasupata to settle the dispute and the final recovery of the bowl from a lunatic who has retrieved it from a stray dog."

The Prahasana is a remarkably smart production of the genre, replete with mirth and satire and the characters are vigorously drawn throwing a flood of light on the life of the time. The royal author who calls himself 'Vicitracfitta' holds to ridicule the sham priests and mendicants of various religious sects.



The work is here critically edited with an English translation and detailed introduction giving an account how the farce is stage in the reformed temple theatres of Kerala by Cakyars during the last several centuries. A rare and hitherto unknown material commentary is also appended to the edition.

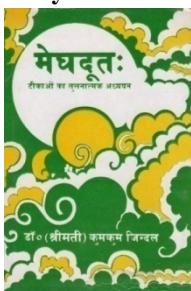
Demy 1/8

ISBN-81-7081-401-4

pp 120

1998

Rs.100.00



मेघदूत की प्रमुख टीकाओं का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. श्रीमती कुमकुम जिन्दल

संस्कृत साहित्य को अपनी अनुपम कृतिरत्नों से देदीप्यमान कर देने वाले निखिलकविचक्रबूङ्गामणि कालिदास की अपूर्व कलाकृति मेघदूत चिर पुरातन होते हुए भी चिर नवीन है। इस गीतिकाव्य पर साठ से भी अधिक संस्कृत टीकाओं का उल्लेख मिलता है। उनमें से कुछ ही प्रकाशित हुई हैं। इस ग्रन्थ में प्रमुख रूप से स्थिरदेक, वल्लभदेक, दक्षिणावर्तनाथ, चारित्रवर्धन, सारोद्धारिणी, सुमतिविजय, भरतमल्लिक, कृष्णपति एवं चरणमीर्थ महाराज कृत टीकाओं के वैशिष्ट्य का ऊहापोह किया है। इनके अतिरिक्त महिमासिंह गणि, हरगोविन्द वाचस्पति, कल्याणमल्ल, रामनाथतर्कालिंकार परमेश्वर आदि टीकाकारों के जो थोड़े बहुत उद्धरण यत्र-तत्र प्राप्त होते हैं उन्हें भी उद्घृत किया गया है।

इस ग्रन्थ को 6 अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय के दो खण्ड हैं, प्रथम खण्ड में मेघदूत का संक्षिप्त परिचय तथा द्वितीय खण्ड में एक तालिका रूप में सभी टीकाओं और टीकाकारों का नामस्त्रेपण उल्लेख करते हुए उन स्थलों का निर्देश कर दिया गया हैं जहाँ-जहाँ उन टीकाकारों का थेड़ा—बहुत विकरण उपलब्ध होता है। द्वितीय अध्याय में प्रमुख टीकाकारों का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनके काल, स्थान, कृतित्व, टीकापौशिष्ट्य आदि का विवरण किया गया है। तृतीय अध्याय में अर्थ-बेद की दृष्टि के टीकाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि कवि प्रयुक्त प्रत्येक शब्द अपने में किस अस्थान ज्ञान को समेटे हुए है और टीकाकारों ने अपनी सूक्ष्मेतिका से कितने अनन्त नूतन अर्थों की परिकल्पना की है। चूर्तुष अध्याय में पाठ-बेद का निरूपण किया गया है। पांचवें अध्याय में वर्णित ऐगोलिक स्थल का वर्णन किया गया है। अंत फट अध्याय में 19 प्रक्षिप्त श्लोकों को देते हुए अर्थ व पाठ की दृष्टि से टीकाओं का परिशीलन किया गया है।

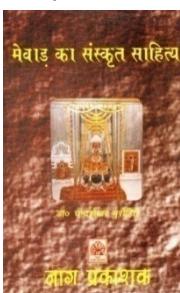
Demy 1/8

ISBN-81-7081-274-7

pp 240

1993

Rs.150.00



मेवाड़ का संस्कृत साहित्य

डॉ. चन्द्रशेखर पुरोहित

'मेवाड़ के संस्कृत साहित्य' के लेखक — डॉ. चन्द्रशेखर पुरोहित अनुसंधानरत विद्वान् और प्रातिभ मौलिक रचनाकार हैं। एक अन्वेषक और जिज्ञासु के रूप में डॉ. चन्द्रशेखर पुरोहित ने अपनी मातृभूमि के ऋण से उत्तरण होने के संकल्प के साथ 'मेवाड़' में सृजित संस्कृत साहित्य की खोज के लिये सम्पूर्ण 'मेवाड़' प्रदेश के गाँव—गाँव में परिभ्रमण द्वारा अनेक अन्वेषकों और विद्वानों का अनुग्रह प्राप्त किया और परिणाम स्वरूप सर्वथा अज्ञात और अल्पज्ञान हस्तलिखित ग्रन्थों, शिलालेखों तथा दुर्लभ मुद्रित पुस्तकों की खोजकर उनके अध्ययन अनुशीलन का सुआवसर प्राप्त किया। 'मेवाड़ का संस्कृत साहित्य' विषयक डॉ. पुरोहित की कृति से अध्येताओं को अवश्य ही परितुष्टि होगी।

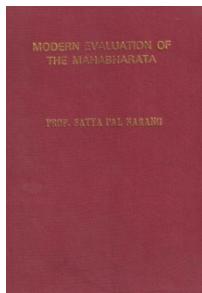
Demy 1/8

ISBN-81-7081-312-3

pp 388

2004

Rs.300.00



MODERN EVALUATION OF THE MAHABHARATA

(Prof. R. K. Sharma Felicitation Volume)

CHIEF EDITOR - PROF. SATYA PAL NARANG

This volume has been prepared in honor of Prof. R. K. Sharma. I was given the honor to plan and edit it which I readily accepted with great pleasure. It was also decided that the volume should be exclusively devoted to the theme "Mahabharata".

The volume was planned to search new problems, topics, fresh interpretations and theories including refutations in the light of fresh facts in the main and allied fields. Various fields of interpretation including the evaluation of the commentators were incorporated in the volume. Archaeological, psychological, historical, and biographical, criticism etc. were the new fields of the collection. Study of the variants of his works with application of the principles of linguistics and higher criticism with a fresh approach is another feature of this work.

The "Mahabharata" is a poem unlike any other. It has been called an epic, but the term is misleading. It contains an epic, or, if you consider it together with its epilogue, the Harivansha, it contains two epics, and these may profitably be compared with the epics which survive in other languages. But the Mahabharata is much more than that. In its 100000 verses are found hundreds of incidental stories, masses of moral advice and religious instructions, even one book, the Virata-parvan, which is essentially a comedy. In Indian terms, one may say that the Mahabharata contains all the rasas although the overall mood may be the rasa of santi.

These are the articles in the volume :-

1. On the Mahabharata - Prof. Daniel H. H. Ingalls
2. The Mahabharata in World Literature - Prof. Satyavrat Shastri
3. The Mahabharata Database Project - A Note - Prof. Subhas C. Biswas and Sheela Daga
4. Author and Authority in the Epic - Prof. Bruce M. Sullivan
5. Krishna Dvaipayana Vyasa, The Great Compiler of the Mahabharata - Dr. Bina Pani Patni
6. The Complexity of the Title "Gita" - Dr. Kala Acharya
7. Is there only one Version of the Game of Dice in the Mahabharata - Prof. M. A. Mahendale
8. Mahabharata XXII and Rig Veda X. 129 - H. H. Bodewitz
 9. The New Asvin-hymns - Dr. Madhusudan Mishra
10. Religious Concept in the Mahabharata - Prof. Vidhata Mishra
11. A Comparative Study of "Aditi In the Veda And The Mahabharata" - Dr. Pravesh Saxena
12. Gods In Hiding : The Mahabharata's Virata Parvan and the Divinity Of the Indian Epic Hero - Prof. Robert P. Goldman
13. The Legend of Ani Mandavya - Prof. S. G. Kantawala
14. The Account of Jarasandha's Birth From the Mahabharata - Dr. (Smt.)

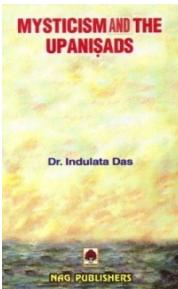
Sindhu S. Dange

15. Two Durga Hymns of the Mahabharata - A Study _ Dr. A. N. Jani
16. The Devi Bhagavata And the Devi Legends - Dr. P. G. Lalye
17. Relevance of the Hymns To Durga In The Mahabharata - Prof. Upendra Nath Dhal
18. The Myth Of Dhundhu - Dr. Sadashiv A. Dange
19. The Mahabharata And the Bhagavta - Prof. Shiv Shankar Prasad
20. Tales Of Wisdom In The Mahabharata - Prof. P. N. Kawthekar
21. Travel Of Khandava Forest Legend And Navagunjara Image - Prof. Prafulla K. Misra
22. Nala-narrative In Mahabharata And Kubera Purana - A Comparative Approach - Prof. Asoke Chatterjee Sastri
23. Puranas And The Mahabharata - Dr. N. Gangadharan
24. Mahabharata Allusions In Mahendrasuri's Anekarthakairavakaumudi : A Jain Tradition - Dr. Suddha Sharma
25. The Kshatriya Core Of The Bhagavad-Gita - Prof. Madhav M. Deshpande
26. Priesthood, The Brahmin, And Kingship In the Mahabharata - Dr. Hukum Chand Patyal
27. Lokasangraha, Buddhism And Buddhiyoga In the Gita - Prof. Chr. Lindtner
28. Samkhya Elements In the Mahabharata - Prof. Ram Murti Sharma
29. Nadopasana- Kalpakam Sankarnarayan
30. Social Justice And Ancient Indian Rajadharma - Prof. Rajendra Mishra
31. The Concept Of Dharma-Raja In The Mahabharata - Prof. Pushpendra Kumar
32. Code Of Conduct For Robbers Too - Prof. Trilokanatha Jha
33. Suggestiveness (Dhvani) In the Mahabharata - Dr. Ravi Shankar Nagar
34. The Impact Of The Mahabharata On Sanskrit Literary Criticism - Prof. Pratap Bandyopadhyay
35. The Influence Of The Mahabharata On Kalidasa In The Light Of The Views Expressed By The Commentators - An Analysis - Dr. C. Panduranga Bhatt
36. The Mahabharata In the Malayalam Literature - Dr. N. R. Gopinatha Pillai
37. Fold Traditions Related To The Mahabharata In South India - Dr. T. S. Rukmani
38. Mahabharata In The Kerala Folk Tradition - Prof. N. P. Unni
39. Remarks About The Lexical R And V - Prof. Alex Wayman
40. Narrative Linkage In The Mahabharata - Prof. Hans Henrich Hock
41. Change Of Meaning With The Prefix Pari In the Mahabharata : An Allied And Remote Relationship
42. Unpaninian Syntax (Concord) In the Ramayana And The Mahabharata - Dr. Veena Bhatnagar
43. Variants In Semi-Vowels (Of The Root Meaning "To Sleep") In the Critical Edition Of Mahabharata - Dr. Salila Nayak

Crown 1/4 ISBN 81-7081-291-7

1997 pp 650

Rs. 600.00



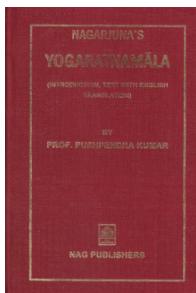
MYSTICISM AND THE UPANISADS

DR. INDULATA DAS

The direct experience of Realig, expressed through various appellations like God, Brahman etc. and the endeavour thereof is known as Mysticism. The Upanisads are the earliest literature of mysticism not only of India but also of the whole world. They are vivacious with the highest mystic truths and experiences that man could ever achieve. All aspects of mysticism find abundant expression in the Upanisads.

The book MYSTICISM AND THE UPANISADS is based on an extensive survey of Upanisadic mysticism and that of other prominent religions of the world. The work highlights the varieties of mystic experiences and expressions manifest in Upanisads and elsewhere, in addition to methods for achieving the mystic goal. The comparative analysis of Upanisadic mysticism with that of other important world religions not only reflects the scholarly depth of the author but also makes the work a unique contributions to the literature on mysticism.

Demy 1/8	ISBN-81-7081-550-9	pp 244	2002	Rs.150.00
-----------------	---------------------------	---------------	-------------	------------------



NAGARJUNA'S YOGARATNAMALA

(Text With English Trans. & Notes)

ED. PROF. PUSHPENDRA KUMAR

Nagarjuna is our first known alchemist whose work has survived to the present day. He belongs to the same age which produced the famous non-rusting iron pillar of Delhi bearing the inscription of ancient alchemic process. He describes different types of crucibles and stills, cupellation, sublimates, coloring and allowing of metals, extraction of copper from pyrites, use of metal oxides as medicines, etc. etc.

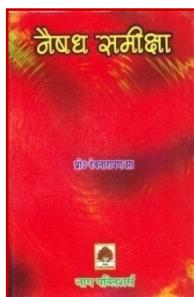
In Chinese he is known as Lung-shu or Lung-Meng. The Chinese traveler I-Tsing places Nagarjuna in he first century A. D. as the contemporary of king Kanishka, both of whome are said to have appeared four hundred years after the Nirvana of Buddha.

Long accounts of Nagarjuna are available in Tibetan literature. There he is shrouded in legend and mystery.

Nagarjuna is the discoverer of several eye medicines and of the elixier of life which strengthens the weakening forces of men in old age and prolongs life and happiness. He rescued starving humanity from famines by exdchanging gold for grain in for off lands.

In this edition Nagarjuna's Yogaratnamala text with English translation and notes are given.

Demy 1/8	ISBN 81-7081-109-0	pp 120	2016	Rs 200.00
-----------------	---------------------------	---------------	-------------	------------------



नैषध समीक्षा

प्रो. देवनारायण झा

प्रकृत ग्रन्थ में काव्य के सभी पक्षों के साथ—साथ सभी शास्त्रों का भी यथावसर विस्तृत विवेचन किया गया है। शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से इस में व्याकरण, न्याय, मीमांसा, दर्शन आदि विभिन्न विद्यास्थानों की भी विस्तार पूर्वक मीमांसा की गई है। काव्य जगत् की वरेण्य—कवि—परम्परा की भी चर्चा प्रस्तुत ग्रन्थ में समुपलब्ध हैं। काव्यगत दोष, गुण, अलंकार, रीति, वृत्ति, छनद तथा धनि तत्त्व का भी सविस्तार निरूपण इस ग्रन्थ में किया गया है। काव्य सिद्धान्तों के मानक आचार्यों के मतानुसार काव्य विषयक आवश्यक तत्त्वों का विश्लेषण भी इस ग्रन्थ की विशिष्टता है। यह ग्रन्थ श्रव्य काव्य की सभी विधाओं का प्रतिनिधित्व करता हुआ लेखक के अलंकार शास्त्रविषयक स्वतन्त्र विचार का परिचय भी प्रस्तुत करता है। लेखक ने यथास्थान ग्रन्थ की ग्रन्थियों के उद्देशन का भी प्रयास किया है। आशा है, यह कृति सुधीजनों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-546-0

pp 344 2001

Rs.250.00



NALODAYA

With the Commentary

KAVIHRIDAYADARPANA

CRITICALLY EDITED WITH A STUDY BY - DR. K. K. HARIHARAN

The story of Nala is very popular throughout India. Tradition has accorded to it, more or less, a religious sanctity and it is widely believed that a recapitulation of the tale destroys sin and ill luck. Mallinatha the famous commentators has highlighted the traditional sanctity of the story quoting Mahabharata, which according to his sayings that the story of Karkotaka the serpent, princess Damayanti, king Nala and king Rituparna is sure to do away with the evil effects of Kali.

The work is so popular that some had ascribed it to Kalidasa and it has been printed in several editions in Devanagari as well as Grantha scripts. Regarding the authorship of the work there are several views, ascribing the work to Ravideva and Vasudeva based on the reference found in some manuscripts of the work. On the whole it is an interesting work and it has been commented on by a number of authors. Some of the commentaries have already been published.

The present publication is a critical edition of the Yamaka Poem making use of nearly forty manuscripts in palm leaves and ten printed editions. The commentary Kavihridayadarpana of Srikantha is edited here for the first time based on the only manuscript of it. This rare commentary is by far the largest gloss on the work and is extremely useful to the students of Sanskrit literature.

N. P. Unni

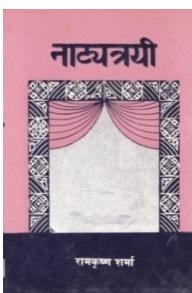
Demy 1/8

ISBN 81-7081-331-X

1995

pp 300

Rs. 300.00



नाट्यत्रयी

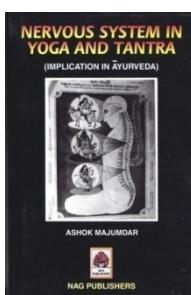
- 1. विडम्बना, 2. प्रणयविच्छेदः, 3. कण्ठवाश्रमः**
डॉ. रामकृष्ण शर्मा

Shri Ramkrishna Sharma first Sanskrit play Bangladesodayam was hailed as a repository of our national sentiments in the context of the creation of Bangla Desh as a separate nation. Here comes his trio of Sanskrit plays, viz. 1. The Vidambana, 2. The Pranayaviccheda and 3. The Kathvasramah each of which gives a very interesting reading by virtue of its stylistic simplicity, attractive presentation and dramatic sublimity, despite linguistic aberrations here and there.

The Vidambana is a six-Act play presenting the well known Karna story in a novel dramatic style. Look at the pathos represented in the following remorseful lamentation of Yudhishthira after Karna's death is reported by Kunti. The Pranayavicchedah is an One-Act play representing a novel presentation of the contents of the Fifth Act of the Abhijyana Sakuntalam. The novel treatment of the old theme interests us most even without any notable innovation. It has been staged more than once and has each time generated a feeling of novelty among the audience.

The Kanvasramah represents the playwright's imaginative original flights to an ideal hermitage centre. Drawing inspiration from Kalidasa's brief depiction of Kanvasrama, Shri Sharma has done his best presenting this ashram as abode of eternal Nature Beauty, Spiritual Peace and Intellectual Bliss and Non-violence. Thus this trio represents the aesthetic capability of the author to blend the "old" and the "Neo" into a superb dramatic art form. He is decidedly one of the best few Sanskrit play writers of to-day, thoroughly conversant with the art of dramaturgy.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-506-1 pp 102 1999 Rs.150.00



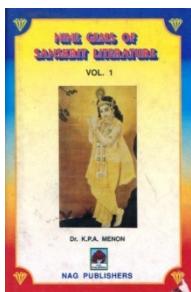
NERVOUS SYSTEM IN YOGA AND TANTRA

(Implication in Ayurveda)

DR. ASHOK MAJUMDAR

Since a long period, how the nervous system in Yoga, Tantra and Ayurveda played their role was a mystery. The author having a modern medical background explored original texts of Yoga, Tantra and Ayurveda to make a break through in this mysterious concept. This is an excellent, researchers and general public. This is one of the most informative book in the field of Yoga, Tantra and Ayurveda and an excellent comparative research work with simple logical scientific explanations for mass benefit.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-440-5 2016 pp 794 Rs. 1000.00



NINE GEMS OF SANSKRIT LITERATURE

नवरत्नमाला—NAVARATNAMALA

K. P. A. MENON I. A. S. (RETD.)

Demy 1/8 ISBN-81-7081-328-X pp 1716 (3 vols set)
1995 Rs.1200.00

NINE GEMS OF SANSKRIT LITERATURE VOL. 1

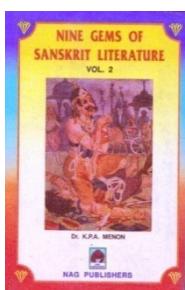
(श्रीकृष्णविलासम्)

K. P. A. MENON I. A. S. (RETD.)

Selecting few out of the large number of brilliant gems glittering in the firmament of Kerala's Sanskrit Literature is not an easy task. Special attention has therefore been given to those compositions of great merit which are not easily available to interested readers at present. In Kerala, students of Sanskrit used to make their entry into the world of Kavyas with the short poem of Sriramodantam and Sukumara's Srikrishnavilasam before making their acquaintance with Kalidasa and others. Unfortunately, both these compositions have practically gone out of circulation even in the state of their origin. Other poems included in the series are Kulasekahara's Mukundamala, Vasudev Bhattatiri's Yudhisthiravijayam, two compositions of Lilasuka, the Message Poem, Sukasandesa of Laksmidasa and two short hymns of Adi Sankara.

Sukumara's Srikrishnavilasam is a mahakavya, dealing with the birth and exploits of Lord Krishna. The poet has made no secret of the fact that he is an ardent admirer of Kalidasa and he has tried to faithfully follow the foot-steps of the great master in many respects. The poem stops abruptly in the middle of the 12th Canto while Krishna is making on aerial journey in the company of his beloved wife Satyabhama giving a strong indication that death might have intervened before he could complete the work.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-328-X(set) pp 674 1995 Rs.400.00



NINE GEMS OF SANSKRIT LITERATURE

नवरत्नमाला

NAVARATNAMALA

VOL. 2

(युधिष्ठिरविजयम्)

K. P. A. MENON I. A. S. (RETD.)

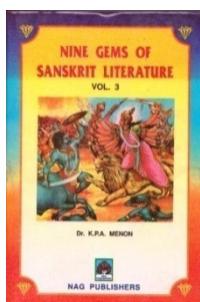
The second volume of the 'Nine Gems of Sanskrit Literature' contains one of the three famous Yamaka Kavyas of Vasudeva Bhattatiri, who is believed to have been a contemporary of the famous Cera Emperor, Ramavarma Kulasekhara (A.D. 885-917). There are references to his patron monarch in all the three poems and the poet also

speaks about his preceptor, a Bharataguru with great reverence.

Vasudeva's Yudhisthiravijam is rightly acclaimed as the greatest among the Yamaka compositions. As the title indicated 'Yudhisthiravijayam' deals with the victory of Yudhisthira the eldest of the Pandavas over the evil forces represented by Duryodhana and the hundred Kaurava brothers. It starts with King Pandu's departure to the Himalayan forest and the birth of the Pandavas. Subsequently it deals with the rivalry between the Pandavas and Kauravas that led to the war of annihilation in which the Pandavas ultimately come out victorious.

Two more Yamaka Kavyas with the titles, Tripuradahanam and Saurikathodaya are well known compositions of the same poet and it is hoped that these may also become available to interested scholars in the near future through the efforts of the present commentator.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-328-X (set) pp 610 1995 Rs.400.00



NINE GEMS OF SANSKRIT LITERATURE

नवरत्नमाला

NAVARATNAMALA

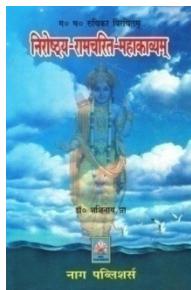
VOL.3

**1. Mukundmala, 2. Kalavadhakavyam, 3.
Durgastuti, 4. Sriramodantam, 5. Sukasandesa, 6.
Dasasoloki, 7. Daksinamurtistotram**

K. P. A. MENON I. A. S. (RETD.)

The Third volume of 'Nine Gems of Sanskrit Literature' starts with Mukundamala, the oldest among the Vaishnavite lyrics ascribed to Kind Kulasekhara who finds his place among the twelve Alvars. It is followed by the Kalavadhakavyam and Durgastuti of the famous saint poet, Lilasuka with the alternative name of 'Vilvamangala'. Kalavdhakavyam deal with the death of the god of death at the hands of Lord Mahesvara, whom he annoys by trying to snatch away his devotee Markandeya. Though an ardent devotee of Krishna in the form of Venugopala Lilasuka has composed innumerable hymns in praise of other gods and goddesses as well. Durgastuti is a hymn in praise of one of the local deities of the famous Sukapuram village of South Malabar. Sriramodantam is a short poem of 153 verse dealing with the story of Rama, with which students used to start their study of Sanskrit kavyas in Kerala. Sukasandesam is a Message Poem of the 14th century of poet lakshmidasa on the model of Kalidasa's Meghadutam. The collection ends with two short hymns dealing with the quintessence of advaita philosophy, so much compressed into so few words as only the great preceptor Adi Sankara could have done.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-328-X (set) pp 432 1995 Rs.400.00



म. म. रुचिकर विरचितम्

निरोष्ट्य-रामचरित-महाकाव्यम्

(डॉ. शशिनाथज्ञाकृत हिन्दी अनुवाद सहित)

रचनाकाल - 1445 ई.

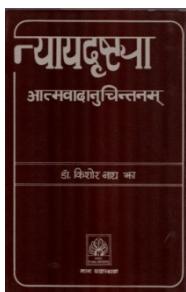
सम्पादकः**1. डॉ. कृष्णानन्द ज्ञा, 2. डॉ. शशिनाथ ज्ञा**

श्री रामचन्द्र के चरित पर आधारित छोटे-छोटे सात सर्गों में निबद्ध यह महाकाव्यस 1445 ई. में रचा गया, जो आज तक अप्रकाशित एवम् अचार्चित रहा है। नाम के अनुसार ही इसकी विशेषता है कि इसमें ओष्ठ से उच्चारण वाले कोई भी वर्ण कहीं भी नहीं आये हैं और ग्रन्थ पूर्ण हो गया है। इससे कवि की भाषा पर असाधारण अधिकार सूचित होता है। ऐसे प्रयोग(निरोष्ट्य, निमूर्द्धन्य, निस्तालव्य आदि) को चित्रकाव्य के अन्तर्गत रखा जाता है।

महाकाव्य के लक्षण से युक्त, विषय से सन्तुलित, प्रवाहमय भाषा से शोभित, विविध छन्द अलंकार ध्वनि आदि से मणित इस काव्य की एक असारधारण विशेषता है – इसका छोटे-छोटे आकार का होना।

“यह युग तो टेलिफोन पर बातें करनें एवं वायुयान से चलने का है, इसमें महाकाव्य पढ़ने का समय ही कहाँ” – भविष्य युग के इस स्थिति को देखकर ही शायद कवि ने इसका आकार छोटा कर दिया होगा। सुलिलित काव्य से कोई भी रसिक मुश्किल हो सकता है।

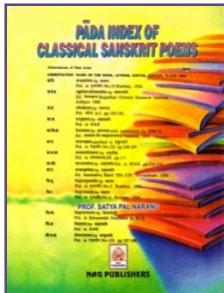
Demy 1/8 ISBN-81-7081-506-1 pp 102 1999 Rs.100.00

न्यायदृष्ट्या आत्मवादानुचितनम्**डॉ. किशोरनाथ ज्ञा**

अध्यायसप्तकविभजितेऽस्मिन् ग्रन्थे योगाचार विज्ञानवाद सम्प्रदायेन सह आक्षपादसम्प्रदायस्यध्यात्मवादं चिरात् प्रवर्तिता सारस्वती प्रतिस्पर्धिता गुण्यतयैतिहासिकक्रमेण च साधु प्रतिपादिता विद्यते। भारतीय वाङ्मयेऽन्यत्रापि समागत अध्यात्मवाद विचारः पृष्ठभूमित्वेनेह समाविष्टः। एतेन विषयोऽसौ पूर्णतामधिगतः। मौलिकान् शास्त्रग्रन्थानालोच्य सरलया रीत्या सारोऽत्र तेभ्यः समाहृतः विचारश्च तलस्पर्शी। यस्मुद्दिता अपि

मातृकास्थिता ग्रन्था न परित्यक्तेति ग्रन्थस्य मूल्यं प्रचयं गतम्। न्यायसम्प्रदायस्थितानां भाष्यवार्तिकतात्पर्यटीकापरिशुद्धिकाराणां मतानि विशदकृतानि, आत्मतत्त्वविवेक प्रचाच्रत्र साधु पर्यालोचितः। एतेषामात्मचिन्तनविधौ पूर्वपक्षभूतानां वसुबन्धुर्धर्म— कीर्तिशान्तरक्षितकमल शीलज्ञानश्रीमित्ररत्नकीर्तिप्रभूतीनामथ चेतराणां सहायकानां विरेधोऽपि प्रतिपादितः। अत्यपरि चितानामविद्वकरणशंकरत्रिलोचनादि नैयायिकानां मतानि ग्रन्थान्तरेषु समुद्धृतानि निपुणतय संगृह्य व्याख्यातानि। ज्ञानश्रीमित्रेण कृतं न्यायमतखण्डनं रत्नकीर्तिना तत्समर्थनमन्ते चोदयनाचार्येण ज्ञानश्री मित्रमतनिराकरणमैतिहासिकेन क्रमेण विस्तरेण स्फुटीकृतम्। अपरिचितानां ग्रन्थानां ग्रन्थकारणां च परिचयप्रदानेन लुप्तग्रन्थान। सन्दर्भ संकलनेन प्रदत्तमतानां मूलानुसन्धानेनापेक्षितविषयमात्रपर्यालोचनेन च गवेषणापूर्णाऽयं ग्रन्थस्तद्विदां जिज्ञासूनां चोपकाराय कल्पते।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-211-9 1990 pp 266 Rs. 200.00



PADA INDEX OF CLASSICAL SANSKRIT POEMS -Vol 1

PROF. SATYA PAL NARANG

The object of this project is to prepare a classified index of the important Sanskrit poems to search citations cited in other sources of Classical Sanskrit Poems, works of Poetics, works of grammar, lexicographic works or their commentators or other works written in Sanskrit.

The need to consolidate the poems whose utility with regards to citation, popularity, poetry, tendencies and limitations etc. is well established was felt which has resulted in this compilation.

In its final shape, this work is a collection of the verse which is lost and preserved at one or the other place either in an anthology or an imitative poem. It's compilation of about 1050 poems.

Crown 1/4 ISBN 81-7081-424-3 2005 pp 924(1 vol) Rs. 600.00



पालि निकायों में प्राचीन भारत की सामाजिक एवं आर्थिक संस्थायें

(ई० पूर्व पाँचवीं शताब्दी से ई० पूर्व तृतीय शताब्दी तक)

डॉ. प्रभास चन्द्र मिश्र

"पालि निकायों में प्राचीन भारत की सामाजिक एवं आर्थिक संस्थायें" में पालि निकायों के आधार पर बुद्धकालीन इतिहास के कुछ ऐसे तत्त्वों की पहली बार विशद समीक्षा की गई है, जिनका पूर्व में किए गए अध्ययनों में प्रायः अभाव दिखता हैं प्रस्तुत शोध प्रबन्ध इसलिए अत्यन्त उपादेय और ग्राह्य हो जाता है कि इसमें अत्यन्त विस्तार से विवेचन किया गया है जो मानव जीवन के प्रत्येक उचित-अनुचित स्वरूप के निर्माण में अपनी विशिष्ट भूमिका निभाते हैं।

प्रस्तुत कृति में लेखक के द्वारा पूरी तत्परता और मनोयोग से पालि निकायों से सम्बद्ध तथ्यों की पड़ताल की गई है। इस अध्ययन में अध्ययन-बिन्दुओं की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए एतद सम्बन्धी समस्त सामग्रियों के उपयोग की चेष्टा की गई है। लेखक ने यह पूरी कोशिश की है कि पालि-निकायों के ऊपर किए गए अनुसन्धानों से सम्बद्ध समस्त प्रामाणिक अध्ययनों, विवेचनों, तथ्यों का पूर्ण उपयोग हो सके।

इस कृति की एक यह भी मौलिकता है कि पहली बार इतने प्रामाणिक रूप में जैन और ब्राह्मण साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

इस कृति में बुद्धकालीन सामाजिक जीवन : संगठन और स्वरूप, जातीय व्यवस्था : सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्ष, धार्मिक सम्प्रदाय एवं सांस्कृतिक मान्यतायें, जीविका की वृत्तियाँ : सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष, उत्पादन की ईकाइयाँ, (कृषि एवं उद्योग), व्यापार : संचालन एवं संगठन जैसे गम्भीर बिन्दुओं का विवेचन बड़ी ही साफ-सुधारी

शैली में, पूरी प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। निश्चय ही इतिहास के

अनुसंधित्सु छाँतें, गवेषकों और बुद्धकालीन इतिहास साहित्य, अर्थव्यवस्था सामाजिक व्यवस्था में रुचि रखने वाले अध्यापकों और सुधी पाठकों की विरपिपासा को यह कृति शान्त कर सकेगी, उन्हें इसके अध्ययन से तृप्ति मिलेगी।

Demy 1/8

ISBN-81-7081-289-5

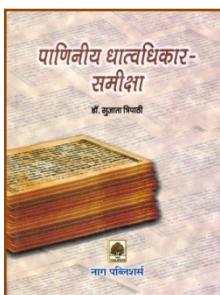
pp 278

2001

Rs.175.00

पाणिनीय धात्वधिकार समीक्षा

डॉ. सुजाता त्रिपाठी



व्याकरण शास्त्र के विविध विवेच्यों में धातु अपने अभिधेयार्थ के अनुरूप विशिष्ट स्थान रखता है। धातु शब्द का अर्थ 'दधाति अर्थमिति धातु' है। जितने प्रत्यय हैं उन समस्त पत्ययों की प्रकृति का स्वरूप विचार के बिना तैयार नहीं हो सकता। इसीलिए भगवान् पाणिनि ने पहले धातु का विचार कर बाद में चतुर्थ, पंचम इत्यादि अध्याय का नियोजन किया है। धातु का अधिकार अष्टाध्यायी के तृतीय अध्याय के प्रथम पाद के तेरानवें संख्या सूत्र से है जो कि तृतीय अध्याय पर्यन्त है।

सम्पूर्ण वाक्य में जितने पद होते हैं वे मूलरूप से धातु रूप में ही अन्तित हो कर विशिष्ट अर्थ का प्रतिपादन करते हैं। यद्यपि पद अपने अर्थ को यप्रकाशित करते हुए भी प्रतीत होते हैं तथापि वे पद भी विमशोत्तर धातुमूलक ही सिद्ध होते हैं फलतः यह निर्भ्रान्त रूप से कहा जा सकता है कि धातु अपने अभिधेयार्थ को चरितार्थ करते हुए सम्पूर्ण वाक्यार्थ को समुद्घाटित करते हैं। जितने पद हैं उन सब के मूल में धातु है। अर्थबोधकता शक्ति तो अन्तः एतदाश्रित ही प्रतीत होती है। धातु परिज्ञान के बिना तन्मूलक पदज्ञान अथवा पदसमूह रूप वाक्य का ज्ञान असम्भव होता है। भगवान् पाणिनि यद्यपि धातु के स्वरूप को 'भूवादयो धातवः', 'सनाद्यन्तः धतवः' इन सूत्रों के विमर्श से करते हैं तथापि भगवान् पाणिनि ने धात्वधिकार की कल्पना का तत तत् धातुओं से विधीयमान प्रत्ययों का इस क्रम से उपस्थापन किया है जिससे उपसर्गापवाद सिद्धान्त भी प्रतिपादित हो एवं काल एवं अनुबन्धों की दृष्टि से उसका क्रमिक उपस्थापन हो सके। इसी भाष्यगत क्रम की व्याख्या में प्रवृत्त कैयत एवं कैयट के प्रदीप की व्याख्या में बद्धपरिकल अन्यान्य टीकाकारों का पारम्परिक एवं युक्तियुक्त विवेचन उपलब्ध होता है। समस्त विवेचनों का समीक्षात्मक स्वरूप यहाँ अविकल प्रस्तुत करने का संकल्प है। इस दिशा में अन्यान्य आचार्यों के मत भी समीक्षा अनुरूप उपन्यस्त कर तर्क की कसौटी पर परीक्षित हुए हैं। अतः विविध मतों की समालोचना से यह आयास विवेचकों के चिन्तन का अवसर भी प्रदान करता है। विशेषतः नागेश के भी पूर्ववर्ती अनन्भट्ट ने प्रदीप को जिस रीति से उद्योतित करने की चेष्टा की है उन समस्त विशेषताओं का निरूपण पुरस्मर समाकलन इस ग्रन्थ का अपना वैशिष्ट्य है।

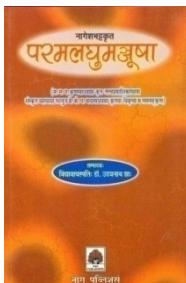
Crown 1/4

ISBN 81-7081-605-10

2005

pp 602

Rs. 700.00



नागेशभट्टकृता परमलघुमञ्जूषा

(म. म. पं. कृष्णमाधवज्ञा—कृतया—तत्त्वप्रकाशिकाख्यया
संकृतव्याख्यया—तदनुज वै. के. प. चन्द्रमाधवज्ञा—कृतया—वित्या
च समलङ्घकृता)

सम्पादक — डॉ. उदयनाथज्ञा

स्वकीय वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषाग्रन्थ सारभूततया
तत्रत्यसकलव्याकरणसिद्धान्तानल्पज्ञान वैयाकरणान् प्रति
सरलतया संक्षेपेण च बोधयितुं स्वयं महावैयाकरणनागेशभट्टैव परमलघुमञ्जूषाप्रणीता।
शाब्दबोधप्रक्रियाप्रतिपादनपरकेष्वार्थिक व्याकरणग्रन्थेषु इयमत्यन्तं प्रमुखस्थानं भजते।
ग्रन्थऽस्मिन् यथासन्दर्भ दर्शनान्तरीयमतनिराकरणपूर्वकं पाणिनीये मुनित्रयाविरुद्धं
नागेशस्य मार्मिकं यथार्थं सिद्धान्तत्वंप्रतिबिम्बतं वर्तते। मूर्धाभिषिक्तायाः
परमलघुमञ्जूषा उपरिनैकैः पण्डितप्रवरैर्नैकाष्टीकाः विरचिताः। तासु टीकासु
भावप्रकाशबालबोधिनीस्वस्यां तत्त्वप्रकाशिकाख्यां व्याख्यां
दर्भपवित्रपाणयशुचाववकाशेमहामहिमोपाध्यायासर्वतन्त्रं स्वतन्त्रातः दार्शनिकसार्वभौमाः
पण्डितकृष्णमाधवज्ञाशर्माणः महतापाणिडत्येनानुगमादिपुरस्सरज्च प्रणीतवन्तः।
व्याख्यानस्यास्योपरि तेषामेव पण्डितप्रवराणामनुजै वैयाकरणकेसरिभिः
पण्डितचन्द्रमाधवज्ञाशर्मभिः 'विवृति' नाम्नी उपटीका च व्यधयि।
व्याख्यानेऽस्मिन् सर्वत्र न्यायमीमांसादिदर्शनान्तरीयमतखण्डनपूर्वकं नागेशस्य मार्मिकाशयः
प्रकाशितः पोषितश्च। वस्तुतस्तु व्याकरणशास्त्रेण सह न्यायमीमांसादिशास्त्रेष्वपि येषां
कूलङ्कषं पाण्डित्यं स्यात् त एव तत्त्वप्राकशित्तशयं विवृतिकाराभिमतज्च ज्ञातुं
प्रभवन्तीति।

Demy 1/8

ISBN 81-7081-595-9

2005

pp 260

Rs. 200.00

पराशर स्मृति एवम् देवल स्मृति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. धनपति देवी कश्यप



प्राचीन भारतीय धर्मशास्त्र में स्मृति—ग्रन्थों का अद्वितीय स्थान है। प्रस्तुत पुस्तक सात अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में स्मृति साहित्य का उद्घव एवं विकाश, आचार, व्यवहार एवं प्रायशित इत्यादि के विषय में विशद निरूपण एवं तात्कालिक परिभाषाओं पर प्रकाश डाला गया है। द्वितीय अध्याय में विधिवेत्ता पराशर एवम् देवल का सामान्य परिचय देकर उनके कृतित्व का भी वर्णन किया है। तृतीय अध्याय में वर्ण व्यवस्था का सामान्य परिचय देकर पृथक—पृथक वर्णों के धर्म बताये हैं। चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत स्मृति द्वय में वर्णित कर्म विधान तथा शुद्धि—अशुद्धि वर्णन को स्पष्ट किया है। पंचम अध्याय के अंतर्गत राजधर्म, राजा के गुण, दोष तथा दण्ड के स्वरूप एवं प्रयोग का प्रतिपादन किया है। षष्ठ अध्याय के द्वारा आचार्य माधव तथा उनकी व्यवहार मीमांसा को विवेचित किया है। अन्तिम अध्याय में संगठित समाज के सिद्धान्तों का सूक्ष्म—विशलेषण—प्रस्तुत किया है। इस प्रकार दोनों स्मृति—ग्रन्थों के वर्णय—विषयों का क्रमिक ढंग से वर्णन है। साथ

व्यवहार—विधि अथवा कानून के अंतर्गत आने वाले विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों यथा :—
पुत्र प्रकार, स्त्रीपुरुष के कर्तव्य तथा अधिकार, दायभाग (वसीयत) दान, दान के प्रकार सभी की विस्तृत व्याख्या की गई है। पर्वोंका विषयों के संबंध में दोनों समृद्धिकारों का पृथक्—पृथक् मन्त्रव्य स्पष्ट किया गया छें

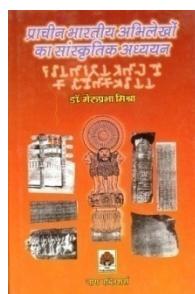
Demy 1/8

ISBN 81-7081-364-6

1997

pp 322

Rs. 200.00



प्राचीन भारतीय अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन

(लगभग ₹५० पूर्वी सदी से तीसरी सदी ₹५० तक)

डॉ. मेरुप्रभा मिश्र

प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन को प्रामाणिक एवं सुव्यवस्थित स्वरूप प्रदान करने में अभिलेखों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है। अभिलेखों के आइने में लेखिका ने इस ग्रन्थ के माध्यम से अभिलेखों के स्वरूप—चिन्तन एवं महत्व का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की परिधि में रेखांकित किया है। ग्रन्थ में राजनैतिक परिदृश्य के विविध पहलुओं का निरूपण प्रस्तुत किया गया है। तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत वर्ण, जातियाँ, नारियों की स्थिति, सेवकों का स्तर, उत्सव, विहार यात्राएँ आदि की झलकियाँ दिखाने का प्रयास किया है। धार्मिक परिदृश्य में वैदिक एवं वैदिकेतर धर्म सम्प्रदायों तथा लोकधर्म के स्वरूप की विवेचना की गयी है। कला के अन्तर्गत धार्मिक एवं धार्मिकेतर स्थापत्य तथा मूर्ति एवं अन्य विविध कलाओं पर भी विमर्श प्रस्तुत किया गया है। साथ ही यथा प्रसंग अर्थव्यवस्था तथा उसके विभिन्न घटकों श्रेणी संगठनए कर एवं ऋण व्यवस्था, भू—दान प्रथा, भू—स्वामित्व एवं सिंचाई व्यवस्था का भी सतर्क अनुशीलन किया गया है।

Demy 1/8

ISBN 81-7081-631-9

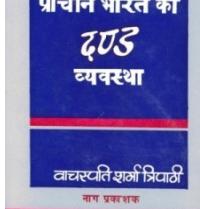
2006

pp 216

Rs. 200.00

प्राचीन भारत की दण्ड—व्यवस्था

डॉ. वाचस्पति शर्मा त्रिपाठी



प्रस्तुत ग्रन्थ में प्राचीन भारत की दण्डव्यवस्था पर सूक्ष्म दृष्टिपात करते हुए तत्सम्बद्ध अनेक अज्ञात एवं अल्पज्ञात तथ्यों को उजागर किया गया है। एक ओर जहाँ प्राचीन दण्ड व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं का सागोपांग विवेचन कर उसका प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत किया गया है वहीं दूसरी ओर वर्तमान दण्ड व्यवस्था के साथ उसके तुलनात्मक अध्ययन पूर्ण तटस्थभाव से करते हुए आधुनिक युक्ति में उसकी उपादेयता का निरूपण किया गया है।

प्राचीन भारत में दण्ड सम्बन्धी मान्यता क्या थी? न्यायालयों का स्वरूप क्या था? न्यायाधीश, अमात्य, प्रदेष्टा, प्राडविपाक आदि न्यायिक अधिकारियों की योग्यता एवं कर्तव्य क्या थे? स्थानीय न्यायालयों की क्या व्यवस्था थी? न्याय की निष्कलड़कता के लिए कौन सी सावधानियाँ बरती जाती थी? कारागृहों की व्यवस्था प्रबन्धन एवं नियमन कैसे होता था? अपराधियों के साथ राजकर्मचारियों का कैसा व्यवहार होता

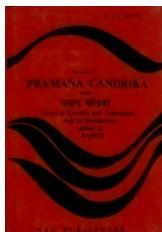
था? अभियोगों एवं दण्ड के कितने प्रकार थे? दण्डव्यवस्था को वर्णव्यवस्था कहाँ तक प्रभावित करती थी? किन विशेषपरिस्थितियों में दण्डमुक्ति एवं क्षमा की व्यवस्था थी? तथा दण्डव्यवस्था पर धर्म एवं प्रायश्चित्त व्यवस्था का क्या प्रभाव था? आदि विषयों का विस्तृत, विशद एवं प्रामाणिक विवेचन रोचक शैली में प्रस्तुत ग्रन्थ में निरूपित किया गया है।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-164-3

1989

pp 404

Rs. 300.00



Madhva's

PRAMANACHANDRIKA

**(TEXT IN SANSKRIT AND TRANSLATION WITH AN
INTRODUCTORY OUTLINE OF MADHVA PHILOSOPHY IN
ENGLISH)**

Sunil Kumar Maitra

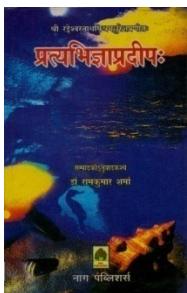
Arrange by Nag Sharan Singh

Madhva Philosophy is the conceptual formulation of the religious attitude of devotion of Bhakti and rests on the idea of an essential distinction between the devotee and the object of worship. The main points of Madhva Philosophy is that "The Lord is the highest reality, The world is real. Difference is real. Individual souls are the servants of the Lord. They are distinguished by superior and inferior excellences. Liberation is the experience of untainted innate bliss. Bhakti or devotion together with the Lord's grace is the means to liberation perception. Inference and Verbal Testimony are the sources of knowledge. In regard to the Lord Vedas are the sole evidence. The Vedas are eternal and impersonal".

The accredited authority on Madhva Logic is Jayatirtha and his celebrated work the Pramanapaddhati is the authoritative logical text of the Madhvases. The Pramanachandrika is a shorter work and follows the Pramanapaddhati closely reproducing the language of Paddhati in many places and acknowledging he Paddhati as its authority at the end of every section. The Chandrika however, has the merit of being a clear presentation both of Madhva and other rival views. The present book gives a clear idea of Madhva logical theory and its points of agreement and disagreement with the theories of other schools. The introduction in English gives an outline of Madhva Philosophy.

Crown 1/8 ISBN 81-7081-102-3

1989 pp 220 Rs. 150.00



श्रीरङ्गेश्वरनाथमिश्रमधुरेशप्रणीतः

प्रत्यभिज्ञाप्रदीपः

सम्पादकोऽनुवादकश्च

डॉ. रामकृष्ण शर्मा

श्रीरङ्गेश्वरनाथ मिश्र 'मधुरस्श' के द्वारा रचित यह 'प्रत्यभिज्ञा प्रदीप' मुख्य रूप से प्रत्यभिज्ञा दर्शन का प्रकरण ग्रन्थ है। यह मुख्य रूप से तीन भागों में विभक्त है - उपोद्घात,

प्रत्यभिज्ञाप्रदीप तथ परिशिष्ट। उपोद्घात मे 57 कारिकाओं के द्वारा प्रत्यभिज्ञा के सिद्धान्त का प्रतिपादन तथा ग्रन्थ लेखन के प्रेरणास्रोत का प्रदर्शन है। प्रत्यभिज्ञाप्रदीप में प्रत्यभिज्ञाशास्त्र के 36 शि, शवित आदि तत्त्वों का सविस्तार गद्यात्मक निरूपण है तथा प्रत्यभिज्ञाशास्त्र के इतिहास पर भी संक्षिप्त प्रकाश डाला गया है। परिशिष्ट में सरल तथा संक्षिप्त कारिकाओं के द्वारा समग्र दर्शनों के सिद्धान्त तथा इतिहास का प्रदर्शन है। प्रत्यभिज्ञा शास्त्रीय विषयों का निरूपण प्रधान रूप से होने के चलते प्रकृत ग्रन्थ का नाम 'प्रत्यभिज्ञाप्रदीप' रखा गया है। यह ग्रन्थ प्रत्यभिज्ञाप्रदीप के जिज्ञासुओं के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इस संस्कृतमय 'प्रत्यभिज्ञा—प्रदीप' के अन्त में उसका हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है, जिससे हिन्दी—भाषियों के लिए भी यह ग्रन्थ उपादेय हो सके।

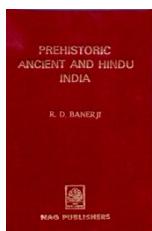
Demy 1/8

ISBN 81-7081-434-0

1998

pp 140

Rs. 150.00



PREHISTORIC ANCIENT AND HINDU INDIA

R. D. BANERJI, M.A.

Late Manindra Chandra Nundy Professor of Ancient India History and Culture, Benaras Hindu University.

Modern research has greatly extended our knowledge of early India. As the "miracle of Greece" no longer obtains in consequence of the revelations of the archaeologists in Crete and elsewhere in the Near East, so there is in India no longer an "Aryan miracle".

It has been established that a wonderful pre-Aryan civilization existed in the Indus valley many centuries before the period of the Aryan intrusions, and that it was of higher and more complex character than can be gathered from the patriotic writers who celebrated the achievements of the famous Vedic Age. The discovery at Harappa on the ravi in Montgomery district of the Panjab of "seals" lettered in a strange script, which has been un-earthed from time to time, presented to modern scholars a problem that aroused speculations on the one hand and scepticism regarding these on the other, but ultimately led to the thrusting open of the door to forgotten wonders of antiquity.

In this volume it is shown that before the period of the Musalman intrusions there were prosperous, progressive and enterprising Aryo-Dravidian communities in southern India, who not only extended their sway towards the north, but to farther India, the Dutch East Indies and Malaya. Greeks, Romans and Arabs had long trades with and influenced Dravidian seaport communities, and Aryo-Dravidian seafarers and colonizers carried from time to time the elements of a complex Indian civilization with Western features to distant places, including Cambodia, whence, it would appear, there emerged at intervals fresh carriers of some of the elements of the specialized and locally developed Aryo-Dravidian colonial culture to even more distant areas.

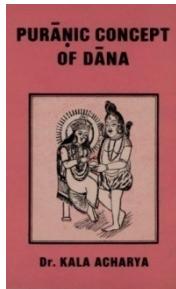
Crown 1/8

ISBN-81-7081-135-X

pp 360

1979

Rs.300.00



PURANIC CONCEPT OF DANA

DR. KALA ACHARYA

Present book provides an exhaustive exposition of the Hindu practice of gift-giving. Here in the author includes virtually every reference to dana found in the Vedas, Smritis, Dharmasutras and Puranas. These texts reveal a broad spectrum of religiously sanctioned gifting. Special guidelines exist governing simple hospitality as well as such grandiose offerings as a king's weight in gold or a mountain of jewels. These practices were widespread and important for the material support of Hindu society on every level. Consequently, elaborate directions and rituals developed to insure the propriety of gifts, givers and recipients. These teachings constitute the substance of Dr. Acharya's research and through these passages the reader may glimpse the larger patterns of Hindu culture.

While the modern student may find the style of writing overly detailed and repetitive, one should remember their context and sense the 'Voice' of rishis.

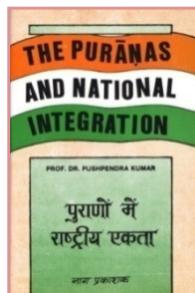
Demy 1/8

ISBN 81-7081-278-X

1993

pp 296

Rs. 300.00



THE PURANAS AND NATIONAL INTEGRATION

पुराणों में राष्ट्रीय एकता

EDITED BY PROF. PUSHPENDRA KUMAR

This is the first and foremost book on the highly fascinating theme, viz. - The Puranas and National Integration. It is a compendium of scholarly contributions at the All-India Seminar held at South Delhi Campus, New Delhi. It covers a wide range of topics on the Puranic India and its deep insight of National Integrity. The Puranas are considered the store-house of Indian lores, historical events, philosophical developments, social and religious reforms, and cultural trends. These voluminous texts give us minute details about our rivers, mountains, cities, village and forest life, royal dynasties and lineage of the sages, accounts of empires, famines, corps, kingdom of animals and national resources of wealth and system of distribution, forms of penance, forms of festivities and other aspects of social life. The present study will encourage and stimulate scholars and researchers to explore further this treasure house of knowledge; and for our modern world day-to-day socio-political thinking in the wider and vital National Interests.

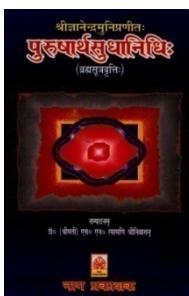
Demy 1/8

ISBN 81-7081-231-3

1990

pp 480

Rs. 500.00



श्रीज्ञानेन्द्रमुनिप्रणीत पुरुषार्थसुधानिधि:

सम्पादनम्—डॉ. श्रीमती एस. एन. रमामणि श्रीनिवासन्
श्रीज्ञानेन्द्रमुनिप्रणीतपुरुषार्थसुधानिधि: ब्रह्मसूत्रवृत्तिरस्ति। वृत्तिरियं
सरला सपूर्णा स्पष्टा चारिति। अस्याः अपरं नाम वैवासिक
ब्रह्ममीमांसासारसंग्रहः इति। ग्रन्थोऽयं अद्वैतसिद्धान्तप्रतिपादनपरः
विद्यते। ब्रह्मसूत्राणां तात्पर्यावबोधनाय यद्यपि शांकरभाष्यर्तीष्ठीका
भाष्यत्यादि निबन्धाः एवालम् तथापि सारगर्भितं तदभिप्रायं
सरलतया संक्षेपेण अवगन्तुं नहि सर्वे जनाः पारयन्ति। अतः
वृत्तिग्रन्थानामावश्यकं इति मन्ये। यद्यपि अनेके वृत्तिग्रन्थाः सन्ति, तथापि
शांकरभाष्यमनुसृत्य अतिसरलतया ब्रह्मसूत्राणां सर्वेषां सुखबोधाय श्रीज्ञानेन्द्रेण
कृतोऽयंवृत्तिग्रन्थः। अनया वृत्त्या शांकरभाष्यगार्भीर्यविषयावबोधने सौकर्यं भवेदिति न
कोऽपि संशयः।

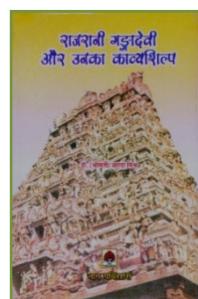
अस्मिन् पुरुषार्थसुधानिधौ चत्वारोऽध्यायाः, प्रत्यध्यायं चत्वारः पादाः सन्ति। प्रथमाध्यायः उपनिषद्वाक्यानां ब्रह्मणि समन्वयः, द्वितीयश्च तस्मिन् विरोधपरिहारपरः, तृतीयस्तु उपासनापरः, चतुर्थश्च फलपरः।

वैयासिक्यसूत्राणां सारसंग्रहरूपेण पुरुषार्थसुधानिधिनाम्ना चततः मातृकाः पूर्णरूपेणोपलब्धा। मद्रपुर्या अउयार थियसाफिकल पुस्तकालये मातृकात्रयं लब्धम्, तज्जावुर सरस्वतिमहालस्य पुस्तकालयं एका मातृका प्राप्ता। मातृकाः तालपत्रेषु कागदपत्रेषु च तेलुगु भाषायां देवानागर्या, गन्थाक्षरेषु च लब्धाः। पुरुषार्थसुधानिधि ब्रह्मशिवद्याजिज्ञासूनां शांकर भाष्यार्थं सम्यग्धारणार्थं च महदुपयोगिग्रन्थः भविष्यतीति आशास्महे।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-393-X 1998 pp 186 Rs. 150.00

राजरानी गड्गादेवी और उनका काव्यशिल्प

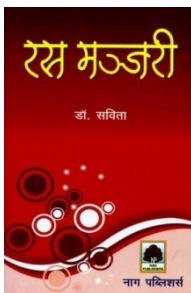
डॉ. श्रीमती शारदा मिश्र



प्रस्तुत ग्रन्थ कवियत्री राजरानी गड्गादेवी द्वारा रचित समकालीन इतिहासमूलक मधुराविजय महाकाव्य का ऐतिहासिक पृष्ठधार, शास्त्रीय विश्लेषण तथा मूल्यांकन उपस्थित करता है। इसके अन्तर्गत ईसा की बारहवीं—तेरहवीं सदी की कालावधि में राजनैतिक घटनाचक्रों के आवर्तन—विवर्तन से उत्पन्न दक्षिणापथ की दुर्देशा, हरिहर एवं बुक्क नरेशों की छत्रच्छाया में विजयनगर साम्राज्य का आविर्भाव, तुलुषक्षासित मधुरापुरी पर बुक्कनरेश के वीराग्रणी पुत्र कुमार कम्पन का अधिकार, इनकी पटरानी महिला—कविशीरोमणि गड्गादेवी का सविस्तार परिचय तथा अपने पति कुमार कम्पन की उक्त विजयोपलब्धि पर इनके द्वारा विरचित मधुराविजय महाकाव्य का सारांश एवं स्थापत्य—विधान, तथा इसमें सुनियोजित गुणसम्बन्ध, रीतिविधान, अलंकार—विन्यास, रसोल्लास, पुराख्यान एवं भावसम्बाद जैसे काव्यतत्त्वों का सोदाहरण परिचय प्राप्त होता है।

विजयनगर साम्राज्य के आदिकालीन इतिहास के साथ ही राजरानी गड्गादेवी के प्रसाद एवं माधुर्य से परिस्पन्दित काव्यशिल्प से परिचित होने के लिए यह ग्रन्थ अतीव उपयोगी तथा संग्रहीय है।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-646-7 2009 pp 286 Rs. 300.00



रस मञ्जरी

डॉ. सविता

सूचना—प्रौद्योगिकी के अत्याधुनिक युग में आज का युवा भौतिक—समृद्धि हेतु विज्ञान की ओर उन्मुख हो रहा है। साहित्य का विद्यार्थी आज व्यवसास एवं रोजगार प्रदान करने वाले विषयों — भाषा, अनुवाद, सम्पादन कला, पत्रकारिता, दर्शन आदि का अध्ययन बड़ी रुचि से करता है। परिणाम स्वरूप वह जीवन के नितान्त आवश्यक, साहित्य के शास्त्रीय पक्ष से दूर छूटता जा रहा है।

'रस—मञ्जरी' पुस्तक की रचना का उद्देश्य युवा पीढ़ी को, साहित्य, जीवन से जुड़े काव्य—रस से अवगत कराना है। जिसका पाँच—अध्यायों में विवेचन किया गया है। अनुभूति की अभिव्यक्ति को अधिकारपूर्वक प्रस्तुत करने तथा अभिव्यक्ति को आकर्षक एवं प्रभावशाली बनाने के लिये काव्य—शास्त्रीय विषयों की सम्यक् जानकारी अति आवश्यक है। प्रस्तुत ग्रन्थ में 'रसनिष्ठति' में संस्कृत आचार्यों के लब्धप्रतिष्ठित आचार्यों — भट्टलोलट, भट्टनायक, शंकुक और अभिनवगुप्त के मतों का विवेचन करते हुए काव्य में 'साधारणीकरण' के सिद्धान्त की व्याख्या भी की गई हैं। इससे शोधार्थियों को रस सम्बन्धी विविध जानकारी के साथ रसों का परिचय एवं उनका तुलनात्मक ज्ञान प्राप्त होगा। साथ ही जीवन में भावों, मनोभावों का महत्व समझें। युवा पीढ़ी में काव्य—रस के ज्ञान के साथ रचनात्मक शक्ति का भी विकास होगा। जिससे वे समय की तीव्र दौड़ में साहित्य, कला एवं संस्कृति को भी गतिशील बनाए रखें।

विज्ञान मानव का मस्तिक है, साहित्यशास्त्र उसका हृदय। अतः जीवन में मस्तिक और हृदय दोनों का समान विकास हो, यही इस पुस्तक का प्रयोजन है।

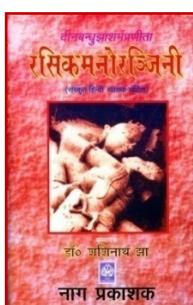
Demy 1/8

ISBN 81-7081-664-5

2010

pp 128

Rs. 250.00



रसिकमनोरञ्जनी

(संस्कृत—हिन्दीव्याख्या—सहित)

(दीनबन्धुकाव्य—संग्रहाख्य—परिशिष्टभूषिता)

प्रणेता एवं संस्कृतव्याख्याकारः — महावैयाकरणः पं.

दीनबन्धु ज्ञा

सम्पादक एवं हिन्दीव्याख्याकार — डॉ. शशिनाथ ज्ञा

साहित्यशास्त्र में श्रृङ्गार रस को सर्वप्रमुख माना गया है। इसके आलम्बन नायिका एवं नायक के प्रथम मिलन से लेकर प्रौढावस्था पर्यन्त के क्रमशः वृत्तान्तों का काव्यात्मक वर्णन इस रसिकमनोरञ्जनी में निबद्ध है। मुग्धा, मध्या एवं प्रौढा नायिकाओं के स्वभाव, चेष्टाएँ संयोग—वियोग, कर्त्तव्य एवं आदर्श स्वरूप इस में वर्णित है। फलतः ग्रन्थ इन्हीं तीनों प्रकरणों में विभक्त है। यह काव्य दाम्पत्य—व्यवहार का शिक्षक है, जिसमें पटु व्यक्ति का दाम्पत्य—जीवन सुखी रहता

है। इसमें अपटु व्यक्ति असफल ही रहता है। विभिन्न विषय परिस्थितियों में सूझा—बूझासे गुजरना ही सफलता है। दम्पति के कर्तव्य की पद्धति ही इस में प्राप्त हो सकती है। यहाँ स्वयं ही नायिका है और अनुकूल ही नायक है। नाम निर्देश न होने से कोई भी व्यक्ति इसे अपने पर लगा सकता है। परकीया का चिन्तन भी दाम्पत्य—जीवन पर आधार देना है। अतः यहाँ उसकी चर्चा ही नहीं है। केवल सामाजिक आदर्श पर आधारित इस काव्य को कामशास्त्र नहीं कहा जा सकता।

इस में विविध अलंकार पद—पद पर चमत्कृत हैं। ध्वनि से परिपूर्ण, गुणों से मणित एवं विविध छन्दों से भूषित शृंगाररसमयी यह रसिकमनोरञ्जीनी अवश्य पठनीय है, जिसमें संस्कृत—हिन्दी व्याख्या एवं मनोरम काव्य संग्रहात्मक परिशिष्ट भी शोभित है।

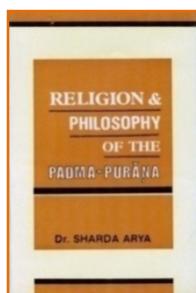
Demy 1/8

ISBN 81-7081-308-5

1995

pp 220

Rs. 200.00



RELIGION AND PHILOSOPHY OF THE PADMA PURANA

DR. (MRS.) SHARDA ARYA

In this book author has discussed the name, title, place and two-fold-character of the Padma-purana. The various Brahmanical religious sects, the specific rituals connected with each one of them and the Religion of the masses such as Tirtha, Vrata, Dana and Sotra have been discussed in separate chapters. Some space has also been given to the

Navagrahapauja. The philosophical principles underlying these sects-like the concepts of God, Atman, the world and its theories of creation along with the concept of Moksa and the spiritual paths (mainly Bhakti) leading; to it and the doctrines of Karman and Punarjanman have also been dealt with at length. Therefore, the whole matter has been divided into two Books: 1.Religion, 2. Philosophy. Te Book 1 is further divided into two parts (a) Religious sects and (b) Religion in common practice. At the end she has given comprehensive lists of Vratsa, Unsaved and Stores in the Appendices. Such a vast and deep study would be extremely useful for the research oreintalist.

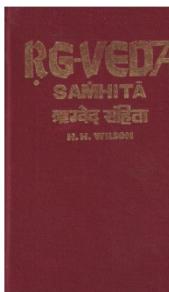
Demy 1/8

ISBN 81-7081-190-2

1988

pp 638

Rs. 400.00



RG-VEDA SAMHITĀ
**(Text in Devanagari, English
 Translation and Notes, Mantra-Risi-
 Devata-Names Index)**
H. H. WILSON
Enlarged & Arranged by
NAG SHARAN SINGH

The lover of Vedic studies would undoubtedly welcome the publication of the Rigveda alongwith its translation by H. H. Wilson. This is not a mere reprint of H. H. Wilson's translation and notes. It is entirely a new book which gives the text, translation and the notes of a particular mantra at one place (except vol. 2) thereby making its study many times easier and more fruitful because the reader world have the pleasure of conveniently comparing the original with the translation. The work is, trerefor, a valuable as set for the scholar as well as the general reader.

Crown 1/8 1990 pp 3228 (7 vols set) Rs. 3000.00



ऋग्वेद परिचय

नाग शरण सिंह

समस्त शास्त्र वेद को नित्य मानते हैं। वैदिक साहित्य से लेकर तंत्र-शास्त्र तक सभी 'वेद-नित्यता' का प्रचण्ड उद्घोष करते हैं : 'वेद ईश्वर की तरह सत्य है, शास्त्र है, अपौरुषेय है।' सायणाचार्य कहते हैं कि प्रत्यक्ष और अनुमान के द्वारा जो उपाय अगम्य है, उसका उद्बोधन काराने में वेद का वेदत्व है। मनु जी कहते हैं कि भूत, भविष्य और वर्तमान – सब कुछ वेद से ही प्रख्यात हुआ है – वेद से ही ज्ञात हुआ है। इस तरह अनेकानेक तर्कों, युक्तियों, शास्त्रीय प्रमाणों से एवं स्वानुभूति द्वारा वेद की नित्यता का प्रबल समर्थन होता है।

ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1017 सूक्त एवं 10467 मंत्र हैं। प्रस्तुत पुस्तक में हिन्दी पाठकों की सुविधा के लिए ऋग्वेद के बहुत से पहलुओं तथा ऋषियों और देवताओं पर विचार किया गया है। अंत में विषय-सूची में सुविधा के लिए प्रत्येक मण्डल के सूक्तों की तथा मंत्रों की संख्या दी गई है, जिससे सर्वसाधारण को ऋग्वेद के मंत्रों की विशेषता तता ज्ञान हो सके, और जिनको वे मूल से खोजना चाहेंगे विषय-सूची की मदद से आसानी से प्राप्त कर सकेंगे।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-217-8 1998 pp 160 Rs.100.00



ऋग्वेदीयम्

श्रीविमलानन्दजी रामेश्वर प्रसाद

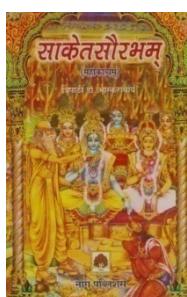
इस काव्य की भूमिका के स्प में 'चिदाभास' एक स्वतंत्र ग्रंथ है जिसमें ऋग्वेद के प्रति कवि की भक्ति, श्रद्धा और व्यापक अनुशीलन के दर्शन होते हैं। लेखक ने ऋग्वेद को समस्त ज्ञान-विज्ञान का अक्षय कोश कहा है और चिदाभास के पृष्ठों में इसके प्रमाण प्रबल अभिव्यक्ति के द्वारा दिये हैं।

जिस प्रकार वेद का वेदत्व शब्द में, उसमें समीचीन उच्चारण में निहित है, उसी प्रकार इस काव्य का काव्यत्त्व भी उच्चारण के बाद ही खुलता है। शब्द-साक्षात्कार होने के बाद ही वाणी अपने शरीर को (अर्थ को) प्रदर्शित करेगी – उत्तो त्वस्मै तन्वं विसस्मै। पाठक इसकी गहराई में धीरे-धीरे उत्तरते जायें, ऋग्वेदीय ज्ञान का रस उन्हें प्राप्त होता जायका।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-164-3 1989 pp 340 Rs. 150.00

साकेतसौरभम्

महाकाव्यम्
त्रिपाठी डॉ. भास्कराचार्य



राम-काव्य अनेक हैं, पर काव्य-कला और सरलता का साकेत-सौरभम् जैसा मणिकाञ्चन संयोग अन्यत्र दुर्लभ है। रसानुकूल छनद और गीतों की मनोहारी छटा इस संस्कृत महाकाव्य को एक अलग पहचान देती है। सभी आठ सर्गों और गीतों के समान लय वाले काव्य-रूपान्तर रचनाकार द्वारा इस मनोयोग से किए गए हैं कि एक पुस्तक में संस्कृत महाकाव्य और हिन्दी कथा-काव्य दोनों का आस्वाद मिलता है। भारत के जाने-माने साहित्य हस्ताक्षरों ने इस प्रबन्ध की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-571-1 2003 pp 254 Rs.150.00

सन्ध्या

डॉ. रामकरण शर्मा



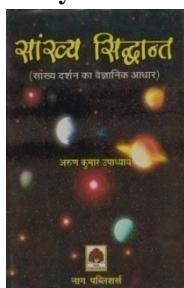
'सन्ध्या' नाम संस्कृतकाव्यासंग्रहोऽस्ति वस्तुतो विविध दिव्यादिव्य भावचित्राणां सन्ध्याभूतः। अस्त्यत्र प्रायेण चतुःशती भावचित्राणां संकलिता। सम्भूय नवशती पद्यबन्धानां विविधवर्णाकृतीनां विविधभावाभरणभूषितानामत्र विराजते।

प्रायेण सर्वाणीमानि भावगीतानि वाराणस्या लिखितानि । “जगन्नाथः स्वामी” त्यारभ्य “हरहर शम्भो महादेव” इत्युपसंहारं यावदनेका भावसन्ध्या अत्रावलोकयितुं शक्यन्ते । अभिनवपरिधानां भवितः पुरातनपरिधानान्यमूर्तानि, अमूर्तपरिधानानि च मूर्तानि सर्वत्र जनयन्ति सन्ध्यां कामपि सुदर्शा साम्यवैषम्य सामज्जस्य दर्शिकां विषमेक्षणं प्रियाम् ।

सर्वाधिकमुपयुक्तं छनद आर्या । छन्दांस्यन्यायति परम्परीणानि भूयांसि । द्वित्रा एवं काव्यबन्धा अन्यादृशाः ।

भाषा “विद्वद्विः सेविता सद्विः” सार्वभौमी । शैली प्रसन्ना ।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-165-1 1987 pp 190 Rs.150.00



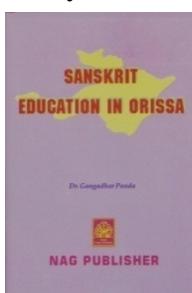
सांख्य सिद्धान्त

सांख्य—दर्शन का वैज्ञानिक आधार

अरुण कुमार उपाध्याय

सांख्य दर्शन वेद समझने का आधार है । गीता में सांख्य तथा योग को ज्ञान की दो मुख्य धारायें कहा गया है । वेद काल में यह ज्ञात था, बाद में वेद का आधार भूलने पर इसकी पुनः व्याख्या की आवश्यकता हुई । सांख्य दर्शन केवल ऋषियों की कल्पना मात्र नहीं है, यह विश्व का वास्तविक वर्णन है । किसी काल में सम्पूर्ण यविश्व में विश्व की रचना तथा उसका आकार आदि ज्ञात थे । इन सूक्ष्म मार्पों के आधार पर ही दर्शन आधारित था । 7-7 प्रकार के युग और यसेजन तथ 9 प्रकार की सृष्टि के 9 कालमानों के वर्णन के बाद तन्त्र समाप्त के आधार पर सांख्य का आधार स्पष्ट किया गया है । इसके बाद सांख्यसूत्रों तथा सांख्य—कारिका भी शब्दार्थ सहित देकर पुस्तक को पूर्ण रूप दिया गया है ।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-638-6 2006 pp 328 Rs. 150.00



SANSKRIT EDUCATION IN ORISSA

Dr. Gangadhar Panda

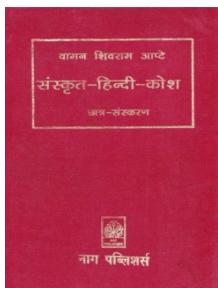
Rightly has it been said that if there is any comprehensive survey and exhaustive work on Sanskrit Studies in India, it; is the report of Sanskrit Commission. But every state of this country has its special contribution to the development of Sanskrit language. For small state like Orissa, it has the credit of giving birth of many eminent scholars who had expanded the horizon of Sanskrit Literature.

“Sanskrit Education Orissa” a monography by Dr. Gangadhar Panda has

filled the gap which was long felt. This book deals with history, locational analysis of Sanskrit institutions, supervision, administration examination system of Sanskrit Education and creative works done in various fields of Sanskrit Literature in Orissa upto 1991.

Aiming at an analysis of the survey of Sanskrit Education in Orissa, Dr. Panda in this book has tried to explain all possible aspects of the subject with clarity of vision.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-304-2 1995 pp 166 Rs. 150.00



संस्कृत-हिन्दी कोश

शिवराम आप्टे

इस संस्कृत-हिन्दी कोश के लेखक वामन शिवराम आप्टे में रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृति, दर्शनशास्त्र, गणित, आयुर्वेद, न्याय, वेदात, मीमांसा, व्याकरण, अलंकार, काव्य, वनस्पति विज्ञान, ज्योतिष, संगीत आदि अनेक विषयों का समावेश किया है। वर्तमान

कोशों में से बहुत कम कोशकारों ने ज्ञान की विभिन्न शाखाओं के तकनीकी शब्दों की व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। दूसरी ध्यान देने योग्य इस कोश की विशेषता यह है कि अत्यन्त आवश्यक तकनीकी शब्दों की, विशेषतः न्याय, अलंकार और नाट्यशास्त्र के शब्दों की व्याख्या इसमें यथा स्थान दी गई है। यह संस्कृत-हिन्दी कोश संस्कृत के सभी पाठक इससे लाभ उठा सकेंगे।

Cromo 1/4 pp 1370 2012 Rs. 1200.00



THE STUDENT'S ENGLISH SANSKRIT DICTIONARY

By

VAMAN SHIVRAM APTE

When I prepared "The Student's Hand-Book of Progressive Exercises," Part II, I thought of adding to it a glossary of difficult words and expressions in the Exercises. When this was done, an idea occurred that

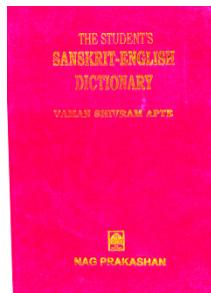
the Glossary should be made to include all words of ordinary occurrence, such as are given in small School-Dictionaries. When the revision of the sheets thus written out commenced, and when they were put to a practical test, it was found that several words and expressions had still been left out. I, then, resolved to prepare an English-Sanskrit Dictionary as complete as possible and the following pages are the result. The Dictionary has thus; passed through different stages, and has assumed this form, far exceeding the limits which I had first assigned to it.

I trust that the Dictionary will be useful not only to those for whose use; it; ;is principally prepared, but to the general public also who may wish to avail themselves of appliances calculated to help the study of Sanskrit. It is my belief that, except for the translation of passages from purely technical subjects, such as Chemistry, Botany, Medicine, Philosophy etc. this Dictionary will be useful to all readers of Sanskrit for translating any passage dealing with ordinary subjects.

Demy 1/8 2006

pp 5420

Rs. 300.00

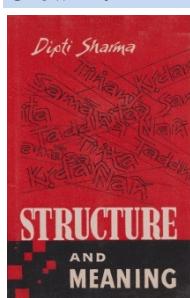


STUDENT'S SANSKRIT ENGLISH DICTIONARY

-V. S. APTE

The Student's Sanskrit-English Dictionary meets the need of the English knowing reader who is interested in the study of classical as well as modern Sanskrit . It covers a very large field - epics Ramayana and Mahabharata, Puranas and Upapuranas, Smriti and Niti literature, Darsanas or systems of Philosophy, scuh as Nyaya, Vedanta, Mimansa, Sankhya and Yoga, Grammar, Rhetoric, Poetry in all its Branches, Dramatic and Narrative literature, Mathematics, Medicine, Botany, Astronomy, Music and other technical or scientific branches of learning.

Crown 1/4 2017 PP 672 Rs. 600.00



STRUCTURE AND MEANING

Dipti Sharma

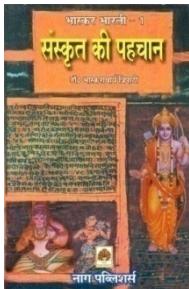
This monograph presents a formational and sementic analysis of Samasa, Taddhita, Tinanto, Kridanata and Nan. In the chapter on Tinanta both the underived and derived stems have been dealt with. The theoretical analyusis is amply substantiated by examplesa culled from firmly established by the prose dialogues of four classical plays - Bhasa's Svapnavasavadatgtam, Kalidasa's Abhijnanashakuntalam, Shudraka's Mricchakatikam and Vishakhadatt's Mudrarakshasham.

This study by the writer of a widely acclaimed work like Vyakaranika Kotiyam ka Vishleshanatmaka Adhyayana should prove to be interesting as well as stimulating.

Demy 1/ / pp160

1982

Rs. 150.00



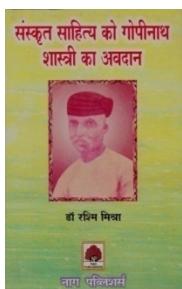
संस्कृत की पहचान

डॉ. भारतकराचार्य त्रिपाठी

गद्य जीवन का रसमय प्रवाह है। गद्यात्मक निबन्धों के माध्यम से पुस्तक का प्रथम प्रभाग पढ़ लें, संस्कृत साहित्य के इतिहास से रहस्य की परतें अपने आप हट जाएँगी। द्वितीय प्रभाग भारतीय संस्कृति की प्रायोगिक और क्रमबद्ध पहचान देता है। सहदय समीक्षकों के

अनुसार इन अठहतर अध्यायों में प्रतिभा और परम्परा का सहज साक्षात्कार होता है।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-544-4 2001 pp 416 Rs. 200.00

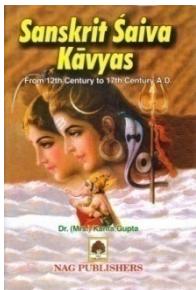


संस्कृत साहित्य को गोपीनाथ शास्त्री का अवदान

डॉ. रश्मि मिश्रा

राजस्थान प्रदेश का गौरवमय इतिहास जहां उसकी शौर्यता एवं त्याग का परिचायक है वहां संस्कृत साहित्य धारा को नवीन चेतना प्रदान करने वाली अनेक सरस्वती-उपासक, साहित्य-सर्जक विलक्षण प्रतिभाजुष मनीषि विद्वानों की कर्मभूमि भी है जिन्होंने साहित्य की विविध शाखा-प्रशाखाओं को अपनी तल-स्पर्शनी लेखनी के संस्पर्श से सीचित किया है और फलस्वरूप भारतीय चिन्तन की अजम्ब धारा प्रवाहित की है। वर्तमान शतक के कवियों में पंडित प्रवर श्री गोपीनाथ शास्त्री राजस्थान की साहित्य संपदा के ऐसे ही कवीश्वर हैं जिनकी नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा काव्यों के विविध आयामों में प्रस्फुटित हुई है। जहाँ एक ओर प्रशस्ति काव्य, नाट्य साहित्य, छन्दशास्त्रीय ग्रन्थ हैं वहां गोपीनाथ शास्त्री की सूक्ष्मावगाहनी प्रतिभा ने च्यायशास्त्रीय विषय को भी अछूता नहीं छोड़ा है। प्रस्तुत ग्रन्थ नौ अध्यायों में विभक्त गोपीनाथ शास्त्री की कृतियों का व्यापक एवं गहन अध्ययन का परिचायक है। स्थान-स्थान पर ज्ञान, भक्ति एवं सरसता का ऐसा समन्वय है जो ग्रन्थ को यशस्वी बनाने में सहायक सिद्ध हुआ है। आशा है सुधी अयेता इस त्रिवेणी में अवगाहन कर कृतकृत्य होंगे।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-549-5 2002 pp 334 Rs.150.00



SANSKRIT SHAIVA KAVYAS

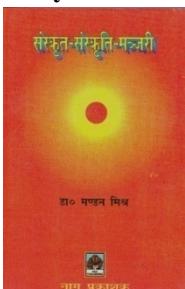
(From 12th century to 17th century A. D.)

Dr. (Mrs.) Kanta Gupta

The Shaiva Kavya - the Haracaritacintamani of Jayadratha, the Bhiksatana of Utpreksavallabha, the Sivalilirnava of Nilakantha Dikshita and the Natesavijaya of Venkatakrishna Dikshita have been recognised as works of poetic literary merit by indologists, scholars and historian like M. Winternitz, S. N. Das Gupta, and S. K. De, Vachaspati Garola, Baldev Upadhyaya, M. A. Stein etc.; but these kavyas could not have a path of fame and popularity. As such no work had been done so far and a multidimensional study of these kavyas can be a source of inspiration for scholars and researches to plunge deep into the texts full of hidden treasure of precious gems of literary poetic beauty and embellishments.

To facilitate the study of these kavyas, the original Sanskrit text along with a detailed and comprehensive introduction about the date, works, erudition of the author and general appraisal, critical appreciation and evaluation of the kavya has been done. It has been divided in 2 volumes. The 1st volume comprises of the critical and analytical study of the Haracaritacintamani of Jayadratha and the Bhiksatana of Utpreksavallabha along with original text of both the kavyas. The 2nd volume deals with the Sivalilarnava of Nilakantha Diksita and the Natesavijaya of Venkatakrishna Dikshita along with their original text.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-552-5 2002 pp 1226 (2vols set) Rs. 800



संस्कृत-संस्कृति-मञ्जरी

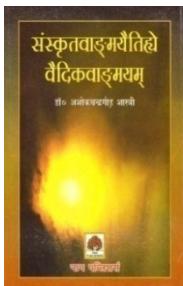
डॉ. मण्डन मिश्र

आर्याव्रत के ऋषियों, मुनियों एवं आचार्यों की सहस्रे वर्षों की साधना, त्याग और तपस्या का सर्वोत्तम अवदान भारतीय संस्कृति है। धर्म, वाङ्मय, चित्रकलात्र मूर्तिकला के रूप में भारतीय संस्कृति ने स्वयं का व्यक्त किया है। वैदिक भावराशि हमारी संस्कृति का मूल है। धर्मसूत्र, स्मृति पुराण आदि ग्रन्थ वेद की छाया लेकर धन्य-धन्य हुए हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ के विभिन्न लेखों में पदे-पदे त्रिकालव्यापी शाश्वत सिद्धान्तों के दर्शन होते हैं।

रत्नगर्भा भारतभूमि ने अगणि महापुरुषों की जन्म दिया, जिन्होंने संस्कृति को प्राण दिए, प्राणों में स्पन्दन भर गति दी, चिराग रहस्यों का विश्लेषण कर प्रज्ञा मति दी, यशोज्जवल इतिहास दिया, मंगलप्रद संस्कृति दी। ऐसे महापुरुषों का अवतरण और संचरण आनन्द और शान्ति की विमल मन्दाकिनी बहाने के लिए है। सांस्कृतिक परम्पराओं के पुनराख्याता के रूप में कबीर, तुलसी, सूर आदि तपोनिष्ठ महापुरुषों ने व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को युगधर्म के अनुरूप सुदृढ़त्र

बनाने के लिए अपनी कुशाग्रमति से जो प्रयास किया वह रचना-क्षेत्र में प्रशस्यतम है। ‘कबीर और निर्गुणधारा, भावयोगी सूर एवं सगुणभक्ति और तुलसीदास’ आदि लेखों में जीवन के उन आदर्शभूत मूल्यों का निर्देश है जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-271-2 1993 pp 258 Rs. 300.00



संस्कृतवाङ्मयैतिह्ये वैदिकवाङ्मयम्

डॉ. अशोकचन्द्रगौडशास्त्री

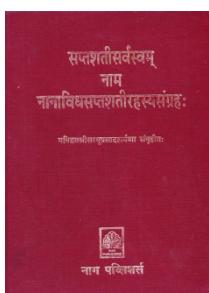
यद्यपि वैदिक वाङ्मयैतिहासविषयेऽपि द्वित्राःग्रन्थ
संस्कृतभाषयां विलसन्ति, तथापि
सम्पूर्णवैदिकवाङ्मयस्येतिसविषयं सरल शास्त्रीयभाषया
कोऽपि ग्रन्थो न प्रकाशियति।

‘संस्कृतवाङ्मयैतिह्यं वैदिकवाङ्मयम्’ इत्याख्यो ग्रन्थः
सरलशास्त्रीयसंस्कृतभाषया सम्पूर्णमपि वैदिकवाङ्मयम्—
तिहासिकदृष्ट्या हस्तामलकवत् प्रकाशयति। अत्र वेदमहत्त्ववेदपरिचयसहिताभाग
—वेव्यास—ससूत्रसाहित्यवेदाङ्गवर्णनेन सह वेदसंहितानां वर्णनमस्ति। वेदानां
कालः वेदशब्दव्युत्पत्तिश्च समालोचनात्मकदृष्ट्या प्रस्तुतः। तत्र वैदेशिकानां

भारतीयानां च विदुषां मतानि समीक्षितानि।

वेदव्याख्याविधिभाष्यकार—अनुक्रमणीसाहित्य—ब्राह्मणग्रन्थ—आरण्यकोपनिषदां
विषया अप्यत्र सरलशास्त्रीयसंस्कृतभाषया सम्यग् विवेचिताः।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-642-4 2007 pp 3092 Rs. 250.00



सप्तशतीसर्वस्वम् नाम

नानाविधिसप्तशतीरहस्यसंग्रहः

पण्डितश्रीरस्यूप्रसादशर्मणा संगृहीतः

अत्र गन्धे त्रयो भागा वर्तन्ते। तत्र
प्रथमभागे—शक्तिप्राधान्यप्रतिपादनम्, पाठकमनिर्णयः,
नवार्णार्थमीमांसा, सव्याख्यानि कवचार्गलाकीलकानि,
सभाष्यं रात्रिसूक्तं च वर्तते।

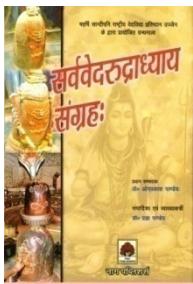
द्वितीयभागे — व्याकरणादिप्रमाणपुरस्सरं त्रयोदशाध्यानां व्याख्यानम्। तत्र
गौडपाठा मूले दाणित्यपाठाष्टीकायां च न्यस्ताः। प्रत्याध्यायप्रारम्भे मन्त्रविभागो
दर्शितः।

तृतीयभागे — सभाष्यं देवीसूक्तम्, सविवरणं रहस्यत्रयम्, खिलमार्कण्डेयोक्त—
मुपासनाकाम्यप्रयोगादि, तन्त्रोक्तं दीपदानादिमन्त्रन्यासध्यानादि चास्ते।

Crown 1/4 ISBN-81-7081-027-80 pp 626 2006 Rs. 600.00

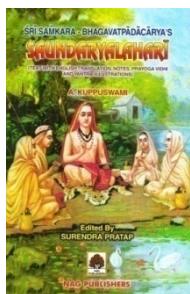
सर्ववेदरुद्राध्याय—संग्रहः

**प्रधान सम्पादकः प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय
संपादिका एवं व्याख्याकर्त्री
डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय**



सनातन हिन्दू-समाज में रुद्राभिषेक एवं रुद्राष्टाध्यायी के पाठ की परम्परा अत्यन्त प्राचीनकाल से ही चली आ रही है। वेदों की सभी शाखाओं में अपने—अपने रुद्रपाठ प्रचलित हैं, लेकिन उन सब के एकत्र संकलन की आवश्यकता बहुत दिनों से अनुभव की जा रही थी। भगवान् महाकाल की अनुकूल्या से इस संग्रह के रूप में उसकी पूर्ति हो रही है। इसमें संकलित सभी रुद्राध्यायों की हिन्दी व्याख्या इनमें सन्निहित तत्त्वज्ञान, कर्मकाण्ड और सदाचार सभी को विद्वानों और जनसाधारण दोनों के ही समुख सरल—सुबोध रूप में उपस्थापित करेगी, यह असन्दिग्ध हैं हमें विश्वास है, प्रतिष्ठान के अन्य प्रकाशनों के सदृश इस ग्रन्थ का स्वागत भी वैदिक जन उत्साहपूर्वक करेंगे।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-626-2 2006 pp 304 Rs. 300.00



Sri Sankara-Bhagavatpadacharya's SAUNDARYALAHARI

(Text with English Translation, Notes,
Prayoga Vidhi and Yantra Illustrations)

A. Kuppuswami

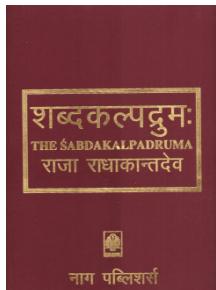
Editor - Surendra Pratap

Saundaryalahari is not only a philosophical work but it is piety of the highest excellence. It is indeed amazing how abstruse philosophical thoughts can be expressed in such sweet and mellifluous poetic language. Every verse of Saundarya Lahari is couched in language of incomparable beauty. It is a mantram and every mantram in this remarkable work is dedicated to a different aspect of the deity and separate Japam procedure for each mantram has been prescribed. The mantras and the separate yantra-vidhis are also given in this book.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-600-9 2005 pp 320 Rs. 350.00

SHABDAKALPADRUMA

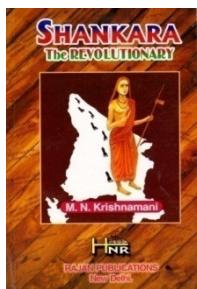
**An Encyclopedic Dictionary of
Sanskrit Words Compiled by Raja
Radhakant Deb
(Deluxe Hard Bound Edition)**



The Shabdakalpadruma is an encyclopedic dictionary of Sanskrit words arranged in alphabetical order giving the etymological origin of words according to Paninian grammar. It gives their gender, various meanings and synonyms and illustrates their syntactical usage. It also furnished the various sources such as the Veda, the Epic, The Upanishads and Puranas as well Sanskrit texts of Tantra, Ayurveda, Music, Art, Astrology, Rhetoric and Prosody.

This renowned Sanskrit lexicon was compiled by a team of Bengali scholars led by Raja Radhakant Deb. Its first volume was published in 1822 while the last one was published in 1856. This classic Sanskrit dictionary would lend authority and gravitas to any Indological library.

Royal 1/2 ISBN-81-7081-154-6 pp 3218 (5 Vols. set) 2015 Rs.15000



SHANKARA: The Revolutionary

M. N. Krishnamani

Several books have come on Shankara's life-story. But this book is unique. Here Shankara's life is projected from a totally new angle. The correct picture of Shankar, that he was a great Revolutionary who brought about drastic changes and who fought against the odds of his time, comes out as the theme

of this work. The reader will be surprised to know the difficulties and agonies to which Shankara was put to by the orthodox brahmins of his time. Inspite of this, Shankara achieved great success in changing the modes of worship, in reducing the conflicting cults and in further reducing the conflict between them in conquering over-ritualism, removing the pernicious practices, in unifying India and in revolutionising man's approach to Spirituality, that Shankara brought about marvellous changes adopting scientific and logical approach to

spirituality, that too in a short span of just 32 years of Earthly sojourn is brought out clearly in this book.

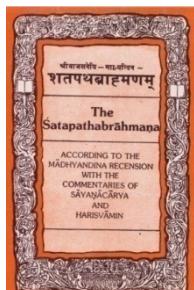
The stupendous volume of work left behind by Shankara justifies the declaration in this book that "it requires another Shankara to know what this Shankara has done!"

Demy 1/8

2001

pp 412 (PB)

Rs. 200.00



श्रीवाजसनेयि—माध्यन्दिन—

शतपथब्राह्मणम्

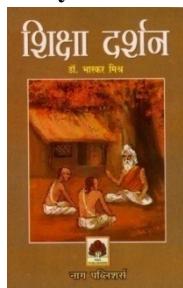
THE SATAPATHABRAHMANA

**(According to the Madhyandina
Recension with the Commentaries of
Sayanacharya and Harisvamin)**

Shatapatha Brahmana is the most important work in the whole range of Vedic literature. Besides its theological significance, it has enormous social cultural and geographical importance. It belongs to the Vajasneyi recession of the Yajurveda generally called White Yajurveda.

Practically it is an encyclopedia of Vedic Sacrifices. This edition includes the extant portions of the authoritative commentaries of Hariswamin and Sayanacharya, Vasudev Brahmana's rarely available commentary of the Brahadaranyakopanisad, Katyayan's Pratijna Sutra and Bhasika sutra with commentaries Pasvadanaviveka, various readings, notes and illustrations.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-362-X pp3730 (5vols. set) 2002 Rs.5000



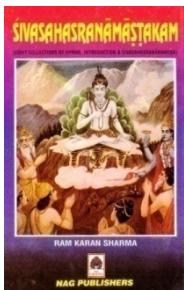
शिक्षा—दर्शन

डॉ. भास्कर मिश्र

शिक्षादर्शन नामक इस प्रस्तुत ग्रन्थ में दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, समाजशास्त्र एवं राजनीतिविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में शिक्षाशास्त्र के सिद्धान्तों की विशद एवं सारगर्भित विवेचना उपस्थापित की गई है। इसके साथ—साथ ग्रन्थकार ने मानवीय गुणों के विकास में शिक्षा की सार्थकता का सम्यक् प्रतिपादन भी किया है। वैदिक युग से आजतक विभिन्न प्रणालियों तथा पाठ्यक्रमों की विशद विवेचना प्रस्तुत करते हुए ग्रन्थकार ने प्रतिपादित किया है कि व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए ज्ञान के साथ—साथ श्रेष्ठ कर्मों के अनुष्ठान के लिये प्रेरित करना ही वैदिक कालीन शिक्षा पद्धति का प्रमुख उद्देश्य था। इसी प्रकार बौद्ध धर्म के व्यापक प्रसार के युग में भी भारतीय शिक्षा में आध्यात्मिक चिन्तन के साथ सदाचार मीमांसा को विशेष महत्व प्राप्त था।

तथा मुस्लिम—शासनकाल में भी शिक्षा की अवधारणा के अन्तर्गत चारित्रिक विकास को समाज व्यवस्था तथा राज्य प्रशासन की सृदृढ़ आधारशिला के रूप में प्रतिष्ठापित करते हुए ग्रन्थकार ने शिक्षादर्शन की विशद मामांसा इस ग्रन्थ में की है।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-648-3 2009 pp 300 Rs. 500.00



SIVASHASRANAMASTAKAM

(Eight collections of Hymns containing one thousand and eight name of Shiva)

INTRODUCTION AND (A DICTIONARY OF NAMES)

Dr. Ram Karan Sharma

It is for the first time that he eight versions of Sivashasranamstotra are being brought out in one volume.

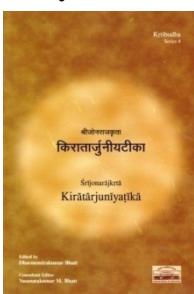
If we leave aside the Mahabhaagavata & Deviuppurana version which appears to be of recent origin, the remaining seven versions may conveniently be divided into two groups.

- a) based on the Anusasana Parvan version of MB and
- b) based on the Santi Parvan version of MB

Both the Linga Purana versions and the Siva Purana version belong to the former category. The Vayu Purana and Brahma Purana versions belong to the second category.

All these versions are compiled together. Nilakantha's and Ganesa Natu's Commentaries are also included. The relevant passages from the RV and Yajurveda are also appended. A Comprehensive Introduction and Glossary of Namans as in the Anusasana Parvan version of the Critical Edition of MB add to the productivity of this volume for further research.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-350-6 1996 pp 350 Rs. 400.00



Srijonarajakrita

KIRATARJUNIYATIKA

Transcribed & Critically edited (3 Canto) by

DHARMENDRAKUMAR BHATT

Supervisor Editor

VASANTAAR M. BHATT

The experiences and knowledge from our past are recorded in manuscripts which have been handed down to us over several thousand years. The Government of India through the Department of Culture, took

note or the importance of vast tangible heritage of India and established the National Mission for Manuscripts with the purpose of locating, documenting, preserving and disseminating the knowledge content of India's manuscripts. In order to disseminate the knowledge content of manuscripts, the Mission has taken up several programmes such as lectures, seminars, publication of unpublished manuscripts, Manuscriptology and Paleographhy Workshop etc.

The Kritibodha (Knowledge of Texts) Series is one of such publication project of National Mission for Manuscripts of Promote academic interest and scholarship in the area of manuscript studies.

The transcribed and critically edited manuscripts prepared either in the Advance Level Manuscriptology Workshops of the Mission or in the Gurukula scheme are published under the Kritibodha series.

The present text is one of such Gurukul scheme projects critically edited by Dharmendra Kumar Bhatt under the Guru, Vasant Kumar Bhatt.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-144-9 1987 pp 160 Rs. 250.00



“श्रीमद्यशोविजयमुनिकृताया: काव्यप्रकाशटीकाया द्वितीयतृतीयोल्लासमात्रोलध्याया:

डॉ. विद्यानन्दज्ञः

श्रीमद्यशोविजयमुनिविनिर्मितकाव्यप्राकशस्य

द्वितीयतृतीयोल्लासमात्रस्योपलभमाना टीका विषयज्ञानग्रन्था
—वगमनसामर्थ्यसमर्थिता नूतनोदभावनोहापोहशक्ति—

शक्तात्यप्रकटीकरणपक्षपातपूर्णा समीक्षणाभिव्यञ्जनक्षमभाषोदभासिता सप्रमाण—
सिद्धान्तसाधनसिद्धा न तिरोहीताऽद्यालङ्कारशास्त्रमर्मज्ञेषु विज्ञेषु।
सतीष्प्यनेकासु काव्यप्रकाशटीकासु पाण्डित्यप्रतिभयोः समाहारभूतेयं किञ्चन
विचारवैलक्षण्यं पाठकेभ्यो नूतन ज्ञानं प्रयच्छतिए प्रेरयति च तान्
स्वकीयदृष्टिबवशेषेण ग्रन्थं परिशीलितुमित्येतस्याः प्रतिपदं दृश्यमानेन वैलक्षण्येन
प्रेरितैः तत्सफलसमालोयचयितु— कामैर्लेख्यकूर्डक्टरविद्यानन्दज्ञाऽन्वर्थनाम—
भिर्विद्वद्विर्महता प्रयत्नेन गवेषितोऽयं ग्रन्थोऽवश्यमेव गुणिगणग्राहामादधाति।

मन्ये, समीक्षात्मकोऽयं ग्रन्थः शास्त्रमर्मज्ञासूनां परिष्कारपिपासूनां
मम्मटग्रन्थतत्त्वाभिलिप्सूनाऽर्घात्राणां गवेशकाणां विदुषाऽच कृते महते उपकाराय
कल्पत इति ॥

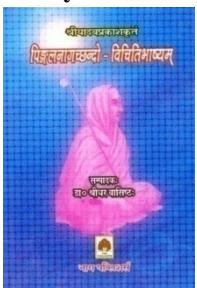
Demy 1/8 ISBN 81-7081-545-2 2002 pp 224 Rs.150.00

श्रीयादवप्रकाशकृतं

पिङ्गलनागच्छन्दो—विचितिभाष्यम्

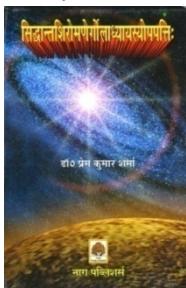
सम्पादकः — डॉ. श्रीधर वासिष्ठः

विश्वस्य सर्वप्रथमं ज्ञानं वेदरूपेण वर्तते । वेदाश्च मुख्यतया



छन्दावद्धा: वतन्ता। सप्ताछन्दास वद्प्रासद्वान् वतन्ता। गायत्रा, उष्णाक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ती, त्रिष्टुप्, जगती इति नामानि एतानि छन्दाँसि कालान्तरे नामान्तरेण रूपान्तरेण च लौकिक साहित्येऽपि स्वरथान्म् निर्धारितवश्चित्। छन्दसाम् वैज्ञानिकरूपज्ञानार्थं पिंगलमुनिना सर्वप्रथमं छन्दःसूत्राणि रचयानि। तानि पिंगलसूत्राणि इति नामा अपि प्रसिद्धानि सन्ति। पिंगलमुनिना वैदिकानाम् लौकिकानाम् छन्दसाम् स्वरूपं सूत्रस्पेण निबद्धम्। अत्र चत्वारि भाष्यानि विद्वदभिः कृतानि इत्ययम् उल्लेखः शास्त्रेषु लभ्यते। मुख्यरूपेण हलायुधस्य यादवप्रकाशस्य च भाष्ये उपलब्ध्यते। हलायुधः प्रथमभाष्यकारः आसीत् यादवप्रकाशश्च चतुर्थः। यद्यपि अन्यानि अपि भाष्यानि जनैः। कृतानि परं तेषां प्रामुख्यम् न प्रतिभाति। हलायुधस्य प्रभाष्यम् मुद्रितं। बहुप्रचलितं चास्ति परम् यादवप्रकाशस्य छन्दोविचितिभाष्यं कैश्चिद् विद्वदभिः सम्पादनं कृत्वा प्रकाशनं क्रियते। यादवप्रकाशेन छन्दसां गणितीयपक्षा विस्ताररूपेण स्फुटीकृतः।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-590-8 2004 pp 430 Rs. 300.00



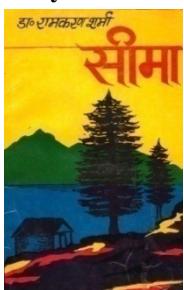
सिद्धान्तशिरोमणेर्गोलाध्यायस्योपपत्तिः

प्रो. प्रेम कुमार शर्मा

भास्कराचार्यविरचित सिद्धान्तशिरोमणेर्गोलाध्यायस्योपपत्तिः
ग्रन्थः प्रस्तत्यापारं हर्षमनुभवामि। वस्तुतः 'गोलाध्याये निजे
या या अपूर्वा विषमोक्तयः' इति ग्रन्थकारोक्ते:
भास्कराचार्यस्य सिद्धान्तशिरोमणेर्गोलाध्यायो
गणिताध्यायस्योपपत्तिस्वरूपो वर्तते। अत्राऽपि यत्र

गोलाध्यायस्य विषमस्थलेषु ज्योतिषशास्त्रस्य पिपढासवो कठिनतामनुभवत्ति
तत्र—तत्र स्थलेषु मया सरलता गोलयुक्त्योपपत्या समाधानस्य प्रयासः कृतः। मन्ये
ज्योतिषशास्त्र शिक्षार्थीनां प्रयासोऽयं सफलीभूयादि त्याशासे।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-616-5 2005 pp 376 Rs. 250.00



सीमा

डॉ. रामकरण शर्मा

'सीमा' नाम संस्कृतगद्यप्रबन्धकल्पना प्रतिनिधिते
समन्वयमाध्यात्मिकमाध्यभौतिकं च कमपि। अतीतीनागतयो,
ज्ञानाज्ञानयोस्पोवनराजदान्योरध्यात्मविज्ञान योरनुरागविराग—
योर्देवयोः समन्वयः सर्वतश्चकास्ति कथायामस्याम्।

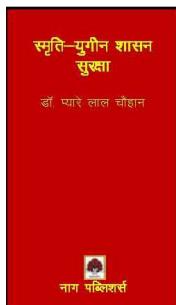
परस्पराश्रया समरसा सक्तन्त्रता सर्वांसां व्यक्तीनां, सर्वांसां
समष्टीनां, सर्वेषां भावानाभ्युचात्रित्रीकृता कैश्चित्तिङ्गसुबन्तचयैः। अत्रास्ति
परमर्षिवृत्तिथितः परममङ्गलमयोऽपि सततममङ्गलमाशङ्कमानः परमकारुणिकः।
अत्रास्ति लोकबन्धुः परमसंस्कारकः कुशलः प्रयोक्ता विद्यायाः परप्रयोजनायाः।
अत्रास्ति राधा सङ्गमनी ब्रह्मक्षत्रमरम्परयोः अत्रास्ति सौरविज्ञानपरमाचार्यः सङ्गमकः
सौरविज्ञानात्मविज्ञानयोः।

सर्वहरोऽपि तस्करोऽत्र मनोहरीभवति भजति च शान्तिसेनाध्यक्षताम्।

पद्यनत्राचार्या अपि भन्ति पदवीं सतां सुरक्षाचार्याणाम् । मदमदनवशंवदाऽपि
मदनिका क्षत्रेन भवति “धुरि कीर्तनीया” परमसाध्वीनां महनीयानाम् । इमा: सन्ति
लीला अत्रवर्णिताः परममहिम्नां परमवैर्व्युत्थितस्य लोकपरममङ्गलमय्यः ।
अहिसयैवात्र परिवर्तिताः सङ्काम्पन्ति परितः सुमनःक्रमा ।

सीमा संयुनक्ति वियुनकत्यपि च लोकम् । सन्ति सीमानमहिंसायाः सौरविज्ञानम् ।
तथैव नातिवर्तेतां ब्रह्मक्षत्रे अधिसीमानौ स्वीये । एतमेव सन्ति भूयस्यो
व्यक्तिसीमानः कुलसीमानोऽन्याश्च सीमानः । अस्ति कश्चित् परमसीमाऽपि
नामर्पिता । नश्यन्ति सद्यः सर्वेऽपि सीमविवादाः सिद्धायामैव परमसीमनि । सेथं
‘सीमा’स्ति कथा सौम—परमसीमपरिणयस्याऽपि ।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-144-9 1987 pp 160 Rs. 100.00



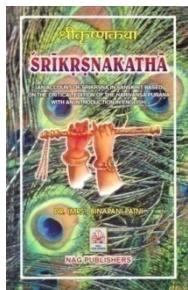
स्मृति—युगीन शासन सुरक्षा

डॉ. प्यारे लाल चौहान

पुस्तक पांच अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में 600 ई. पू. से लेकर प्र. श. तक की राजनैतिक दशा का उल्लेख है। शान्ति और सुरक्षा की उपादेयता का आधार यहीं राजनैतिक दशा रही थी। शान्ति और आन्तरिक—सुरक्षा की आवश्यकता को द्वितीय अध्याय में स्पष्ट किया गया है। तृतीय अध्याय को — क और ख दो भागों में विभक्त कर क्रमशः शान्ति और आन्तरिक सुरक्षा की स्थापना हेतु शानतन्त्री इकाईयों का तथा उन उपायों को दर्शाया गया है, जिनके माध्यम से राज्य में शान्ति व आन्तरिक सुरक्षा रिथर हो सकी थी। चतुर्थ अध्याय में न्याय व्यवस्था को स्पष्ट किया है। अन्तिम पंचम अध्याय में तत्कालीन अपराधों के शमनार्थ व्यवस्था पर संकेत किया गया है।

विषय का अध्ययन करते हुए अनुभव किया कि प्राचीन इतिहास के कलेवर में ऐसे अनेक विषय सुप्त अवस्था में पड़े हैं जिन्हें अब तक स्पर्श भी नहीं किया गया है जैसे 1. प्राचीन भारत की गुप्तचर व्यवस्था । 2. अपराध और उनका परिमार्जन । 3. प्राचीन भारतीय दण्ड विधि । 4. प्राचीन भारतीय प्रशासन में मंत्रि—मंडल आदि विषय अनछुये से ही रह गए हैं उनका समावेश जहां तक संभव हुआ, किया गया है ।

Demy 1/4 ISBN-81-7081-260-7 pp 424 1992 Rs.300.00



श्रीकृष्णकथा

आंग्लभाषायां निबद्धया भूमिकया संविलता
हरिवंशस्य समीक्षात्मकसंस्करणमाश्रित्य लिखिता
कृष्ण कथा

SHRIKRISHNAKAHA

(An account of Shrikrishna in Sanskrit based on
the critical edition of the Harivansa Purana with
an introduction in English) Dr. (Mrs.) Binapani Patnai

ग्रन्थेऽस्मिन् श्रीकृष्णस्य द्वौ पक्षावुन्मिषतः। प्रथम स्तावद्रोकुलवासिनां
प्रियोऽद्वृतरूपो बालकृष्णः। स गोकुलवासिनः पारम्परिकादिन्द्र्महान्निवार्य
कालानुकूलाय गोवर्धनोत्सवाय प्रैरयत्। यतो गोवर्धनपर्वतोऽसंख्यानां
पशुपक्षि—मृगाणामुपकारकत्वान् मानवानां श्रद्धाभाजनम्।
अपरञ्चालौकिकशक्तिसम्पन्नो, विचक्षणो, नीतिज्ञो रेता श्रीकृष्णः साधूना
परित्राणाय कंस—कालयवनजरासन्धशिशुपालप्रभृतीन् दुष्कृतान् जघानेति
स्वोदाहरणेनसत्यानृतयोः संघर्षे सत्यं रक्ष। हरिवंशपुराणस्य
भण्डारकरशोधसंस्थानगतं समीक्षात्मकसंस्करणमाश्रित्य समुल्लिखितेयं
श्रीकृष्णकथा।

हरिवंशस्य चित्रशालासंस्करणे श्रीकृष्णवृत्तान्तर्गतं सन्ति तानि तानि
कृष्णाख्यानानि यानि समीक्षात्मकसंस्करणे न सन्ति। इमानि
लोकप्रियाण्याख्यानानि प्रक्षिप्तानि ज्ञायन्ते। अथवा कुतस्तेषां स्रोत इति न ज्ञायते।
इमान्याख्यानि मया पार्थक्येन पुस्तकान्ते प्रथमपरिशिष्टे दत्तानि।

श्रीकृष्णवृत्तान्तानुसारं जरासन्ध आसीत् श्रीकृष्णस्य प्रचण्डः परिपन्थी।
यदप्तादशवारं श्रीकृष्णमवरुद्ध्यापि नाभवत्समर्थस्तं जेतुम्। परन्तु तस्य वधाख्यानं
हरिवंशे नास्ति अतएव महाभारतस्य सभापर्वात् तस्य विनाशवृत्तान्तं मया पृथगेव
पुस्तकान्ते द्वितीयपरिशिष्टे निवेशितम्।

पुस्तकस्योपक्रमे श्रीकृष्णवृत्तान्तविषयको विमर्श आंग्लभाषया निबद्धः
कृष्णकथानुरागिणामांग्ल भाषाविदां च सौविद्यार्थमिति शम्।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-519-3 2000 pp 144 Rs. 100.00



SRIMADBHAGAVADGITA

(Text English Translation and Commentary)

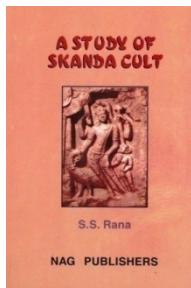
Som Nath Raina

The Bhagavadgita gives utterances to the aspirations of the pilgrims of all sects who seek to tread the inner way to the city of God. We though reality deeply. Where men struggle fail and triumph. Millions of Hindus for centuries have found comfort in this great book which sets forth precise

and penetrating words, the essential principles of a spiritual religion which are not contingent on ill founded facts, unscientific dogmas or arbitrary fancies.

With a long history of spiritual power, it serves even today as light to all who will receive illumination from the profoundity of its wisdom which insists on a world wider and deeper than wars and revolution can touch. The Gita it is articulated by a profound seer who sees the truth in its many sidedness and believes in its saving power.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-376-X 1997 pp 476 Rs. 300.00



A STUDY OF SKANDA CULT

Dr. S. S. Rana

Skanda-Kartikeya is one of the few minor deities dominating the Indian religious scene for centuries as a pan India god. Apart from his plausible presence in the Indus Valley Culture, we find seeds of the various elements of the Skanda-myth in the Rigveda. The later vedic literature amply demonstrates the emergence of Skanda cult. The Epics and the Puranas extensively deal with the theme of Skanda-Kartikeya and his admittance to the Aryam pantheon as fully accomplished. The main theme of Skanda as a god of youth and valour, the characteristics of a war god, is permeating the works of Classical Sanskrit literature as also the Tamil literature starting from Sangam period. Skanda has figured on the coins of some early north Indian dynasties and old sculptures depicting him in various aspects are found all over India and abroad. The iconographical texts have also devoted the deserved attention to description of the various forms of Skanda-Kartikeya. The present work, in its seven chapters, deals with these topics in a critical and analytical manner.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-303-4 1995 pp 220 Rs. 300.00



शुक्लयजुर्वदमाध्यन्दिनीयसंहिता

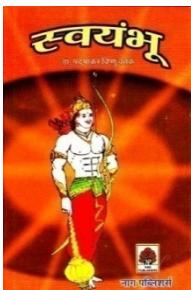
मूल मात्र बडे अक्षरों में

The Yajurveda is the knowledge of sacrifice or sacrifice texts and formulas as distinguished from the Rigveda. It has two Samhitas - Taittiriya and Vajasaneyi Samhita known as Black (Krishna) and White (Shukla) Yajurveda. The Vajasaneyi Samhita is planned in a more systematic and orderly manner than the other. It is actually a hand-book or manual for the Adhvaryu priests who specialized in conduction sacrifices. The important sacrifices are dealt with Ashvamedha (horse-sacrifice), Purushamedha (Human-sacrifice) and Darsa Purnamasa (full and new moon).

Pothi size 2004 pp 1034 Rs. 600.00

स्वयंभू

डॉ. पद्माकर विष्णु वर्तक



भीम का पक्ष आज तक किसी ने नहीं लिखा है, उस पर किसी ने कुछ लिखा नहीं है। इसलिये मैंने यह नहीं लिखा है। मेरी विनम्र प्रार्थना है कि मैंने प्रसिद्धि प्राप्त करने हेतु यह लिखा है, ऐसा इसका कोई अर्थ न निकालें। भीम वास्तव में जैसा था, उसी रूप में लोगों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिये मैंने यह निबन्ध लिखा है। जैसा मुझे विश्वास हो गया है कि महर्षि व्यास द्वारा महाभारत में चित्रित आदर्श महापुरुष भी ही है, वैसा ही विश्वास अन्य लोगों में भी निर्माण हो एसी मेरी सदिच्छा है और इसलिये मैंने हाथ में लेखनी उठाई है। महाभारत के विभिन्न प्रसंगों में होनेवाला भीम का वास्तव दर्शन हिन्दु जनता को हो इसलिये मैंने यह निबन्ध लिखने के मार्ग का अवलम्बन किया है। भीम के भाषणों में परिलक्षित होनेवाला तत्त्वज्ञान आज तक उपेक्षित रहा था। अब आगे वैसा नुकसान न हो, हिन्दु समाज स्वाभिमानी और पराक्रमशाली हो, इसलिये मैंने भीम का तत्त्वज्ञान लोगों के समक्ष लाने का प्रयास किया है। इसमें प्रस्तुत तत्त्वज्ञान भी मेरा नहीं है, वह है वास्तव किन्तु उपेक्षित भीम का तत्त्वज्ञान।

लेखक

Demy 1/8 ISBN 81-7081-615-7 2005 pp 492 Rs. 350.00

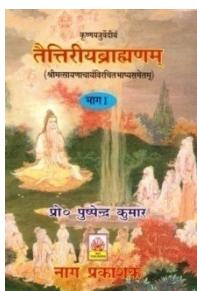
कृष्णयजुर्वेदीयं

तैत्तिरीयब्राह्मणम्

श्रीमत्सायणाचार्यविरचितभाष्यसमेतम्

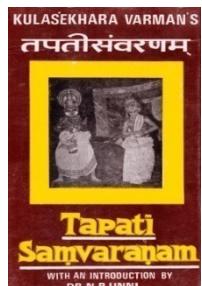
Taittiriya Barhmaṇa is related to Taittitiya Samhitā of Krishna Yajurveda. It may be called the extensions of Taittiriya Samhitā. Scholars agree that it is the oldest available Brahmana Grantha. Its text is acceted like Satapatha Brahmana. The vocabulary and syntax also prove it the oldest one. The Sayanacharya has written his Bhāṣya first of all on this Brahmana. The Taittiriya Samhitā and Taittiriya Brahmana both the works are popular throughout the South India. It has three Kandas and each Kanda is again divided into Adhyayas. The first and second Kanda are comprised of eight Adhyayas while third one has twelve chapters.

This Brahmana Grantha explains in details the performance of Agnyadhana, Vajpeya, Somagagas, Rajsuya, Sautramani sacrifices, all mentioned in Taittrīya Samhitā. The Purushamedha sacrifice is a specialty of this Brahmanā. It discuss in detail the rights and duties of four varnas and Ashramas respectively. Pashuyagas and Ishtis are discussed elaborately. It is also very rich in old stories called Akyanas.



The story of Bharadvaja, Naachiketa, Prahlada, Agastya are the main Akhyana. Similarly Poakhyanas of Sita, Savitri and Usha are mainly the love stories, which make the book very interesting. In the second Kanda an elaborate discussion is given about the creation of the world. The publication of this Brahmana will surely be much interest of the Vedic scholars in India and abroad.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-395-6 pp 1330 (2 vols. set) 2016 Rs.1500



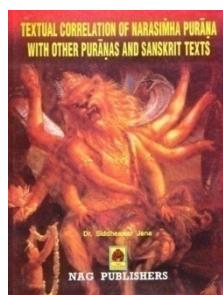
त्रिवेन्द्रम् संस्कृत सीरीज, त्रिवेन्द्रम् प्रकाशितस्य पुनर्मुद्रणम्

Kulasekhara varman's TAPATISAMVARANA

**Edited by Dr. T. Ganapati Sastri
With an elaborate introduction Dr. N. P.
Unni**

Tapatisamvarana of Kulasekharavarman, the royal dramatist of Kerala (C. 11th. century A. D., is drama in six Acts describing the love between Tapati, the daughter of Sungod and Samvarana, the King; of Hastinapura. The source of the plot is the Tapatyopakhyana contained in the Adiparvan of the Mahabharata. Sivarama (c. 14th century A. D.) the author of the exhaustive Vivrana commentary has utilised an earliest gloss by a contemporary of the dramatist. The Chakyars of Kerala have been staging the drama for the last several centuries in Kutiyattam performances in the temple theatres during festivals. Both the text and the commentary were originally edited by Dr. T. Ganapati Sastri in the famous Trivandrum Sanskrit Series. The present edition contains a detailed general introduction and study by Dr. N. P. Unni, Professor and Head of the Department of Sanskrit, University of Kerala.

Royal 1/8 ISBN 81-7081-107-4 1987 pp 290 Rs. 200.00



TEXTUAL CORRELATION OF NARASIMHA PURANA WITH OTHER PURANAS AND SANSKRIT TEXTS

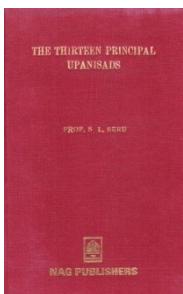
Dr. Siddheswar Jena

The Narasimha Purana has not yet been critically edited. The Narasimha Purana as available in print at present consists of 68 chapters, but the presence of the anecdote of the Narasimha-Caturadasi-vrata in Hemadri's Caturvargacintamani (1270 A. D.) and Ayodhya-tirtha-prasana as found out in four manuscripts by Dr. Umakanta Chaturvedi suggest that there were undoubtedly in existence a somewhat larger text of the Narasimha Purana than the printed text available at present. This monograph "Textual Correlation of the Narasimha Purana with other Puranas and

Sanskrit Texts", show the textual borrowing of the Narasimha Purana from divergent sources, and it is presented to the scholarly world with the hope that it would be of much assistance in the critical edition and reconstruction of the Narasimha Purana in future.

Demy 1/4 ISBN-81-7081-318-9 pp 126 1997 Rs. 200.00

THE THIRTEEN PRINCIPAL UPANIṢADS



Prof. S. L. Seru

There are hundreds of Sanskrit texts which are known as Upanishads. Though some of them are very ancient but most of them belong to far later ages. Speaking strictly, the word Upanishad is basically the name given to the philosophical thinking of Vedic Rishis and each ancient Upanishad is an integral part and parcel of some of the Vedic Samhitas. Prof. Seru selects only such Upanishads for his present study and presents the philosophical teachings in such

Upanishads alone as are closely connected with Vedas and as have been quoted by Sankaracharya in his scholarly commentary on Brahma Sutras. A curious reader, who does not possess sufficient knowledge of Sanskrit language, can have the main doctrines of the philosophy of Vedic Upanishads through the present work of Prof. Seru.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-381-6 1997 pp 316 Rs. 400.00



TREATMENT OF PATHOS IN SANSKRIT DRAMA

Ed. Dr. Pushpendra Kumar

This volume comprised of authentic articles on 'The Treatment of Pathos in the Sanskrit Dramas' by some of the eminent scholars in the Indological field. The present volume is divided into three parts. Part one deals with the general discussion of pathos (karuna),

its delineation by our acharyas and comparison with Western tragedy. The Sanskrit drama, in spite of its serious tone and deeply moving pathos, averts a formal tragedy in its western concept. This part presents the various viewpoints of the scholars on the problem of pathos.

The second part tries to evaluate the technique, objects and heights of the treatment of karuna by our different dramatists. It contains 18 articles by various eminent authors and is sufficient to prove the important place of pathos in the Sanskrit dramas and highlights the karuna consciousness of Sanskrit dramatists, both ancient and modern.

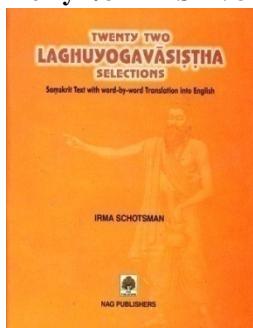
The third part deals mainly with the 'Pathos and Bhavabhuti'. Bhavabhuti excels all the other dramatists in the treatment of the Pathos. Karunyam have expressed their viewpoints in their articles. It is this poet who

enables us to reach the magnitude of pathos.

In the beginning comprehensive general introduction on the 'pathos in the dramatic literature' by the editor Dr. Pushpendra Kumar of University of Delhi, highlights the magnitudes of pathos in our literature. The present book is a study of the entire feed of Sanskrit dramatic literature with special reference to pathos. This is a first comprehensive effort to analyse the motive, design and structure of significant series plays in Sanskrit. It is hoped that it will revive interest in Sanskrit dramatic studies and inspire for the pushing into the subject depths and heights.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-121-X 1983 pp 308 Rs.250.00

TWENTY TWO



LAGHUYOGAVĀSIṢṬHA SELECTIONS

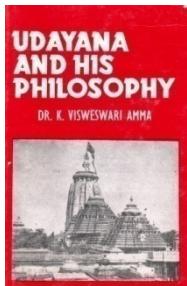
**(Sanskrit Text with word-by-word
Translation in English)**

IRMA SCHOTSMAN

The Yogavasistha is a remarkable, old Indian philosophical text composed in the Sanskrit language. The word yoga applies to jnana yoga

only and the word vasistha refers to the teacher Vasistha who in this text answers questions of lord Rama. The original text, named the large of Brihatyogavasistha, consists of more than 32,000 slokas of verses. The authorship of this compilation is traditionally attributed to Risi Valmiki. Some experts state that the first written version of the Yogavasistha dates from the sixth century A. D. By the middle of the ninth century a summary has been made by one Abhinandana, a great scholar of Kashmir, this ;abridged version, the Laghuyogavasistha, contains about 5000 slokas. The present word-by-word translation of more than 2500 slokas of the Laghuyogavasistha is especially meant for students with a basic knowledge of Sanskrit and for those interested in refreshing their Sanskrit knowledge, to help them to read philosophical Sanskrit texts on their own. Others, interested in philosophy, may find it easy to train the eyes to read only the English translation, while skipping the Sanskrit.

Crown 1/4 ISBN 81-7081-601-7 200 pp 544 Rs. 650.00



UDAYANA AND HIS PHILOSOPHY

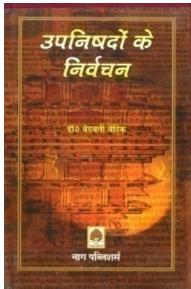
Dr. K. Visweswari Amma

Acharya Udayan occupies a prominent place in the history of India Philosophy. He was a great theistic logician of Mithila, the land of the Nyaya-Vaishesika philosophers of the eminence of

Vachaspati, Jayanta and Gangesha who flourished in the early medieval period of India history. Udayana heralded the advent of the Neo-Nyaya system, elaborately expounded about a century and a half later by Gangesha and paved the way for an effective synthesis of the Nyaya and Vaishesika schools of thought.

The present work attempts a critical study of the philosophy of Udayana with a comprehensive reference to the salient features of his philosophical doctrines and makes an appraisal of his contribution to the Nyaya-Vaishesika school of Indian philosophy.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-112-0 1985 pp 220 Rs. 200.00



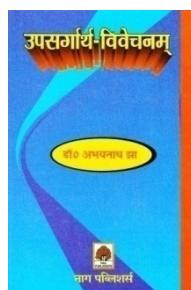
उपनिषदों के निर्वचन

डॉ. वेदवती वैदिक

औपनिषदिक वाडमय परम गुह्य तत्वों का अथाह समुद्र है। इस वाडमय की भाषा दुरुह और प्रतीकात्मक है। उपनिषदों में प्रयुक्त शब्दों के विविध अर्थों के भी विभिन्न भावों को समझे बिना उनका समचित अवगाहन असम्भव है। उपनिषद वाडमय के गुह्य अर्थों को अनावृत्त करने के लिये तत्त्ववेता ऋषियों ने अनेक पद्धतियों का प्रयोग किया है। उनमें निर्वचन-पद्धति अत्यन्त महत्वपूर्ण है। निर्वचन वह कुंजी है, जो शब्दों के असंख्य अर्थों के खजानों को खाल देती है।

यह ग्रन्थ इसी दिशा में किया गया प्रथम प्रयास है। उपनिषद्-वाडमय की विख्यात विदुषी डॉ. वेदवती वैदिक द्वारा परिश्रमपूर्वक सम्पन्न किए गए इस शोध-कार्य को मुमुक्षुओं, अध्येताओं और जिज्ञासुओं के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हम हर्ष का अनुभव कर रहे हैं।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-569-X 2003 pp 248 Rs. 200.00



उपसर्गार्थ-विवेचनम्

डॉ. अभ्यनन्द झा

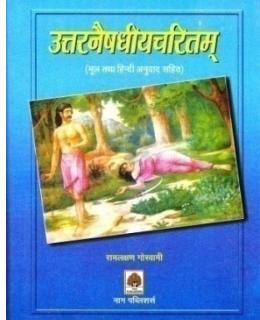
“उपसर्गार्थ विवेचनम्” इति शोधप्रबन्ध विषयस्य लेखनं विधाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालयस्य ‘चक्रवर्ती’ (पी. एच. डी.) इत्युपाधिप्राप्तर्थं द्व्यशीत्यधिकैकोनविशेतितमे चेशवीये वर्षे (1982) विरचितमासीत्। अत्र उपसर्गपदपदार्थादि चिरक्रमे पाणिन्यादि महर्षीणां मुनित्रयाणां शोधदृष्ट्या महता परिश्रमेण मया सम्बन्धितानामाचार्याणां ग्रन्थेभ्यः स्वारस्यं गृहीत्वा अनुमानेन सिद्धान्तानुगमेन च पक्षपातरहितः स्वाभिप्रायः समुद्घाटितः। सर्वत्रोम्यो—वैमनस्यजन्यं सामर्षजन्यं ऋषीणां टीकाकाराणां आपि उपसर्गार्थ—समीक्षणं तस्योद्भरणं च विषयस्य गाम्भीर्यमवगाहतें पञ्चवधिकरणेषु रचितोऽयं गवेषणाप्रबन्धः। उपसर्गाणां द्योतकत्वम्, वाचकत्वम् सकर्मकत्वाऽकर्मकत्वादि मतभेदस्थलं समीक्षकाणां महतुपकारं जनयिष्यतीति दृढ़ो मे विश्वासः। सिद्धान्तानुगमेन सर्वत्रानन्दवर्धन—नागेश—भट्टोजीदीक्षिता—दीनामाचा याणां

प्रमाणकोटि स्वीकृत्य तानेव सिद्धाताननुगच्छन्ति। अत एवायं शोधप्रबन्धः
सहृदयजनमनोविनोदाय चाणुमात्रमपि यदि प्रभवेत्तदा स्वात्मानं धन्यं मन्य इति।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-608-4 2005 pp 232 Rs. 150.00

उत्तरनैषधीयचरितम्

**मूल तथा हिन्दी अनुवाद सहित
राम लक्षण गोस्वामी**

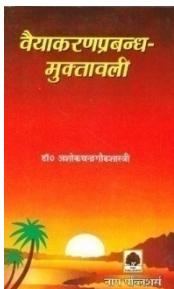


यह काव्यग्रन्थ संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य विद्यान कवि श्रीहर्ष (बारहवीं शताब्दी) के प्रेसिद्ध काव्य 'नैषधीयचरितम्' के उत्तरार्ध के रूप में प्रस्तुत किया गया है। श्रीहर्ष ने बाइस सर्गों में विभक्त अपने काव्य में नल-दमयन्ती के जन्म से लेकर

दमयन्ती के स्वयंवर और विवाह तक की कथा का समावेश कर के अपनी लेखनी को विराम दे दिया। नल-दमयन्ती के स्वयंवर और विवाह के बाद का कथानक और भी रोचक और उनके चरित के उदात्तगुणों को उजागर करने वाला है इसलिए प्रस्तुत काव्य के रचयिता ने महाभारत और स्कन्द पुराण से नल दमयन्ती का आख्यान लेकर 'उत्तरनैषधीयचरितम्' काव्य की रचना की। इस काव्य में श्रीहर्ष के "नैषधीयचरितम्" की तरह बाइस सर्ग और उतने ही श्लोक रखे हैं जितने श्रीहर्ष ने अपने काव्य में रखे हैं। प्रत्येक सर्ग के अन्त में अपने माता-पिता के नाम के साथ-साथ अपना और अपने समय का परिचय दिया है। यह सम्य केवल बाह्य कलेवर तक ही सीमित नहीं है, संस्कृत भाषा की प्राञ्जलता, काव्य गुण और प्रभावपूर्ण वर्णन शैली में भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। काव्य पढ़ने से लगता है कि श्रीहर्ष से आठ सौ वर्षों बाद उन्हीं के 'समानधर्मा' किसी कवि ने बीसवीं शताब्दी में उत्पन्न होकर उनके अधूरे काव्य को पूरा कर दिया हो। इस काव्य को देखने से यह भी सुखद अनुभव होता है कि संस्कृत काव्य लिखने वाले विद्वान हो सकते हैं।

लेखक ने नेयार्थता, दूरुहता तथा पंचनील जैसे गूढ़ार्थक शब्दों से बचते हुए सहज भाषा का प्रयोग किया है जिससे रस निष्पत्ति में बाधा न पड़े। साथ ही उन्होंने कठिन शब्दों के लिए पादिट्पणी भी स्वयं लिखी है। फिर भी संस्कृत न जानने वाले सहृदय लोग भी इस काव्य का रसास्वादन कर सकें इसके लिए तत्त्वबोधिनी नामक हिन्दी टीका भी प्रत्येक श्लोक के साथ प्रस्तुत की गई है। श्लोकों का हिन्दी अनुवाद करते हुए इस गात का ध्यान रखा गया है कि काव्य के मूल भाव का व्याघात न हो। आवश्यकतानुसार पारिभाषिक एवं विशिष्ट शब्दों की व्याख्या भी कर दी गई है। सावधानी बरतने के बाद भी भाषा, भाव और अर्थ सम्बन्धी मानव सुलभ वृत्तियाँ रह गई हों उसे विद्वान पाठक सुधार लेंगे तथा सूचित करेंगे ताकि अगले संस्करण में यह ग्रन्थ संशोधित रूप में प्रस्तुत किया जा सके।

Crown 1/4 ISBN 81-7081-612-2 2005 pp 472 Rs. 500.00



वैयाकरणप्रबन्धमुक्तावली

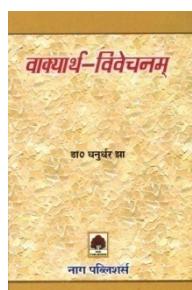
डॉ. अशोकचन्द्रगौडशास्त्री

व्याकरणशास्त्रस्य पक्षत्रयम्भवति – व्युत्पत्तिपक्षः, दार्शनिकपक्षः ऐतिहासिक–पक्षश्च। सत्स्वव्यनेकेषु ग्रन्थेषु सरलया शास्त्रीयभाष्ययैतादृशग्रन्थस्याऽभाव आसीद् यस्त्रीनपि पक्षानाश्रित्य निबन्धान् प्राशयेत्। ग्रन्थउस्मिन् त्रीनपि पक्षानाश्रित्य निबन्धः निबद्धः व्युत्पत्तिपक्षे व्याकरण – शास्त्र महत्त्व – व्याकरणपदार्थ – सूत्र – परिभाषा – सन्दिधि – वर्ण – स्वरतत्त्व – समासादिविषयाः दार्शनिकपक्षे च स्फोटवाद – कारकार्थ–धात्वर्थ – काल – दिक् – संख्याप्रभृतयो विषयाः निबद्धाः। तथा च द्वितीयभागे संक्षेपतो व्याकरणशास्त्राणां संक्षिप्तां विकासः, प्रमुखानां वैयाकरणानां च संक्षिप्त परिचयः समाविष्टः। स्थाने-स्थाने गभीराः गूढविषयाश्च विविधतालिकभिश्च सम्यग् व्याख्याताः। एवम् ग्रन्थोऽयं व्याकरणशास्त्रे भाषाविज्ञाने च पिपठिषूणामनुसन्धित्सूनां छात्राणां विदुषां च कृते उपयोगी वर्तते।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-610-6 2005 pp 594 Rs. 300.00

वाक्यार्थ-विवेचनम्

डॉ. धनुर्धर ज्ञा

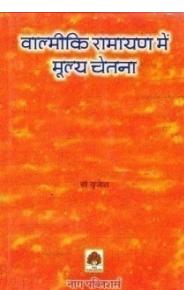


प्रस्तुतग्रन्थोऽयं वाक्यार्थविवेचनम्। अत्र वाक्यस्य लक्षणानां, भेदानाम्, अङ्गानाम्, शाब्दबोधानाम् च, विवेचनं विधाय वाक्य-विश्लेषणं कृतम्, तद्विधि भारतीयविधिना, पाश्चात्यविधिना च। तदनन्तरं पाणिनीयाद्याध्यायां यत्र हि वाक्यचर्चा कृतास्ति, तासां संक्षिप्तां विवेचनम्, वाक्यार्थज्ञाने सामर्थ्यविवेचनञ्च प्रस्तुतम्। दशमेध्याये च वाक्यार्थविचारो विद्यते। तत्र अभिहिताच्यवादिनाम्, अन्विताभिधानवादिनां च मतानुसारेण विवेचनं विधाय वैयाकरणमतानुसारेण प्रतिभायाः विवेचनं कृतं विद्यते। एवम्प्रकारेण वाक्यार्थविषयकः सर्वो हि विषयः संक्षिप्तरूपेण विवेचितो मयेति।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-565-7 2002 pp 368 Rs. 350.00

वाल्मीकि रामायण में मूल्य चेतना

डॉ. वृजेश



वाल्मीकि ने राम की भगवता को प्रच्छन्न और प्रकट दोनों रूपों में भिन्न-भिन्न अनुपात में भिन्न-भिन्न स्थानों पर अभिव्यक्ति दी है। सत्य के प्रति उनकी निष्ठा ही उनकी भगवत की सबसे बड़ी कस्तौती है।

इसी पृष्ठभूमि में वाल्मीकि ने जिन नानाविध मूल्यों की चर्चा की है, उनका विवेचन ग्रन्थ के छः अध्यायों में विस्तार से किया गया है। प्रथम अध्याय में काव्यमूल्य और जीवनमूल्य के

सम्बन्ध में वाल्मीकी की मान्यताओं का निरीक्षण—परीक्षण किया गया है। तृतीय अध्याय में रामायण में उपवर्णित सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की छानबीन की गई है। चतुर्थ अध्याय में धार्मिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विश्लेषण किया गया है। ग्रन्थ के पंचम अध्याय में आर्थिक, राजनैतिक एवं मनोवैज्ञानिक मूल्यों का रामायण के प्रसंग में विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में पूर्ववर्ती पाँच अध्यायों में उपवर्णित मूल्यों की उपादेयता एवं वर्तमानकाल में इन की प्रासंगिकता की चर्चा की गई है।

धर्म, अर्थ तथा काल के स्वर्णिम सन्तुलन पर वाल्मीकि का जोर है। वाल्मीकि की मूल्यमांसा मूल्यवान से बहुमूल्य और फिर बहुमूल्य से अमूल्य की उपलब्धि की तीर्थ—यात्रा है और वाल्मीकि के राम इसी अमूल्य—मूल्य या परम मूल्य के चिन्मय—विग्रह हैं।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-548-7 2002 pp 236 Rs. 200.00

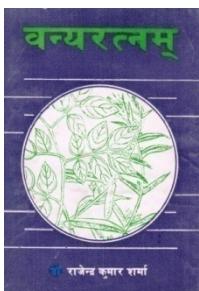
वाल्मीकि रामायण तथा उत्तररामचरित का तुलनात्मक विवेचन

डॉ. श्रद्धा शुक्ला



लौकिक संस्कृतकाव्य के आदि प्रतिष्ठापक एवं जन्मदाता आदि कवि वाल्मीकि ने अपनी रामायण के काव्यतत्त्वों का पूर्वभास प्रस्तुत पर परवर्ती कवियों का मार्ग प्रदर्शन किया। वे काव्यजगत् के उदीयमान भास्कर हैं। आदर्शमानव राम के चरित्र को लेकर रचित इस काव्य में ऐतिहासिक काव्य एवं अलंकृत काव्य दोनों के गुण पाये जाते हैं। इस महाकाव्य का रसात्मक सौन्दर्य जितना चरमोत्कर्ष पर है उतना ही उत्कृष्ट कलात्मक सौन्दर्य भी है। महाकवि भवभूति संस्कृत साहित्य के गौरव माने जाते हैं। महाकवि भवभूति की सर्वश्रेष्ठ नाट्यकृति है उत्तररामचरित, जो करुणरस प्रधान नाटक है। इस महाकवि ने भारतीय नाट्यपरम्परा को एक नई शैली एवं शवित्र प्रदान की। प्रस्तुत ग्रन्थ के सात अध्यायों में आदि काव्य रामायण तथा उत्तररामचरित का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया गया है। कथानक, रसभिव्यञ्जना, अलंकार योजना, प्रकृति चित्रण, चरित्रांकन तथा भाषा शैली की दृष्टि से इन दोनों काव्य कृतियों का विश्लेषण किया गया है। प्रथम बार इन दोनों काव्य कृतियों का सर्वांगीण एवं तुलनात्मक विवेचन यहां प्रस्तुत है।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-301-8 1995 pp 260 Rs. 150.00



वन्यरत्नम् (सुभाषितप्रद्यानं संग्रह) संकलित राजेन्द्र कुमार शर्मा

वृक्षों के प्रति जागृतिक चेतना इस शताब्दी के उत्तरार्द्ध की एक प्रमुख घटना मानी जाएगी। जैसे—जैसे वनों का विनाश हो रहा है वैसे—वैसे वनों के संरक्षण के लिए चिन्ता भी बढ़ रही है। पेड़ों के महत्व को सबसे पहले

आर्य ऋषियों ने समझा। उनके आश्रम अरण्य (अरण्य) के बीच थे। प्रकृति से उनके चिन्तन को प्रेरणा मिली और उसमें से एक अरण्य संस्कृति का जन्म हुआ, जिसके तीन मूल तत्त्व हैं :—

(1) प्रकृति में पेड़—पौधों, पशु—पक्षी, मनुष्य, नदी और पहाड़ सबमें जीवन व्याप्त हैं।

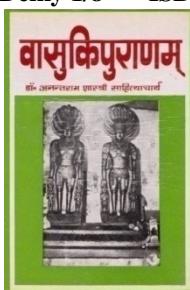
(2) जहाँ—जहाँ जीवन है उसके प्रति मानव का व्यवहार पूजा का होना चाहिए। भगवान् कृष्ण ने अपनी विश्रुतियों का वर्णन करते हुए कहा है — ‘पेड़ों में मैं पीपल हूँ।’

(3) प्रकृति के साथ प्रेम मूलक सम्बन्ध तब तक सम्भव नहीं जब तक हम सादगी और संयम का जीवन न अपनायें। इसलिए हमारे समाज में विशिष्ट आदर मुकुटधारी सम्राटों का नहीं बल्कि कौपीनधारी तपस्वियों का हुआ है।

श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा ने ‘वन्यरत्न’ पुस्तक में संस्कृत वाङ्गम से सारे सन्दर्भों को संगृहित कर समाज की महान सेवा की है। इस से एक ओर जहाँ हमारे बुद्धिजीवी वर्ग के मन से हीनता की यह भावना दूर होगी कि जो कुछ पश्चिम से आता है वही अच्छा है वहीं दूसरी ओर भारतीय वाङ्मय के अध्ययन के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी।

यह केवल साहित्यिक कृति ही नहीं है बल्कि व्यावहारिक जीवन में अमल में लाने के लिए बहुमूल्य उपदेशों का भण्डार है। जिन वृक्षों को महत्व दिया गया हैं वे किसी न किसी रूप में मानव जीवन की समृद्ध और आनन्दमय बनाते हैं।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-267-4 1992 pp 120 Rs. 100.00



श्रीवासुकिपुराणम्

समीक्षात्मक सम्पादन

सम्पादक — डॉ. अनन्तकुमार शास्त्री

The predominance of the Nag-cult in the Vasuki Purana strikes a synthesis between Buddhist and Shaiva Schools. This tendency is clearly visible throughout the work.

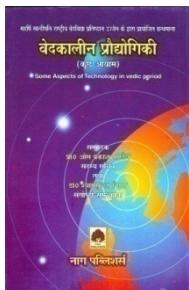
The author of the Vasuki-Purana has tried to bridge the gulf between the Shaivas and the Vaisnavas by propounding the doctrine of trinity (Trideva).

The Vasuki-Purana is an attempt to synthesize the doctrine of salvation as laid down in Buddhism and Shaivism.

It lays emphasis on purity, renovation and self-study in thought, word and deed, while strengthening the precepts of Brahmanism. Thus the work fully represents the medieval values. Along with a synthetic attitude, one finds in it a sense of mundane welfare as well. The Vasuki Purana emphasis only worldly welfare. The Vasuki Purana prefers Pravrtti-Marga as against the Nivrtti-Marga. Under the impact of

Buddhism the Vasuki Purana inspires one toward the Pravrtti-Marga. In this work Dr. A. R. Shastri has dealt with the data of the Vasuki Purana and its place in the Pauranika literature. The Vasuki Purana is a part of the work called Bhuvanakosa Varnanodyota which is again a part of Bhringissamhita.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-204-6 pp 570 2003 Rs. 350.00



वेदकालीन प्रौद्योगिकी — (कुछ आयाम)

Some Aspects of Technology in Vedic Period

सम्पादक

प्रो. ओम प्रकाश पाण्डेय

संगोष्ठी समन्वयक

डॉ. श्यामसुन्दर निगम

इस ग्रन्थ में वैदिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विषय में विस्तृत प्रकाश डाला गया है। इसका प्रकाशन इस विश्वास के साथ किया जा रहा है कि राष्ट्र के अभ्युदय के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी सर्वाधिक आवश्यक है। इस क्षेत्र में कार्य करने वाले एवं सामान्य पाठकगण इससे लाभान्वित हो सकेंगे।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-573-8 2003 pp 158 Rs. 110.00

वेद—मीमांसा

मूल लेखक — श्री अनिवार्ण :
हिन्दी अनुवादक — छविनाथ मिश्र

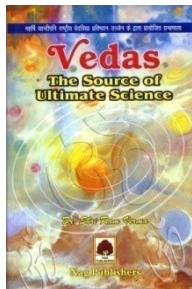
'वेदमीमांसा' का मूल प्रकाशन बैंगला भाषा में कलकत्ता संस्कृत कॉलेज की शोधग्रन्थमाला (सं. 13) के अन्तर्गत पहली बार सन् 1961 में हुआ था। 'वेदमीमांसा' जैसा कि नाम से स्पष्ट है, में सम्पूर्ण वैदिक वांमय की अत्यन्त

गम्भीर समीक्षा की गई है। इस प्रकार के अन्य अनेक ग्रन्थ भी उपलब्ध हैं, लेकिन उनसे इसकी विलक्षणता इस अर्थ में है कि इसमें पश्चिमी विद्वानों के उच्चिष्ट भोज से बचकर, श्रुतिपरम्परा की परीक्षा तर्क और श्रद्धा के मिश्रित मानदण्ड से की गई है। लेखक पर यूरोपीय दुराग्रह का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। इसके अनुवादक श्री छविनाथ मिश्र हिन्दी के यशोधर सुकवि हैं, जिन्होंने अनेक वेद—मन्त्रों के हिन्दी में अत्यन्त प्रीतिकर काव्य—रूपान्तर किये हैं। वैदिक वांमय के गम्भीर अध्ययन ने उन्हें इस कार्य में और भी समर्थ बनाया है।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-576-2 (set) pp 1524 (3 vols.) 2003-06 Rs. 825

VEDAS : THE SOURCE OF ULTIMATE SCIENCE

Dr. Shri Ram Verma

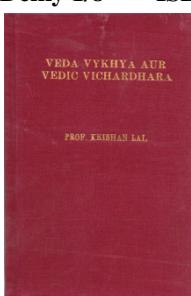


The purpose of this book is to propagate Vedic thoughts throughout the world and improving the image of modern science by showing that there is an essential harmony between the spirit of Vedic Wisdom and Modern Science. This book is an introduction to the studies of Vedic Literature in light of scientific approach. All the new truths emerging out of 20th century through scientific discoveries have pushed science from the domain of matter to the realm of philosophy and specially the philosophy of consciousness as discovered by Vedic Rishis. Parallelism in Vedic thoughts and Modern Science has been shown in this book. The intention of drawing parallelism in Vedic thoughts and Modern Science is not to show that every thing of modern science has been understood in the past by intuition, but just to indicate that there are other methods of thinking to arrive at generalities in much the same way.

This book in its eleven chapters aims at the latest explorations in different branches of science to show how science is increasingly approaching the conclusions of the Vedic Literature. The central idea of this book is to interconnect between the picture of universe as viewed by a modern physicist and by a practitioner of Indian philosophical system and a Vedic scholar.

Vedas are like a deep ocean, full of precious jewels; and whosoever dares to plunge deep into it brings out his/her wants. Everything is available here, but inconcise form. The author believes that religions of the world play a positive role for establishing world peace through inter-faith dialogue and science-religion dialogue, which is the need of the hour.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-618-1 2005 pp 480 Rs. 350.00



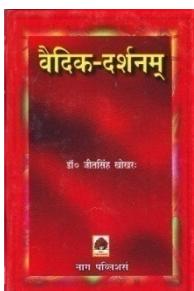
वेद व्याख्या और वैदिक विचारधारा

सम्पाद प्रो. कृष्ण लाल

प्रस्तुत पुस्तक में वेद-सम्बन्धी विविध विषयों मूर्धन्य विद्वानों के शोधपूर्ण लेख संगृहीत हैं। वैदिक वाडमय अत्यन्त विपुल है। वेद पर अधिक निष्पक्ष शोध की आवश्यकता के दो प्रमुख कारण हैं। एक तो यह कि मानव-मात्र की प्रथम पुस्तक होने के कारण यह कि सम्पूर्ण (विशेष रूप से भारतीय) धर्म और संस्कृति का मूलाधार

है। और दूसरे अत्यन्त प्राचीन होने के कारण भाषा की अगम्यता तथा व्याख्याकारों के पुर्वाग्रहों के कारण भी अपने—अपने मनमाने ढंग से इसकी व्याख्यायें की गई हैं। इन व्याख्याओं से बहुत बार वेद के अर्थ तर्कहीन, उन्मत्त प्रलाप, असम्बद्ध प्रतीत होने लगते हैं। शोध का अर्थ सत्य तक पहुचना होता है। परन्तु जिस शोध के द्वारा सत्य के निकट पहुँचे या सत्य का मार्ग जान जायें उसकी उपादेयता भी बहुत अधिक है क्योंकि मार्ग का ज्ञान होने पर ही उसमें प्रवृत्त हुआ जा सकता है। आगे के शोध के लिये मार्ग प्रशस्त हो यह भी शोध का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। यही इस पुस्तक का लक्ष्य है।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-161-9 1987 PP 102 Rs. 100.00



वैदिक-दर्शनम्

डॉ. जीतसिंह खोखरः

अनन्त-ज्ञान-चक्रस्य निधि: वैदिक-साहित्यम् तथा च दार्शनिकदृशा वैदिक-साहित्ये विश्वस्य सकलानां दर्शनानां बीजनि उपलभ्यन्ते।

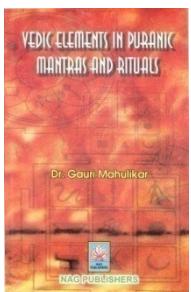
अस्मिन् वैदिक-दर्शनम् इति ग्रन्थे
भारतीय-पाश्चात्य-दार्शनिकानां मतानि यथास्थानं
दर्शतानि सन्ति । अत्र वैदिकदर्शनस्य सुष्टि-रचनायाः, ब्रह्मणः, आत्मनः,
ईश्वर-सत्त्वायाः, एकेश्वरवादस्य, बहुदेववादस्य, वैदिक-देवतानां, वैदिकयज्ञानां,
वैदिकभक्तोः, वैदिक-ऋषीणां, जीवस्य, मायायाः च वर्णनं सुचारु रूपेण कृतं
विद्यते तथा च वेदशब्दस्य दर्शनशब्दस्य च व्युत्पत्तिः, वेददर्शनयोः सम्बन्धः,
अपराणां दर्शनानाम उत्पत्तिस्थानं वेद एवं वर्तते, इति वर्णनमपि विद्यते ।

वेदस्य 'व्यावहारिक दर्शनस्य प्रस्तुति' अस्य ग्रन्थस्य मुख्या विशेषता वर्तते तथा च 'उपनिषदां दर्शनस्य दर्शनम्' अस्य अनन्या विशेषता।

संस्कृताज्ञानां छात्राणां पाठकानां वा बौद्धिक—योग्यतां विचार्य
सरल—संस्कृत—प्रयोगोऽपि ग्रन्थस्य सौन्दर्यं वर्धयति।

सर्वथा प्रशंसनीयोऽयं गृन्थः ।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-537-1 2001 pp 232 Rs.200.00



VEDIC ELEMENTS IN PURANIC MANTRAS AND RITUALS

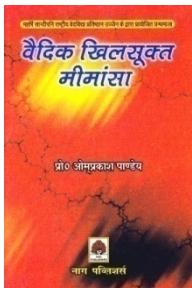
Dr. Garuri Mahulikar

The book presents a comparative study of some deities, mantra-s, rituals, myths etc., reflected in the Purana-s. Purana-s, the literature; of the masses, attempt at the re-statement of the meaning of the Veda-s in their own style. In doing so, they resort to additions, omissions, simplifications and modifications; yet the main

stream is never lost sight of.

Well considered arrangement of the chapters and two appendices, giving a birtd's eye-view of the position of the Vedic mantra-s in the Purana-s, special features of the book. It is hoped that this seminal work, presenting a comparative angel, would be of great help to those interested in such studies.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-513-4 2000 pp 404 Rs. 350.00



वैदिक खिलसूक्त मीमांसा

प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय

वैदिक खिलसूक्तों में मूलतः वे मन्त्र हैं, जो अपनी शाखा में तो मूल माने जाते हैं, लेकिन दूसरी शाखा में खिल अथवा शाखान्तरीय कहलाते हैं। इस ग्रन्थ में खिलसूक्तों की पृष्ठभूमि प्राचीनता, स्वरूप, छन्दोविचिति, देवता, विनियोग, भाषा, काव्यात्मक सौन्दर्य एवं उनमें निहित

सांस्कृतिक तत्त्वों पर प्रामाणिक विचार किया गया है। यह लेखक के दीर्घकालीन अनुसन्धान का प्रतिफल है। 20वीं शताब्दी के मूर्धन्य वैदिक विद्वान् स्व. डा. चिन्तामणि गणेश काशीकर की सम्मति है कि इस ग्रन्थ के अध्ययन के बिना खिलों को नहीं जाना जा सकता।

"I have gone through your valuable book. You have discussed in detail the various aspects of the Khilas. It has given me pleasure to say that yours is a significant contribution to the study of the Khilas, since I published my edition. One who may desire to enter into the subject, cannot do so unless he carefully studies your scientific production".

C. G. Kashikar, Pune

Demy 1/8 ISBN 81-7081-594-0 2004 pp 424 Rs. 300.00

वैदिक कोश

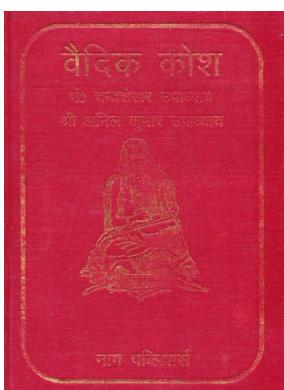
पं. चन्द्रशेखर उपाध्याय

एवं

श्री अनिल कुमार उपाध्याय

वेदार्थ ज्ञान में सहायता के उद्देश्य से वैदिक शब्दों के संग्रह हेतु पं. श्रीचन्द्रशेखर उपाध्याय रचित "वैदिक कोश" अपने आप में नूतन एवं सफल प्रयास है। यद्यपि सर्वथा निर्दोष एवं परिपूर्ण कहना ईश्वर के अतिरिक्त सृष्टि-प्रक्रिया में सम्भव नहीं है। तथापि इस दिशा में अन्य विद्वानों के द्वारा किये गये ग्रन्थात्मक प्रयासों में

इनका यह प्रयास कुछ विशेषताओं से परिपूर्ण है। चिन्तामणि शर्मा काशीकर द्वारा सम्पादित "श्रौतकोश" जिसमें अत्रिशत्र, उक्त्य, वाजसनेय आदि शब्दों का



विस्तार से विवरण दिया गया है। लाहौर के विश्वबन्धु शास्त्री द्वारा सम्पादित “वैदिक शब्दार्थ परिजात” एवं “वैदिकपदानुक्रमकोष,” जो अनेक भागों में प्रकाशित हैं, आदि कोशों में तत्त्व स्थलों के प्रायः, अड़कमात्र दिये गये हैं। इनमें संस्कृत—माध्यम से ही उल्लेख किया गया है, हिन्दी नहीं, किन्तु प्रकृत कोश में मन्त्रों के उद्घरण स्पष्ट दृष्टिगत हो जाते हैं।

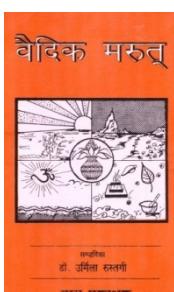
हिन्दी में वेद के प्रायः सभी पदों का पारम्परिक अर्थ प्रस्तुत करने वाला यह प्रथम ग्रन्थ है। मैक्यडानल एवं कीथ की वैदिक इण्डेक्स तथा तदनुगामी डॉ. सूर्यकान्त के वैदिक कोष में मात्र नामों (संज्ञाओं) तथा विशिष्ट विषयों को ही वर्णन है। संज्ञा, क्रिया, निपात आदि सभी पदों की प्रकृति—प्रत्ययात्मक व्युत्पत्ति यथासाध्य इस कोश में प्रदर्शित की गयी है। मन्त्रों के उदघृत अंश का अनेकत्र हिन्दी में अर्थ भी दिया गया है, जिससे पद की प्रसङ्गत अर्थ सङ्गति स्पष्ट हो जाती है। पदों के एकाधिक अर्थ होने पर सभी अर्थों को सप्रमाण उदघृत किया गया है। आर्यसमाज के अभिमत अर्थ को भी पृथक् दिखाया गया है।

कतिपय पदों में मैक्यडानल एवं कीथ के इण्डेक्स तथा डॉ. सूर्यकान्त के कोश से बहुत ही अधिक सामग्री इस कोश में दी गई है, यथा पृष्ठ 76 में ‘अनुमति’ शब्द में 14 उद्घरणाङ्क इस कोश में दिये गये हैं। जबकि डॉ. सूर्यकान्त के कोश में मात्र 4 ही उद्घरण दिये गये हैं। इसी प्रकार हंसराज ‘वैदिक श्रौतकोश’ में मात्र ब्राह्मण ग्रन्थों के मूल उद्घरणों पर विशेष बल दिया गया है। जबकि इस कोश में विद्वान् लेखक ने संहिता और ब्राह्मण दानों के उद्घरणों का उल्लेख किया है। इस प्रकार नानाविधि विशेषताओं से युक्त यह “वैदिक कोश” सभी वेदार्थ—जिज्ञासुओं के लिए अत्यन्त उपादेय है।

मण्डन मिश्र

Crown 1/4 ISBN 81-7081-292-5 (set) 1995 pp 1540 (3 vols) Rs.4500

वैदिक मरुत् सम्पादिका : उर्मिला रुस्तगी



साक्षात्कृतधर्मी ऋषियों ने ब्रह्माण्ड के धारक जिन तत्त्वों की अनुभूति की और जिनके सुमनस्यमान होने में मानव का कल्याण देखा वे ही तत्त्व, ऋषियों की परिभाषा में ‘देव’ है। व्यष्टि की दृष्टि से ये तत्त्व अनेक हैं और समष्टि की दृष्टि से एक है। यही देवतत्त्व सृष्टि का धारक है और वेद का प्रतिपाद्य है। वस्तुतः, देवतत्त्व ही वेद तत्त्व है। उस देवतत्त्व का ऋषियों ने जैसा देखा, समझा और उनके साथ साक्षात्सम्बन्ध की जैसी अनुभूति की उसकी वैसी ही अभिव्यक्ति मन्त्रों के रूप में की। इसलिये ऐसा मानने में कोई अत्युक्ति नहीं कि वेद में केवल सत्य ज्ञान है, सत्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं। सत्यं वै देवाः ऋषि दर्शन का निचोड़ है। यही ऋत है।

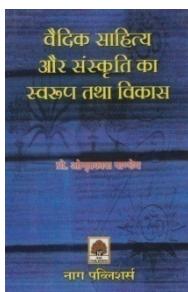
प्रसन्नता की बात है कि आज भारत में ऋषि दर्शन को मूल स्प में समझने का प्रयास शुरू हो गया है। वेद संस्था में प्रतिवर्ष एक देवतत्त्व पर संगोष्ठी आयोजित कर उसके समग्र पहलुओं पर विचार करने की परम्परा

चल पड़ी है। इसी परम्परा में वेदों में मरुत् विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई थी। इस संगोष्ठी में विद्वानों ने मरुत् तत्त्व पर अनेक दृष्टियों से विचार किया। उन्होंने जो शोधपत्र संगोष्ठी में प्रस्तुत किये उन्हीं का संकलन प्रस्तुत ग्रन्थ में किया गया है। ग्रन्थ में निबन्धों को पांच शीर्षकों के अन्दर सङ्गृहीत किया है ये पांच शीर्षक हैं –

1. वैदिक ग्रन्थों में मरुतय
2. विभिन्न भाषाओं में मरुत
3. मरुतों का स्वरूप
4. विज्ञान और मरुत
5. मरुत् – एक व्याख्यानात्मक दृष्टि

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह ग्रन्थ वेद के छात्रों के लिये अधिक उपयोगी सिद्ध होगा तथा इस दिशा में आगे भी कार्य करने की प्रेरणा देगा।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-287-9 1993 pp 318 Rs. 200.00



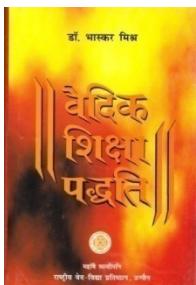
वैदिक साहित्य और संस्कृति का स्वरूप तथा विकास

प्रो ओमप्रकाश पाण्डेय

विगत डेढ़ शताब्दियों में, बहुसंख्यक पौरस्त्य और पाश्चात्य वेदानुशीलियों ने वैदिक साहित्य तथा संस्कृति के परिचयात्मक ग्रन्थों की रचना की, जिनमें से अधिकांश आज कालबाह्य को चुके हैं और उनका केवल ऐतिहासिक संग्रह की दृष्टि से ही मूल्य रह गया है। सम्प्रति विद्यमान कुछ अन्य ऐसे ग्रन्थों में दृष्टिकोणों का असन्तुलन, एकाडिगता और पूर्वाग्रहों की तो भरमार है, किन्तु नवीन तथ्यों और प्रमाणिकता का अभाव है। ऐसी स्थिति में, वैदिक साहित्य एवं संस्कृति के स्वरूप पर एक ऐसे सर्वाङ्गीण वैज्ञानिक, सन्तुलित और नवीन

शोध-निष्कर्षों से संबलित परिचयात्मक इतिहास ग्रन्थ की आवश्यकता सुदीर्घकाल से अनुभव की जा रही थी, जो सामान्य अध्येताओं, उच्च कक्षाओं के छात्रों और गोधप्रज्ञों के लिए समान रूप से उपादेय सिद्ध हो सकें। यह अधुनात्म शोध-परिणामों से पूर्ण, सन्तुलित दृष्टि बिन्दुओं से समन्वित और एकांगीपन से मुक्त है। वेद हमारे गौरव ग्रन्थ हैं, इस तथ्य को कहीं भी ओझाल नहीं होने दिया गया है। ऋग्वैदिक खिल सूक्तों, वेदों के आधुनिक भारतीय भाष्यकारों, वैदिक विज्ञान और गणित, सामग्रान की प्रक्रिया, वैदिक काव्य के सौन्दर्य, दार्शनिक तत्त्व ज्ञान, ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों, भक्तिभावना, श्रौतसूत्रों और वैदिक ज्ञानों पर इसमें नवीन, विशिष्ट और विस्तृत सामग्री का समावेश है। इस प्रकार वैदिक साहित्य और संस्कृति के समग्र स्वरूप को अत्यन्त निष्ठापूर्वक विस्तृत पटल पर उपस्थापित करनें का भरसक प्रयत्न लेखक ने किया है।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-602-5 pp 488 2001 Rs. 500.00



वैदिक शिक्षा पद्धति

डॉ. भास्कर मिश्र

प्राचीन भारतीय जीवन पद्धति में त्याग के आदर्शों का विशिष्ट महत्व है। ईशावासरूपनिषद् में त्यागपूर्ण भोग का उपदेश देते हुए कहा है कि 'तेन त्यक्तेन बुज्जीथः।' इसके साथ-साथ अन्य की सम्पत्ति के लिए लोभ न करने का परामर्श भी दिया है। उपनिषद् के इस सन्देश ने समस्त पुराण, स्मृति और भारतीय साहित्य को प्रभावित किया है। शिक्षा जीवन के सातत्य और विकाशोन्मुख को बनाये रखने का एक मात्र साधन है। अतः भारतीय शैक्षिक परम्परा का अनुगमन करते हुए त्यागवृत्ति पूर्वक भोग में ही वर्तमान की समस्याओं का समाधान ढूँढा जा सकता है।

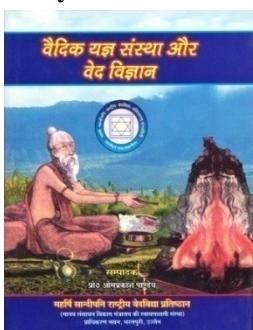
आज की शिक्षा पद्धति पुस्तक केन्द्रित, पाठ्यक्रम केन्द्रित तथा परीक्षा केन्द्रित दिखाई देती है। जबकि इसे ज्ञानोन्मुख, मूल्योन्मुख तथा आदर्शोन्मुख बनाये जाने की आवश्यकता है जिसमें बच्चे तथा समाज के सर्वविधि विकास का स्थान है। वैदिक शिक्षा यपद्धति भारतीय शैक्षिक विकास हेतु समुचित पथ-प्रदर्शन करने में समर्थ है। इस ग्रन्थ द्वारा वैदिक वाड़मय में शिक्षा सम्बन्धि अनेक तत्त्वों का आलोकन करके वर्तमान भारतीय शिक्षा पद्धति में इसके उपयोग की सामग्री प्रस्तुत की गई है। पौष्टिक उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण-विधि, उच्चारण-शिक्षण तथा वैदिक पाठ संरक्षण, गुरु-शिष्य के पारम्परिक सम्बन्ध आदि के विषय में प्रचुर सामग्री इस ग्रन्थ में उपलब्ध है। यह ग्रन्थ प्राचीन भारतीय शिक्षण परम्परा की जानकारी देकर एवं वर्तमानकालीन शिक्षण व्यवस्था को समृद्ध करने में पर्याप्त सहायक है।

Demy 1/8

pp 281

2003

Rs. 270.00



वैदिक यज्ञ संस्था और वेदविज्ञान

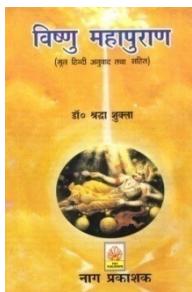
सम्पादक
ओमप्रकाश पाण्डेय

वैदिक यज्ञ संस्था विश्व में अपने ढंग की अकेली व्यवस्था है, जिसकी प्रतीकात्मक अर्थवत्ता, अनुष्टानिक जटिलता, जीवन और जगत् में उपादेयता तथा प्रासङ्गिकता की विवेचना प्रस्तुत ग्रन्थ में आधिकारिक मनीषियों ने अपने गवेषणापूर्ण निबन्धों के माध्यम से इस ग्रन्थ में की है।

इस ग्रन्थ का दूसरा प्रमुख प्रतिपाद्य है वेदविज्ञान वेदों में निहित बहुविधि विज्ञानों का उद्घाटन प्रकृत पुस्तक में वैज्ञानिकों, विज्ञान के आचार्यों और वैदिक विद्वानों ने सम्मिलित रूप में किया है। इसी कारण यह ग्रन्थ विद्वानों, वैज्ञानिकों, वेद के अध्येताओं और जनसामान्य के लिए समानरूप से उपयोगी है।

Crown 1/4 ISBN 81-7081-601-7 2004 pp 362 Rs. 500.00

श्रीविष्णु महापुराण

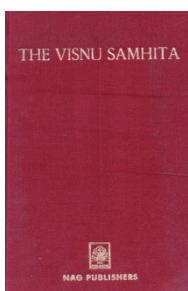


मूल, हिन्दी अनुवाद सहित . डॉ. श्रद्धा शुक्ला
 पुराणों में विष्णु-पुराण को महत्त्वपूर्ण रथान प्राप्त है। दाशनिक महत्त्व की दृष्टि से यह भागवत पुराण के बाद आता है। यह वैष्णव दर्शन का मूल आधार है। पञ्च-लक्षण रूप में यह पुराण अन्य पुराणों की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है। विष्णु के माहात्म्य का कीर्तन करने के बाद पराशर विश्व की सृष्टि की वर्णन करते हैं। यहाँ

मूल सांख्य दर्शन के सिद्धान्तों को लोक-प्रचलित विचारों से मिला दिया गया है। देवों, दैत्यों, वीरों तथा मानव जाति के आदि पुरुषों की उत्पत्ति के वर्णन के साथ अनेक काल्पनिक कथाएँ, रूपक तथा आदि राजाओं और ऋषियों के आख्यान हैं। समुद्र-मंथन, श्री देवी, कुमार ध्रुव, प्रह्लाद आदि प्रसिद्ध कथाओं का इसमें वर्णन है। विष्णु पुराण में भारत का भूगोल, मनुओं तथा उनके मन्वन्तरों का वर्णन, सूर्यवंशी तथा चन्द्रवंशी राजाओं का वर्णन, दक्ष की उत्पत्ति, इला का पुरुष बनना, इक्ष्वाकु का मनु की छोंक से होना, कृष्ण की जीवनी, तथा कृत, त्रैता, द्वापर और कलि इन चार युगों आदि का वर्णन है।

प्रस्तुत संस्करण में मूल श्लोक के साथ साथ हिन्दी अनुवाद सरल भाषित स्तर पर संजोया गया है। यह भी प्रयत्न किया गया है कि अनुवाद की विश्वनियता एक शोधपूर्ण संस्कृत व्याख्या से कम न हो।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-415-4 (set) 2005 pp 1000 (2 vols) Rs. 1500



THE VI^SNU SAMHITĀ

विष्णुसंहिता

EDITED BY

M. M. GANPATI SĀSTRĪ

WITH AN ELABORATE

INTRODUCTION

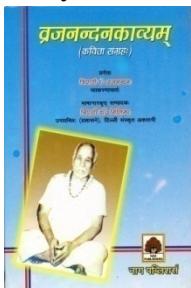
BY DR. N. P. UNNI

The Vishnu Samhita was held in great authority is testified by the fact that almost all topics dealt with in it are to be seen in epitomised version in the Tantrasamuccaya of Narayana which is the most popular work in the field used by the practicing priest. The various prescriptions of the author of the Samhita are scrupulously followed by the author of the popular treatise. Though he does not admit in so many words since the nature of his epitomisation afforded no occasion, his son Sankara who has composed the Vimarsini commentary has profusely quoted from the Samhita to substantiate the instructions of his father. Since this later composition became very popular as a household text or guide among the practitioners of the system other treatises on Tantra in

Kerala gradually went out of vogue. This fate has adversely affected Vishnusamhita also to some extent. But it deserves to be kept and practiced in every house as ordained by the author in his concluding stanza:

तस्मात् सर्वपयल्नेन गृहे सततमर्चयेत् ।
स्थापयेद् गोपयेच्चात्र वर्धते श्रीरचञ्चला ॥

Demy 1/8 ISBN 81-7081-258-5 1991 pp 368 Rs. 350.00



व्रजनन्दनकाव्यम्

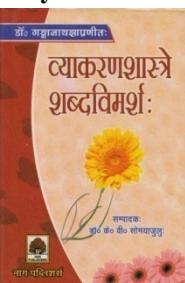
कविता—संग्रह

**प्रणेता – त्रिपाठी पं. व्रजनन्दनः
भाषान्तरकृत् सम्पादकः – त्रिपाठी डॉ. निलिम्पः**

भावप्रवणता में गुम्फित शब्द स्तोत्र बन जाते हैं, जो शब्द मात्र नहीं रहते। उससे कहीं आगे मंत्र की संज्ञा प्राप्त कर लेते हैं आचार्य व्रजनन्दन विरचित श्रीरामस्तोत्रम् एवं गड्गालहरी तो मानों समाधि दशा का अनुभूत दर्शन ही है जो शब्दों में प्रस्फुटित है।

प्रज्ञाचक्षु कवि के जीवन की सारी साधना और प्रदाय इस कृति के माध्यम से आलोकित है। व्रजनन्दनकाव्यम से भारतीय संस्कृति की व्यापकता का समग्र मूल्यांकन व्यवहार तथा सम्भावनाएँ सहज ही प्रकट हो जाती हैं।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-635-1 2006 pp 242 Rs. 100.00



डॉ. गंगानाथज्ञाप्रणीतः

व्याकरणशास्त्रे शब्दविमर्शः

सम्पादकः

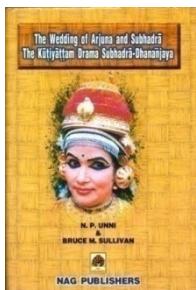
डॉ. के. वी. सोमयाजुलुः

यदा मुमुक्षुणामज्ञाननाशद्वारा आत्मतत्वज्ञानअञ्जायते तदा जीवन्मुक्तानां तेषां श्रौतस्मार्तनित्यकर्मनुष्ठान— मनावश्यकमेव। एतदाशयेनैव स्फोटापरनामकं शब्दतत्त्वं सप्रमाणं महता प्रबन्धेन सम्युद्द्यरुषे। तत्परम्परानुसारमेव नव्यन्यायशास्त्रानुगमविधातृपण्डित— प्रकाण्डगड्गेशोपाध्यायवंशकरीभूताः महामहोपाध्यायपण्डितकृष्ण— माधवज्ञाशर्मात्मजा ऊनविश्वत्यधिकाष्टित्रिंशत्तमे वर्षे लब्धजन्मनो विद्यापतिपञ्चकविजयपताकद्यनेकेषां ग्रन्थानां प्रणेतारो “बिट्ठो” (मधुबनी, बिहार) ग्रामवास्तव्यः प्राचार्यचरा व्याकरणसाहित्याचार्य— ‘विद्यावारिध्याद्यनेकोपाधिभाजो बुझनुकोपनामकाः पण्डितगड्गनाथज्ञामहाशयाः पाणिनीयं प्रमुखं स्फोटसिद्धान्तमधिकृत्य महता प्रयासेन महता पाण्डित्येन चैतादृशं “व्याकरणशास्त्रे शब्दविमर्शः” इति नामकमिदमनन्यसाधरणमेकं ग्रन्थरत्नं प्रणीय वैयाकरणलोमनुगृहीतवन्तः।

पञ्चविंशत्मकेऽस्मिन् ग्रन्थे विविधविषयनिरूपणावसरेऽनेकप्रबन्धूप्रबन्धपूर्वकं
नव्यन्याय शास्त्रीयानुगमप्रणाली यथासन्दर्भं ग्रन्थकरैस्त्रौरभीकृता । ग्रन्थस्यास्य
मुख्योदेशस्तावद्वेदान्तशास्त्रैकमात्रगम्यपरब्रह्म—
तत्त्वसाम्यखण्डवाक्यस्फोटापरनामकशब्दब्रह्मण्यध्यस्य

व्याकरणशास्त्रैकमात्रप्रतिपादितशब्दब्रह्मणोऽपि तावन्महत्वापादनमेव । तत्र प्रथमे
विमर्शे शब्दो नित्यो वाऽनित्यो वेति सुविचार्य द्वितीये विमर्शे शब्दस्य
नित्यत्वनिरूपणावसरे भर्तृहरिमतमनेकदृष्टान्तदार्टान्तप्रदर्शनपूर्वकं सम्यग्विशदी—
कृतम् । ततस्तृतीये विमर्शे शब्दप्रामाण्यनिरूपणावसरे व्याकरणमतेन सह
शब्दशक्तिप्रकाशिकाकाराद्यनेकदार्शनिकानां सिद्धान्तानालोड्य चतुर्थे विमर्शे
दर्शनान्तरीयमतखण्डनपूर्वकमत्र ग्रन्थे यथा पाणिनीयं सविस्तरं ग्रन्थकारेण
प्रत्यपादि । अन्तिमे च विमर्शे शब्दशक्तिविचारः, शब्दवृत्तिविचारः
अखण्डवाक्यस्फोटविचारः, सदसतोस्सम्बन्धनिरूपणमित्यादयोऽनेके महत्वपूर्ण
विषयाः प्रस्तुतग्रन्थकारेण निरूपिताः ।

Demy 1/8 ISBN 81-7081-628-9 1995 pp 242 Rs. 200.00



The wedding of Arjuna and Subhadra:

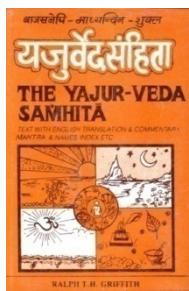
The Kutiyattam Drama SUBHADRA-DHANANJAY

(Text with Vicharatilaka
Commentary, Introduction,
English Translation and Notes)

Translated and introduce by
N. P. Unni & Bruce M. Sullivan

This volume includes the first English translation of the Kutiyattam drama "Subhadra-Dhananjaya," a Sanskrit drama composed some 900 years ago by King Kulasekhara Varman. Also included are the Sanskrit text of the drama, and a Sanskrit commentary on it, as well as essays by Drs. Unni and Sullivan about this drama and Kutiyattam, a performance tradition sacred to Hindus in Kerala, south India.; Traditionally these dramas were performed in Hindu temples as devotional offerings to the deity. This translation and study has been done in the hope that others will become interested in this translation.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-541-1 pp 288 2001 Rs. 300.00



वाजसनेयि-माध्यन्दिन-शुक्ल
यजुर्वेदसंहिता

YAJURVEDA SAMHITA

(Text with English Translation, Notes,
Mantra-Devata-Name Index etc.)

Translated into English with Notes &
Commentary

Ralph T. H. GRIFFITH

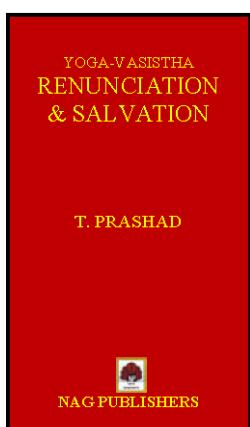
Edited & Enlarged by

- SURENDRA PRATAP

The Yajurveda is the knowledge of sacrifice or sacrifice texts and formulas as distinguished from the Rigveda. It has two Samhitas - Taittiriya and Vajasaneyi Samhita known as Black (Krishna) and White (Shukla) Yajurveda. The Vajasaneyi Samhita is planned in a more systematic and orderly manner than the other. It is actually a hand-book or manual for the Adhvaryu priests who specialized in conduction sacrifices. The important sacrifices are dealt with Ashvamedha (horse-sacrifice), Purushamedha (Human-sacrifice) and Darsa Purnamasa (full and new moon).

The text contains Mantra-vise Griffith's English translation which follows the edition of "White Yajurveda or Vajasaneyi Samhita in two recessions the Madhyandina and the Kanya. The Volume consists Mantra-Index, Hymns taken from other Vedas, Name-Index Mahidhara's commentary.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-212-7 1990 pp 644 Rs.700.00



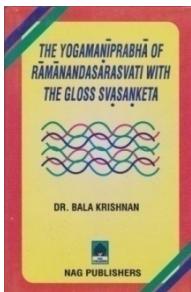
YOGA-VASISTHA

RENUNCIATION & SALVATION
TARKESHWAR PRASAD, I.A.S.,
FOREWORD DR. AMARNATH
JHA

The Yoga-Vasistha is a work which deserves to be better known. It will be like a breath of pure air, a ray of sunlight. It will take us into regions where fraud and deceit and greed do not exist and will bring us into contact with what is good and great. Shri Tarkeshwar Prashad, an I. A. S., in the midst of a busy

official life has taken the trouble of expounding the doctrines of Renunciations and Salvation based on this great book. The Bhagvad-Gita is deservedly well-known all over the world and has been translated and interpreted in many languages. It represents the highest level in metaphysical thought of which Indians were capable. In spite of its abstract metaphysics, it has exerted much influence on the daily thought and conduct of numberless persons. The Yoga-Vasistha has, however, not attained the wide popularity of the Gita and is almost completely unknown to western reader. They will find, through this translation, much to inspire and to elevate peace of the spirit and calm of the mind.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-097-3 pp 128 1982 Rs. 100.00



THE YOGAMANIPRABHA OF RAMANANDASARASVATI WITH THE GLOSS SVASANKETA

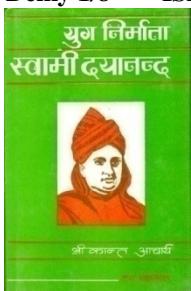
**(Critically edited with introduction
and Appendices)**

Dr. Mrs. Bala Krishnan

The present edition is adopted on the most popular and appropriate version of the text with an exhaustive introduction giving the gist of Yoga Philosophy. Several useful appendices are added. The English translation of the text is literal and idiomatic. The book presents an authentic informative study of the Yoga philosophy which is the essence of pure thinking process of centuries.

An important feature of the book is Svasanketa – It is the only manuscript available at Asiatic Society of Calcutta, it exposé clearly the technical terms of the text.

Demy 1/8 ISBN-81-7081-348-4 pp 504 1996 Rs. 350.00



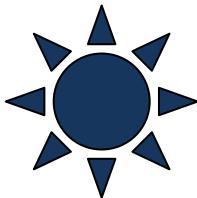
युग निर्माता : स्वामी दयानन्द

श्रीकान्त आचार्य

इस पुस्तक में स्वामी दयानन्द जी के जीवन का पूरा वृत्तान्त है। महर्षि द्वारा गुरु सेवा, विदेशी धर्मों से बिखरे आर्यों की शुद्धि कर पुनः हिन्दू-धर्म में प्रत्यार्वतन और वेदों के नाम पर आडम्बर करने वालों से शास्त्रर्थ करना, अपने शिष्यों को राष्ट्र सेवा के लिये प्रेरित करना, स्त्री, शूद्रों को शिक्षा का अधिकार और विधवा विवाह को प्रोत्साहन देना आदि का वर्णन है। महर्षि के ओजस्वी भाषण में धर्मानुषादित स्वराज्य प्राप्ति के

साधन, सत्य, अहिंसा, आत्म संयम एवं भारतीय भाषा, वेश—भूषा, भोजन, राष्ट्रनिष्ठा, राष्ट्रसेवा और राष्ट्रोथान के सर्वस्व त्याग की प्रेरणा प्रधान विषय और योग्य नेता के नेतृत्व में देशव्यापी असहयोग आन्दोलनों का संचालन आदि का वर्णन है।

Demy 1/8 ISBN-81-7081-217-8 pp 300 1991 Rs.200.00





MAHARASHI SANDIPANI RASHTRIYA VEDAVIDYA PRATISHTHANAM GRANTHMALA, UJJAIN

अमूर्त वैदिक देवता – डॉ. लक्ष्मी मिश्रा

Demy 1/8 pp 196 2006 Rs.165.00

अश्वमेध विवेकः – डॉ. दिवाकर महापात्रः

Demy 1/8 pp 164 2005 Rs.150.00

अथर्ववेदीय परिशिष्ट ग्रन्थों का परिशीलन

प्रधान सम्पादक : प्रो. ओम्प्रकाश पाण्डेय

लेखिका : डॉ. अंजु दुबे

Demy 1/8 pp 212 2005 Rs.175.00

चार शुल्वसूत्र

(बौद्ध्यन, मानव, आपस्तम्भ और कात्यायन शुल्वसूत्रों के हिन्दी अनुवाद) – अनुवादक – डॉ. र. पु. कुलकर्णी

Demy 1/8 pp 334 2003 Rs.600.00

THE CONCEPT OF PURUSARTHAS

- DR. S.C. CHARKABARTI

pp 100 2003 Rs.185.00

ISSUES IN VEDA AND ASTROLOGY

- DR. HARIBHAI PANDYA

Demy 1/8 pp 200 1995 Rs.150.00

VEDAS : THE SOURCE OF ULTIMATE SCIENCE - SHRI RAM VERMA

Demy 1/8 pp 480 2005 Rs.300.00

वैदिकालीन प्रौद्योगिकी (कुछ आयाम)

SOME ASPECTS OF TECHNOLOGY IN VEDIC PERIOD

सम्पादक – प्रो. ओम्प्रकाश पाण्डेय

डॉ. श्यामसुन्दर निगम

Demy 1/8 pp 158 ISBN 81-7081-573-8 2003 Rs.110.00

वैद मीमांसा – मूल लेखक – श्री अनिर्वाण

हिन्दी अनुवादक – छविनाथ मिश्र

Demy 1/8 pp 964 (3 Vols)
2003 ISBN 81-7081-576-2 (Set) Rs.825.00

वैदिक खिलसूक्त-मीमांसा

– प्रो. ओम्प्रकाश पाण्डेय

हिन्दी अनुवादक – छविनाथ मिश्र

Demy 1/8 pp 424 ISBN 81-7081-594-0 2004 Rs.225.00

वैदिक शिक्षा पद्धति – डॉ. भास्कर मिश्र

Demy 1/8 pp 281 2003 Rs.270.00

वैदिक यज्ञ संस्था और वैद विज्ञान

सम्पादक – प्रो. ओम्प्रकाश पाण्डेय

Crown 1/4 pp 362 2004 Rs.500.00

NAG PRAKASHAN PUBLICATIONS LIST

<p>आचार्य दण्डी की साहित्य साधना – डॉ. काशीनाथ तिवारी Demy 1/8 pp 358 1998 ISBN 81-7081-411-1 Rs.200.00</p> <p>आचार्यों दण्डी (समीक्षात्मकमध्ययनम्) – योगेश्वर दत्त शर्मा पाराशार Demy 1/8 pp 100</p> <p>अद्वैतवेदान्ते भामतीप्रसथानस्य तुलनात्मकमध्ययनम् – डॉ. एम. वसन्ता Demy 1/8 pp 520 2013 ISBN 81-7081-688-2 Rs.600.00</p> <p>आधुनिक भारत में संस्कृत की उपादेयता – सं. प्रो. कृष्णलाल Demy 1/8 pp 246 2023 ISBN 81-7081-260-1 Rs.250.00</p> <p>ADHYATMARAMAYANA -(Introduction, Text with English Tr.) -DR. K. P. A. MENON Demy 1/8 (2 vols set) pp 1864 1999 ISBN 81-7081-488-0 Rs.800.00</p> <p>अग्नि महापुराण मूल तथा श्लोकानुक्रमणी, भूमिका – डॉ. आर.एन. शर्मा Pothi form pp 664 (II Ed.) 2004 ISBN 81-7081-048-5 Rs.1500</p> <p>ऐतरेय एवं तैत्तिरीय ब्राह्मणों के निर्वचन – डॉ. सरोज दीक्षा वेदालंकार Demy 1/8 pp 272 1989 ISBN 81-7081-193-7 Rs.300.00</p> <p>ऐतरेय ब्राह्मण सुखप्रदाख्यवृत्ति सहितम् Demy 1/8 pp 1393 (3 vols set) ISBN 81-7081-224-0 (set) Rs.1500.00</p>	<p>अक्षरा भास्कर-भारती – डॉ. भास्कराचार्य त्रिपाठी Demy 1/8 pp 268 2005 ISBN 81-7081-614-9 Rs.150.00</p> <p>अलंकार समीक्षा –लक्ष्मीनारायण पुरोहित, चन्द्रशेखर पुरोहित Demy 1/8 pp 584 1997 ISBN 81-7081-346-8 Rs.350.00</p> <p>अलंकृतशेषाङ्गम् म. म. केशवकृत –व्याख्याकार डॉ. शशिनाथ ज्ञा तथा डॉ. मंजु कुमारी शर्मा Demy 1/8 pp 320 2018 Rs.500.00</p> <p>अमूर्त वैदिक देवता –डॉ. लक्ष्मी मिश्रा Demy 1/8 pp 192 2006 ISBN 81-7081-625-4 Rs.165.00</p> <p>ANCIENT BOOKS OF INDIA (HINDU LITERATURE) - E.A. REED Demy 1/8 pp 428 1979 ISBN 81-7081-130-9 (out of Print)</p> <p>ANCIENT INDIA ACCORDING TO MANU -DR. R.N. SHARMA Demy Octavo pp 374 1980 ISBN 81-7081-32-9 Out of Print</p> <p>अनूपविलासः आचाररत्नम् – डॉ. देवदत्त चतुर्वेदी Demy 1/8 pp 412 1987 ISBN 81-7081-090-6 Rs.200.00</p> <p>अपराजिता 7 लघु कथाओं का संग्रह – डॉ. वीणापाणि पाटनी Demy 1/8 pp 102 1994 ISBN 81-7081-286-0 Rs.150.00</p> <p>अरिनाशक-दुर्गाशतकम् प्रणेता – त्रिपाठी आचार्यो रामगुलाम काव्यान्तरकृत सम्पादकः – महामहोपाध्यायः त्रिपाठी डॉ. भास्कराचार्यः 2003 Demy 1/8 pp 146 2009 ISBN 81-7081-651-3 Rs.150.00</p>
--	--

**ART OF WAR & MEDICAL &
SURGICAL SCIENCES OF HINDUS -
H.H. WILSON**

Demy 1/8 pp 48 1979
 ISBN 81-7081-138-4 (Out of Print)

आर्यसप्तशती – आचार्य गोवर्धनः अनन्त पंडितकृत व्यंग्यार्थ टीका सहित
 Demy 1/8 pp 248 1988
 ISBN 81-7081-191-0 Rs.250.00

ASCARYACHUDAMANI

-(Introduction, Text with English Tr.)
 -DR. K. P. A. MENON

Demy 1/8 pp 310

आश्वलायन गृह्यसूत्र परिशिष्ट

गार्यनारायणवृत्तिसहितानि रामनारायण –
 विद्यारनेन तथा श्री आनन्दचन्द्रवेदान्तवागीशेन च
 परिशोधितानि

Demy 1/8 Press

अश्मेधविवेकः— डॉ. दिवाकर महापात्रा

Demy 1/8 pp 164 2005
 ISBN 81-7081-611-4 Rs.150.00

अथर्ववेदीय परिशिष्ट ग्रन्थों का परिशीलन

प्रधान सं.— प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय

लेखिका— डॉ. अंजु दुबे

Demy 1/8 pp 212 2005
 ISBN 81-7081-623-8 Rs.175.00

बालभारतम् का आलोचनात्मक अध्ययन

— डॉ. हरिगोपाल शर्मा

Demy 1/8 pp 240 1989
 ISBN 81-7081-206-2 Rs.150.00

बालरामायणम्

राजशेखर विरचित महानाटक पंडित, लक्षणसूरि,
 जीवानन्द-तीनि संस्करणों से सम्पादित मूल पाठ एवं
 हिन्दी भाषान्तर सहित—डॉ. भास्कराचार्य त्रिपाठी

Demy 1/8 pp 840 (2 Vols Set) 1995

ISBN 81-7081-296-8 Rs.800.00 (set)

बौद्धधर्म तथा पुराणेषु करुणा –

सुन्थर्न-धम्मथडा

Demy 1/8 pp 212 1995
 ISBN 81-7081-336-0 Rs.350.00

**THE BHAGAVATA BHAKTI CULT
AND THREE ADVAITA ACHARYAS
(SHANKARA RAMANUJA,
VALLABHA) - DR. R.N. VYAS**

Demy 1/8 pp 250 1977
 ISBN 81-7081-101-5 Rs.200.00

भागवत महापुराण

अन्वितार्थ प्रकाशिका टीका भूमिका –
 डॉ. आर. एन. शर्मा तथा श्लोकानुक्रमणी सहित।

Poly. form pp 2304 (4 vols) 2004
1998 RS. 300.00
 ISBN 81-7081-145-7 Rs.5000.00 (set)

**BHAGAWADGITA AND
CONTEMPORARY CRISIS**

- KIREET JOSHI

Demy 1/8 pp 326 1996
 ISBN 81-7081-338-7 Rs.350.00

भाणपरम्परायां पञ्चायुधप्रपञ्चभाणस्य

पर्यालोचनम् – डॉ. प्रदीप कुमार पाण्डेय

Demy 1/8 pp 272 2012
 ISBN 81-7081-682-6 Rs.250.00

भार्गवविक्रमम् नाम महाकाव्यम्

—श्री मतिनाथ मिश्र

Demy 1/8 pp 176 1995
 ISBN 81-7081-314-X Rs.150.00

भारतीय आचारों का भाषा चिन्तन

—सं. प्रो. पुष्टेन्द्र कुमार

Demy 1/8 pp 180 1985
 ISBN 81-7081-122-8 Rs.150.00

भारतीय दर्शनेषु माया स्वरूप विमर्श

—डॉ. शशिबाला गौड़

Demy 1/8 pp 306 1988
 ISBN 81-7081-163-5 Rs.200.00

BHARTRIHARI-SHATAKTRAYAM

(Text with Hindi & Eng. Trans. Notes,
 etc.)

- GOPINATH PUROHIT & N.S. SINGH

भर्तृहरिशतकत्रयम् नीति— शृंगार-वैराग्य
 मूल, हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद तथा टिप्पणी सहित
 —गोपीनाथ पुरोहित तथा नाग शरण सिंह

Demy 1/8 pp 470 2003 (2nd Ed.)	ISBN 81-7081-194-5	Rs.350.00	ISBN 81-7081-086-8	Rs.500.00
भाषा एक भाषावैज्ञानिक अध्ययन—डॉ. आमा माथुर			ब्रह्म महापुराण मूल, भूमिका डॉ. आर. एन. शर्मा तथा श्लोकानुक्रमणी सहित	
Demy 1/8 pp 192 2009			Pothi form pp 724	Ed. 2007
ISBN 81-7081-656-4		Rs.200.00	ISBN 81-7081-057-4	Rs.1500.00
भास के नाटक 13 नाटकों का मूल, हिन्दी अनुवाद तथा श्लोकानुक्रमणी सहित – पं. चन्द्रशेखर उपाध्याय एवं श्री अनिल कुमार उपाध्याय			ब्रह्मवैरत्महापुराण मूल	
Vol-1			Pothi form pp 1072 (2 Vols set)	
1 बालचरितम् 2 मध्यमव्यायोग			Ed. 2018	Rs.2500.00
3 पञ्च रात्रम् 4 दूतवाक्यम्			श्री कण्ठाचार्य विरचित ब्रह्मसूत्र भाष्य	
5 दूतघटोत्कचम्			अप्ययदीक्षित्कृत शिवार्कमणि दीपिका सहित	
6 कर्णभारम्			Demy 1/8 pp 1130 (2 vols Set) 2019	
7 उरुमंगेम्			ISBN 81-7081-140-6	Rs.. 2500
Vol-2 1 प्रतिमा 8 अभिषेक			ब्राह्मस्फुटसिद्धान्तस्य समीक्षात्मकमध्ययनम्	
Vol-3 1 प्रतिज्ञायौगम्भायाणम्			– विद्यावाचस्पति डॉ. शिवाकान्त झा	
2 स्वजनवासवदत्तम्			Demy 1/8 pp 280 1999	
3 अविमारकम्			ISBN 81-7081-447-2	Rs.250.00
4 चारुदत्तम्			ब्रह्माण्ड महापुराण	
Demy 1/8 pp 1372 (3 Vols. set) 2001			Pothi Size pp694 2022 Rs 1500	
ISBN 81-7081-525-8 (set)	Rs.1300.00		ब्रह्मवैरत्महापुराण	
भट्टिकाव्यम् महाकविश्रीभट्टिविरचितं			Pothi Size pp1072 (2 Vols set)	
जयम् गलकृतीकृत्या जयम् गलया समेतम्			2018	Rs 2500
–सम्पादक : विनायक नारायण शास्त्री जोशी			BRIHASPATI IN THE VEDAS AND THE PURANAS	
तथा वासुदेव लक्षण शास्त्री पणसिकर			-DR. (MRS.) SARASWATI BALI	
Demy 1/8 Press			Demy 1/8 pp 222 2023	
भुवनकोशतत्त्वमीमांसा — डॉ. अनिल कुमार पोरवाल			ISBN 81-7081-035-3	Rs.300.00
Demy 1/8 pp 430 2018			CHAITANYA BHAGAVATA -A STUDY	
ISBN 81-7081-697-1	Rs.500.00		-PROF. ASOKE CHATTERJEE SASTRI	
भुवनेशलौकिकन्यायसाहस्री			Demy 1/8 pp 186 1992	
पण्डितठाकुरदत्तशर्मविरचिता			ISBN 81-7081-266-6	Rs.200.00
Demy 1/8 Press			CHANDOGYA AND KAUSITAKI- BRAHMANA UPANISHADS	
भृड़िग्ंश संहिता — डॉ. अनन्तराम शास्त्री			-Text and Translation with notes in English)	
Demy 1/8 pp 500 2023			-RAJA RAJENDRALAL MITRA &	
			PROF. E.B. COWELL	
			Demy 1/8 pp 344 (2001) O/P	
			चाणक्य राजनीति शास्त्र	
			सं. पं. ईश्वर चन्द्र शास्त्री विद्यासागर	
			CHANAKYA RAJANITI SHASTRA	

-EDITED BY PT. ISHWAR CHANDRA SHASTRI VIDYASAGAR AND FORWORD BY JOHN MANEN	(Text, English Translation & Introduction)
Demy 1/8 pp 104 1990	- DR. K.P.A. MENON
ISBN 81-7081-241-0 Rs.150.00	
CHARAKA SAMHITA : -A Sample Survey	Vol (I)
-RAM KARAN SHARMA	1. Balacharitam
Demy 1/8 pp 114 1995 Rs.100.00	2. Madhyamavyayogam
चार शुल्खसूत्र बोधायन, मानव, आपस्तम्ब और कात्यायन शुल्खसूत्रों का मूल तथा हिन्दी अनुवाद अनुवादक -डॉ. र. पु. कुलकर्णी	3. Pancharatram
Demy 1/8 pp 334 2003 Rs 600	4. Dutavakyam
चारों वेद मूल तथा मंत्रानुक्रमणी सहित	5. Ghatotkacham As Envoy
Demy 1/8 pp 1882 (4 vols set) 2019 Rs.1600	6. Karanbharam
CLASSICAL WORKS OF SANSKRIT LITERATURE OF KERALA	7. Urubhangam
-(Introduction, Text with English Tr.)	
-DR. K. P. A. MENON	Vol (II)
Vol-I ASCARYACUDAMANI	1. Pratima 2. Abhisheka
1998 pp 310 Rs.300.00	Rs.600.00
Vol-II SRIKRISNACHARITAM	Vol (III)
1998 pp 572 Rs. 400.00	1. Pratijnayaugandharayana
Vol-III TRIPURADAHANAM, & SAURIKATHODAYAH (Two Yamak Poems of Vjsudeva's)	2. Svapnavasavadattam
pp 462 1999 Rs. 300.00	3. Avimarakam 4. Charudattam
Vol-IV NARAYANIYAM Rs. 400.00	Demy 1/8 pp 1384 (3 Vols) 2016 ed.
Vol. V ADHYATMARAMAYANA (PART I) Rs.450.00	ISBN 81-7081-351-4 (set) Rs.2000.00
Vol-VI ADHYATMARAMAYANA (PART II) Rs. 450.00	THE CONCEPT OF APAVARGA IN SAMKHYA PHILOSOPHY
Vol-VII SRIKRISMNAVIJJYAM & NALODAYA Rs. 400.00	-DR. K.P. KESAVAN NAMPOOTHIRI
Vol -VIII MUSIKAVAMSAM MAHAKAVYAM Rs. 400.00	Demy 1/8 pp 300 1990
Demy 1/8 pp 5340 (8 vols set)	ISBN 81-7081-216-X O/P
ISBN 81-7081-383-2 (set) Rs. 3100	THE CONCEPT OF PURUSARTHAS
COMPASSION IN BUDDHISM & PURANAS	-DR. SAMIRAN CHANDRA CHAKRABARTI
-PHRA SOONTHORNDHAMMATHADA	pp 100 2003 Rs.185.00
Demy 1/8 pp 244 1995	CONCEPT OF SENTENCE ANALYSIS IN NYAYA PHILOSOPHY
ISBN 81-7081-335-2 Rs.400.00	-DR. PUNITA SHARMA
COMPLETE PLAYS OF BHASA	Demy 1/8 pp 376 1998
(Total 13 Plays in No.)	ISBN 81-7081-433-2 Rs.250.00

(Text, English Translation & Introduction)	
- DR. K.P.A. MENON	
Vol (I)	
1. Balacharitam	
2. Madhyamavyayogam	
3. Pancharatram	
4. Dutavakyam	
5. Ghatotkacham As Envoy	
6. Karanbharam	
7. Urubhangam	
Vol (II)	
1. Pratima 2. Abhisheka	
Rs.600.00	
Vol (III)	
1. Pratijnayaugandharayana	
2. Svapnavasavadattam	
3. Avimarakam 4. Charudattam	
Demy 1/8 pp 1384 (3 Vols) 2016 ed.	
ISBN 81-7081-351-4 (set) Rs.2000.00	
THE CONCEPT OF APAVARGA IN SAMKHYA PHILOSOPHY	
-DR. K.P. KESAVAN NAMPOOTHIRI	
Demy 1/8 pp 300 1990	
ISBN 81-7081-216-X O/P	
THE CONCEPT OF PURUSARTHAS	
-DR. SAMIRAN CHANDRA CHAKRABARTI	
pp 100 2003 Rs.185.00	
CONCEPT OF SENTENCE ANALYSIS IN NYAYA PHILOSOPHY	
-DR. PUNITA SHARMA	
Demy 1/8 pp 376 1998	
ISBN 81-7081-433-2 Rs.250.00	
THE CONCEPT OF SHAKTI IN THE PURANAS -DR. (MRS.) USHA DEV	
Demy 1/8 pp 256 1987	
ISBN 81-7081-151-1 Rs.2400.00 O/P	
THE CONCEPT OF RELIGION IN THE MAHABHARATA	
-DR. (MRS.) U.R. TRIKHA	
Demy 1/8 pp 200 1980	
ISBN 81-7081-094-9 O/P	
CONTRIBUTION OF MITHILA TO SANSKRIT KAVYA AND SAHITYA SASTRA -DR. TRILOKANATHA JHA	

Demy 1/8 pp 150 (1995) Rs.50.00	Demy 1/8 pp 72 1995
CRITICAL STUDIES OF THE RITUAL LEGENDS FROM THE BRAHMANA TEXTS	ISBN 81-7081-325-5 Rs.100.00
-Dr. (Mrs.) PARINEETA DESHPANDE	
Demy 1/8 Press	
CULTURE & CIVILIZATION AS REVEALED IN THE SHRAUTA - SUTRAS - DR. R. N. SHARMA	एकाम्र पुराण भूमिका प्रो. यू. एन. ढल
Demy 1/8 pp 300 1977	Demy 1/8 pp 490 2014
ISBN 81-7081-033-7 O/P	ISBN 81-7081-083-3 Rs.600.00
DEVA KATHA RASA	EMERGING TRENDS IN CONTEMPORARY SANSKRIT LETERATURE
-DR. VIJAYASHREE	-ED. PROF. UMA VAIDYA, DR. GAURI MAHULIKAR & DR. MADHAVI NARSALAY
Demy 1/8 pp 84 2006	Demy 1/8 pp 334 2013
ISBN 81-7081-503-7 Rs.120.00	ISBN 81-7081-687-4 Rs.500.00
धर्मशास्त्रः आधुनिक संदर्भ में	AN ENCYCLOPAEDIA OF RELIGIONS
— सं. डॉ. श्रीमती एस. नारंग	- M. A. CANNEY
DHARMA SHAASTRA IN CONTEMPORARY TIMES	Crown 1/4 pp 412 1976
-ED. DR. (MRS.) S. NARANG	ISBN 81-7081-024-8 Rs.500.00
Demy 1/8 pp 216 1988	ETYMOLOGIES IN SHATAPATHA BRAHMANA - DR. NARGIS VERMA
ISBN 81-7081-190-2 Rs.300.00	Demy 1/8 pp 480 2023
DICTIONARY (KOSHA) OF SANSKRIT LANGUAGE	ISBN 81-7081-245-3 Rs.450.00
-H.T. COLEBROOKE	EVOLUTION OF HINDU MORAL IDEALS - P.S.S. AIYAR
Demy 1/8 pp 570 (IIInd Ed.) 2003	Demy 1/8 pp 210 1977
ISBN 81-7081-204-6 Rs.350.00	ISBN 81-7081-105-8 Rs.250.00
DOCTRINE OF KARMA AND REBIRTH IN INDIAN THOUGHT	FEMALE DEITIES IN VEDIC AND EPIC LITERATURE
-PROF. VACHASPATI UPADHYAYA	-DR. VIDYA DHAR SHARMA GULERI
-DR. SHASHI PRABHA KUMAR	Demy 1/8 pp 228 2022
Demy 1/8 Press	ISBN 81-7081-209-7 Rs.250.00
DRAVYAGUNASATASLOKI OF TRIMALLABHATTA	GANGALAHARI
-Ed. C. M. NEELAKANDHAN	PANDITARAJA JAGANNATHA'S
-S. A. S. SARMA	(With the commentary by Sri Sadasiva and English Tr.) -DR. IRMA SCHOTSMAN
Royal 1/8 pp 136 2014	Demy 1/8 pp 336 1999
ISBN 978-93-80829-23-4 Rs.250.00	ISBN 81-7081-435-9 Rs.250.00
THE EGALITARIAN AND PEACE SEEKING TRAIT OF THE INDIAN MIND	गण्ड महापुराणम्—डॉ. आर. एन. शर्मा
-P. SRIRAMACHANDRUDU	मूल भूमिका तथा श्लोकानुक्रमणी
Demy 1/8 pp 152 (1998) Rs.50.00	Pothi form pp 608 (IIIrd Ed.) 2008
एकादशी संस्कृतकथा गुच्छः	ISBN 81-7081-050-7 Rs.1200.00
डॉ. इच्छाराम द्विवेदी 'प्रणव'	गायत्री पञ्चदशी — 100.00 रुमार उपाध्याय
	Demy 1/8 pp 128 2011
	ISBN 81-7081-669-6 Rs.180.00

गीतमन्दाकिनी कविता संग्रह

— डॉ. इच्छाराम द्विवेदी 'प्रणव'

Demy 1/8 pp 112 1992
ISBN 81-7081-267-4 Rs.150.00**GLIMPSES OF INDIAN PHILOSOPHY AND SANSKRIT LITERATURE**

-PROF. DAYANAND BHARGAVA

Demy 1/8 pp 246 1981
ISBN 81-7081-111-2 Rs.250.00**GODLY MEN AND THEIR GOLDEN WORDS - M.N.KRISHNAMANI**

Demy 1/8 pp 866 (1998)

GOVERNANCE IN ANCIENT INDIA

-ED. PROF. UMA VAIDYA, DR. GAURI MAHULIKAR & DR. ASAWARE BAPAT

Demy 1/8 pp 256 2013
ISBN 81-7081-689-0 Rs.400.00**गृहस्थरत्नाकर चन्द्रशेखर कृत**— डॉ. नीना डोगरा विस्तृत भूमिका तथा मूल
Demy 1/8 pp 496 1995
ISBN 81-7081-302-6 Rs.350.00**गृहसूत्राणि आश्वलायनप्रणालीनि गार्घ्यनारायणीय-**वृत्तिसहितानि रामनारायण विद्यारत्नेन तथा
श्री आनन्दचन्द्र-वेदान्तवागीशेन च परिशोधितानि
Demy 1/8 Press**गुणेश्वरचरितचम्पूः धर्मकर्मावतार**गणेश्वरसिंहगुणावेदकं गद्य-प्रातासकं काव्यम्
ग्रन्थकृत्कृतिपूणीसमेतं प्रथमोऽच्छवासस्य
हिन्दीव्याख्यासहितं च -सम्पादकः हिन्दीव्याख्याकारः
डॉ. शशिनाथ झा:Demy 1/8 pp 280 2021
ISBN 81-7081-387-5 Rs.400.00**गुरु-शिष्य सम्बन्ध** प्राचीनकाल से अर्वाचीनकाल तक
—डॉ. फूलकान्त मिश्रDemy 1/8 pp 132 1996
ISBN 81-7081-334-4 Rs.150.00**हाँ! हाँ! लघु व्यंग्य कथा संकलनम्**— डॉ. इच्छाराम द्विवेदी 'प्रणव'
Demy 1/8 pp 80 1996

ISBN 81-7081-347-6

Rs.100

HANUMAN IN VALMIKI'S RAMAYANA

(Sanskrit Text of Selected Chapter with word-by-word translation into English)

-IRMA SCHOTSMAN

Crown 1/4 pp 918 2002
ISBN 81-7081-547-9 Rs.700.00**HARAPPA CIVILIZATION AND VEDAS**

-PROF. PUSHPENDRA KUMAR

Demy 1/8 Press

हरिंश पुराण — मूल, भाषा टीका
सहित तथा भूमिका प्रा. चारुदेव शस्त्री

Pothi form pp 1802 (2 vols) 2015

ISBN 81-7081-075-2Rs.3500.00**HINDU DHARMA SHASTRA**

(With Introduction, Text with English Translation and Sloka Index)

Demy 1/8 pp 2504 (6 Vols Set)

ISBN 81-7081-409-X (Set) Rs. 5000.00 (Set)**HINDU FICTION**

-H.H. WILSON

Demy 1/8 pp 200 1979
ISBN 81-7081-129-5 Rs.150.00**HISTORICAL AND CRITICAL STUDIES IN ATHARVAVEDA** -ED.

DR. S.K. BALI

Demy 1/8 pp 452 1981
ISBN 81-7081-031-0 Rs.400.00**HISTORY OF SAMKHYA****PHILOSOPHY**

(THE SAMKHYA SYSTEM)

-A.B. KEITH

Crown 1/8 pp 128 1987
ISBN 81-7081-108-2 Rs.70.00**हितोपदेश** — नारायणपण्डितसंग्रहीत मूल पाठेन,
अनुवादेन, विविध विषय-विवरणेन,
कथानुक्रमणिका,परीक्षोपयोगी—

श्लोकानुक्रमणिका,परीक्षोपयोगी—

प्रश्नपादाद्यनेकविषयैश्च संयुतः —भा शन्तर पं.

रामेश्वर भट्ट सम्पादक श्री नारायण राम आचार्य

Cromo 1/8 pp 294 2018 Rs.250.00

INDIA IN SANSKRIT INSCRIPTIONS

-ED. PROF. PUSHPENDRA KUMAR			
संस्कृत अभिलेखों में भारत			
— सं. प्रो. पुष्पेन्द्र कुमार	Demy 1/8	pp 230	1986
ISBN 81-7081-160-0		(out of Print)	
INDIAN CHESS			
(text with English Translation)	-S.R. IYAR		
Royal octavo	pp 110	1982	
ISBN 81-7081-128-7		Rs.100.00	
इन्द्रराजीवनम् एक परिशीलन			
— डॉ. जगतनारायण कौशिक	Demy 1/8	pp 240	2011
ISBN 81-7081-681-5		Rs.250.00	
INDO-ARYAN POLITY			
(RIG-VEDIC PERIOD) - P. C. BASU	Crown 1/8	pp 112	1977
ISBN 81-7081-036-1		Rs.150.00	
INDRA AND VARUNA IN INDIAN MYTHOLOGY			
-DR. (MRS.) USHA CHOUDHURI	Demy 1/8	pp 240	1978
ISBN 81-7081-034-5		OP	
INTRODUCTION TO PURANAS			
(THE HOUSE OF INDIAN CULTURE)	-PROF. PUSHPENDRA SHASTRI		
Demy 1/8	pp 220		
INTRODUCTION TO TANTRAS AND THEIR PHILOSOPHY -P. KUMAR			
Demy 1/8	pp 304	1998	Rs.150.00
ISSUES IN VEDA AND ASTROLOGY			
-ED. PROF. HARIBHAI PANDYA	Demy 1/8	pp 200	1995
ISBN 81-7081-332-8		Rs.150.00	
JURIDICAL STUDIES IN KALIDASA			
-DR. S.P. NARANG	Demy 1/8	pp 148	1995
Rs.50.00			
ज्ञापकसमुच्चय मूल, हिन्दी टीका तथा अध्ययन सहित — डॉ. अमिता शर्मा			
Demy 1/8	pp 488	1995	
ISBN 81-7081-306-9		Rs.350.00	
JNANABHAISAJYAMANJARI			
GUMANI KAVI'S ॥ ज्ञानभैषज्यमंजरी			
(With Hindi & English translation, English introduction and Indices)			
-RAM KARAN SHARMA			
Demy 1/8	pp 176	1978	
कादम्बरी बाणभट्ट-भूषणभट्ट — महोपाध्याय			
भानुचन्द्र सिद्धचन्द्राभ्या कृतया टीकायनुगता	Royal 1/8	pp 720	1985
ISBN 81-7081-124-4		(Out of Print)	
कादम्बरी का विम्ब-विधन — डॉ. अवधेश पाण्डेय			
Demy 1/8		Press	
KALA-PRAKASIKA			
The Standard Book on the Election (Mahooratha) System Text with English Translation -ED. BY PUNITA SHARMA	Demy 1/8		Press
KALIDASA : A FRESH			
(Prof. S.N. Rath Felicitation Volume)	ED. PROF. SATAPAL NARANG		
Demy 1/8	pp 642	1997	
ISBN 81-7081-362-X		Rs.700.00	
कालिदास के रघुवंश महाकाव्य में विम्ब-विधान			
— डॉ. अवधेश पाण्डेय	Royal 1/8	pp 264	1999
ISBN 81-7081-444-8		Rs.150.00	
कालिदास व्यक्ति तथा अभियक्ति			
भूदृष्टिविलक्षणम् ००५	Demy 1/8	pp 250	2005
नये पुरातात्कांक तथा अन्य प्रमाण, नया प्रकाट्य, नया साहित्य- विवेचन			
—महामहोपाध्याय प्रो. डॉ. प्रभाकर नारायण कवठेकर			
Demy 1/8	pp 392	2009	
ISBN 81-7081-655-6		Rs.350.00	
KALIKA PURANA			
(Introduction in English, Text & English Translation with Notes and Shloka Index)	-PROF. BISHWANARAIN SHASTRI		
Crown 1/4	pp 808	2008	
ISBN 81-7081-649-1 Rs.2000.00			
KARMA AND RE-BIRTH			
-ED. PROF. VACHASPATI UPADHYAYA	Demy 1/8		Press
काशिका का समालोचनात्मक अध्ययन			
— डॉ. रघुवीर वेदालंकार			

Demy 1/8	pp 445	1977	
ISBN 81-7081-118-X	Rs. 500.00		
KAŚMIRĀŚABDĀMRTAM: A Critical Study PROF. SATYABHAMA RAZDAN			
Demy 1/8 pp 548 2019			
ISBN 81-7081-699-8	Rs. 1500.00		
KATHAMRITANIDHI (SRI ANANTABHATTA'S) (Fresh version of Panchtantra With Critical Edition and Estimate)			
-DR. RAMA SEXENA			
Demy 1/8	pp 496	1996	
ISBN 81-7081-341-7		Rs.350.00	
कौटिलीयम् अर्थशास्त्रम्			
महामहोपायायेन त. गणपतिशस्त्रिणा विरचितया श्रीमूलाख्यया व्याख्यया समुपेतं तनैव संशोधितम्। भूमिका – लेखक : डॉ. एन. पी. उन्नीमहोदयः, संस्कृतविभागाध्यक्षः, केरलविश्वविद्यालयः, त्रिवेन्द्रम्।			
Demy 1/8	pp 1172 (3 vols set)	2018	
ISBN 81-7081-199-6		Rs.2000.00	
KAUTILYA'S ARTHASHASTRA : AN APPRAISAL			
-ED. PROF. PUSHPENDRA KUMAR			
कौटिल्य अर्थशास्त्र : एक परिशीलन			
– सं. प्रो. पुष्पेन्द्र कुमार			
Demy 1/8	pp 304	1989	
ISBN 81-7081-199-6		Rs.300.00	
काव्यांग दर्पण			
–डॉ. विजय कुमार अवरथी			
Demy 1/8	pp 604	Rs.200.00	
काव्य मन्थन			
– डॉ. सविता			
Demy 1/8	pp 160	2009	
ISBN 81-7081-665-3		Rs.300.00	
काव्यप्रकाशः १०८ीकाओं के साथ			
स. केत; स. केतः रुप्यक, बालचित्तानुरंजनी; काव्यादर्शः, विवेकः, दीपिका, दर्पणः, साहित्यचूडामणि, सम्प्रदायप्रकाशिनी;			

मधुमति, विस्तारिका, सारबोधिनी, काव्यप्रदीप, काव्यप्रकाशखण्डनम्, आदर्शः, सुधासागर; विवरणम् संस्कृत व्याख्या समलंकृता	
– सं. डॉ. ज्योत्स्ना मोहन	
Crown 1/4	pp 4066 (6 Vols Set)
ISBN 81-7081-323-9 (Set)	Rs.10000.00
काव्य प्रकाश	
आर्यामम्मटप्रणीतः भट्टकमलाकर प्रणीतया कमलाकरी व्याख्याजुगतः प्रस्तावना पाठान्तर टिप्पण्यानुक्रमणिकादिपि: समन्वितः सम्पादकः डॉ. बाबूलाल शुक्ल	
Demy 1/8	pp 524 1995
ISBN 81-7081-300-X	Rs.400.00
काव्यप्रकाशरसगंगाधरयोस्तुलना	
– डॉ. राम कुमार शर्मा	
Demy 1/8	pp 176 1997
ISBN 81-7081-375-1	Rs.200.00
काव्यविच्छितिमीमांसा	
-जयमन्त्रमिश्र	
Demy 1/8 pp 190 1998	Rs.100.00
केरलीयसंस्कृतसन्देशकाव्यसमीक्षा	
–डॉ. एन. पी. उण्णी	
Demy 1/8 pp 220 1995	Rs.50.00
किरातार्जुनियम्-विमर्श— डॉ. संजु मिश्रा	
Demy 1/8	pp 260 2006
ISBN 81-7081-641-6	Out of print
कूटकाव्यप्रम्परायां सीतारावणसंवादझरी	
– डॉ. ज्ञानधर पाठक	
Demy 1/8	pp 192 2006
ISBN 81-7081-637-8	Rs.150.00
कोविदानन्दविमर्शः- डॉ. सुरेन्द्र महतो	
Demy 1/8	pp 212 2005
ISBN 81-7081-603-3	Rs.150.00
KRISHNAKARNAMRITAM	

Text with Introduction and English Translation - DR. K.P.A. MENON Demy 1/8 pp 208 1995 ISBN 81-7081-293-3(Out of Print)	ISBN 81-7081-114-7 (Out of Print) लिंग महापुराण शिवतीषिणी संस्कृत टीका तथा श्लोकानुक्रमणी Pothi form pp774 (IIInd Ed.) 2004 ISBN 81-7081-208-9 Rs.1200.00
KUBERA PURANA (With Text and study) - PROF. ASOKE CHATTERJEE Demy 1/8 pp 752 1997 ISBN 81-7081-377-8 Rs.500.00	मदनपरिजातः- सम्पादक : पं. मधुसूदन सृतिरत्न Demy 1/8 PP1044 (Vols.set) 2019 Rs.2000
कुमार सम्बवम् कालिदास विरचित - मालिनाथ कृत संजीवी चारित्रिकन् कृत शिरु हितैषीणी सीताराम कृत सज्जीवी तीन टीकाओं युक्त Demy 1/8 pp390 (II Edition) 2006 ISBN 81-7081-203-6 Rs.200.00	महाभारत में नारी- डॉ. कृष्णानन्द पाण्डेय: Demy 1/8 pp 372 2005 ISBN 81-7081-606-8 Rs.300.00
कुमारसम्बव का रीति वैज्ञानिक अध्ययन कालिदास कृत – डॉ. शिव गोविन्द पाण्डेय Demy 1/8 pp 406 1996 ISBN 81-7081-327-1 Rs.250.00	माध्यमिक दर्शन का तात्त्विक स्वरूप – डॉ. मुक्तावली Demy 1/8 pp 242 1998 ISBN 81-7081-399-9 Rs.150.00
लघुरूपकसमुच्चय रूपक संग्रह – डॉ. शशिनाथ झा Demy 1/8 2016 Rs. 200.00	मधु धारा कविता संग्रह –डॉ. शशिनाथ झा Demy 1/8 pp 126 2004 ISBN 81-7081-586-X Rs.100.00
LALITASAHASRANAMA (With Comm. in English) - R. PRASAD Demy 1/8 pp 272 1994	महामहोपाध्याय बालकृष्णमिश्र विरचितम् “लक्ष्मीश्वरी चरितम्”-डॉ. लक्ष्मीनाथ झा Demy 1/8 pp 238 2003 ISBN 81-7081-559-2 Rs.200.00
ISBN 81-7081-273-9 (Out of Print)	महर्षि विश्वामित्रम् संस्कृत कथा काव्यम् – श्री मतिनाथ मिश्र
ललितासहस्रनाम सौभाग्य भाष्कर व्याख्या सहित –वासुदेव लक्ष्मण पणशीकर Demy 1/8 pp 240 1985 ISBN 81-7081-084-1 (Out of Print)	Demy 1/8 pp 242 1995 ISBN 81-7081-310-7 Rs.300.00
LEGENDS IN PURANAS - PROF. S.G. KANTAWALA Demy 1/8 pp 130 1995	महाभारत में श्रीकृष्ण का विलक्षण रथालिला –डॉ. भूवनचन्द्र पाठक Demy 1/8 pp 248 2020 ISBN 81-7081-671-8 Rs.400.00
LIFE AND WORK OF BUDDHAGHOSA - B.C. LAW & FOREWORD BY MRS. C.A.F. RHYS DAVIDS Demy 1/8 pp 196 (IIInd Ed.) 1998	श्री मन्महाभारतम् – वेदव्यास रचित टीका, श्लोक तथा नामानुक्रमणी और आचार्य डॉ. मण्डनमिश्र की भूमिका सहित Pothi form pp 5500 (8 Vols)
ISBN 81-7081-113-9 (Out of Print)	
LIFE OF NAGARJUNA FROM CHINESE AND TIBETAN SOURCES - M WALLESER Demy 1/8 pp 84 1976	

ISBN 81-7081-182-1 Press Rs.13500.00

महाभारत श्लोकानुक्रमणी- नागशरण सिंह

Pothi form pp 838 1991
ISBN 81-7081-261-5 Rs.1500.00

महाभारत नामानुक्रमणी परिचय सहित
– नागशरण सिंह
Pothi form pp 412 1992
ISBN 81-7081-262-3 Rs.1000.00

A MANUAL OF BUDDHIST PHILOSOPHY

-WILLIAM MONTEGOMERY
MCGOVERN

Demy 1/8 pp 208 1979 (Out of Print)

मानवसौत्सूत्रम् –डॉ. प्रमोद बाला मिश्र

Demy 1/8 pp 750 2003
ISBN 81-7081-567-3 Rs.450.00

मानुषत्वाददैविकत्वं प्रति-के. पी. ए. मेनोन

Demy 1/8 pp 106 1995 Rs.50.00

MARKANDEYA MAHAPURANAM

Text - Sri Venkateswara Steam Press
Introduction - Dr. R.N. SHARMA
English Translation - F. EDEM ARGITOR

Sloka Index - NAG SHARAN SINGH

Demy 1/8 Press

MATSYA MAHAPURANA -N. S. SINGH

(TEXT WITH ENGLISH TRANS. & NOTES)

Demy 1/8 pp 1252 (2 Vols) (IIInd Ed.) 1997

ISBN 81-7081-045-0 Rs2000.00

MATTAVILASA PRAHASANA

(Text, English Tr. with Introduction)

-DR. N.P. UNNI

Demy 1/8 pp 120 1998
ISBN 81-7081-401-4 Rs.100.00

मेघदूत की प्रमुख-टीकाओं का तुलनात्मक

अध्ययन—डॉ. श्रीमति कुमकुम जिंदल

Demy 1/8 pp 240 1993
ISBN 81-7081-274-7 Rs.150.00

मेवाड़ का संस्कृत साहित्य –डॉ. चन्द्र शेखर पुरोहित

Demy 1/8 pp 388 2004
ISBN 81-7081-312-3 Rs.300.00

MIMANSA PHILOSOPHY AND KUMARILA BHATTA

-PROF. BISWANARAYAN SHASTRI

Demy 1/8 pp 100 1995 Rs.50.00

MODERN EVALUATION OF THE MAHABHARAT

(PROF. R.K. SHARMA Felicitation Volume) -ED. PROF. S.P. NARANG

Crown 1/4 pp 650 1997
ISBN 81-7081-291-7 Rs.600.00

मुद्राराक्षस विशाखादत्त

Demy 1/8 pp 380 1985
ISBN 81-7081-126-0 Rs.200.00

MUSIKAVAMSA MAHA KAVYAM

-(Introduction, Text with English Tr.)

-DR. K. P. A. MENON

Demy 1/8 pp 512 2003
ISBN 81-7081-508-8 Rs.400.00

MYSTICISM IN THE UPANISHADS

-DR. INDULATA DAS

Demy 1/8 pp 244 2002
ISBN 81-7981-550-9 Rs.250.00

NAGARJUNA'S RATISHASTRAM

(Hindu System of Sexual Science)

English Trans. -A.C. GHOSH

Crown 1/8 pp 84 1978

ISBN 81-7081-137-7 (Out of Print)

NAGARJUNA'S YOGARATNAMALA

(Text with English Translation)

-PROF. PUSHPENDRA KUMAR

Demy 1/8 pp 120 2016

ISBN 81-7081-109-0 Rs. 200.00

नैषध समीक्षा – प्रो. देव नारायण झा

Demy 1/8 pp 344 2001
ISBN 81-7081-546-0 Rs.250.00

NALODAYA -DR. K.K. HARIHARAN

(With the commentary Kavihrdaya Darpana)

Demy 1/8 pp 300 1995
ISBN 81-7081-331-X Rs.300.00

नारद महापुराण

Pothi Size pp718 2022 Rs 2000.00

NARASIMHA PURANA

(Text with English Trans., Notes & Verse Index)

- Dr. SIDDHESWAR JENA

Demy 1/8 pp 770 (2Ed.) 2009

ISBN 81-7081-089-2 Rs.1000.00

THE NARASIMHA PURANA :

A CRITICAL STUDY -DR. S. JENA

Demy 1/8 pp 350 1987

ISBN 81-7081-028-0 Press

NARAYANIYAM -DR. K. P. A. MENON

-(Introduction, Text with English Tr.)

Demy 1/8 pp 946 2003

ISBN 81-7081-443-X Rs. 400.00

NATYASHASTRA -BY. PROF. N. P.

UNNI

(Text with English Tr. and Notes)

Demy 1/8 (2 Vols Set) Press

नाट्यशास्त्रम् भरतमुनिविरचितं

-जयपुरमहाराजश्रीते

महामहोपाध्यायपण्डितुर्गाप्रसादात्मजेन

पण्डितकेदारनाथसहिभूषणेन सम्पादितम्।

Demy 1/8 pp 676 2018 Rs.1000.00

नाट्यत्रयी तीन संस्कृत नाटक हिन्दी अनुवाद के साथ -रामकृष्ण शर्मा

Demy 1/8 pp 122 1993

ISBN 81-7081-277-1 Rs.150.00

NERVOUS SYSTEM IN YOGA AND TANTRA (Implication in Ayurveda)

-DR. ASHOK MAJUMDAR

(40 B & W Photo Pages, 8 Colours Photo Pages)

Demy 1/8 pp 794 1999

ISBN 81-7081-440-5 Rs. 1000.00

NINE GEMS OF SANSKRIT

LITERATURE

(Introduction, Text, English Tr. & Notes)

-DR. K.P.A. MENON

Vol. I Srikrishnavilasam

Vol. II Yudhisthiravijayam

Vol. III (i) Mukundmala

(ii) Kalavadhakavyam

(iii) Durgastuti

(iv) Sriramodantam

(v) Sukasandesa

(vi) Dasasloki

(vii) Daksinamurtistotram.

Demy 1/8 pp 1716 (3 Vols Set)

ISBN 81-7081-328-X (Set)
Rs.1200.00

निरोष्ट्य-रामचरित-महाकाव्यम्-म० म० रुचिकर

विरचितम् हिन्दी अनुवाद सहित - डॉ. शशिनाथ झा

Demy 1/8 pp 102 1999

ISBN 81-7081-506-1 Rs.100.00

निरुक्तम्

-सत्यव्रत साम श्रमीर

Demy 1/8 Press

न्याय कुसुमांजली

- डॉ. वाचस्पति द्विवेदी

Demy 1/8 Press

न्यायदृस्त्वा आत्मवादानुचित्तनम्

- डॉ. किशोर नाथ झा

Demy 1/8 pp 266 1990

ISBN 81-7081-211-9 Rs.200.00

PADA INDEX OF CLASSICAL SANSKRIT POEMS

-PROF. SATYAPAL NARANG

Crown 1/4 pp 924 Vol I 1998

ISBN 81-7081-424-3 Rs.600.00

पद्म महापुराण मूल, श्लोकानुक्रमणी तथा भूमिका

- प्रो. चारुदेव शास्त्री

Pothi form pp 2388 (4 vols) 2003

ISBN 81-7081-052-3(IIIrd Ed.)
Rs.5000.00

पाली निकायों में प्राचीन भारत की सामाजिक और अर्थिक संस्थाएँ - डॉ. पी. सी. मिश्र

Demy 1/8 pp 278 1994

ISBN 81-7081-289-5 Rs.175.00

पाणिनीय धात्वाधिकार-समीक्षा

- डॉ. सुजाता त्रिपाठी

Crown 1/4 pp 602 2005

ISBN 81-7081-605-X Rs.700.00

पाणिनीय व्याकरणे निपातनसमीक्षा

- डॉ. तेजपाल शर्मा

Demy 1/8	Press	PREHISTORIC ANCIENT AND HINDU INDIA - R.D. BANERJEE
परमलघुमञ्जूषा श्री नागेशभट्ट कृत मं. मं पृ. कृष्णाधव ज्ञा कृतया तत्त्व- प्रकाशिकाख्यया संस्कृत व्याख्यया तदनुज वै.के. प. चन्द्रमाधव ज्ञा कृतयाविकृत्या च समलकृता —सम्पादक : डॉ. उदयनाथज्ञा	Crown 1/8 pp 360 1979 ISBN 81-7081-135-X Rs.300.00	
Demy 1/8 pp 260 2005 ISBN 81-7081-595-9	Rs.200.00	प्रीतिरसानुभावनम् (संस्कृत मौलिककाव्य—नाट्य—ग्रन्थाः)
पराशर सूति एवम् देवल सूति का तुलनात्मक अध्ययन —डॉ. धनपति देवी कश्यप	प्रणेता महाकवि — आचार्य ओमप्रकाश पाण्डेयः	
Demy 1/8 pp 322 1997 ISBN 81-7081-364-6	Rs.350.00	Demy 1/8 pp 400 2023 ISBN 81-7081-284-4 Rs.500.00
पाथेयशतकम् —डॉ. रामकरण शर्मा		THE PSYCHOLOGICAL ATTITUDE OF EARLY BUDDHIST PHILOSOPHY
Demy 1/8 pp 40		(1988) GARIKA B. GOVINDA Rs.20.00
THE PHILOSOPHY OF THE UPANISHADS		Demy 1/8 pp 272 1975 ISBN 81-7081-115-5 Out of print
-S.C. CHAKRAVARTI		PURANIC CONCEPT OF DANA
Demy 1/8 pp 290 1979 ISBN 81-7081-100-7 (Out of Print)		-DR. KALA ACHARYA
प्रबन्धमंजरी — प्रो. एन. पी. उण्णी		Demy 1/8 pp 296 1993 ISBN 81-7081-278-X Rs.300.00
Demy 1/8 pp 432 1998 225.00		THE PURANAS & NATIONAL INTEGRATION (PURANA IN INDIA)
प्राचीन भारतीय अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन — डॉ. मेरु प्रभा मिश्रा		(पुराणों में राष्ट्रीय एकता) -ED. PROF. P. KUMAR
Demy 1/8 pp 216 2006 ISBN 81-7081-631-9	Rs200.00	- सं. प्रो. पृष्ठद्वारा कुमार
प्राचीन भारत की दण्ड व्यवस्था — डॉ. वाचस्पति त्रिपाठी		Demy 1/8 pp 480 1990 ISBN 81-7081-231-3 Rs.500.00
Demy 1/8 pp 404 1989 ISBN 81-7081-164-3	Rs.300.00	पुरुषार्थ सुधानिधि—ब्रह्म सूत्रावृत्ति: श्री ज्ञानेन्द्रमुनिप्रणीतः —डॉ. रमामणी श्री निवासन
(MADHVA'S) PRAMANA CHANDRIKA		Demy 1/8 pp 186 1998 ISBN 81-7081-393-X Rs.150.00
-S.K. MAITRA		राजतर्फ़ गणी इतिहास, संस्कृति और मूल्य —डॉ. आलोक क्षोत्रिय
Crown 1/8 pp 220 1980 ISBN 81-7081-102-3	Rs.150.00	Demy 1/8 PRESS राजरानी गंगादेवी और उनका काव्यशिल्प
प्रत्यभिज्ञाप्रदीपः—श्री र. गेश्वरनाथमिश्रमधुरेश— प्रणीतः सम्पादकोज्ञवादक — डॉ. रामकुमार शर्मा		—डॉ. श्रीमती शारदा मिश्र
Demy 1/8 pp 140 1998 ISBN 81-7081-434-0	Rs.150.00	Demy 1/8 pp.286 2009 ISBN 81-7081-646-7 Rs.300.00

रस-मञ्जरी – डॉ. सविता

Demy 1/8 pp 128 2010
ISBN 81-7081-664-5 Rs.250.00

रसप्रिया केलिकथा विभावनम्

(साहित्य आकर्देम्या पुरस्कृतं रसप्रिया महाकाव्यम्) तथा विप्रतिठियं जीवनशाखी, केलि—सखी प्रभूतीनिपंच खण्डकाव्यानि)

प्रणेता महाकवि – आचार्य ओम्प्रकाश पाण्डेयः

Demy 1/8 pp 400 2023
ISBN 81-7081-283-6 Rs.500.00

रसिकमनोरंजिनी मूल तथा हिन्दी व्याख्या सहित

—डॉ. शशिनाथ ज्ञा

Demy 1/8 pp 220 1995
ISBN 81-7081-308-5 Rs.200.00

RELIGION AND PHILOSOPHY OF THE PADMA PURANA

- DR. (MRS.) SHARDA ARYA

Demy 1/8 pp 638 1988
ISBN 81-7081-190-2 Rs.400.00

ऋग्वेदीयम् – विमलानन्द जी

Demy 1/8 pp 340 1989
ISBN 81-7081-164-3 Rs.150.00

RIGVEDA SAMHITA (TEXT, TRANS. & NOTES IN ENGLISH AND MANTRA, DEVATA, RISHI NAME INDEX ONLY) - H.H. WILSON

Crown 1/ pp 3228 (7 Vols)

1990 IIInd Ed. Rs.3000.00

ऋग्वेद परिचय—श्री नाग शरण सिंह

Demy 1/8 pp 160 1990
ISBN 81-7081-217-8 Rs.100.00

ऋग्वेद संहिता— शिवनाथ आहितान्गि

प्रथम मंडल पद्यात, शब्दार्थ, संस्कृत और भाषा अनुवाद और सूक्त के भाषा भाषार्थ सहित

Demy 1/8 pp 5300 (9 vols) 1991

ISBN 81-7081-246-1 Out of print

ऋग्वेद संहिता मूल बड़े अक्षरों में Out of Print

14.5" x 6.5" Pothi Size pp 1268 2000

ऋग्वेद संहिता मूल तथा मन्त्रानुक्रमण्या सहित

Crown 1/8 pp 935 (2019) Rs 800

ऋग्वेद संहिता मूल तथा भाषा टीका सहित

— पं. राम गोविन्द त्रिवेदी, सं. नागशरण सिंह

Demy 1/8 pp 2000 Press

शेषकृत बौद्धायन आधानप्रयोगः— प्रधान

सम्पादक डॉ. टी. एन. धर्माधिकारी

Demy 1/8 PRESS

साकेतसौरभम् महाकाव्यम्

— डॉ. भास्कराचार्य त्रिपाठी

Demy 1/8 pp 254 2003
ISBN 81-7081-571-1 Rs.150.00

सामवेद संहिता मूल मन्त्रानुक्रमण्या सहित

Crown 1/8 pp 250 1996 Rs 150.00

सामवेद संहिता मूल बड़े अक्षरों में

Pothi Size 1/8 pp 414 (Out of Print)

संध्या —डॉ. रामकरण शर्मा

Demy 1/8 pp 190 1987
ISBN 81-7081-165-1 Rs.150.00

सांख्य सिद्धान्त- सांख्य दर्शन का वैज्ञानिक आधार

—अरुण कुमार उपाध्याय

Demy 1/8 pp 328 2006
ISBN 81-7081-638-6 Rs.150.00

SANSKRIT EDUCATION IN ORISSA

-DR. GANGADHAR PANDA

Demy 1/8 pp 166 1995
ISBN 81-7081-304-2 Rs.150.00

SANSKRIT - ENGLISH DICTIONARY

(A Comprehensive Sanskrit Lexicon)

-H.H. WILSON

Demy 1/4 pp 872 2019

ISBN 81-7081-013-2 Rs. 2500

संस्कृत हिन्दी कोश— शिवराम आपे

Crown 1/4 pp 1370 2012 Rs.1200.00

संस्कृत की पहचान भास्कर भारती—1

— डॉ. भास्कराचार्य त्रिपाठी

Demy 1/8 pp 416 2001
ISBN 81-7081-544-4 Rs.200.00

संस्कृत कोश—शास्त्र के विविध आयाम

— सत्य पाल नारंग

Demy 1/8 pp 352 1998**SANSKRIT MAXIMS & PROVERBS**

(न्यायावलि)

—SIR BEJAY SINGH

Demy 1/8 pp 108 1998
ISBN 81-7081-022-1 (Out of Print)**संस्कृत साहित्य को गोपीनाथशास्त्री का
अवदान—डॉ. रमेश मिश्र**Demy 1/8 pp 334 2002
ISBN 81-7081-549-5 Rs.150.00**संस्कृत साहित्ये जलविज्ञानम्—डॉ. नवलता**Demy 1/8 pp 248 2018
ISBN 81-7081-598-3 Rs.250.00**SANSKRIT - SAIVA KAVYAS FROM
12th CENTURY TO 17th CENTURY A.D.**

—DR. KANTA GUPTA

Demy 1/8 pp 1266 (2 vols Set)
ISBN 81-7081-552-5 Rs.800.00**संस्कृत—संस्कृति—मंजरी—डॉ. मण्डन मिश्र**Demy 1/8 pp 248 1996
ISBN 81-7081-344-1 Rs.300.00**संस्कृत वाङ्मयैतिह्ये वैदिकवा, मयम्**

— डॉ. अशोक चन्द्र गौड शास्त्री

Demy 1/8 pp 392 2007
ISBN 81-7081-642-4 Rs.300.00**सप्तशतीसर्वस्वम् नाम नानाविधसप्तशतीरहस्यसंग्रहः**— जयपुरमहाराजाश्रितेन द्वियेदापारयेन
पण्डित श्रीसरयू—प्रसादशर्मणा संगृहितःCrown 1/4 pp 626 2006
ISBN 81-7081-627-0 Rs.600.00**सर्ववेदरुद्राघायाय संग्रह— डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय**Demy 1/8 pp 304 2006
ISBN 81-7081-626-2 Rs.300.00**SAUNDARYALAHARI OF
SRISHANKARA****BHAGAVATAPADACHARYA**(Text, English Translation, Notes, Prayoga
Vidhi with Yantra illustrations)**-A. KUPPUSWAMY Rs.175.00***Ed. SURENDRA PRATAP*Demy 1/8 pp 320 2005
ISBN 81-7081-600-9 Rs.350.00**SCIENCE AND TECHNOLOGY IN
THE VEDAS -KRISHNAJI**

Demy 1/8 pp 76 1995

ISBN 81-7081-320-4 Out of print

**SCIENCE TEXT IN SANSKRIT IN THE
MANUSCRIPTS REPOSITORIES OF
KERALA AND TAMILNADU**General Ed.: Prof. V. KUTUMBA
SASTRY

Compiled & Ed. : PROF. K.V. SHARMA

Demy 1/8 pp 252 2002 Rs.200.00**SCIENTIFIC KNOWLEDGE IN THE
VEDAS - P.V. VARTAK**

Demy 1/8 pp 172 1995

ISBN 81-7081-316-6 (Out of Print)**शब्दकल्पद्रुम—राजा राधा कान्तदेव 2002**

Royal 1/2 pp 3218 (5 Vols) 2015

ISBN 81-7081-154-6 Rs.15000.00**शब्दापशब्दविवेकः**

—प्रौ. चारुदेव शास्त्री

Demy 1/8 pp 392 2019
ISBN 81-7081-117-1 Rs. 500**शब्दलक्षणप्रामाण्य विमर्शः**

— एन. एस. रामानुजतातार्यार्थः

Demy 1/8 pp 100 1995 Rs.50.00**SHANKARA : THE REVOLUTIONARY
-M. N. KRISHNAMANI****Demy 1/8 pp 412 (P.B.) 2001 Rs.200.00**शतपथ ब्राह्मण सायणाचार्य विरचित वेदार्थ प्रकाश
तथा हरिस्वामी भाष्य सहितDemy 1/8 pp 3730 (5 Vols) 2002
ISBN 81-7081-091-4 Rs.5000.00**शिक्षा दर्शन —डॉ. भास्कर मिश्र**Demy 1/8 pp 300 2009
ISBN 81-7081-648-3 Rs.500.00

शिव महापुराण मूल, श्लोकानुक्रमणी तथा भूमिका —प्रौ. पुष्पेन्द्र कुमार Pothi form pp 1504 (2 Vols) 2005 Ed. ISBN 81-7081-066-3 Rs.2500.00	Demy 1/8 pp 160 2022 ISBN 81-7081-144-9 Rs.150.00
SHIVASAHASRANAMASTAKAM -PROF. RAM KARAN SHARMA Demy 1/8 pp 350 1996 ISBN 81-7081-350-6 Rs.400.00	स्कन्द महापुराण मूल, भूमिका तथा श्लोकानुक्रमणी सहित — डॉ. आर. एन. शर्मा Pothi form pp 5600 (8 Vols) 1996 (IIInd Ed.)
श्रीजोनराजकृता किरातार्जुनीयटीका लिप्तन्तरण एवं विवेचनात्मक सम्पादन — सम्पादक धर्मेन्द्रकुमार भट्ट एवं मार्गदर्शक वसन्तकुमार भट्ट	ISBN 81-7081-000-0 Rs.10000.00 स्कन्द महापुराण श्लोकानुक्रमणी — नाग शरण सिंह Pothi form pp 1000 1989
Royal 1/8 ISBN 978-93-80829-19-7 Rs.250.00	ISBN 81-7081-207-0 Rs.1500.00 सृति सन्दर्भ धर्म शास्त्र संग्रह मूल, विषयानुक्रमणी तथा श्लोकानुक्रमणिका — ऋषिगण, मनु, याज्ञवल्क्य पाराशर, आदि Demy 1/8 pp 4688 (6 vols) 2018
शिवशुकीयम —डॉ. रामकरण शर्मा Demy 1/8 pp 176 1987 ISBN 81-7081-098-1 Rs.150.00	ISBN 81-7081-170-8 Rs. 7500 सृति सन्दर्भः विषयानुक्रमणी तथा श्लोकानुक्रमणिका Demy 1/8 pp 634 2018
श्रीमद्यशोवियज्यमुनिकृतायाः काव्यप्रकाश- टीकायाद्वितीयतृतीयोल्लासमात्रोपलब्धायाः समीक्षा — डॉ. विद्यानन्द झा Demy 1/8 pp 224 2002 ISBN 81-7081-545-2 Rs.150.00	ISBN 81-7081-263-1 Rs.2000.00 सृति युगीन शासन सुरक्षा —डॉ. प्यारे लाल चौहान Demy 1/8 pp 424 1992 ISBN 81-7081-260-7 Rs.300.00
श्रीयादवप्रकाशकृतं पिंगलनागच्छन्दो विचित्रिभाष्यम् —डॉ. श्रीधर वशिष्ठ Demy 1/8 pp 430 2004 ISBN 81-7081-590-8 Rs.300.00	SRI AUROBINDO ON VEDIC DEITIES -RAMARANJAN MUKHERJI
शुकः सन्देशः लक्ष्मीदास प्रणीत —प्रौ. एन. पी. उर्णी Demy 1/8 pp 228 1985 ISBN 81-7081-092-2 Out of print	Demy 1/8 pp 160 (1995) Rs.50.00 श्रीकृष्णकथा आंगलभाषायां निबद्ध्या भूमिकया संवलित हरिवंशस्य समीक्षात्मक संस्करणमा— श्रित्य लिखिता कृष्णकथा—डॉ. वीणा पाणि घटनी
सिद्धान्तशिरोमणे गोलाध्यायस्योपाति: — डॉ. प्रेम कुमार शर्मा Demy 1/8 pp 376 2005 ISBN 81-7081-616-5 Rs.300.00	SARIKRISHNAKATHA (With an Introduction in English and the Sanskrit Text based on the critical edition of the Harivansha Purana) -Dr. VINAPANI PATANI
सीमा —डॉ. रामकरण शर्मा	Demy 1/8 pp 144 2000 ISBN 81-7081-519-3 Rs.100.00
	SRIKRISHNACARITAM -DR. K. P. A. MENON -(Introduction, Text with English Tr.)
	Demy 1/8 pp 572 1998 ISBN 81-7081-385-9 Rs.340.00
	SRIKRISHNAVIJJAM & NALODAYA -(Introduction, Text with English Tr.) -DR. K. P. A. MENON

Demy 1/8 pp 582 1998 ISBN 81-7081-385-9	Rs.400.00	तैत्तिरीय-प्रतिशाख्यं त्रिभाष्यरत्ननाम टीका सहितम् – सम्पादक : राजेन्द्र लाल मित्र
SRIMADBHAGAWADGITA(Text with English Translation) - S.N. RAINA		Demy 1/8 Press तप्तीसंवरणम् कुलशेखर वर्मन कृत – भूमिका प्रो. एन. पी. उण्णी
Demy 1/8 pp 476 1997 ISBN 81-7081-376-X	Rs.300.00	TAPTISAMVARANAM OF KULASHEKHARA VARMANA'S AND INTRODUCTION - BY PROF. N.P. UNNI
STRUCTURE AND MEANING		Demy 1/8 pp 290 1987 ISBN 81-7081-107-4 Rs.200.00
-DR. (MRS.) DIPTI SHARMA		TEXTUAL CORRECTION OF NARASIMHA PURANA WITH OTHER PURANAS AND SANSKRIT TEXTS
Demy 1/8 pp 166 1982 ISBN 81-7081-099-X	Rs.150.00	- DR. SIDDHESWAR JENA
संस्कृत-हिन्दी कोश छात्र संस्करण – डॉ. वी. एस. आर्टे		Demy 1/4 pp 126 1997 ISBN 81-7081-318-9 Rs.200.00
20X30/8 pp 1380 9th Ed Rs. 1200.00		THE THIRTEEN PRINCIPAL UPANISHADS (Text with English Tr. and Notes)
STUDENT'S ENGLISH SANSKRIT DICTIONARY -V.S. APTE (IIIrd Ed.)		-PROF. S.L. SERU
Demy 1/8 pp 520 2003	Rs.200.00	Demy 1/8 pp 316 1997 ISBN 81-7081-381-6 Rs.400.00
STUDY OF SKANDA CULT		TREATMENT OF PATHOS IN SANSKRIT DRAMA
-PROF. S.S. RANA		संस्कृत नाटकों में करुण अभिव्यंजना – सं. प्रो. पुष्टेन्द्र कुमार
Demy 1/8 pp 220 1995 ISBN 81-7081-303-4	Rs.300.00	Demy 1/8 pp 308 1981 ISBN 81-7081-121-X Rs.250.00
सुरगवी- समालोचनिका –प्रो. बुजेश कुमार शुक्ल ISBN 81-7081-695-5 Demy 1/8		TRIPURADAHANAM, SAURIKATHODAYAH
2017 PP 454 Rs. 600		-(Introduction, Text with English Tr.) (Two Yamak Poems of Vasudeva's)
शुक्लयजुर्वदमाध्यन्दिनीयसंहिता मूल – बड़े अक्षरों में		-DR. K. P. A. MENON
Pothi Size pp 1034 2000 Rs.600.00		Demy 1/8 pp 462 1999 ISBN 81-7081-383-2 (set) Rs. 300.00
A SURVEY OF LANGUAGES		TWENTY TWO LAGHUYOGAVASISTHA SELECTIONS -IRMA SCHOTSMAN
(SEMETIC, ASIAN AND TURANIAN FAMILIES) -F. MAX. MULLER		(Sanskrit Text with word-by-word Trans. into Eng.)
Demy 1/8 pp 256 1976 ISBN 81-7081-026-4	Rs.200.00	Crown 1/4 pp 544 2005 ISBN 81-7081-601-7 Rs.650.00
स्वयंभू-डॉ. पद्माकार विष्णु वर्तक Demy 1/8 pp 492 2005 ISBN 81-7081-615-7	Rs.350.00	TWELVE PRINCIPAL UPANISHADS 2016 Rs.1500.00
तदेव गगनं सैव धरा कविता संग्रह – श्रीनिवास रथ		
Demy 1/8 pp 84 1995 Rs.50.00		
तैत्तिरीय ब्राह्मण श्रीमत्सायणाचार्य विरचित भाष्य संस्कृतम् –प्रो. पुष्टेन्द्र कुमार		
Demy 1/8 pp 1330 (2 vols Set) ISBN 81-7081-395-6 (Set)	Rs 1500	

(Text with English trans. and Notes)

-RAJENDRA LAL MITRA, PROF. B.E.
COWELL AND E. ROER

Demy 1/8 pp 1152 (3 Vols) 2019
ISBN 81-7081-037-X (IIIrd Ed.) Rs. 2000

UDAYANA AND HIS PHILOSOPHY

-DR. VISWESWARI AMMA

Demy 1/8 pp 220 1985
ISBN 81-7081-112-0 Rs.200.00

उल्लासिनी कविता संग्रह – रामकृष्ण शर्मा

pp 68 1991 Rs.100.00

उपनिषदों के निर्वचन–डॉ. वेदवती वैदिक

Demy 1/8 pp 248 2003
ISBN 81-7081-569-X Rs.200.00

उपसर्गार्थ–विवेचनम्–डॉ. अभयनाथ झा

Demy 1/8 pp 232 2005
ISBN 81-7081-608-4 Rs.150.00

उत्तरनैषधीयवरितम्

मूल तथा हिन्दी अनुवाद सहित

– राम लक्षण गोस्वामी
Crown 1/4 pp 472 2005
ISBN 81-7081-612-2 Rs.500.00

वाचस्पत्यम् वृहत् संस्कृताभिधानम्

–श्रीतारानाथतर्कवाचस्पतिभट्टाचार्योण्य यंकनितम्
Demy 1/4 pp 5500 (6 Vols)2018
Rs.15000

THE VAISNAVA PHILOSOPHY

(AS INTERPRETED BY BALADEVA VIDYABHUSHAN)

-DR. (MRS.) S. NARANG

Demy 1/8 pp 308 1984
ISBN 81-7081-103-1 (Out of Print)

वैयाकरणप्रबन्धमुक्तावली

– डॉ. अशोकचन्द्र गौड शास्त्री
Demy 1/8 pp 594 2005
ISBN 81-7081-610-6 Rs.350.00

वाक्यार्थ विवेचनम् – डॉ. धनुर्धर झा

Demy 1/8 pp 368 2002
ISBN 81-7081-565-7 Rs.200.00

वाल्मीकि रामायण में मूल्य चेतना–डॉ. बुजेश

Demy 1/8 pp 236 2002

ISBN 81-7081-548-7 Rs.300.00

वाल्मीकि रामायण तथा उत्तररामचरित का

तुलनात्मक विवेचन – डॉ. श्रद्धा शुक्ला

Demy 1/8 pp 260 1995
ISBN 81-7081-301-8 Rs.150.00

वामन महापुराण–श्लोकानुक्रमणी तथा भूमिका – डॉ. जियालाल कम्बोज

Pothi form pp 472 3rd Ed 1997
ISBN 81-7081-063-9 Rs.1000.00

वन्यरत्नम् – राजेन्द्र कुमार शर्मा

Demy 1/8 pp 120 1992
ISBN 81-7081-267-4 Rs.100.00

वासुकि पुराण–डॉ. अनन्त रामशास्त्री

Demy 1/8 pp 250 2014

ISBN 81-7081-085-X Rs.350.00

वेदकालीन प्रौद्योगिकी कुछ आयाम

Some Aspects of Technology in Vedic Period
सम्पादक–प्रौ. ओमप्रकाश पाण्डेय
डॉ. श्यामसुन्दर निगम

Demy 1/8 pp 158 2003
ISBN 81-7081-573-8 Rs.110.00

वेद मीमांसा– मूल लेखक श्री अनिर्वाण

हिन्दी अनुवादक–छविनाथ मिश्र
Demy 1/8 pp 1504 (3 Vols) 2003
ISBN 81-7081-576-2 (Set) Rs.825.00 (3 Vols.)

VEDAS - RAJA RAMMOHAN ROY

Crown 1/8 pp 80 1977
ISBN 81-7081-027-2 Out of print

VEDAS : THE RIGHT APPROACH

- DHARMANANDA SARASWATI

Demy 1/8 pp 170 Out of print

VEDAS AND WEATHER SCIENCE IN ANCIENT INDIA -A.S. RAMANATHAN

Demy 1/8 pp 100 (1995) Out of print

VEDAS : THE SOURCE OF ULTIMATE SCIENCE - SHRI RAM VERMA

Demy 1/8 pp 480 2005
ISBN 81-7081-618-1 Rs.350.00

वैद व्याख्या और वैदिक विचारधारा —सं. प्रो. कृष्णलाल	Demy 1/8 pp 100 1987 ISBN 81-7081-161-9	Demy 1/8 pp 281 2003 Rs. 270.00 वैदिक वाङ्मय में विज्ञान SCIENCE'S IN
वैदिक आख्यान— प्रो. प्रभाकर नारायण कवठेकर	Demy 1/8 pp 90 1995 Rs.50.00	VEDIC LITERATURE— रामेश्वर दयालगुप्त Demy 1/8 pp 346 1997 ISBN 81-7081-367-0 Out of print
वैदिक—दर्शनम् —डॉ. जीत सिंह खोखर:	Demy 1/8 pp 232 2001 ISBN 81-7081-537-1	वैदिक यज्ञ संस्था और वैद विज्ञान — सम्पादक—प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय
VEDIC ELEMENTS IN PURANIC MANTRAS AND RITUALS —DR. GAURI MAHULIKAR	Demy 1/8 pp 404 2000 ISBN 81-7081-513-4	Crown 1/4 pp 362 2004 Rs.500.00 विद्याकरसहस्रकम्—महामहोपाध्याय विद्याकरमित्रसंगृहीतं सुभाषितम् — प्रथमसंस्करणस्य सम्पादकः म. म. डॉ. उमेश मिश्रः सम्पादकः डॉ. शशिनाथ ज्ञाः
वैदिक खिलसूक्त—मीमांसा — प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय	Demy 1/8 pp 424 2004 ISBN 81-7081-594-0	Demy 1/8 pp 232 2021 ISBN 81-7081-386-7 Rs.300.00
वैदिक कोश — पृष्ठं चन्द्रशेखर उपाध्याय एवं श्री अनिल कुमार उपाध्याय	Crown 1/4 pp 1540 (3 Vols Set) ISBN 81-7081-292-5 (Set) Rs.4500.00	श्री विष्णुपुराणम् मूल, विष्णु वित्यात्मप्रकाशात्य श्रीधरीय व्याख्या तथा श्लोकानुक्रमणी और भूमिका डॉ. आर. एन. शर्मा
वैदिक मरुत — सम्पादक डॉ. उर्मिला लक्ष्मणी Demy 1/8 pp 318 1993 ISBN 81-7081-287-9	Rs.200.00	Pothi form pp 608 Ed. 2004 ISBN 81-7081-042-6 Rs.1500.00
VEDIC MUSIC AND ITS APPLICATION IN RITUALS - ED. G.H. TARLEKAR	Demy 1/8 pp 82 1995 ISBN 81-7081-317-4	विष्णुपुराण मूल, भाषा अनुवाद तथा श्लोकानुक्रमणी सहित —डॉ. शश्वता शुक्ला
वैदिक शाहित्य और संस्कृति का स्वरूप तथा विकास—प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय	Demy 1/8 pp 488 2005 ISBN 81-7081-602-5	Demy 1/8 pp 1000 (2 Vols Set) ISBN 81-7081-415-4 (Set) Rs. 1500.00
वैदिक शिक्षा—आधुनिक परिप्रेक्ष्य में —ED. PROF. VACHASPATI UPADHYAYA	Demy 1/8 Press	VISHNU SAMHITA (An Exhaustive Introduction and Description of Every Chapter in English By PROF. N.P. UNNI, With Text and Shloka Index) (Out of Print)
वैदिक शिक्षा पद्धति— डॉ. भास्कर मिश्र	Demy 1/8 pp 368 1991 ISBN 81-7081-258-5	Demy 1/8 pp 368 1991 ISBN 81-7081-258-5 Rs.350.00
वृहद् देवता— सं. : राजा राजेन्द्र लाल मिश्र	Demy 1/8 pp 112 2006 ISBN 81-7081-635-1	व्रजनन्दकायम्— कविता—संग्रहं
	Demy 1/8 Press	प्रणेता— त्रिपाठी पौ. व्रजनन्दन भाषान्तरकृत सम्पादक त्रिपाठी डॉ. निलिम्पि
		वृहद् देवता— सं. : राजा राजेन्द्र लाल मिश्र
		Demy 1/8 Press
		व्याकरणशास्त्रे शब्दविमर्शः

<p>— डॉ. के. वी. सोमयाजुलु</p> <p>Demy 1/8 pp 242 2006 ISBN 81-7081-628-9 Rs200.00</p> <p>WEDDING OF ARJUNA AND SUBHADRA THE KUTIYATTAMA DRAMA SUBHADRADHANANJAYA</p> <p>(Text with Vicharatalik Commentary Introduction, English Trans. & Notes)</p> <p>-PROF. N.P. UNNI & DR. BRUCE M. SULLIVAN</p> <p>Demy 1/8 pp 288 2001 Rs. 300.00</p> <p>(WHITE) YAJURVEDA SAMHITA</p> <p>(Text with English Trans., Commentary, Mantra & Name Index Etc.)</p> <p>- RALPH T.H. GRIFFITH</p> <p>Demy 1/8 pp 644 1990 ISBN 81-7081-212-7 Rs.700.00</p> <p>यतीन्द्रमतदीपिका—कविता सूद</p> <p>Demy 1/8 Press</p>

YOGA VASISTHA (Renunciation and Salvation) -TARKESHWAR PRASAD, FOREWORD : DR. AMARNATH JHA

Demy 1/8 pp 128 1982
ISBN 81-7081-097-3 Rs.100.00

THE YOGAMANIPRABHA OF RAMANANDA- SARASVATI WITH THE GLOSS SVASANKETA -BALA KRISHNAN (Critically edited with Introduction & Appendices)

Demy 1/8 pp 504 1996
ISBN 81-7081-348-4 Rs.350.00

युग निर्माता: महर्षि दयानन्द

श्रीकान्त आचार्य

Demy 1/8 pp 300 1991
ISBN 81-7081-217-8 Rs.200.00



Size Demy 1/4 Pages 5500 (6 vols set)
2018 Rs. 18000

वाचस्पत्यम्

(बृहत् संस्कृताभिधानम्)

श्रीतारानाथतर्कवाचस्पति भट्टाचार्येण संकलितम्

शब्दकल्पद्रुम —राजा राधा कान्त देव

SHABDAKALPADRUMA - Raja Radha Kant Deb

ISBN 81-7081-154-6 Size Demy 1/4

Rs. 15000 for set

संस्कृत-हिन्दी कोश— शिवराम आप्टे

इस संस्कृत-हिन्दी कोश के लेखक वामन शिवराम आप्टे ने रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृति, दर्शनशास्त्र, गणित, आयुर्वेद, न्याय, वेदांत, भीमांसा, व्याकरण, अलंकार, काव्य, वनस्पति विज्ञान, ज्योतिष, संगीत आदि अनेक विषयों का समावेश किया है। वर्तमान कोशों में से बहुत कम कोशकारों ने ज्ञान की विभिन्न शाखाओं के तकनीकी शब्दों की व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। दूसरी ध्यान देने योग्य इस कोश की विशेषता यह है कि अत्यन्त आवश्यक तकनीकी शब्दों की, विशेषतः न्याय, अलंकार और नाट्यशास्त्र के शब्दों की व्याख्या इसमें यथा स्थान दी गई है। इस संस्कृत-हिन्दी कोश द्वारा संस्कृत के सभी पाठक लाभ उठा सकेंगे।

Cromo 1/4 pp 1370 2012 Rs.1200.00



STUDENT'S ENGLISH SANSKRIT DICTIONARY

— V. S. APTE

Demy 1/8 PP 520 Rs. 300.00

STUDENT'S SANSKRIT ENGLIHS DICTIONARY

— V. S. APTE

Crown 1/4 PP 672 Rs. 500.00

SANSKRIT - ENGLISH DICTIONARY

(A Comprehensive Sanskrit Lexicon)

-H.H.WILSON

Demy 1/4 pp 872 2019 ISBN 81-7081-013-2 Rs. 2500

वैदिक कोश—पं. चन्द्रशेखर उपाध्याय एवं श्री अनिल कुमार उपाध्याय

ISBN 81-7081-292-5 (set) PP 1540 Rs. 4500

KOSH OR DICTIONARY OF THE SANSKRIT**LANGUAGE** - By Amar Singh With An

English Interpretation and Annotations by H. T. Colebrooke

ISBN 81-7081-529-0 PP 562 Rs. 350.00

**PURANAS INTRODUCTION, TEXT WITH SLOKA
INDEX IN POTHI SIZE****THE AGNI MAHAPURANA — DR. R.N. SHARMA****श्री अग्नि महापुराण—डॉ. आर. एन. शर्मा**

ISBN 81-7081-048-5 pp 664 Rs.1500.00

THE BHAGAVATA MAHAPURANA—Dr. R. N. SHARMA**श्री भागवत महापुराण — अचितार्थप्रकाशिका टीका डॉ.आर. एन. शर्मा**

ISBN 81-7081-145-7PP 2304 (4 Vols. set) Rs. 5000.00

THE BRAHMA MAHAPURANA — Dr. R. N. SHARMA**श्री ब्रह्म महापुराण —डॉ. आर. एन. शर्मा**

ISBN 81-7081-057-4 PP 724 Rs.1500.00

THE BRAHMANDA MAHAPURANA**श्री ब्रह्माण्ड महापुराण PP 694 Rs.1500.00****.श्रीब्रह्मवैर्त महापुराण (मूल मात्र)**

Pothi 23X26/12 pp 1072 (2 Vols Set) 2018 Rs. 2500.00 (Set)

THE GANESHA PURANA — PROF. RAM KARAN SHARMA**श्री गणेश पुराण— डॉ. आर. एन. शर्मा**

ISBN 81-7081-050-7 PP 832 Rs.1500.00

THE GARUDA MAHAPURANA — Dr. R. N. SHARMA

श्री गरुड़ महापुराण— डॉ. आर. एन. शर्मा

ISBN 81-7081-050-7

PP 608

Rs. 1500.00

THE LINGA MAHAPURANA—

श्री लिंग महापुराण – शिवतोषिणी संस्कृत टीका

ISBN 81-7081-208-9

PP 774

Rs. 1200.00

THE NARADA MAHAPURANA

श्री नारद महापुराण

PP 718

Rs.2000.00

THE PADMA MAHAPURANA — Dr. CHARUDEV SHASTRI

श्री पद्म महापुराण— प्रो. चारुदेव शास्त्री

ISBN 81-7081-052-3

PP 2388 (4 Vols. Set)

Rs. 5000.00

THE SHIVA MAHAPURANA —PROF. PUSHPENDRA KUMAR

श्री शिव महापुराण— प्रो. पुष्पेन्द्र कुमार

ISBN 81-7081-066-3

PP 1504 (2 Vols. Set)

Rs. 2500.00

THE SKANDA MAHAPURANA — DR. R. N. SHARMA

श्री स्कन्द महापुराण —डॉ. आर. एन. शर्मा

ISBN 81-7081-000-0

PP 5600 (8 Vols. Set)

Rs. 10000.00

THE VAMANA MAHAPURANA — DR. JIYALAL KAMBOJ

श्री वामन महापुराण— डॉ. जियालाल कम्बोज

ISBN 81-7081-063-9

PP 472

Rs.1000.00

THE VISHNU MAHAPURANA — DR. R. N. SHARMA

श्री विष्णु महापुराण —डॉ. राजेन्द्र नाथ शर्मा

ISBN 81-7081-042-6

PP 1246

Rs. 1500.00

EKAMRA PURANA (CRITICAL EDIIION) — DR. U. N. DHAL

ऐकाम्र पुराण —डॉ. यू. एन. ढल

ISBN 81-7081-083-3

PP 476

Rs. 600.00

THE VASUKI PURANA — DR. A.R SHASTI

वासुकी पुराण —डॉ. अनन्त राम शास्त्री

ISBN 81-7081-688-2

PP 520

Rs. 350.00

PURANAS TEXT WITH HINDI TRANSLATION

श्री हरिवंश महापुराण —प्रो. चारुदेव शास्त्री हिन्दी अनुवाद के साथ

ISBN 81-7081-075-2PP 1802 (2 Vols. set)

Rs. 3500.00

विष्णु महापुराण —डॉ. श्रद्धा शुक्ला

ISBN 81-7081-415-4 (set) pp 1000(2 Vols.set) Rs.1500.00

SOME PURANAS TEXT WITH ENGLISH TRANSLATION

THE NARASIMHA PURANA—Dr. SIDDHESWAR JENA

ISBN 81-7081-089-2 pp770 Rs. 1000.00

THE KALIKA PURANA—Dr. BISWANARAIN SHASTRI

ISBN 81-7081-649-1 pp 808 Rs. 2000.00

THE MATSYA PURANA—N. S. SINGH

ISBN 81-7081-649-1 pp 1252 (2 Vols. Set) Rs. 2000.00

OTHERS SOME VALUABLE PUBLICATIONS

THE MAHABHARATAM—PROF. MANDAN MISHRA

श्री मन्महाभारतम्— प्रो. मण्डन मिश्र श्रीमन् नीलकण्ठ विरचित भारतभावदीपाख्य,
टीका, तथा नामानुक्रमणी सहित .

ISBN 81-7081-182-1 PP 5500 (9 Vols. set) Rs. 13500

THE RIG VEDA SAMHITA(Text, Trans. & Notes in English and Mantra,
Devata, Rishi, Name Index) – H. H. WILSON
PP 3288 (7 Vols. set) Rs. 3000.00

SATAPATHA BRAHMAN –

शतपथ ब्राह्मण— सायणाचार्य विरचित वेदार्थ प्रकाश तथा हरिस्वामी भाष्य सहित
ISBN 81-7081-091-4 pp 3730 (5 Vols Set) Rs. 5000.00

वैदिक कोश—पं. चन्द्रशेखर उपाध्याय एवं श्री अनिल कुमार उपाध्याय

ISBN 81-7081-292-5 (set) PP 1540 Rs. 4500.00

SAPTSATISARVAVSAM — SHRI SARYU PRASHAD SHARMA

सप्तशतीसर्वस्वम्— नाम नानाविधसप्तशतीरहस्यसंग्रहः जयपुरमहाराजाश्रितेन
द्विवेदापारत्येन पण्डित श्रीसरयू प्रसादर्शमणा संगृहितः।

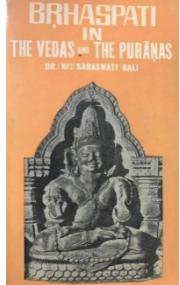
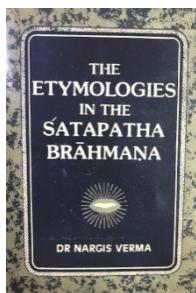
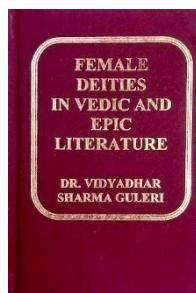
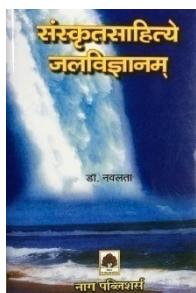
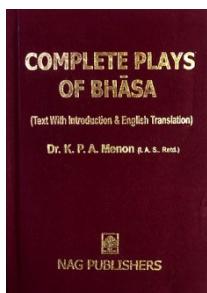
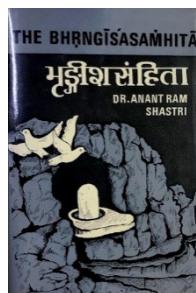
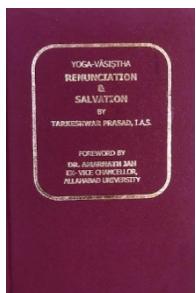
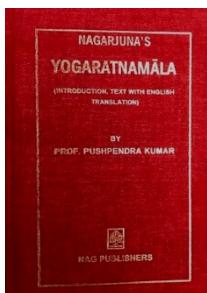
ISBN 81-7081-627-0 PP 626 Rs. 600.00

HINDU DHARMA SHAstra (Introduction, Text With English

Trans .& Sloka Index) -ED. PROF. PUSHPENDRA KUMAR

ISBN 81-7081-674-2 pp 2562 (6 vols set) Rs5000.00

NOW NEW EDITION AVAILABLE OF



काव्यप्रकाशः

डॉ. ज्योत्स्ना मोहन

(मूल तथा 16 टीकाये) सङ्केतः, सङ्केतः (रुद्धकः, बालचित्तारनुरंजनीः, काव्यादर्शः, विवेकः, दीपिकाः, दर्पणः, साहित्यचूडामणिः, सम्प्रदाप्रकाशिणीः, मधुमतीः, विस्तारिकाः, सारबोधिनीः, काव्यप्रदीपः, काव्यप्रकाशखडनम्, आदर्शः, सुधासागरः, विवरणम् संस्कृत व्याख्या समलंकृता ।

काव्यशास्त्र अलंकार शास्त्र की सरणि का व्यवस्थापक ग्रन्थ है। जिसके कर्ता मम्मट ने अपनी पूर्ववर्ती सारी परम्परा को समेटकर काव्यशास्त्री विषयों एवं सिद्धान्तों के विषय मेनिर्णयक दृष्टिकोण उपरिथित किया है। आचार्य मम्मट संस्कृत के वेद, दर्शन, धर्मार्थ, इतिहास, पुराण एवं काव्यादि निखिल वाङ्मय के मर्मज्ञ पण्डित थे, इन्होंने काव्यप्रकाश में निर्गलित प्रस्तुत कर, राजशेखर की उस उकित को चरित्रार्थ किया है जिसमें कहा गया है कि साहित्यविद्या आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति नामक अशेष चारों विद्याओं का निर्गलित है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में काव्यप्रकाश ग्रन्थ की टीकाकारों की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन करने का विनम्र प्रयास है।

Crown1/4 pp 4066 6 Vol. Set Rs.10000.00

HINDU DHARMA SHASTRA

(Introduction, Text With English Trans .& Sloka Index)

- Ed. Prof. Pushpendra Kumar

The Dharmashastra occupies a prominent place in the Sanskrit literature. It has always served as a source book of Hindu jurisprudence. It has been a veritable storehouse of information for the social, cultural, political and religious aspects of ancient Indian society. It is the very essence of Hinduism. Its' deeper study helps in the proper understanding of the Ancient Indian Culture.

The Dharma Shastras of the Hindus, are not one single book but consist of the Samhitas or Institutes of holy sages numbering twenty according to the list given by Yājnavalkya, These are namely, Manu, Atri, Vishnu, Harita, Yāgnavalkya, Ushana, Aṅgira, Yama, Āpastamba, Samvarta, Kātyayana, Brihaspati, Parāsara, Vyāsa, Sankha, Likhita, Daksha, Gautam, Satatāpa and Vasistha samhitās respectively.

In this collective addition will give to the readers the complete text of all the twenty smritis, fully edited. The English translation is a literal one as far as it could be attempted, keeping an eye to eye on its accuracy and literary excellence.

Demy 1/8 ISBN 81-7081-674-2 pp 2562 (6 vols set) 2012 Rs 5000.00

शब्दकल्पद्रुम—राजा राधा कान्त देव

An Encyclopaedic Dictionary of Sanskrit Words

Compiled by Raja Radhakant Deb

The Shabdalalpadruma is an encyclopaedic dictionary of Sanskrit words arranged in alphabetical order giving the etymological origin of words according to Paninian grammar. It gives their gender, various meanings and synonyms and illustrates their syntactical usage. It also furnished the various connotations of each word using citations drawn from various authoritative sources such as the Veda, the Epic, the Upanishads, and the Puranas as well Sanskrit texts of Tantra, Ayurveda, music, art astrology, rhetoric and prosody.

This renowned Sanskrit lexicon was compiled by a team of Bengali scholars led by Raja Radhakant Deb. Its first volume was published in 1822 while the last one was published in 1856. This classic Sanskrit dictionary and would lend authority and gravitas to any Indological library.

ISBN 81-7081-154-6

Demy 1/4

2015 Rs. 15000 for set

वाचस्पत्यम्

(बृहत् संस्कृताभिधानम्)

श्रीतारानाथतक्वाचस्पति भट्टाचार्येण संकलितम्

एच बुडरो ने अपनी 'वाचनिका' में इस कोश की विशेषता बताते हुए कहा कि 'विल्सन' की 'संस्कृत डिक्शनरी' और 'शब्दकल्पद्रुम' की अपेक्षा इसका क्षेत्र विस्तृत और गंभीरतर है। साथ ही तंत्र, दर्शन शास्त्र, छद्मशास्त्र और धर्मशास्त्र के ऐसे जाने कितने शब्द हैं जो 'राथ बोथालिंगक' की संस्कृत—जर्मन—डिक्शनरी में नहीं हैं। इसमें यह भी बताया गया है कि 'शब्दकल्पद्रुम' का प्रथम संस्करण बंगला लिपि में प्रकाशित हुआ था। उस समय के उपलब्ध कोशों में अनुपलब्ध सैकड़ों हजारों शब्द इसमें संकलित हैं। सामन्य वैदिक शब्द तो हैं ही, साथ ही ऐसे भी अनेक वैदिक शब्द हैं जो तत्कालीन शब्दकोशों में अप्राप्य हैं। पद्दर्शनों के अतिरिक्त चार्चाक, माध्यामिक, योगचार, वैभाषिक, सौत्रांत्रिक, अर्हत, रामानुज, माघ, पाशुपत, शैव, प्रत्यमिज्ञा, रसेश्वर आदि अल्पलोकप्रिय दर्शनों के पारिभाषिक शब्दों का भी इसमें समावेश मिलता है। पुराणों और उपपुराणों से संग्रहीत पुरातन राजाओं का इतिहास तथा प्रत्युगीन भारतीय भूगोल का भी इसमें निर्देश हुआ है। चिकित्साशास्त्र के पारिभाषिक शब्दों और अन्य विवरणों का भी विस्तृत निर्देश किया गया है। गणित ज्योतिष के पारिभाषिक शब्द भी हैं। यद्ध्वंपि वैदिक शब्दों के संकलन संपादन को कोशाकार ने अपने इस कोश की विशेष महत्ता बताई है तथापि बहुत से वैदिक शब्द वैदिक शब्द छूट भी गए हैं और बहुसंख्यक वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति और उनके अर्थ स्वकलित भी हैं। 'राथबोथालिंगक' के बृहत्संस्कृत शब्दकोश के उपयोग का भी काफि प्रयत्न किया गया है। 'शब्दकल्पद्रुम' की अपेक्षा इसमें एम और विशेषता लक्षित होती है। 'शब्दकल्पद्रुम' में 'पद' सुबंत तिडत दिए गए हैं। प्रथमा एकवचन के रूप को कोश में व्याख्येय शब्द का स्थान दिया गया है। परन्तु 'वाचस्पत्यम्' में दिए गये शब्द 'पद' न होकर 'प्रतिपदिक' अथवा 'धातुरूप' में उपन्यस्त हैं। वैसे सामान्य दृष्टि से — रचनाविधान की पद्धति के विचार से — 'वाचस्पत्यम्' की 'शब्दकल्पद्रुम' का विकसित रूप कहा जा सकता है।

pp 3218

(6 Vols. set)

2015

Size Demy 1/4

Rs.18000

ALL MAHAPURANAS

Text with Shloka Index and Introduction

PURANAS TEXT

Agni Mahapurana		
pp 664	Rs. 1500.00	
Bhagavata Mahapurana		
pp 2304 4 Vols. Set	Rs.5000.00	
Brahmanda Mahapurana		
pp 694 Rs.1500.00		
Brahma Mahapurana		
pp 728 Rs.1500.00		
Brahmavaivarta Mahapurana		
pp 2 vols set	Rs.2500.00	
Ganesha Purana		
pp 668	Rs.1500.00	
Garuda Mahapurana		
pp 668	Rs. 1500.00	
Hariyansha Purana		
मूल, हिन्दी अनुवाद तथा श्लोकानुक्रमणी सहित pp 1802 2 Vols.	Rs.3500.00	
Linga Mahapurana		
pp 774	Rs.1200.00	
Brahma Mahapurana		
pp 728	Rs.1500.00	
Narda Mahapurana		
pp 718	Rs.2000.00	
Padma Mahapurana		
pp 2381 4 Vols. Set	Rs.5000.00	
Shiva Mahapurana		
pp 1504 2 Vols. Set	Rs.2500.00	
Skanda Mahapurana		
pp 5600 8 Vols. Set	Rs.10000.00	
Vamana Mahapurana		
pp 472	Rs. 1000.00	
Vishnu Mahapurana		
with two commentaries		
pp 680	Rs. 1500.00	
विष्णुमहापुराण		
मूल, हिन्दी अनुवाद तथा श्लोकानुक्रमणी सहित – दो शब्दांशुला		
pp 1000 2 Vols.	Rs. 1500.00	
Ekamara Purana		
pp 490	Rs. 600.00	
Kuber Purana (Text with Study)		
pp 752	Rs. 500.00	
Vasuki Purana		
pp 260	Rs. 350.00	

PURANAS TEXT WITH TRANS & NOTES IN ENGLISH VERSWISE

Matsya Purana -N.S. SINGH		
pp 1252	2 Vols. Rs.2000.00	
Kalika Purana		
- Prof. Biswanarayan Shastri		
pp 898	Rs.2000.00	
Narasimha Purana		
(Text with Eng. Trs. & Introduction)		
Demy 1/8 pp 744	Rs.1000.00	

AUTHENTIC DICTIONARIES

Shabdadakpalpadrum - Deb Radhakant		
5 Vols.	pp 3218	15000.00
Dictionary of Sanskrit Language		
<i>Colebrooke H</i>		
pp 560	Rs. 350.00	
Student's		Sanskrit-Hindi
Dictionary - Apte, V.S.		
pp 1300	2002	Rs. 1200.00
Student's	English	Sanskrit
Dictionary - Apte, V.S.		
pp 514		Rs. 300.00
वाचस्पत्यम् (वृहत् संस्कृताभिधानम्)		
6 Vols set	pp 3218Ed. 2018	Rs 18000.00

VEDAS TEXTS IN SANSKRIT, TRANS. & NOTES IN ENGLISH MANTRA-WISE, MANTRA DEVATA & RISHI INDEX ECTC.

Rig Veda Samhita- H.H. WILSON		
pp 3228	7 Vols	Rs.3000.00
Yajurveda Samhita - Ralph T.H. Griffith		
pp 644		
Rigveda Parichaya - N. S. Singh		Rs. 700.00
pp 160	1990	Rs. 100.00

EPIC (MAHAKAVYAS)

Mahabharata	- Intro., Text with Nilakanthi Sanskrit Com. Index	
(8 vols. set)		
pp 5500	Pothi Size	Set Rs. 13500.00

**BRAHMANAS GRANTH
UPANISHADS, SMRITIES
(DHARMA-SHASTRA)
VEDANTA**

Shatapatha Brahmana

-With Sanskrit Commentaries of Sayanacharya and Hariswami		
pp 3730 (5 Vols)		Rs.5000.00
ऐतरेय ब्राह्मण सुखप्रदाख्यवृत्ति सहितम्		

Demy 1/8 pp 1393 (3Vols) Rs. 1500.00

Thirteen Principal Upanisads

Text with Eng. Trans. & Notes by Prof. S.L. Seru Rs. 300.00

OTHERS VALUABLE PUBLICATIONS

काव्यप्रकाशः	16	टिकाओं सहितम्
Crown 1/4	pp 4066 (6Vols. set)	Rs. 10000



NAG PRAKASHAN, 11-A (U. A.), Jawahar Nagar, Delhi - 110007 (India) Mob. 09818848356, 07011242553